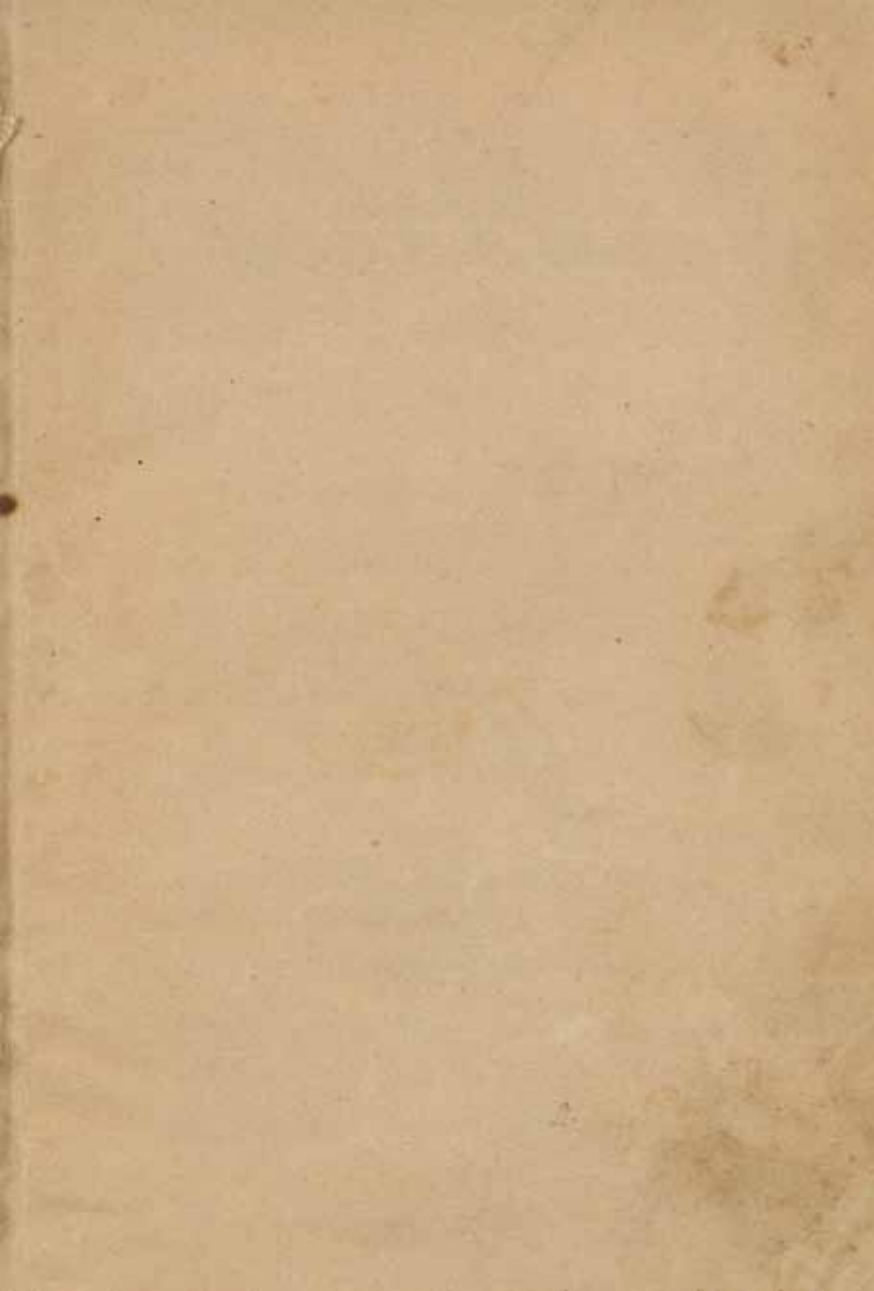


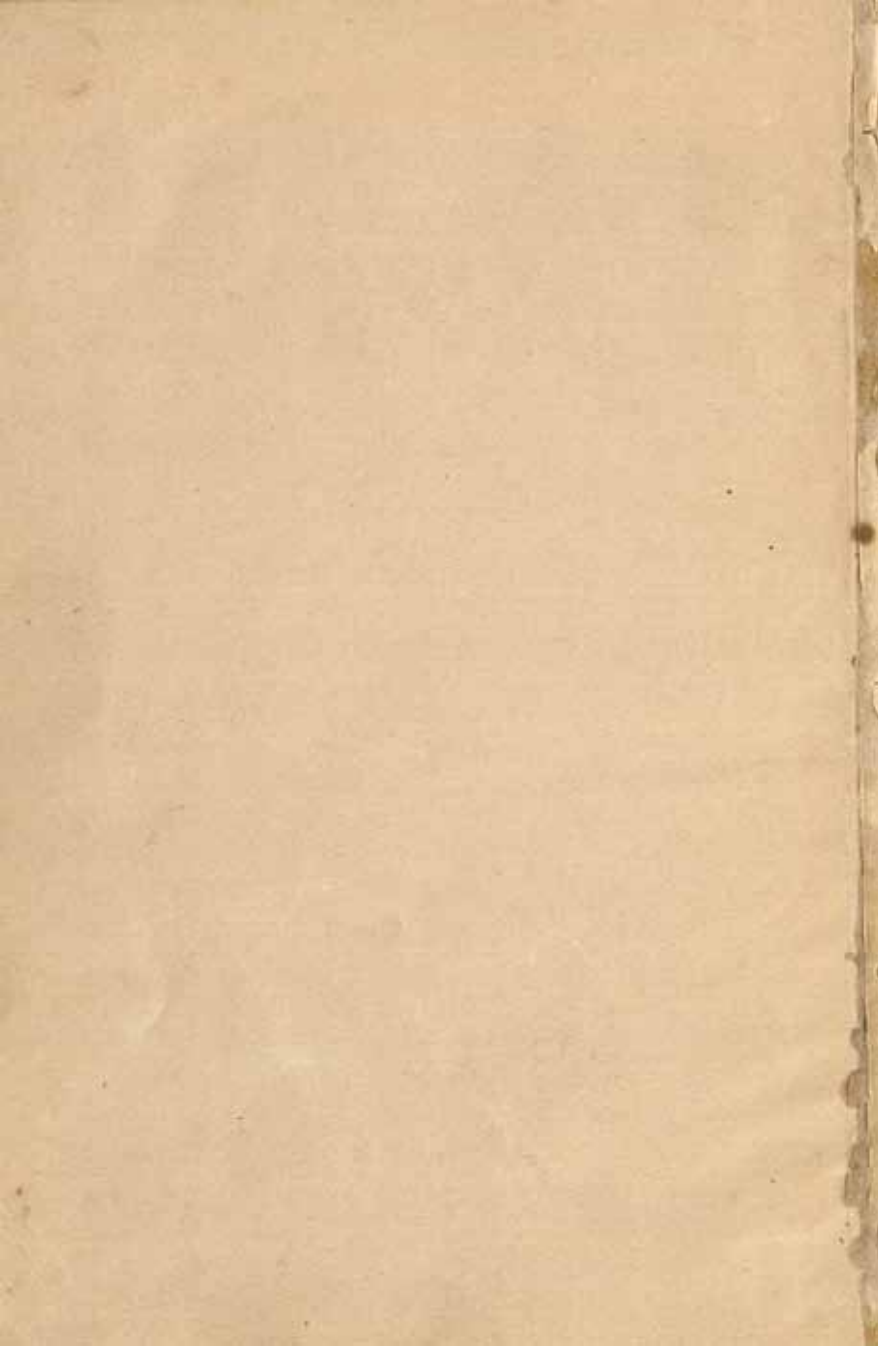
GOVERNMENT OF INDIA  
ARCHÆOLOGICAL SURVEY OF INDIA

CENTRAL  
ARCHÆOLOGICAL  
LIBRARY

ACCESSION NO 41853

CALL No. 394.2695 435 / Pw





राजस्थान भारती प्रकाशन  
*Rajasthani Vrat Kathen*  
**राजस्थानी व्रतकथाएँ**  
**41853**



*Mohmal Purohit*  
 सम्पादक तथा अनुवादक  
 मोहनलाल पुरोहित



394.2695435

*Pur*

प्रकाशक

सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट  
*Sachal Rajasthani Research Institute*  
 बीकानेर  
*Bikaner*



प्रकाशक

साद्वल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट

बीकानेर ( राजस्थान )

प्रथम संस्करण

सन् १९६१

मूल्य ३) ५० नया पैसा

CENTRAL ARCHAEOLOGICAL  
LIBRARY, NEW DELHI.

Acc. No. 41853

Date 2.2.1965

Call No. 394.2695435/Pwr

मुद्रक

संगीत प्रेस, हाथरस ( उ० प्र० )

## अनुक्रमणिका

१-वैसाख महातम री कथा	...	१
२-श्री नृसिंह चवदश वृत री कथा	...	१६
३-श्री काजली तीजरो कथा	...	२३
४-जन्माष्टमी री "	...	४३
५-रिषि पंचमी री "	...	५७
६-अनन्त देवता री "	...	६४
७-दीपमालिका री "	...	७०
८-कातीवदि एकादसी री "	...	७८
९-सीव रात्री री "	...	८४
१०-होली री कथा	...	९१
११-फलद्वितीया री कथा	...	९७
१२-बुधाष्टमी री "	...	११२
१३-अगस्त जी री "	...	१२४
१४-चौथ मा सती री "	...	१३५
१५-सोमवती री "	...	१४५
१६-श्री सनीसर जी री कथा	...	१५१

## परिशिष्ट

१-एकादशी ( पद्य )	...	१५६
२-चौथ माता ( गद्य पद्य )	...	१७६
३-रोहिणी व्रत ( जैन )	...	१८५
४-होलिका पर्व री "	...	१९२
५-तुलसी व्रत	...	१९७

६-सट विनायक ( हिन्दी अनु० )	...	२००
७-तुलसी व्रत कथा "	...	२०२
८-सोमवार री " "	...	२०५
९-मंगलवार री " "	...	२०८
१०-बुधवार री " "	...	२१६
११-गुरुवार री " "	...	२२०
१२-शुक्रवार री " "	...	२२७
१३-शनिश्चरवार री " "	...	२३८
१४-रविवार री " "	....	२४३
१५-सूरज के डोरा री कहानी (राज०)	...	२४५
१६-सूरज भगवान् की काणी "	...	२५१
१७-रामबाई और राजबाई री "	....	२५२
१८-तिलक महाराज की काणी "	...	२५४
१९-नाग पंचमी री कथा "	...	२५६
२०-संपदा के डोरै री कहानी "	...	२६३
२१-आसमाता री "	...	२७३
२२-बछ्छ बारस री कथा "	...	२७८
२३-गणगौर री कहानी "	...	२७९
२४-गवर री कांणी "	...	२८१
२५-सोमवती अमावस्या की कहानी	...	२८८
२६-सूरज सेटो री	...	२९४
२७-चतुर्थी री कथा	...	२९६

## दो शब्द

भारतीय लोक-जीवन में व्रत और अनुष्ठान का अपना एक विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। यहाँ ऐसा कोई घर नहीं मिलेगा, जहाँ किसी न किसी प्रकार का व्रत अथवा अनुष्ठान विधिवत् सम्पन्न न होता हो। वैदिक संहिता, ब्राह्मण, गृह्यसूत्र, पुराण आदि तो इस विषय में विशेष उल्लेखनीय हैं। पौराणिककाल में ये व्रत और अनुष्ठान बड़े ही लोकप्रिय एवं अधिक महत्त्व प्राप्त करने लगे थे। प्रत्येक पुराण में प्रायः इनका विशद् वर्णन हमें देखने एवं पढ़ने को मिलता है।

\* व्रत शब्द का अर्थ होता है—‘किसी बात का पक्का संकल्प, प्रतिज्ञा, आराधना, भक्ति, पुण्य के साधन, उपवासादि नियम विशेष, व्यवस्था-विधि, निदिष्ट अनुष्ठान-पद्धति, यज्ञ, अनुष्ठान एवं कर्म।

वैसे व्रत शब्द का अर्थ भोजन करना भी होता है। किसी पुण्य तिथि आदि के उपलक्ष में अथवा किसी निश्चित कामना के वशीभूत होकर स्वेच्छापूर्वक सुख-सम्पत्ति, पुण्य, संतान आदि की प्राप्ति के लिए नियमित रूप से पूर्ण विधान के साथ उपवास या भोजन करना व्रत कहलाता है। निर्जल, निराहार, केवल फलाहार, दुग्ध-पान, एकान्त भोजन, एक ही समय का भोजन आदि अनेक प्रकार के नियम इन व्रत एवं अनुष्ठानों में हमें देखने को मिलते हैं। इस प्रकार के व्रत एक दिन के लिए या अनेक दिनों के लिए भी होते हैं।



व्रत का निरुक्त में सामान्य अर्थ 'कर्म' बतलाया गया है। यह कर्ता को शुभ अथवा अशुभ कर्मों से बाँध लेता है, अतः इसे व्रत कहा गया है। वैसे यदि देखा जाय तो व्रत का प्रधान उद्देश्य आत्मशुद्धि तथा परमात्म-चिन्तन से है। संसार में नाना-प्रकार के भ्रमों में फँसे रहने के कारण परमात्मा का चिन्तन एवं भगवद्-भजन का अवसर हमें नहीं के बराबर ही मिलता है। व्रत के दिन यह इस प्रकार का अवसर आप से आप सुलभ हो जाता है। व्रत में उपवास का विधान रखा जाता है। केवल अन्न आदि के परित्याग से ही उपवास की पूर्ति नहीं हो जाती। उपवास का शाब्दिक अर्थ है 'उप समीपे वासः' समीप में रहना अर्थात् अपने इष्टदेव के पास रहना। क्योंकि सच्चा उपवास तो परमात्मा का चिन्तन करते हुए उनके साथ तन्मय होकर रहना है। इसके लिए अन्न-पान का त्याग भी आवश्यक बतलाया गया है। कारण, निराहार रहने से प्राणी विशेष की विषय-वासनाएँ स्वयं अपने आप ही निवृत्त हो जाती हैं।

भारतवर्ष का संसार के देशों में अपनी निजी संस्कृति एवं सभ्यता को लेकर विशेष स्थान रहा है। यह देश मूल में धर्म-मीरु रहता आ रहा है। यहाँ के लगभग सभी कार्यों में धर्म का पुट अथवा यों कह सकते हैं कि धर्म की यहाँ प्रधानता रही है। अतः ऐसी स्थिति में यहाँ के उत्सव, जयन्तियाँ, त्यौहार, व्रत, अनुष्ठान आदि सभी का धार्मिक स्वरूप ग्रहण कर लेना कोई आश्चर्यजनक नहीं माना जा सकता। व्रत विशेष रूप से धार्मिक अनुष्ठान की कोटि में ठहराए जा सकते हैं। अतः इनके लिए कुछ विधि-विधान, नियम भी पालने होते हैं।

व्रत करने का वैसे तो स्त्री-पुरुष तथा सभी प्रकार के वर्णाश्रम वालों को अधिकार है। फिर भी बालिकाओं के लिए

भिन्न प्रकार के व्रत बतलाए गए हैं, तो सौभाग्यवती युवतियों के लिए विशेष प्रकार के एवं विधवाओं के लिए विशेष नियमों से आचरण करने की व्यवस्था वाले व्रत बतलाए गए हैं । कुछ व्रत ऐसे भी हैं जिन्हें बालिकाएँ, सौभाग्यवतियाँ एवं विधवाएँ आदि सभी को एक-सा करने का अधिकार है ।

यह हम पूर्व ही उल्लेख कर चुके हैं कि हमारा देश धर्म-प्रधान देश रहा है । धर्म और व्रत का सम्बन्ध बड़ा ही गहरा है । ऐसा शायद ही कोई धर्म होगा जिसमें व्रत के आचरण को लेकर उसके महत्त्व पर प्रकाश न डाला गया हो । व्रत का ठीक-ठीक निर्णय करने के लिए जितना आग्रह हमारे धर्म में दिखाया गया है, उतना हम समझते हैं किसी अन्य धर्म में शायद ही होगा । अतः ये व्रत और अनुष्ठान हमारे धर्म-शास्त्र के शाश्वत अंग प्रायः बन गए हैं ।

प्रस्तुत पुस्तक राजस्थानी व्रतकथाओं को लेकर है ।

प्रथम सोलह कथाओं का हिन्दी में अनुवाद किया गया है, शेष कथाओं का अनुवाद समयाभाव के कारण नहीं हो सका । पाठक देखेंगे हमने अपनी ओर से हर प्रकार का प्रयास किया है कि सभी प्रकार की व्रतकथाएँ इस संग्रह में स्थान पा सकें । इसी दृष्टिकोण से हमने जैन-समाज की भी व्रतकथाओं को नमूने के तौर पर यहाँ स्थान देना अपना कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व समझा है ।

राजस्थान में प्रचलित सात वारों की व्रत-कथाएँ भी हमने इसमें ली हैं । इस विषय में हमारे कुछ साथियों का ऐसा आग्रह रहा-ये कथाएँ हिन्दी भाषा में रहें तो ठीक रहेगा । अपने विद्वान् साथियों के आग्रह को टालना हमने किसी भी प्रकार से उचित

नहीं समझा । अतः 'सात वारों' की कथाएँ हमने हिन्दी रूपान्तर में दी हैं । अतिरिक्त कुछ प्रसिद्ध व्रतकथाएँ हमने श्रद्धेय पं० श्री भावरमल जी शर्मा द्वारा सम्पादित भी ली हैं । श्री पंडित जी के हम बड़े ही आभारी हैं ।

राजस्थानी संस्कृति, भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग है । पाठक देखेंगे, हमारी इन व्रत कथाओं में भी भारतीय व्रतकथाओं के सभी तत्त्व विद्यमान हैं, फिर भी राजस्थान की अपनी विशेषता, उसके भौगोलिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक कारणों को लेकर रही है । अतः भाषा की दृष्टि से एवं स्थानीय विशेषताओं के कारण ये व्रत-कथाएँ भारतीय लोकसाहित्य के एक विशेष अध्ययन एवं पठन-पाठन का विषय बन जाती हैं । अभिप्रायों का जहाँ तक प्रश्न है, वे तो राजस्थानी व्रतकथाओं के बड़े ही अनोखे एवं विचित्र हैं । मेरा अपना ऐसा ख्याल है, कुछ अभिप्राय तो ऐसे हैं जिन्हें अपने ही किस्म के कारण 'टाइप' की संज्ञा दी जा सकती है ।

व्रत एवं त्योहार क्यों हैं ? इनका उद्गम कैसे रहा । आज हमारी सभी सभ्य किंवा असभ्य कहलाने वाली जातियों में, यहाँ तक कि आदिवासियों में भी किसी न किसी रूप में व्रत अथवा त्योहार इतनी लोकप्रियता और आदर से क्यों देखा जा रहा है ? यह सब एक शोध के विद्यार्थी के लिए विचारणीय प्रश्न है । हम यहाँ इस विषय में इतनी गहराई में न जाकर उन्हीं विद्वानों पर इसे छोड़ देते हैं । फिर भी यह तो निर्विवाद सत्य है कि प्रत्येक जाति के व्रत और त्योहार उस समाज और जाति विशेष का इतिहास, उसकी सभ्यता, संस्कृति के दर्पण और उसकी परम्परा के परिचायक हैं । व्रतों और त्योहारों को देखकर इस बात का सहज ही में अनुमान लगाया जा सकता है कि उस जाति में कितना ओज और शौर्य है । इनके आधार पर



ऐतिहासिक स्मृति तो बनी रहती है साथ ही ये जीवन के निर्माण में भी सहायक सिद्ध होते हुए प्रतीत होते हैं ।

राजस्थान के निवासी अपनी संस्कृति, प्राचीन सभ्यता और आचार-विचार को इतनी शताब्दियों के परिवर्तन के उपरान्त भी आज तक क्यों कायम रख सके ? इस पर गहराई से विचार करने पर हमें इसके मूल में व्रतों और त्योहारों का तत्त्व छिपा हुआ दृष्टिगोचर होता है । अस्तु

अंत में इतना और निवेदन करना चाहते हैं कि इस संग्रह को प्रस्तुत करने में जिन-जिन विद्वान् साथियों का सहयोग हमें प्राप्त रहा है-हम उन सभी के प्रति कृतज्ञ हैं । श्रद्धेय श्री अगरचंद जी नाहटा के हम बड़े ही आभारी हैं । लेखक ने श्री अभय जैन ग्रंथालय एवं श्री नाहटा जी के व्यक्तिगत संग्रह का हृदय खोलकर उपयोग किया है । श्री अनूप संस्कृत लाइब्रेरी एवं वहाँ के विशेष अधिकारी महोदय श्री बाबूराम जी सक्सेना के अमूल्य सहयोग को लेखक नहीं भूल सकता । आपने अपना अमूल्य समय देकर हमारे कार्य को आगे बढ़ाया है । भाई श्री मुरलीधर जी व्यास तो विशेष धन्यवाद के पात्र हैं । आपके अमूल्य सुझाव एवं सहयोग के बिना इस संग्रह का प्रस्तुत होना भी सम्भव नहीं हो सकता था ।

इस पुस्तक की भाषा का जहाँ तक प्रश्न है, कथाएँ सम्भवतः सभी इलाकों की ली गई हैं । अतः भाषा का एकीकरण, उसकी बरतनी, उसकी शैली आदि में हमने किसी भी प्रकार का हेर-फेर अपनी ओर से नहीं किया है-उसे मूल रूप में रखना उचित समझा है ।

मोहनलाल पुरोहित





## प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १९४४ में बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्री के० एम० पणिकर महोदय की प्रेरणा से, साहित्यानुरागी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुर द्वारा संस्कृत, हिन्दी एवं विशेषतः राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वाङ्गीण विकास के लिये की गई थी।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानों एवं भाषाशास्त्रियों का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य हमें प्रारम्भ से ही मिलता रहा है।

संस्था द्वारा विगत १६ वर्षों से बीकानेर में विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियाँ चलाई जा रही हैं, जिनमें से निम्न प्रमुख है—

### १. विशाल राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश

इस सम्बन्ध में विभिन्न स्रोतों से संस्था लगभग दो लाख से अधिक शब्दों का संकलन कर चुकी है। इसका सम्पादन आधुनिक कोशों के ढंग पर, लंबे समय से प्रारम्भ कर दिया गया है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द सम्पादित हो चुके हैं। कोश में शब्द, व्याकरण, व्युत्पत्ति, उसके अर्थ और उदाहरण आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएं दी गई हैं। यह एक अत्यन्त विशाल योजना है, जिसकी सन्तोषजनक क्रियान्विति के लिये प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है। आशा है राजस्थान सरकार की ओर से, प्राणित द्रव्य-साहाय्य उपलब्ध होते ही निकट भविष्य में इसका प्रकाशन प्रारम्भ करना सम्भव हो सकेगा।

### २. विशाल राजस्थानी मुहावरा कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द भंडार के साथ मुहावरों से भी समृद्ध है। अनुमानतः पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग में लाये जाते हैं। हमने लगभग दस हजार मुहावरों का, हिन्दी में अर्थ और राजस्थानी में उदाहरणों सहित प्रयोग देकर सम्पादन करवा लिया है और शीघ्र ही इसे प्रकाशित करने का प्रबन्ध किया जा रहा है। यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम-साध्य कार्य है।

यदि हम यह विशाल संग्रह साहित्य-जगत को दे सके तो यह संस्था के लिये ही नहीं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिये भी एक गौरव की बात होगी ।

### ३. आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का प्रकाशन

इसके अंतर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं:—

१. कळायण, ऋतु काव्य । ले० श्री नानूराम संस्कर्ता ।
२. आभै पटकी, प्रथम सामाजिक उपन्यास । ले० श्री श्रीलाल जोशी ।
३. वरस गांठ, मौलिक कहानी संग्रह । ले० श्री मुरलीधर व्यास ।

‘राजस्थान-भारती’ में भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का एक अलग स्तम्भ है, जिसमें भी राजस्थानी कवितायें, कहानियाँ और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं ।

### ४. ‘राजस्थान-भारती’ का प्रकाशन

इस विरूपात शोधपत्रिका का प्रकाशन संस्था के लिये गौरव की वस्तु है । गत १४ वर्षों से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है । बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एवं अन्य कठिनाइयों के कारण, त्रैमासिक रूप से इसका प्रकाशन संभव नहीं हो सका है । इसका भाग ५ अंक ३-४ ‘डा० लुइजि पित्रो तैस्सितोरी विशेषांक’ बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है । यह अंक एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य सेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है । पत्रिका का अगला ७वां भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है । इसका अंक १-२ राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड़ का सचित्र और वृहत् विशेषांक है । अपने ढंग का यह एक ही प्रयत्न है ।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के संबंध में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन में भारत एवं विदेशों से लगभग ८० पत्र-पत्रिकाएं हमें प्राप्त होती हैं । भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों में भी इसकी मांग है व इसके ग्राहक हैं । शोधकर्ताओं के लिये ‘राजस्थान-भारती’ अनिवार्यतः संग्रहणीय शोध-पत्रिका है । इसमें राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्व, इतिहास, कला आदि पर लेखों के अतिरिक्त संस्था के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा, श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री अमरचंद नाहटा की वृहत् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है ।



## ५. राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान, सम्पादन एवं प्रकाशन

हमारी साहित्य-निधि की प्राचीन, महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों को सुरक्षित रखने एवं सर्वसुलभ कराने के लिये सुसम्पादित एवं शुद्ध रूप में मुद्रित करवा कर उचित मूल्य में वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। संस्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान और प्रकाशन संस्था के सदस्यों की ओर से निरंतर होता रहा है, जिसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

### ६. पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई संस्करण प्रकाश में लाये गये हैं और उनमें से लघुतम संस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अंश 'राजस्थान-भारती' में प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध संस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्व पर कई लेख राजस्थान-भारती में प्रकाशित हुए हैं।

७. राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखां) की ७५ रचनाओं की खोज की गई। जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान-भारती' के प्रथम अंक में प्रकाशित हुई है। उनका महत्वपूर्ण ऐतिहासिक 'काव्य क्यामरासो' तो प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

८. राजस्थान के जैन संस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निबंध राजस्थान-भारती में प्रकाशित किया जा चुका है।

९. मारवाड़ क्षेत्र के ५०० लोकगीतों का संग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एवं जैसलमेर क्षेत्र के सैकड़ों लोकगीत, घूमर के लोकगीत, बाल लोकगीत, लोरियाँ, और लगभग ७०० लोक कथाएँ संग्रहीत की गई हैं। राजस्थानी कहावतों के दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत, पावूजी के पवाड़े और राजा भरधरी आदि लोक काव्य सर्वप्रथम 'राजस्थान-भारती' में प्रकाशित किए गए हैं।

१०. बीकानेर राज्य के और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखों का विशाल संग्रह 'बीकानेर जैन लेख संग्रह' नामक बृहत् पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुका है।

११. जसवंत उद्योत, मुंहता नैणसी री ख्यात और अनोखी ग्रान जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथों का सम्पादन एवं प्रकाशन हो चुका है।

१२. जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के सचिव कविवर उदयचन्द भंडारी की ४० रचनाओं का अनुसन्धान किया गया है और महाराजा मानसिंहजी की काव्य-साधना के सम्बन्ध में भी सबसे प्रथम 'राजस्थान भारती' में लेख प्रकाशित हुआ है।

१३. जैसलमेर के अप्रकाशित १०० शिलालेखों और 'भट्टि वंश प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रंथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं।

१४. बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रंथों का अनुसन्धान किया गया और ज्ञानसागर ग्रंथावली के नाम से एक ग्रंथ भी प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६३ लघु रचनाओं का संग्रह प्रकाशित किया गया है।

१५. इसके अतिरिक्त संस्था द्वारा—

(१) डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी, समयसुन्दर, पृथ्वीराज और लोक-मान्य तिलक आदि साहित्य-सेवियों के निर्वाण-दिवस और जयन्तियां मनाई जाती हैं।

(२) साप्ताहिक साहित्य गोष्ठियों का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है, इसमें अनेकों महत्वपूर्ण निबंध, लेख, कविताएं और कहानियां आदि पढ़ी जाती हैं, जिससे अनेक विषय नवीन साहित्य का निर्माण होता रहता है। विचार विमर्श के लिये गोष्ठियों तथा भाषणमालाओं आदि के भी समय-समय पर आयोजन किये जाते रहे हैं।

१६. बाहर से ख्याति प्राप्त विद्वानों को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है। डा० बामुदेवशरण अग्रवाल, डा० कैलाशनाथ काटजू, राय श्रीकृष्णदास, डा० जी० रामचन्द्रम्, डा० सत्यप्रकाश, डा० डब्लू० एलेन, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० तिबेरिओ-तिबेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानों के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण हो चुके हैं।

गत दो वर्षों से महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ आसन की स्थापना की गई है। दोनों वर्षों के आसन-अभिषेकानों के अभिभाषक क्रमशः राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड

विद्वान् श्री मनोहर शर्मा एम० ए०, विसाऊ ग्रीर पं० श्रीलालजी मिश्र एम० ए०, हंडलोट थे ।

इस प्रकार संस्था अपने १६ वर्षों के जीवनकाल में, संस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरंतर सेवा करती रही है । आर्थिक संकट से ग्रस्त इस संस्था के लिये यह सम्भव नहीं हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती, फिर भी यदा कदा लड़खड़ा कर गिरते पड़ते इसके कार्यकर्त्ताओं ने 'राजस्थान-भारती' का सम्पादन एवं प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की बाधाओं के बावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरंतर चलता रहे । यह ठीक है कि संस्था के पास अपना निजी भवन नहीं है, न अच्छा संदर्भ पुस्तकालय है, और न कार्यालय को सुचारु रूप से सम्पादित करने के समुचित साधन ही हैं; परन्तु साधनों के अभाव में भी संस्था के कार्यकर्त्ताओं ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश में आने पर संस्था के गौरव को निश्चित ही बढ़ा सकने वाली होगी ।

राजस्थानी-साहित्य-भंडार अत्यन्त विशाल है । अब तक इसका अल्पसंख्यक अंश ही प्रकाश में आया है । प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलभ्य एवं अनर्थ रत्नों को प्रकाशित करके विद्वज्जनों और साहित्यिकों के समक्ष प्रस्तुत करना एवं उन्हें सुगमता से प्राप्त करना संस्था का लक्ष्य रहा है । हम अपनी इस लक्ष्य पूर्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढ़ता के साथ अग्रसर हो रहे हैं ।

यद्यपि अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तकों के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था, परन्तु अर्थभाव के कारण ऐसा किया जाना सम्भव नहीं हो सका । हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक संशोध एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम मन्त्रालय (Ministry of scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास की योजना के अंतर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिये १५०००) २० इस मद में राजस्थान सरकार को दिये तथा राजस्थान सरकार द्वारा उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल ३००००) तीस हजार की सहायता, राजस्थानी साहित्य के सम्पादन-प्रकाशना



हेतु इस संस्था को इस वित्तीय वर्ष में प्रदान की गई है; जिससे इस वर्ष निम्नोक्त ३१ पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है।

- |   |  |
|---|--|
| १. राजस्थानी व्याकरण—                   | श्री नरोत्तमदास स्वामी                               |
| २. राजस्थानी गद्य का विकास (शोध प्रबंध) | डा० शिवस्वरूप शर्मा अचल                              |
| ३. अचलदास खीची की वचनिका—               | श्री नरोत्तमदास स्वामी                               |
| ४. हमीरायण—                             | श्री भंवरलाल नाहटा                                   |
| ५. पद्मिनी चरित्र चौपई—                 | " " "  |
| ६. दलपत विलास—                          | श्री रावत सारस्वत                                    |
| ७. डिगड़ गीत—                           | " " "  |
| ८. पंवार वंश दर्पण—                     | डा० दशरथ शर्मा                                       |
| ९. पृथ्वीराज राठोड़ ग्रंथावली—          | श्री नरोत्तमदास स्वामी और<br>श्री बदरीप्रसाद साकरिया |
| १०. हरिरस—                              | श्री बदरीप्रसाद साकरिया                              |
| ११. पोरदान लालस ग्रंथावली—              | श्री अग्रचंद नाहटा                                   |
| १२. महादेव पार्वती वेलि—                | श्री रावत सारस्वत                                    |
| १३. सीताराम चौपई—                       | श्री अग्रचंद नाहटा                                   |
| १४. जैन रासादि संग्रह—                  | श्री अग्रचंद नाहटा और<br>डा० हरिवल्लभ भायाणी         |
| १५. सद्यवत्स वीर प्रबंध—                | प्रो० मंजुलाल मजूमदार                                |
| १६. जिनराजमूरि कृतिकुसुमांजलि—          | श्री भंवरलाल नाहटा                                   |
| १७. विनयचंद कृतिकुसुमांजलि—             | " " "  |
| १८. कविवर घर्मवर्द्धन ग्रंथावली—        | श्री अग्रचंद नाहटा                                   |
| १९. राजस्थान रा दूहा—                   | श्री नरोत्तमदास स्वामी                               |
| २०. वीर रस रा दूहा—                     | " " "  |
| २१. राजस्थान के नीति दोहे—              | श्री मोहनलाल पुरोहित                                 |
| २२. राजस्थानी व्रत कथाएँ—               | " " "  |
| २३. राजस्थानी प्रेम कथाएँ—              | " " "  |
| २४. चंदायन—                             | श्री रावत सारस्वत                                    |

२५. भडुली—	श्री अग्ररचंद नाहटा और मःविनय सागर
२६. जिनहर्ष ग्रंथावली	श्री अग्ररचंद नाहटा
२७. राजस्थानी हस्त लिखित ग्रंथों का विवरण	” ”
२८. दम्पति विनोद	” ”
२९. हीयाली—राजस्थान का बुद्धिवर्धक साहित्य	” ”
३०. समयसुन्दर रासत्रय	श्री भंवरलाल नाहटा
३१. दुरसा आढा ग्रंथावली	श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जंसलमेर ऐतिहासिक साधन संग्रह ( संपा० डा० दशरथ शर्मा ), ईशरदास ग्रंथावली ( संपा० बदरीप्रसाद साकरिया ), रामरासो ( प्रो० गोबर्द्धन शर्मा ), राजस्थानी जैन साहित्य ( ले० श्री अग्ररचंद नाहटा ), नागदमण ( संपा० बदरीप्रसाद साकरिया ) मुहावरा कोश ( मुरलीधर व्यास ) आदि ग्रंथों का संपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नहीं हो रहा है ।

हम आशा करते हैं कि कार्य की महत्ता एवं गुरुता को लक्ष्य में रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमें अवश्य प्राप्त हो सकेगी जिससे उपरोक्त संपादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन संभव हो सकेगा ।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षा विकास सचिवालय के आभारी हैं, जिन्होंने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रांट-इन-एड की रकम मंजूर की ।

राजस्थान के मुख्य मंत्री माननीय मोहनलालजी सुखाड़िया, जो सौभाग्य से शिक्षा मंत्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एवं पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं, का भी इस सहायता के प्राप्त कराने में पूरा-पूरा योगदान रहा है । अतः हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रगट करते हैं ।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते हैं, जिन्होंने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया, जिससे हम इस वृहद् कार्य को सम्पन्न करने में समर्थ हो सके । संस्था उनकी सदैव ऋणी रहेगी ।



इतने थोड़े समय में इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थों का संपादन करके संस्था के प्रकाशन-कार्य में जो सराहनीय सहयोग दिया है, इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादकों व लेखकों के अत्यन्त आभारी हैं ।

अनूप संस्कृत लाइब्रेरी और अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर, स्व० पूर्णचन्द्र नाहर संग्रहालय कलकत्ता, जैन भवन संग्रह कलकत्ता, महावीर तीर्थक्षेत्र अनुसंधान समिति जयपुर, ओरियंटल इन्स्टीट्यूट बड़ोदा, भांडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, खरतरगच्छ बृहद् ज्ञान भण्डार बीकानेर, एशियाटिक सोसाइटी बंबई, आत्माराम जैन ज्ञानभंडार बड़ोदा, मुनि पुण्यविजयजी, मुनि रमणिक विजयजी, श्री सीताराम लालस, श्री रविशंकर देराश्री, पं० हरिदत्तजी गोविंद व्यास जैसलमेर आदि अनेक संस्थाओं और व्यक्तियों से हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रंथों का संपादन सम्भव हो सका है । अतएव हम इन सबके प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना परम कर्तव्य समझते हैं ।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थों का सम्पादन श्रमसाध्य है एवं पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है । हमने अल्प समय में ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक है । गच्छतः स्खलनं क्वपि भवत्येव प्रमाहतः, हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः ।

आशा है विद्वद्बृन्द हमारे इन प्रकाशनों का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावों द्वारा हमें लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृतार्थ हो सकेंगे और पुनः मां भारती के चरण कमलों में विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पांजलि समर्पित करने के हेतु पुनः उपस्थित होने का साहस बटोर सकेंगे ।

बीकानेर,  
मार्गशीर्ष शुक्ला १५  
संवत् २०१७  
दिसम्बर ३, १९६०

निवेदक  
लालचन्द कोठारी  
प्रधान-मन्त्री  
सादूल राजस्थानी-इन्स्टीट्यूट  
बीकानेर

# राजस्थानी व्रतकथाएँ

## प्रासङ्गिक विमर्श

# राजस्थानी व्रत कथाएँ

## १-अथ वैशाख महातम री कथा लिखते

श्री नारद उवाच—श्री नारद जी नै राजा अंबरीक पूछै है नै नारद जी कहै छै—तौ सारीखौ राजा धर्मावत कोई नहीं। आ धर्मकथा तूं हीज पूछै। और तौ कथा अनेक धर्म-अधर्म री छै पण सांभळ। एक कथा तौनै वळै कहूँ राजा तूं सुण। तोनै वैशाख महातमरी कथा कहूँ हूँ। श्री नारद उवाच—एक सतयुग मध्यै एक ब्राह्मण हुतौ, सो श्री परमेश्वर परायण हुतो। तिण ब्राह्मण फिर फिर तीर्थ यात्रा कीधी। ब्रह्मचारी थकौ तपस्या करै छै—सो तिण रौ तेज तपस्या रै बळ करतै डीलरी क्रांति सूर्य सारीखी छै। एकण दिन तीरथां नूँ जावतौ थौ सो उठै रोही-उजाड़ आई,

## वैशाख के महात्म्य की कथा

नारद जी से राजा अंबरीक पूछते हैं और नारद जी कहते हैं, तुम्हारे समान धर्मात्मा राजा और कोई नहीं। यह धर्म-कथा तुम ही पूछते हो। और तो धर्म और अधर्म की अनेकों कथाएँ हैं; लेकिन सुनो! एक कथा तुम्हें फिर और कहता हूँ, हे राजन् तुम सुनो! तुम्हें वैशाख महात्म्य की कथा कहता हूँ। श्री नारद जी कहते हैं—सतयुग में एक ब्राह्मण था वह श्री भगवान् का बड़ा भक्त था। उस ब्राह्मण ने धूम-धूम कर तीर्थ-यात्राएँ कीं। ब्राह्मण होकर तपस्या करता है—उसका तेज तपस्या के बल से महान् है और शरीर की क्रांति सूर्य के तेज के समान है।

एक दिन ( वह ) तीर्थों को जा रहा था सो वहीं ( रास्ते में ) बयावान जंगल आगया। उस घनघोर जंगल में एक बड़ का पेड़ है।



तिण रोही में एक वटरी वृक्ष है। तिण नीचे पांच प्रेत बैठा है। सो उवै किसड़ा कहै, डील मां काळा भूत है, दांत तौ मोटा है, केस तौ ऊभा है, बास भूंडी मुँह मांदा आवै है। पेट है सो वासं स्यूं लाग रह्यो है। भूख प्यास रा मारिया पडिया है। तिण समै ब्राह्मण चलायौ आवै है। प्रेत, आदमी आवतौ देखनै साम्हौ आवै, दौडिया। तरै ब्राह्मण प्रेता साम्हौ जोयौ। तरै प्रेत साहमां दौड़ता देख्या। तरै ब्राह्मण ऊभौ रहियौ, देखतै प्रेत जोड़ रह्या। ब्राह्मण री तपस्या रौ तेज सबळ है। तरै अळगौ ऊभो रह्यो। तरै उवै पांचे जणा बोलाया, थै कुंण छौ ? तरै ब्राह्मण बोलियौ, हूँ ब्राह्मण। तीर्थ गमन करन जाऊं छूं। पण थै कुंण छै ? थांहरौ काहु विरतांत छै ? तरै प्रेतां कखौ—म्हैं पिसाच योनि प्रेत छां। म्हौ भूंडी कमाई कीधी छै तिण सूं म्हैं भूख, तिरस रौ संकट सहां छां। संकट मांहे मरां छां, म्हांरी गत

उसके नीचे पांच प्रेत ( भूत ) बैठे हैं। वे कैसे कहे जाय—शरीर में काले-काले। उनके दांत बड़े-बड़े, केश ( बाल ) उनके खड़े हैं और मुँह में से उनके बड़ी बुरी तरह की दुर्गन्ध आती है। उनका जो पेट है वह पीठ से लग रहा है। वे भूख-प्यास के मारे पड़े हैं। उस समय ब्राह्मण चला आ रहा है। प्रेतों ने आदमी को आता देखकर उसके सामने घाये, दीड़े। तब ब्राह्मण ने प्रेतों के सामने देखा। उसने प्रेतों को दौड़ते हुए देखा। तब ब्राह्मण को वहीं खड़ा देखकर प्रेत उसे देखते रहे। ब्राह्मण की तपस्या का तेज बड़ा प्रबल है। अतः वह अलग दूर खड़ा रहा। तब वे पाँचों बोले—आप कौन हैं ? तब ब्राह्मण बोला—'मैं ब्राह्मण हूँ तीर्थ यात्रा करने जाता हूँ लेकिन आप लोग कौन हैं ? आपका क्या परिचय है ?' तब प्रेतों ने कहा—हम पिसाच योनि के प्रेत हैं। हमने बुरे कर्म किए हैं, इसलिए हम भूख-प्यास का संकट सहन करते हैं। संकट से मर रहे हैं—हमारी कोई गति नहीं है। आप

काई न छै । सो आज म्हैं राज रौ दरसण पायौ छै सो माहरौ निसतारौ आज थै करौ । म्हैं बहुत राजी हुआ । म्हानूँ सुख हुवौ । काया म्हारी बळती थी, सो सुख हुवौ । मांहरी मत भली हुई छै । म्हानूँ सारी खबर पडण ठूक गई । सो ब्राह्मण परमेश्वर छै, नै म्हैं भलाई दरसण थांहरी पायौ । सो म्हारौ उद्धार हुसौ । तरै ब्राह्मण बोलियौ—थै किसा पाप कीधा, तिण सूँ थै प्रेत जोन पाई, सो थै बतावौ । तरै पहलौ प्रेत बोलियौ, म्हैं पंचा देशमें पूर्व जन्म ब्राह्मण मारियौ, एक ब्राह्मण री हत्या लागी, तिण सूँ प्रेत जोनि पाई । पछै दूसरौ प्रेत बोलियौ, म्हैं गुरु मारियौ थौ, सो गुरु—हत्या लागी, तिण सूँ प्रेत जोनि पाई । पछै तीसरौ प्रेत बोलियौ—हूँ पारकी निंदा हीज करतौ, कूडहीज बोलतौ, कूडा कलंक देतौ, कूड़ी साख भरतौ, लोकारौ मन भांजतौ, सो तिण पाप थी जोनि प्रेतरी पाई । पछै चोथौ प्रेत बोलियौ, हूँ गुरुणी

हमने आपके दर्शन लाभ किए हैं अतः हमारी मुक्ति आप करें । हमें ( आपके दर्शनों से ) बड़ी खुशी हुई । हमें बहुत सुख हुआ । हमारी आत्मा जल रही थी, उसे सुख मिला । हमारी बुद्धि स्वच्छ हुई । हमें सब प्रकार का ज्ञान होने लगा है । आप ब्राह्मण परमेश्वर का रूप हैं हमारा सौभाग्य है जो हमने आपके दर्शन किए । अतः हमारा ( अब ) उद्धार होगा ।

ब्राह्मण तब बोला—आपने कौन से पाप किए थे, जिससे प्रेत योनि आपने प्राप्त की; वह मुझे बतावें । तब पहला प्रेत बोला—मैंने पंचाल देश में पूर्व जन्म में एक ब्राह्मण को मारा था— एक ब्राह्मण की हत्या मुझे लगी, उसी कारण प्रेत योनि मुझे प्राप्त हुई । पीछे दूसरा प्रेत बोला—मैंने गुरु को मारा था, सो गुरु हत्या मुझे लगी, उसी कारण प्रेत योनि प्राप्त हो सकी । फिर तीसरा प्रेत बोला—मैं दूसरे व्यक्तियों की निन्दा ही किया करता था, झूठ बोला करता था, झूठे कलंक दिया करता, झूठी

सूं भूंडी हालतों, कुकरम कीधौ, तिण सूं प्रेत जोनि पाई ।  
 पछै पाचमौ प्रेत छै सो बोलियो, म्हे अस्त्री हत्या कीधी, आ  
 अस्त्री मुई, तिण सूं प्रेत योनि पाई । तरै ब्राह्मण बोलियो, दया  
 कर नै कहै छै-थै साच बोलिया, आपरौ दुख कहौ । तरै  
 विचारियो-इणां रौ उद्धार करणौ । तरै ब्राह्मण है । छै-प्रेतां थै  
 म्हे साथै आवौ । तरै प्रेत ब्राह्मण रै साथै हुवा चालिया जाय छै ।  
 रोही उद्यान पड़ी छै । उठै रोही रै मांहि चालिया जाय छै ।  
 तठै प्रेत आठ बळै उठिया, सो ब्राह्मण नूं खाण नूं दौडिया ।  
 पछै नैडा आया, तरै ब्राह्मण कहौ, थै कुण छौ ? तरै प्रेत कहौ,  
 'म्हे प्रेत छां ।' म्हे थां नूं भखण नूं आया था, पण थारौ  
 तपस्या रौ तेज छै, इसौ सूरज रौ ही तेज न छै तिणसूं म्हे थिकत  
 मौन हुआ छां । थारौ दरसन सूं म्हांरा पाप मूचित होय गया ।  
 दृष्टि निरमळ हुई छै म्हांरी दूरम दूर होय गई छै । हाथ जोड़

---

गवाही दिया करता, लोगों का मन तोड़ा करता ( हतोत्साह करता )  
 सो उसी पाप के कारण प्रेत की योनि प्राप्त की । फिर चौथा प्रेत बोला  
 मैं गुरु पत्नी से दुर्व्यवहार करता, कुकर्म किए, इस कारण प्रेत की  
 योनि प्राप्त की । फिर पांचवां जो प्रेत है वह बोला, मैंने स्त्री हत्या की  
 थी । वह स्त्री मर गई, इस कारण प्रेत की योनि प्राप्त की ।

ब्राह्मण तब दया करके बोला । कहता है-आप लोग सत्य बोले,  
 अपना दुःख कहा । तब सोचा-इनका उद्धार करना चाहिए । तब  
 ब्राह्मण कहता है-प्रेत लोग ! आप मेरे साथ आवें । तब प्रेत ब्राह्मण  
 के साथ होकर चले जा रहे हैं । बयावान जंगल पड़ा है । वहाँ उस  
 जंगल में चले जा रहे हैं । वहाँ आठ प्रेत और फिर उठे । वे ब्राह्मण को  
 खाने को दीढ़े । जब नजदीक आए, तब ब्राह्मण ने कहा, 'आप कौन हैं ?'  
 तब प्रेतों ने कहा, हम प्रेत हैं । हम लोग आपको खाने के लिए आये थे,  
 लेकिन आपकी तपस्या का तेज है-ऐसा तेज तो सूर्य का भी नहीं । हम



आगै ऊभारहि कहै छै, 'सामी, नारायण ! थांहरौ दरसन कियां म्हैं निरमल हुआ छां । म्हानै भली बुद्धि ऊपनी । तरै ब्राह्मण कहै, थै प्रेत कैन प्रकार करने हुआ ?

पहिली तौ प्रेत जाति कही, पछै आपरा नाम कहा, पछै आपरा पापरा नाम कहा सो ब्राह्मण सुणिया । हिवै आपरा पाप कहै छै, ब्राह्मण सुणै छै । प्रेत कहै छै । एक प्रेत कहै-म्हें पहले-जन्म अधर्म कियौ, गरीब नै खोसतौ, लड़तौ, अतीत अभ्यागत सूं लड़बौ करतौ, घर में आवण न देतौ, तरै प्रेत की जोनि पाई । पाछै दूजौ कहै छै, हूँ चोरी जारी करतौ-पाछौ न हुतौ तिण सूं प्रेत जन्म पायौ । पछै तीजौ प्रेत कहै छै, हूँ समरण-भजन, कथा कीरतन करतौ तिणनूँ उथापतौ, तिण सूं प्रेत जन्म पायौ । तरै चौथो प्रेत बोलियौ हूँ निन्दक छौ, आगलारी निन्दा करतौ, तिणसूं कर प्रेत जोनि पाई । पछै पांचमौ प्रेत बोलियौ, हूँ पहली

उसे देखकर चकित मौन हो रहे । आपके दर्शनों से हमारे पाप छूट गये । हमारी दृष्टि निर्मल हुई-हम बहुत दूर की देख सकते हैं ( हमें भविष्य आदि का ज्ञान हो गया है ) हाथ जोड़कर, आगे लड़े होकर कहते हैं-हे स्वामी ! हे नारायण !! आपके दर्शन करने से हम निर्मल हुए हैं । हमें अच्छी बुद्धि उत्पन्न हुई ।

तब ब्राह्मण ने कहा-आप प्रेत किस कारण से हुए । पहले तो प्रेतों ने अपनी जाति बतलाई, फिर अपने नाम बताये, सो सभी ब्राह्मण ने सुने । अब अपने पाप कहते हैं । एक प्रेत कहता है-मैंने पहले जन्म में अधर्म किए-गरीबों को लूटा-खसोटा करता, उनसे लड़ता, अतिवि-अभ्यागतों से लड़ता रहता, उन्हें घर में नहीं आने देता, इसलिए प्रेत-योनि प्राप्त की । तब दूसरा कहता है-मैं चोरी-जारी किया करता, इस कार्य से कभी मुँह नहीं मोड़ा, इसलिए प्रेत का जन्म पाया । तब तीसरा प्रेत कहता है-मैं उस व्यक्ति को कष्ट दिया करता जो भक्तवत्



जन्म नास्तीक हतौ । कोई भली बुरी बात करतौ तिण नू हूँ नास्तीक करतौ । तिणसूँ-म्हें प्रेत जन्म पायौ । पछै छठौ प्रेत कहै छै-म्हें घर किण ही रौ भलों न चाहतौ, बुरौ चितवंतौ, तिण सूँ प्रेत जोनि पाई । पछै सातमौ प्रेत कहै छै, म्हें भलों काम कोई कीन्हो नहीं, तिणसूँ प्रेत जन्म पायौ । पछै आठवां प्रेत कहै छै-म्हें पूर्व जन्म ब्राह्मण संताया, तिण पाप सूँ प्रेत जन्म पायो ।

तरै ब्राह्मण कह्यौ, थै काहू खावौ छौ ? थै ३० रोई में रहो छौ, किण भांति जीवौ छौ, पग उभरांणा छौ, कांटा घणा, सो थै उभरांणा फिरौ छौ । तरै प्रेत बोलिया-म्हें खावां-पीवां सो आप आगै कासूँ कहा छां, पण कह्यौ हीज चाहिजै ।

तरै प्रेत कहै छै-जिणरा घर में बहारौ भाड़ौ न थै, चौको पोतौ न दीजै, पाणी न छांणै, दोपहर हांडी चढ़ावै, तिण रै घरमें भोजन म्हें करां छां । जिण री हांडी अथवा ढाकणी खांडी होवै,

भजन, कीर्तन, कथा आदि किया करता । इसी कारण प्रेत का जन्म पाया । तब चौथा प्रेत बोला-मैं निदक था । हर किसी की निंदा करता, इस कारण प्रेत की योनि पाई है । इसके बाद पांचवां प्रेत बोला-मैं पहले जन्म का नास्तिक था । कोई (व्यक्ति) अच्छी अथवा बुरी बात करता, तो उसे मैं नास्तिक कहकर काट दिया करता । इस कारण मैंने प्रेत का जन्म पाया । इसके बाद छठा प्रेत कहता है-मैं किसी के भी घर का भला नहीं चाहता था; बुरा ही सोचा करता इस कारण प्रेत की योनि पाई है । फिर सातवां प्रेत कहता है-मैंने अच्छा कोई काम किया नहीं, इस कारण प्रेत का जन्म पाया, इसके बाद आठवां प्रेत कहता है-मैंने पूर्व जन्म में ब्राह्मणों को सताया; इस पाप के कारण प्रेत जन्म पाया ।

तब ब्राह्मण ने कहा-आप लोग क्या खाते हैं ? आप लोग जंगल में रहते हैं, किस प्रकार जीवित रहते हैं । आपके पैरों में जूती तक नहीं हैं

तिण रै घरां रौ म्हें खावां पीवां छां। जिण रा घर में देवता न पूजै, सिनान कदैई न करै, मांचौ विछायौ रहण देवै, आथण तांई विछायौ रहे नै उठावै नही, तिणरै घर में म्हें खावा-पीवां छां। उवारै घरां म्हें रहां छां, उठै म्हांरौ वासौइज छै। वासण इसणक न धौवै, यूं ही खावै, यूं हीज पीवै, महा-असुभ असुच स्थान मांहै म्हें रहां छां। सो इसी बात म्हें लाज मरां छां। भिठ म्हांरौ खाधौ पीधौ भिठ छै। इतरी बात कही प्रेत हाथ जोड़ने ऊभा रह्या, पछै प्रेत कहै छै-म्हांरौ उद्धार थां सूं होसी, तरै प्रेत पणौ छूट सी।

तरै ब्राह्मण कहै-हे वैशाख रौ मास आयौ छै, सो हूँ रेवा जी में स्नान करन जाऊं छूं, सो थे इठैईज उभा रहौ, उधार कर सूं। थे पापरी बात साची कही, थोहरौ नाम जाणु छूं सो थांहरी वीनती मधूसूदन जी सूं कर सूं। तरै उवै प्रेत आठैई उठै ऊभा

यहां कांटे बहुत हैं; आप बिना छूती के उधाड़े पैरों कंसे भटका करते हैं। तब प्रेत बोले-हम लोग जो कुछ खाते-पीते हैं, वह आपके सामने किस प्रकार वर्णन कर सकते हैं ? लेकिन फिर भी आप से तो कहना ही चाहिए !

तब प्रेत कहते हैं-जिस घर में भाहू आदि न दिया जाय, ( चूल्हे ) को नीपा-पीता न जाय, पानी जहां छानकर नहीं पीया जाय, दुपहर को जाकर रशोई बनावे-हम उन्हीं के घरों में जाकर भोजन करते हैं। जिसकी हांडी अथवा उसकी ढकनी ( भोजन बनाने का मिट्टी का पात्र ) खांडा ( चोड़ी बहुत टूटी हो ) तो उसके घर में हम खाते पीते हैं। जिसके घर में देवताओं की पूजा न हो, स्नान घर के व्यक्ति कभी भी न करते हों, खाट जहाँ हर समय बिछाई ही रहे, संभा तक बिछौना बिछा रहे, उसे उठावे नहीं, उसके घर में हम खाते पीते हैं। उन्हीं लोगों के घर में रहते हैं-वहीं हमारा निवास स्थान रहता है। वर्तनों को घोवे,

रखा नै पांच, प्रेत साथै हालिया । पछै रेवाजी गया । वैशाख में रेवाजी नहाया-सूर्य में खरास छै, ब्राह्मण डाभरा पूतला आठ बनाया, स्तोत्र भणनै उवां प्रेतांरा नाम ले श्री रेवाजी में स्नान कराया उवांरी प्रेत देह छूटी ने बैकुंठ प्राप्ति हुवा । नारद जी कहै-राजा अमरीखनै-वैशाख मास इसड़ो छै, प्रेतांरी देह छूटी माधौजी मधुसूदन जी स्तोत्र भणै, कथा सांभळै नै सांभळायै, तितरा पापरौ खय होवै नै बैकुंठ प्राप्ति हुवै । नारद जी राजा अमरीखनै स्तोत्र सुणावै छै, कहै-हे राजा मासा मांहे वैसाख बड़ौ मास छै, तिणरौ व्रत करै । तिकौ श्री मधुसूदन जी मूरति री सेवा करै नै सनान-संपाडौ कीजै, पछै दान-पुन कीजै, तिण वैसाख रा महातम सूं पूर्वला भवरा पाप मुचित होय, जिण सूं संसारा पाप छूटै, उण वैसाख सूं परम पद पावै, जिण नहाया प्रेत देह छूटी

मांजे नहीं, वैसे ही भोजन करले, वैसे ही पानी पीले, बुरा और अपवित्र स्थान जो है, वहीं हम रहते हैं । सो इस बात से हम लाज मरते हैं । हमारा खाना पीना भ्रष्ट है । इतनी बात कहकर प्रेत हाथ जोड़ कर खड़े रहे । फिर प्रेत कहते हैं-हमारा उद्धार आप से ही होगा, तभी हमारी प्रेत-योनि छूट सकेगी ।

ब्राह्मण तब कहता है-वैशाख का महीना आया है, अतः मैं रेवाजी में स्नान करने जाता हूँ, आप लोग यहीं ठहरे रहें, मैं आपका उद्धार करूँगा । आप लोगों ने पाप की बात (मुझे) सत्य रूप से कही, आपका नाम जानता हूँ, अतः आपकी विनती मधुसूदन जी से करूँगा । तब वे आठों प्रेत वहीं ठहरे रहे और पाँच प्रेत साथ चले । इसके बाद रेवाजी गए । वैशाख में रेवाजी में नहाए-सूर्य में तेज है-ब्राह्मण ने कुश के आठ पूतले बनाये मंत्र पढ़, उन प्रेतों का नाम ले उन्हें रेवाजी में स्नान करवाये, इससे उनकी प्रेत देह छूटी और वे बैकुण्ठ को प्राप्त हुए । नारद कहता है-राजा अमरीक को; वैशाख मास ऐसा है, प्रेत की देह छूटी,



नै देव जोनि पाई, सो इसौ वैशाख मास छै, तिण पुन्य सूं वैकुण्ठ प्राप्ति होवै ।

इति श्री पदम पुराणै वैशाख महात्मे पंचमोऽध्याय ।

( २ )

राजा आ कथा सुण नारद जी नै पूछतौ हुआ—महाराज हूँ पूर्व लै जन्म कुण थो सो बिरतांत कहौ । तरै श्री नारद जी बोलियौ—हे राजा, पूखली जात पूछि जै नहीं; कोई भलौ मानै, कोई बुरौ मानै ।

तरै राजा कहै छै—महाराज, बुरै मानण रो किसो काम छै । राज-मोनुं कहौ हूँ 'पुन्य किसै सुं राजा हुआ; इतरी लिखमी रो धणी हुआ छुं' । तरै नारद बोलियौ—राजा तुं पूर्वलै भव जात रो सोनार थो । थारी असतरी वेस्या थी । सो तुंसो अति सरूप थी । तुं सोनार थो । थारै माया घणी थी, अर उवा वेस्या बड़ी

माधव जी मधुसूदन जी का स्रोत पढ़े, कथा सुने, व कथा सुनाए, उतने ही पापों का क्षय हो वैकुण्ठ की प्राप्ति हो । राजा श्रम्वरीक को नारद जी स्रोत सुनाते हैं । कहते हैं—महीनों में वैशाख का महीना सबसे बड़ा है, उसका व्रत किया करो । इसलिए श्री मधुसूदन जी की मूर्ति की सेवा करे, एवं स्नान आदि करे, पीछे दान पुण्य करे, इस वैशाख के महात्म्य से पूर्वजन्म के पाप छूट जायें, इससे संसार के पापों से छुटकारा पावे (मिले), इसी वैशाख से परमपद को प्राप्त हो, जिसके नहाने से प्रेत देह से छुटकारा हो देव योनि प्राप्त हुई, सो इस प्रकार का वैशाख का महीना है—उस पुण्य से वैकुण्ठ की प्राप्ति हो ।

इस प्रकार श्री पदम पुराण की वैशाख महात्म का पाँचवाँ अध्याय समाप्त—

राजा बोला । राजा यह कथा सुनो, (राजा) नारद जी से यह कथा पूछता हुआ कहने लगा—महाराज, मैं पूर्वजन्म में कौन था, वह वृत्तान्त

धर्मात्मा थी। सो वेश्या देह रै आवती कथा एक चित होय नै सुण ती, दाण-पुण्य करती, गरीब गुरवा नूँ पइसौ देती, नै धरमरी ईछना करती। यूँ करता वैसाख रौ मास आयौ। तरै न्हावण रौ मतौ कियौ। तरै वेश्या सोनार बोलायौ; सोनार रौ नाम देवा हुतौ। वेश्या पचास मुहर सौंपी कह्यौ, तूँ श्री ठाकुरां री मूरत मधुसूदन जी री घड़ल्याय ड्यु, हूँ वैसाख न्हावुं। ठाकुरां री पूजा करुं पछै पूनिम रै दिन ब्राह्मण नूँ दान देस्युं। तरै सोनार ठाकुरां री मूरत घड़ी। घणी फूटरी घड़ ल्यायौ, चोरी न कीधी। मूरत घड़तां मन ढांम राखियौ, जितरौ सूपियौ, तितरी तोल लै आयौ। वेश्या रै जद वैसाख पूनिम आई, तद मूरत ले आयौ। तरै वेश्या उरी लीधी-लेनै रेवाजी में स्नान करण नूँ गई। तरै सोनार कह्यौ, यै कहो तो

कहें। तब श्री नारद जी बोले—हे राजन् पूर्वजन्म की जाति नहीं पूछनी चाहिए, किसी को भला लगे और किसी को बुरा लगे। तब राजा कहते हैं—महाराज, इसमें बुरा मानने जैसी क्या बात है? आप मुझे कहें—मैं कौनसे पुण्य से राजा बना, इतनी लक्ष्मी का मालिक बना। तब नारद भक्त बोला—राजा, तू पूर्वजन्म में जाति का सुनार था। तुम्हारी स्त्री वेश्या थी, वह तुम से कहीं अधिक सुन्दर थी। तुम सुनार थे, तुम्हारे पास धनदौलत बहुत था और वह वेश्या बड़ी धर्मात्मा थी। अतः वेश्या मन्दिर में आती, कथा ( भगवद्-कथा ) एकचित् होकर सुना करती, दान-पुण्य किया करती, गरीबों को पैसा दिया करती और धर्म की नीति पर चलती।

ऐसा करते-करते वैशाख का महीना आया। तब वेश्या ने सुनार को बुलाया—उस सुनार का नाम देवा था। वेश्या ने उसे पचास मुहरें दीं और कहा—तुम श्री भगवान मधुसूदन जी की मूर्ति बनाकर लाओ,

स्नान नूं हुंई आवूं । तरै वेस्या कह्यौ, साथै आव । तद सोनार साथै गयौ । नदी में स्नान कीधी । वेस्या रै घरै आयौ, नै सेवा पूजा प्रभात री कीन्ही । कथा सांभल नै ठाकुरा रौ दरसन करयौ । एक मन थकै ठाकुरा मधुसूदन जी री सेवा कीन्ही । वे घणा दिन उठै हीज रह्या । अंतकाळ वेस्या रौ नै सोनार रौ सरीर छूटौ, सो वे वैसाख रा पुन्य करने राज पायौ, उव वेस्या-राजा थारै अखी हुई । सो वैसाख रौ महातम छै । इसो वैसाख रौ महीनो छै-जिण सूं पुण्य-अधोगत न जायै । इतरौ राजा नै विरतंत सुणांयौ, पछै नारद जी उठ गंगा सिनान करण नै गया । राजा पण वैसाख रौ महातम सुण गंगा जी असनान करियौ-वैसाख राज उजमियौ, वैसाख री महिमा सुण राजा सर्वलोक नै वैसाख भलायौ । तिण सूं राजा अयोध्या समेत बैकुंठ प्राप्ति हुआ ।

मैं वैशाख नहाऊंगी, भगवान की पूजा करने के उपरान्त पूर्णिमा के दिन ब्राह्मणों को दान दूंगी । तब सुनार ने भगवान की मूर्ति बनाई । बड़ी ही सुन्दर बनाकर (घड़कर) लाया, उसने ( सोना नहीं चोरा ) चोरी नहीं की । मूर्ति बनाते समय मन एकचित्त रखा, जितना (सोना) सौंपा गया था, उतना ही तोल में लेकर आया । वह वेश्या के पास, जब पूर्णिमा आई, तब मूर्ति लेकर आया । तब वेश्या ने उसे अपने पास रखी, लेकर रेवा जी में स्नान करने गई । तब सुनार ने कहा— आप कहें तो मैं भी स्नान करने चलों ? तब वेश्या ने कहा मेरे साथ ही चले चलो । तब सुनार साथ गया । नदी में स्नान की । वेश्या के घर आया और सुबह की सेवा पूजा की । कथा सुनकर भगवान का दर्शन किया । एक-चित्त से भगवान मधुसूदन जी की सेवा की । वह कई दिनों तक वहीं ( वेश्या के यहाँ ) रहा । अन्त में वेश्या और सुनार का शरीर समाप्त हो चला (दोनों मर गए) । उसने वैशाख के पुण्य करने के कारण राज्य पाया और वह वेश्या, राजन्, तुम्हारी स्त्री बनी ।



धन दै, महिला दै, अस्त्री सुन्दर मिलै । अस्त्री न्हावै तौ मनकामना पावै सही ।

इति पदम पुराणै वैशाख महात्मे अष्टमोऽध्याय ।

इण ऊपरा बात छै:—

नारद जी, ब्रह्माजी नै इतिहास कहै छै । एक नगरी सोवन नामे, तठै देवीदास राजा राज्य करै छै । तिणरै एक पुत्री छै, सो रूपवंत छै । तिणरी सगाई कीधी । तिणरै बीद चंवरी मांहें वैसै नै मर जावै । बीद इकबीस-मूवा । तरां स्वयंवर परण नृ कीधौ । तठै उणरौ रूप देखनै असी बळै लड़ी मूवा । पछै एक अपि कर्दम नाम, तिण कन्या रौ पूर्व जन्म कह्यौ, सो कहै छै । साहूकार री अस्त्री हुंती, घर रा धणी रै कहै मै न हालती, घर हूं भाजी, तिण करनै पाप लागौ । तिण सूं मरै नै पछै ब्राह्मण साथे

यह वैशाख का ही महात्मय है । इस प्रकार का वैशाख का महीना है— जिससं पुण्य व्यर्थ नहीं जाता ।

इतना वृत्तान्त राजा को सुनाया—फिर नारद जी उठकर गंगा-स्नान करने गये । राजा ने भी वैशाख का महात्मय सुनकर गंगा जी की स्नान की, वैशाख राज को धारण किया, वैशाख की महिमा सुनकर, तमाम लोगों को वैशाख करने का आदेश दिया । इस कारण राजा अयोध्या सहित वैकुण्ठ को प्राप्त हुआ । (यह वैशाख) धनदौलत देने वाला है, स्त्री सुख देने वाला है, (इसके करने) स्त्री सुन्दर प्राप्त होती है । और यदि कोई स्त्री वैशाख न्हावे, तो उसकी निश्चय ही मनो-कामना सफल हो ।

पद्म पुराण के वैशाख महात्मय का आठवाँ अध्याय समाप्त ।

इसी पर एक और कथा है—नारद जी ब्रह्मा जी को इतिहास कहते हैं । एक नगरी जिसका नाम सोवन, वहाँ देवीदास राजा राज करता है । उसके एक लड़की है, वह बड़ी ही सुन्दर है । उसकी सगाई

नरबदा जी सिनान करण गई। तिणसूं राजा रै पुत्री हुई। हिवे तूं वैसाख रौ व्रत रौ सिनान करै नै वैसाख ऊजमैं तो बीद मरता रहै। तरै कन्या वैसाख रौ सिनान संभायौ, व्रत संभायौ, वरस बारै व्रत कीधौ, सिनान कीधौ, तिण सूं कर कन्या रै मनकामना सिद्ध हुई। वैसाख उजवण री विध बारै घड़ा लीजै, बारै पिछोड़ी, बारै कथारी, बारै पोथी ब्राह्मण नू जीमावै। अतीत जीमावै। मनछा भोजन देणौ। पीपल तथा खेजड़ी सींचणी। तुलछी सींचणी। एक टंक पईसा चार गेहूँ, सालि, चणा, ज्वार, जव, घृत पईसा आठ लेणौ। सिनान प्रात करणी। मध्यांन सिनान करणी। संध्या सिनान करणी। मधुसूदन जी री मूरती री सेवा करणी। पाटम्बर दांन देणौ। महीनौ तांई धर्मवरै री रोटी काढ़णी, किण ही ब्राह्मण तथा अभ्यागत नै देणी। पहिली

की गई। उसका पति जैसे ही भँवर के समय विवाह वेदि पर बैठता मर जाता। इक्कीस पति (इस प्रकार) मर गए। तब विवाह के लिए स्वयंवर रचा। तब उसके सौन्दर्य को देखकर असी (वर) फिर लड़-भगड़कर मर गए। फिर एक कदम नाम के ऋषि ने उसका पूर्वजन्म बताया। वह कहता है—(पूर्वजन्म में यह) साहूकार की स्त्री थी, अपने पति के कहने के अनुसार नहीं चला करती, घर से (घर छोड़कर) भाग गई थी, उसी कारण पाप लगा है। इस कारण (इसके पति) मरते हैं। इसके उपरान्त ब्राह्मण के साथ नरबदा स्नान करने के लिए गई, इसी कारण राजा के यहाँ पुत्री होकर जन्मी है। अब तूं वैशाख के व्रत करे और वैशाख का उजाना करे, तो तुम्हारे पति जो मर रहे हैं—

वचन सुनते हैं।  
कन्या ने तब वैशाख का स्नान करने का व्रत धारण किया, बारह वर्ष तक (इस प्रकार वैशाख का) व्रत किया, स्नान की, इस कारण कन्या की मनोकामना सिद्ध हुई।



रोटी देनै पछै कथा सुणणी । इसी तरै उत्तमाई राखणी, तौ  
वैसाख रौ मास वैकुण्ठ दाता छै । इतरा तीर्थ गया रौ पुन्य होवै,  
गंगाजी, गया जी, जगननाथ, बदरी जी, कुरुखेत्र, पिराग जी,  
नेमखार मीश्रक, अयोध्या, मथुरा, जमुना, द्वारिका जी, नर्वदा,  
गोदावरी, ग्रहण कासी रौ एता एक-अनेक तीर्थ गया रौ पुन्य होय ।  
अनेक व्रत कीयां रौ पुन्य एक वैसाख न्हायां बहुत पुन्य होवै ।  
गर्दभ री जोनि स्वान, काग, एती जोनि न पावै । प्रथम तौ  
आवागमण न आवै, तो उत्तम कुल पावै, धन पावै, अस्त्री सरूप

वैशाख के उजाने की विधि - बारह घड़े लेने चाहिए, बारह टुकड़े  
पिछोड़ी ( लट्ठा-कपड़ा ) बारह की कथा की पुस्तकें ब्राह्मणों को देनी  
चाहिए । अतीतों को भोजन करावे । उनको उनकी इच्छा अनुसार  
भोजन देना । पीपल और सभी के पेड़ को नियमित रूप से पानी  
सींचना । एक ही समय चार पैसों के तोल के गेहूं, चावल, चने, ज्वार,  
जौ, और धो, मेवा, पँसा आठ (भर तोल का) लेना । स्नान सुबह भी  
करनी । दुपहर को भी स्नान करनी, संभा को भी स्नान करनी ।  
मधुसूदन जी की मूर्ति की सेवा करना । पाटंबर दान में देना । महीने  
भर तक धर्म के नाम पर रोटी निकालना, किसी ब्राह्मण अथवा  
गरीब को देदेना । पहले रोटी देना, फिर यह कथा सुनना । इस प्रकार  
उत्तमता रखते रहना, तो यह वैशाख का महीना वैकुण्ठ को देने वाला  
है । इसके करने से इतने तीर्थों का पुण्य होता है—गया जी का पुण्य, गंगा  
जी का पुण्य, जगन्नाथ जी का पुण्य, बदरीनाथ जी का पुण्य, कुरुखेत्र का  
पुण्य, प्रयाग जी का पुण्य, नेमखार मीश्रक का पुण्य, अयोध्या, मथुरा,  
जमुना, द्वारिका का पुण्य । गोदावरी, नर्वदा में ग्रहण में नहाने  
का पुण्य तथा काशी में ग्रहण में नहाने का पुण्य ।  
इस प्रकार अनेकों तीर्थों के जाने अथवा नहाने का पुण्य लाभ वैशाख  
के एक मात्र नहाने से होता है । अनेकों व्रतों के करने का पुण्य केवल

पावै । अस्त्री-भरतार सुन्दर पावै, अस्त्री री मनकामना सिद्ध होवै, पुत्र मिलै, सुख मिलै । पछै देवलोक प्राप्ति हुवै । इसी कथा ब्रह्माजी नारद जी सूँ कही, नै नारद जी राजा अंबरीक नै सुणाई । सुण नै राजा वैसाख भालियौ, वैसाख रै पुण्य सूँ अयोध्या समेत वैकुण्ठ पुहतौ । आ कथा सुणनै वैसाख न्हावै तिकौ देव परायण होय वैकुण्ठ देवै स्वर्गलोक वासौ करै, आवगमण न आवै ।

श्लोक वैसाख कथा —

चैत्र नारदो ब्रह्म सच्चियं जमलोके भवे नास्ते ।

हरि लोके च प्राप्तिर्यं ॥१॥

एक वैशाख के नहाने से पुण्य होता है ।

इसके नहाने से गधे की, कुत्ते की और कौवे की योनि नहीं पावे । पहले तो आवागमन ही न हो, और यदि हो तो, उत्तम कुल की प्राप्ति हो, धन-दौलत पावे, सुन्दर स्त्री प्राप्त हो, स्त्री को सुन्दर पति मिले, स्त्री की मनोकामना सिद्ध हो, उसे पुत्र प्राप्ति हो, सुख लाभ हो और फिर देवलोक को प्राप्त हो । इस प्रकार ऐसी कथा ब्रह्मा जी ने नारद से कही और नारद जी ने राजा अम्बरीक से कही । कथा सुनकर राजा ने वैशाख नहाने का व्रत धारण किया । वैशाख के पुण्य से अयोध्या सहित वैकुण्ठ में पहुँचा । इस कथा को सुनकर जो वैशाख नहाता है, वह देवताओं में लीन होकर वैकुण्ठ को प्राप्त हो और उसका स्वर्ग में ही निवास हो । उसका आवागमन फिर कभी न हो ।

शैव नारदो ब्रह्म सच्चियं जमलोके भवे नास्ते ।

हरि लोके च प्राप्तिर्यं ॥१॥

## २-अथ श्री नृसिंह चवदश व्रतरी कथा

हेमाचल परबत री गुफा माहे हीरणकुसव तपस्या कीवी, अन पाण छोड़ दियो। सो ईसी तपस्या कीवी सुं सारा देवता नुं कसट दीयो। देवता प्रथी रा समस्त देवलोक गया। दैतरी तपस्या बल सुं अगनि प्रगट हुई, तिण अग्न सुं तिनलोक तपण लागा। सु सर्व देवता आपरा ठीकाणा छोड़ गया। सु जायनै श्री ब्रह्मा जी कनै जाय पुकारयां। पुकार नै कह्यौ हीरण्यकसिप ईसडो नेहचौकर तपस्या कोवी छै नै कहै छै—जनम जनम ईसडी तपस्या कर श्री परम पदवी लेउं नै और भाति री और नवी सीसट वणाउं। सुं इण बात रो श्री ब्रह्माजी नु चीता उंपनौ। सु देवता समस्त नुं साथे लेर आया। देखै, उपरा उदेही मांस भखगई। ओदेही खोदी, मांहे देखै तो सांकल हाडरी दीसै।

---

## श्री नृसिंह चवदश व्रत की कथा

हिमालय पहाड़ की गुफा में हिरण्यकशिपु ने तपस्या की—उसने अन-जल छोड़ दिया। उसने ऐसी ( कठोर ) तपस्या की—जिसने तमाम देवताओं को कष्ट दिया। सभी पृथ्वी के देवता देवलोक को गए। दैत्य की तपस्या के बल से अग्नि प्रकट हुई—उस अग्नि से तीनों लोक तपूतायमान होने लगे। इसलिए सभी देवताओं ने अपने-अपने स्थान छोड़ दिए। उन्होंने जाकर श्री ब्रह्माजी से पुकार की। पुकार कर उन्होंने कहा—हिरण्यकशिपु ने इस प्रकार जमकर तपस्या की है और वह कहता है कि मैं जन्म-जन्मांतर ऐसी-ऐसी ही तपस्या करके, उत्तम पद को प्राप्त करके नई सृष्टि का निर्माण करूंगा। इस बात की ब्रह्मा जी को बड़ी ही चिन्ता हुई। वे सभी देवताओं को साथ लेकर वहाँ गए। देवा, तो ऊपर की देह को कीड़े-मकोड़े लगकर ला गए हैं। उस देह को



तदे श्री ब्रह्मा जी कमण्डल रा जल सुं छडक्यो, तब सावचेत हुवो ।  
 ऊंचो जोय देखै तो ब्रह्मा जी उभा है । श्री ब्रह्मोवाच । श्री ब्रह्माजी  
 कहै-रे पुतर तुं मांगै सुं देवा तो सुं प्रसन्न हुवा, थे बड़ी तपस्या  
 कीवी । तदे हीरण्यकशीप बोल्हो, पिताजी ! थे तुठीआछौ तो  
 मोनु इसडो वर देवौ-अस्तर सख सुं मरुं नहीं । रात्र दिन  
 याहरी सीसट सुं मरुं नहीं । तदे श्री ब्रह्मा जी वरदान दीयो ।  
 वर देकर ब्रह्मलोक पधारीया । हीरण्यकसप आपरै लोक आयो ।  
 जायनै इन्द्र जी सूं जीतनै इन्द्रासण उरो लीयो नै देवता नु दुख  
 दीयो-नै कयो थारां ठाकुर कठै छै, बोहोत जोरै चाले । सुं कीताक  
 दीन्हा पाछै हीरण्यकसप कै पुत्र श्री प्रह्लाद जी हुंवा, सु  
 प्रह्लाद जी नुं पोसाल गुरां शुक्राचार्य जी कै पढनु बैसाणै ।  
 सुं पढै नहीं । श्री रामजा को ध्यान करै, कहै । और पढवौ

खोदा गया । अन्दर से देखा-हाड की सांकल दिखाई दी । तब श्री ब्रह्मा  
 जी ने कमण्डल के जल से छींटे दिए-तब ( वह ) जाकर सचेत हुआ ।  
 उसने ऊपर को देखा तो उसे ब्रह्माजी खड़े दिखाई दिए । श्री ब्रह्माजी  
 ने कहा-हे पुत्र ! तुम मांगो वही तुम्हें दें । तुम से हम बड़े ही प्रसन्न  
 हैं । तुमने बड़ी ही अच्छी तपस्या की है । तब हिरण्यकशिपु बोला-  
 यदि आप प्रसन्न हुए हैं तो मुझे ऐसा वर दें कि न मैं अशस्त्र से मरूँ  
 और न शस्त्र से मरूँ । रात में मरूँ नहीं, दिन में मरूँ नहीं, तुम्हारी  
 सृष्टि में मरूँ नहीं । तब श्री ब्रह्माजी ने वरदान दिया । वर देकर  
 वे ब्रह्म लोक ( स्वर्ग लोक ) को चले गए । हिरण्यकशिपु अपने स्थान  
 पर आया । उसने आकर इन्द्र को युद्ध में जीतकर उसका सिंहासन  
 स्वयं ले लिया । देवताओं को बड़ा ही कष्ट दिया और कहा कि भगवान  
 कहाँ हैं ? बड़े घमण्ड से ( वह ) रहने लगा । बहुत दिनों के बाद  
 हिरण्यकशिपु के एक प्रह्लाद नाम का पुत्र हुआ । प्रह्लाद जी को पढ़ने  
 के लिए गुरु शुक्राचार्य के पास भेजा । वह वहाँ पढ़ता ही नहीं ।



मिथ्या है—श्री गोविन्द रो ध्यान सत है । सु सुक्राचार्य जी मालूम कीवी, तदै हीरणकसप कवर प्रह्लाद नै यैकंत ले जाय समभावतो हुयो प्रह्लाद जी नु घणी सासना दीवी । क्रोध कर कयो हाथ मै खडग छै । कहै रे बालका, थारो ठाकुर कठै छै, तूं मोनुं बताय । तरै प्रह्लाद जी कह्यो—मोमैं, तोमैं, खडग मैं, खंभ मैं, सरब मैं, चराचर मैं श्री भगवान विराज्या छै । तरै हीरण्यकसप खडग हाथ मैं सुं देवण रो करी, तिण सुं खंभ फाड़ नै श्री नारायण नृसिंहरूप होय प्रगट्या नै गरज करी । तिण सुं सारो बीरमांड धुजो-देवता, दैत समस्त धुजा, इसो सरूप देख डर्या । ओह सरूप सगला नुं भखजावसी । तदै हीरणकसप गदारो भव दीखायो । तरै श्री नृसिंह जी हिरण्यकसप की चोटी पकड़ी । गोद माहे संभया समै नखा सुं उद्र फाड़नै

श्री राम जी का ध्यान करता—और कहता—यह पढ़ना मिथ्या है (भूठ है) श्री गोविन्द का ध्यान लगाना सत्य है । तब यह बात शुक्राचार्य को मालूम हुई । उन्होंने प्रह्लाद को अकेले में लेजाकर समझाते हुए उसे नाना-प्रकार से डराया—घमकाया, क्रोध में आकर कहा—हाथ में (मेरे) यह तलवार है । हे बालक, बताओ ! तुम्हारा भगवान कहाँ है ? तुम मुझे वह दिखाओ । तब प्रह्लाद जी ने कहा—मुझ में, तुम में, तलवार में, खंभे में, सब में चर और अचर में श्री भगवान विराजते हैं । तब हिरण्यकशिपु ने अपने हाथ में जो तलवार थी उससे मारने की सोची । इस पर खंभे को चीरकर श्री नारायण भगवान ने नृसिंह रूप धारण करके गर्जना की । इससे सारा ब्रह्माण्ड हिल उठा—देवता और दैत्य सभी घृज गये; ऐसा स्वरूप देखकर वे डर गए । यह स्वरूप तो सबको ही भक्षण कर जायगा । इस पर हिरण्यकशिपु ने उन्हें अपनी गदा दिखाई । तब नृसिंह जी ने हिरण्यकशिपु की चोटी पकड़ी । संभ्रा के समय उसे अपनी गोद में रख कर उसका पेट फाड़ कर उसकी आँतें

गला माहे आंतडा घालीया । दैतरा लोहीरा छांटा आपरै सरीर  
 में लागा, सो छांटा सोभाय मान है । श्री नृसिंह जी सिंहासन  
 उपरा विराज मान है । श्री देवता फुल बरखात हुआ जय-जय  
 सबद हुआ । श्री महादेव जी श्री ब्रह्मा जी, श्री नारद जी समस्त  
 देवता असतुत करै है । श्री भगवान सामा उभा है, सर्व देवता  
 कहै, मेह इसडो दर्शन कदे कीयो नहीं । श्री लिखमीजी पण  
 डरै, सु नेडा आवै नहीं-इसडो सरूप दरसनमें कदेही आयो नहीं ।  
 तरै बीरमा जी प्रह्लाद जी सुं कहीं-थे कनै जावो । ओ सरूप  
 थारै वास्तै धरायौ, मारौ बर साचौ कीयौ । तदे प्रह्लाद जी  
 नजीक जाय पगे लागा, तदे श्री नृसिंह जी प्रह्लाद जी रै माथै  
 हाथ दे चाटता हुआ । बळै श्री नृसिंहदेव जी दैतरो पेट  
 ढंढोलता हुआ । तदे प्रह्लाद जी कयो महाप्रभु ! दैतरी देही

अपने गले में डाल लीं । दैत्य के खून के छीटे अपने शरीर पर लगे—वह  
 बड़े ही सुहावने लग रहे हैं ।

श्री नृसिंह जी सिंहासन पर विराजमान हैं । श्री देवता  
 लोग फूल बरसाते हुए जय-जय के शब्द करने लगे । श्री महादेव जी,  
 ब्रह्माजी और श्री नारद जी सभी देवता स्तुति करते हैं ।  
 श्री भगवान सामने खड़े हैं—सभी देवता कहते हैं, हमने ऐसा दर्शन  
 कभी भी किया नहीं । श्री लक्ष्मी जी डरती हैं । वह भी पास में आ  
 नहीं रही हैं, ऐसा स्वरूप भगवान का कभी देखने में आया नहीं । तब  
 ब्रह्मा जी ने प्रह्लाद से कहा—आप पास में आवें । यह स्वरूप  
 ( भगवान ने ) आपके लिए ही धारण किया है और मेरा वरदान  
 सत्य किया है । तब प्रह्लाद जी—ने नजदीक जाकर नृसिंह भगवान के  
 पाँव स्पर्श किए—तब भगवान उनके सिर पर हाथ रख कर उसे चाटने  
 लगे । फिर नृसिंह भगवान दैत्य का पेट टटोलने लगे । तब प्रह्लाद जी  
 ने कहा—हे महाप्रभु ! दैत्य के शरीर को स्पर्श न करें । श्री नृसिंह जी

आभडो मता । श्री नृसिंहदेव जी कहै । प्रह्लाद जी हूँ इणरा पेट माहि तो सारीखो भगत फेरु नीसरै । श्री नृसिंह जी कहै थारा पोता रै सिधासण बैठो । प्रह्लाद जी कहै-मारै कोई राज सुं काम नहीं, मोनु राजरा चरणारविंद की भगति देवो । मारै मस्तक उपर हाथ दिया, सु ब्रह्मा इंद्र रुद्र कै माथै हाथ नहीं-सु राज मारै माथा उपरै हाथ दिया । प्रह्लाद जी अर्ज करी, हो देवो का देव ! हूँ आगले भव कूण थो काहु सुकर्त कीनो, राज रो दर्शन हुंवो । सु राज मोनु कथा कहो । तदे श्री नृसिंह जी कहै-कासी नगरी मैं सुभदा नाम वीरामण थारो पीता-जीकण कै चार पुत्र था । सु तो पीडत छा । कीरयावंत छा-देवता री पुजा करता, च्यार मैं येक थे छा । सु पीतारो माल बेस्या सुं खायो; भीष्ट हूवो । एकण दीन तु न बेस्या माहो-माहे लड्यो । सु दिन तो लड़ता पूरो हुवो राते च्यार पोहर मनावण हुवा । सु ओ दिन

---

ने कहा-हे प्रह्लाद, मैं इसके पेट में देल रहा हूँ कि तुम्हारे समान मेरा दूसरा भी कोई भक्त पैदा हो ! श्री नृसिंह जी ने कहा-अपने पिता के आसन पर ( तुम ) बैठो । प्रह्लाद जी ने कहा-मुझे राज्य-भार से कोई सरोकार नहीं । मुझे तो भगवान आप अपने चरणों में रखें-विमल भक्ति प्रदान करें । जैसी आपकी कृपा मुझ पर रही है ( जैसा मेरे सिर पर आपने हाथ रखा ) वैसी तो ब्रह्मा, इंद्र और रुद्र पर भी नहीं । अतः आपने मुझ पर बड़ी ही कृपा की । प्रह्लाद जी ने अर्ज की । हे देवों के देव, मैं पहले जन्म में कौन था ? मैंने कौन सा सुकृत (सद्कार्य) किया, जिससे मुझे आपके दर्शन लाभ हुए-वह क्या आप मुझे कहें ।

तब श्री नृसिंह कहने लगे-कासी नगरी में एक सुभदा नाम का ब्राह्मण तुम्हारा पिता था, जिसके चार पुत्र थे । वह बड़ा पण्डित था, क्रियावान था । देवताओं की पूजा किया करता—उसके चार पुत्रों में से एक तुम थे । तुमने अपने पिता का माल बेस्या को खिलाया । भ्रष्ट होगया ।



वैशाख सुद चोदस रो थो । सु रात्र दीन भुखा ब्रीखा रहया,  
 सु थानुं वरत रो फळ हुवो । तिकण फळ सु दर्शन हुवो, परम  
 पदवी जाय बैठ रयो । तद प्रह्लाद जो अरज करै, 'महाराजा,  
 देवा का देव, चौदह लौक रा नाथ, राज ओ वरत अजाणै कीयो  
 तिकारो फळ पायो । आप ईश्वर को दर्शन पायो । प्रह्लाद जी  
 कहै, इसा मोटा वरतरी री विधान कही जै । श्री नृसिंह देव कहै  
 वैशाख सुद १४ कै दिन प्रभाते उठजे, सीनान कीजै । श्री नृसिंह  
 देव सु अरज कर व्रत नेमिजे । श्री नृसिंह देव री मुरत सुवर्ण  
 री घडाई जे, चौक माढी जै । उपरां सिधासन हर्ष प्रीत सुं पुजा  
 मंडल उद्यापन करै तदि मंडल माढीजे । सरधा हुवै जठा ताई  
 व्रत कीजे । श्री नृसिंह जी भक्त प्रह्लाद जी सुं कहै तिकण घणा  
 अघोर पाप कीया हुवै तिकण रा समस्त पाप कटै, वैकुंठ जावै ।

एक दिन तुम और वेश्या दोनों भीतर ही भीतर लड़ते रहे । दिन भर तो  
 तुम लोग लड़ते ही रहे, और रात्रि के चारों प्रहर (तुम लोगों) मनाने में  
 व्यतीत हुए । वह दिन वैशाख शुक्ला चोदस का था । अतः रात-दिन भूखे  
 प्यासे रहे, इसलिए तुम लोगों को व्रत का फल मिला । उसी फल से यह  
 दर्शन हुए हैं—परम पदवी को तुम प्राप्त हुए हो । तब प्रह्लाद जी  
 अर्ज करते हैं—हे महाराज, देवों के देव, चौदह भुवनों के स्वामी, मैंने  
 हे भगवन्, अज्ञान में यह व्रत किया, उसका फल मुझे मिला । आप जैसे  
 परम पिता के दर्शन प्राप्त किए । प्रह्लाद जी कहते हैं—ऐसे बड़े व्रत का  
 विधि-विधान ( हमें भगवन् ) कहिए । श्री नृसिंह भगवान् कहने लगे—  
 वैशाख शुक्ला चोदस के दिन सुबह बहुत जल्दी उठकर स्नान करे ।  
 श्री नृसिंह भगवान् से प्रार्थना करते हुए, इस व्रत को नियम-पूर्वक  
 करने का व्रत ले । श्री नृसिंह भगवान् की मूर्ति सोने की घड़वाए, चौक  
 पूरे । उसके ऊपर सिंहासन ( रखे ) बड़े हर्ष और प्रेम से पूजा आदि  
 करने के बाद उस पर मांडने, मांडने चाहिए । श्रद्धा हो, भगवान् में दृढ़



राते मुरत आगै चढावो हूवै, मूरत सूखो बीरामण नु दीजै ।  
 श्री नृसिंह जी प्रह्लाद जी सु कही, वरतरै पुन्य रो पार नहीं । सारी  
 प्रिथी दोळी परक्रमा देवो तिर्थ समस्त करो, भांवै श्री नृसिंह जी  
 चतुर्दशी रो वरत करो । तिके मानवी घणी सरधा सु वरत करसी,  
 सु परम गति पावसी, मनवाचित फल पावसी । समस्त देवता  
 उभा वीरमाजी माहादेव जी नारदजी समस्त उभा दर्शन करै छै ।  
 श्री नृसिंह जी कहै ब्रह्माजी, थाको वर साचो कीयो, संतारी  
 सहाय करीयेक । श्री नृसिंह जी वर दीन्हौ, प्रह्लाद जी थारी  
 कथा हरख प्रीत सु गावसी, वैसाख सुद चवदस रो वरत करसी  
 सु मनोवांछित फल पावसी । समस्त देवता उभा अस्तुति करै ।  
 श्री नृसिंह देव नमः । इति श्री नृसिंह चतुर्थी व्रत कथा संपूर्ण ।  
 श्री रामानुजाय नमः ॥

विश्वास हो, तब तक इस व्रत को करता रहे । श्री नृसिंह भगवान  
 प्रह्लाद से कहते हैं—जिस व्यक्ति ने बहुत बड़े पाप किए हों, उसके  
 सारे पाप कट जाते हैं और वह वैकुण्ठ को चला जाता है । रात्रि में  
 पूजा के उपरान्त मूर्ति के आगे प्रसाद चढ़ाए, और फिर वह मूर्ति मय-  
 प्रसाद के ब्राह्मण को देदनी चाहिए । श्री नृसिंह भगवान ने कहा—व्रत  
 के पुण्य का कोई पार ही नहीं है । चाहे तमाम पृथ्वी के चारों ओर  
 उसकी परिक्रमा लगावो, चाहे सारे ही व्रत करो और चाहे श्री नृसिंह  
 चतुर्दशी का व्रत करो । जो व्यक्ति बड़ी श्रद्धा और भक्ति से यह व्रत  
 करेगा, वह परमगति को प्राप्त होगा । उसे अपने मन के अनुसार इच्छित  
 फल की प्राप्ति होगी । सभी देवता, ब्रह्माजी, महादेवजी, नारद जी, खड़े  
 दर्शन करते हैं । श्री नृसिंह जी कहते हैं—ब्रह्माजी, मैंने आपका वरदान  
 सच किया, संतों की सहायता की । नृसिंह जी ने वरदान दिया—  
 प्रह्लाद जी, जो व्यक्ति आपकी कथा हर्ष और प्रेम से गायेगा, वैशाख  
 शुक्ला चौदस का व्रत करेगा, उसे मनवांछित फल प्राप्त होगा । सभी  
 देवता खड़े प्रार्थना करते हैं ।

### ३-अथ श्री काजली तीजरो कथा लिखते

एकण समीयै राजा जुजधर जी बैठा छै। कुन्ती जी, द्रोपदी जी, बीजी ही अस्त्रियां घणी ऊभी छै। जितरै श्री कृष्णजी महाराज पधारिया। तरै द्रोपदी जी श्री ठाकुरां नै कहै छै, महाराज म्हां नुं कोई पुण्य बताओ। कोई व्रत करावौ तिणरै प्रताप सूं अस्त्री भरतार नै अति बल्लभ हौ व घरै लिखमी घणी होइ। घर मांहे अत, धन घणौ होवै। घणा कुंटबारी घणीयांणी होवै। जिण व्रत किया सूं इतरा थौक हुवै, सो राज म्हांनै किरपा करि नै बतावौ। तरै श्री कृष्ण जी कहै छै। एक दिख परजापत, श्री ब्रह्माजी रौ बडौ बेटा थौ। तिणरी बेटी साठ हुई। नै केईक तो बेटी कासिबजी नू परणाई। केईक बेटी

### कथा काजली तीज की

एक समय राजा युधिष्ठिर बैठे हैं। कुन्ती, द्रोपदी और बहुत सी स्त्रियां खड़ी हैं, इतने में ( उस समय ) श्री कृष्ण महाराज पधारे। जब द्रोपदी श्री भगवान से कहती है—महाराज मुझे कोई पुण्य बतावें। कोई व्रत करवायें, जिसके प्रभाव से स्त्री अपने पति को बड़ी प्यारी लगे व घर में लक्ष्मी का आगमन हो ! घर में अन्न-धन बहुत हो। बड़े परिवार वाली वह ( स्त्री ) हो। जिस व्रत के करने से ऐसा सब हो सके, ऐसा व्रत महाराज ! कृपया मुझे बतावें।

तब श्री कृष्ण कहते हैं—एक बार दिव-प्रजापति जो ब्रह्मा जी का पुत्र था, उसके साठ पुत्रियां हुईं। कितनी पुत्रियां तो ( उसने ) कासिब जी को विवाह दीं। कई पुत्रियां धर्मराज को विवाह दीं। कई तेरह पुत्रियां चन्द्रमा को विवाह दीं। कितनी ही पुत्रियां अग्न को

धरम राजा नै परणाई । केईक तेरह बेटी चन्द्रमा नै परणाई । केईक बेटी अगन नै परणाई । केईक बेटी पीरां नुं परणाई । केईक बेटी भूतां नै परणाई । नै एक बेटी तिणरौ नांव सती छै, सो श्री महादेव जी नै परणाई । नै एक दिन देवतां नै जिग्य होतो थौ, तठै सरब देवता भेज्य हूवा छै । तरै श्री ब्रह्मा जी आय बैठा छै । श्री महादेव जी पिण आय बैठा, बीजा ही देवता रिखेस्वर आया था । तरै श्री ब्रह्मा जी नै महादेवजी बैठा बात करै छै । तरै ब्रह्मा जी रौ बेटी बडो दिख परजापत ही आयौ । तरै देवता सुह उठ नै दिख परजापत नै नमस्कार कीयौ, आदर मान दियो । नै महादेव मोनुं आदर नहौ दीयौ । नै नमस्कार ही न कीयौ । सो दिख परजापत मुंहड़ा मांह सुं कुवचन कहण लागो । जो इण महादेव सुं म्हारी बेटी परणाई, सो म्हे म्हारा पिता

---

विवाह दीं । कितनी बेटीयां पीरों को विवाह दीं । कितनी पुत्रियां भूतों को विवाह दीं । और एक पुत्री जिसका नाम सती है—उसे महादेवजी को विवाह दी ।

एक दिन देवताओं का यज्ञ हो रहा था । वहाँ सभी देवता इकट्ठे हुए । तब श्री ब्रह्माजी आकर बैठे हैं । श्री महादेव जी भी आकर बैठे हैं—दूसरे देवता लोग, ऋषि लोग आकर बैठे हैं ।

उस समय श्री ब्रह्मा जी और महादेव जी बातें करते हैं । तब ब्रह्माजी का बड़ा बेटा दिख—प्रजापति भी ( वहाँ ) आया । उन सभी देवताओं ने उठकर दिख—प्रजापति को नमस्कार किया—उसे आदर सम्मान दिया । और महादेव जी ने आदर सत्कार नहीं दिया और न नमस्कार ही किया । इसलिए दिख—प्रजापति मुँह में से बुरे बचन कहने लगा । मैंने जो इस महादेव जी को अपनी कन्या विवाही, वह तो मैंने अपने पिता ब्रह्मा के कहने से विवाही थी । नहीं तो मैं इस अघोरी



ब्रह्माजी कक्षा सूं परणाई। नहींतर हूँ इण अघोरी नै कदै परणाऊं नहीं। इण महादेव नै सिव कहै छै, सो ओ तो बड़ौ असिव छै। नै इणां अघरमी नै कदै घेटी परणाऊं! अघोरी छै-इण में काई सुध नहीं। घणी भांग घतूरी खाय, आक नीब खाय, मसांण मांहै सोवै, मसांण मांहै रहै, मसांण री राख लगावै। नागौ उघाड़ौ रवै। इणनुं खबर काई नहीं, सदा असुच रवै। ओ अग्यानी-इण मांहै ग्यांन कोई नहीं। जो इण में ग्यान होतो तो यूं जाण तो-बड़ो छै, म्हारौ सुसरौ छै। उठनै इणनुं घणौ आदर सनमान देऊं, नमस्कार करूँ। दिख परजापत महादेवजी री निद्या घणी कीवी। कुवचन घणा कक्षा, तरै सगळ्यां ही देवतां दिख परजापत नै बरजियौ। पण दिख बरजियौ मांनै नहीं। तरै महादेव जी जिग पूरौ करनै उठिया, सो कैळस पधारिया।

को कभी भी कन्या नहीं देता। इस महादेव को ( लोग ) शिव कहते हैं-लेकिन यह तो बड़ा ही अशिव है। मैं ऐसे अघर्मी को कभी पुत्री देने का था ? यह अघोरी है-इसे कोई ज्ञान नहीं है। ( यह ) बहुत सारी तो भांग और घतूरा खाता है-आक और नीब खाता है-मशानों में सोता है, मशानों में ही रहता है, और मशान की ही राख लगाता है। नंगा और उघाड़ा रहता है। इसे कोई खबर नहीं-हमेशा अशुद्ध रहता है। यह अज्ञानी है-इस में ज्ञान नाम की कोई वस्तु है ही नहीं। इसमें यदि ज्ञान होता तो इसे समझना चाहिए था-मैं बड़ा हूँ, इसका समुर हूँ। उठ कर इसे बहुत सा आदर सम्मान दूँ-नमस्कार करूँ। दिख प्रजापति ने महादेव जी की बहुत निंदा की। बहुत ही बुरे शब्द कहे, तब सभी देवताओं ने दिख प्रजापति को रोका। लेकिन दिख मनाने पर भी माना नहीं। तब महादेव जी यज्ञ समाप्त होने पर उठे-वे कैलाश को आए अन्य देवता भी सभी उठे। सभी अपने-अपने स्थान गये ( अपने-अपने निवास पर सभी गये ) श्री महादेवजी ने इस अपमान

देवता पण सारा ही उठिया, आप आपरै ठिकाणै गया । श्री महादेवजी तो मन मांहे क्युं ही आणियौ नहीं—नेम बड़ा । नै महासती नै पण काई बात कही नहीं । आप तो पार ब्रह्म सूं ताळी लगाई छै । नै दिख परजापत रै मन मांहे गुसौ घणौ छै । जो हूँ जिग करूं नै साराई देवता नुं नैतरूं, नै महादेवजी नुं पांत बारै काढूं । तरै विचार जिग करूं नै सारा ही देवतां नै तैड सूं । नै जिग माहे महादेव री सेपनाग है सो छै सो सरब काठ देसूं । नै महादेवजी रा औगुण घणा कहै छै । सो दिख परजापत वळै ही जिग करणौ मांडियौ छै । देवता सगळा ही बुलाया छै, जो सकोई साथ देवता रो जिग ऊपर आवजौ । नै देवतां नै दिख कहाडियौ—जो हूँ महादेवजी नै देवतां मांह सूं परहौ काढूं छूं । जिकोई देवता महादेवजी री हिमायत करै,

---

के लिए मन में किसी प्रकार का विचार नहीं रखा—वे अटल नियम के जो ठहरे !! और न उन्होंने इस विषय में कोई बात महासती (पार्वती) से कही । उन्होंने ब्रह्मा का ध्यान किया ।

लेकिन दिख प्रजापति के मन में बड़ा ही क्रोध है । मैं यज्ञ करूँ, तमाम देवताओं को बुलाऊँ ( निमंत्रित करूँ ) लेकिन महादेव जी को 'देवता-समाज' से बाहर रखूँ । ऐसा विचार कर यज्ञ करूँगा, तमाम देवताओं को निमंत्रित करूँगा और यज्ञ में महादेव जी को शेषनाग है—वे सो हैं, उन्हें सबको निकाल दूँगा । इस प्रकार महादेव जी के बहुत से अवगुणों को कहता है ।

दिख—प्रजापति ने दुबारा यज्ञ प्रारम्भ किया है । तमाम देवता को बुलवाये हैं—सो तमाम देवताओं का समूह यज्ञ के कार्य पर आना । और देवताओं को दिख ने कहला दिया—मैं महादेव जी को देवताओं की समाज में से निकाल कर दूर करूँगा ।

सो महादेवजी कनै जावौ । नै महादेवजी री हिमायत करै सो महादेवजी कनै जावौ । नै महादेवजी री हिमायत न करै, सो वैगा आवज्यो । तरै सारा ही देवता बिमांण बैस-बैस नै कैळ्यस ऊपर होय नै, जिग जावै छै । सो सती-बैठी देखै छै । बिमांण मांहै बैठा, बहिन बहनोई जाय छै । बळै बिमांण में बैठा बहिन भांणैजा जावै छै । पण सती नुं कोई बतळ्यवै नहीं-कोई बोलै नहीं । तरै सती कहै छै-सदाई बिमांण नीसरता, तरै मोनै राम-राम करता, म्हों सूं बात बिगत करता हिमरकै कोई बोलै नहीं, बतळ्यवै नहीं, सो कांसू जाणि जै । जितरै श्री महादेवजी ध्यान करनै, आंख खोली । तरै सती कनै जाये नै कहण लागा, आज सकोई बिमांण बैठ-बैठ नै जावै कठै छै । तरै श्री महादेवजी बोलिया-सती, थारा बाप रै जिग मांडियौ छै । सो उण देवातांनुं बुलाया छै । सो सारा ही-देवता उठै जाय छै ।

यदि कोई देवता उनकी तरफदारी करता हो, तो वह ( देवता ) महादेव जी के पास जा सकता है-और जो देवता महादेव जी की तरफदारी न करता हो, वे मेरे यहाँ अति शीघ्र आने की कृपा करें । सभी देवता तब विमान में बैठकर कैलाश के ऊपर से होकर यज्ञ पर जाते हैं । सती बैठी तब देखती है । विमान में बैठे बहन और बहनोई जाते हैं । फिर ( दूसरे ) विमान में बहन और भानजे बैठे जा रहे हैं । लेकिन सती को कोई बुला नहीं रहा है-उससे कोई बात नहीं कर रहा है ।

तब सती कहती हैं-हमेशा जब विमान निकला करते थे तो मुझ से ( ये लोग ) राम-राम किया करते थे, मुझ से बात-चीत किया करते-इस बार तो कोई बोलता तक नहीं है, बतलाते भी नहीं हैं, यह किस प्रकार जाना जाय !! तब महादेव जी ने कुछ सोचकर ( ध्यान लगाकर ) अपनी आंख खोली । सती तब पास जाकर कहने लगी-आज ये सभी लोग विमान में बैठ-बैठ कर कहाँ जाते हैं? इस पर श्री महादेवजी बोले-



तरे सती कहै छै—आपां ही जिंग ऊपर जावस्यां । तरे सतीनुं महादेव जी कहै छै, थारौ बाप तो म्हाँ सूं बैर राखै छै । म्हाँने थारै बाप घणा कुबचन कइया, तोही हूं बोलियाँ नहीं । नै जिंग मांहे म्हाँरौ हिंसौ छै, सो थारौ बाप कहै छै, हिंसौ हूं परहौ काइसूं । सो आपां तो विगर बोलाया कोई जावां नहीं ।

तरे सती कहै छै—बापरै घरै नै सासरै, पीहर बिना बुलाया ही जाई जै । तरे श्री महादेवजी कहै छै—आतो बात साची कही । पण आगे गया, आदर मान न पाईजै ।

तो युंही गया काहुं होय । सामी जिकै उठै बैठा होसी, सो उलट्टी हासी करै । म्हाँ तो विगर बोलाया कोई जावां नहीं, नै म्हाँ तोनै पण मतहा करां छौं । तूं पण मति जायै । नै तूं जाणसी-

सती, तुम्हारे पिताने यज्ञ रचा है । उसने देवता बुलवाये हैं । इसलिए सभी देवता वहाँ जाते हैं ।

सती ने तब कहा—अपन भी यज्ञ पर चलेंगे । तब सती से महादेव जी कहते हैं—तुम्हारा पिता तो मुझ से दुश्मनी रखता है । तुम्हारे पिता ने मुझे कितने ही बुरे वचन कहे, तब भी मैं बोला नहीं । और यज्ञ में मेरा हिस्सा है, सो तुम्हारा पिता कहता है, मैं हिस्सा निकाल बाहर करूँगा । अतः अपन तो बिना बुलाए नहीं जायेंगे ।

सती तब कहती है—बाप के घर पर, सुसराल और पीहर में बिना बुलाये भी जाना हो सकता है । महादेव जी ने कहा—तुमने यह बात तो ठीक ही कही, लेकिन आगे इस प्रकार जाने पर मान नहीं प्राप्त होता । अतः ऐसे ही जाने से क्या लाभ ? अतिरिक्त इसके वहाँ जो लोग बैठे होंगे, हँसी और करेंगे । मैं तो बिना बुलाये नहीं जाऊँगा और मैं तुम्हें भी जाने के लिए मना कर रहा हूँ । तुम भी मत जाना ।

मोने म्हारा बाप रै जातां मनहा करै छै सु थारौ बाप तोनै प्यारो छै । पण परणाई तो म्हाँने छै । थारौ बाप तो म्हाँसू बैर राखै छै । सो तोनै कुण आदर-सनमान देसी ।

पछै श्री महादेवजी तौ ध्यान करण नुं बैठा । पण सती रौ मन आकुल-व्याकुल करै छै, विचारै छै, जो हूँ बाप रै एक-लीहीज जाऊं । वळै मनमें पाछौ विचारी छै । इतरै सती रौ मन उपडियौ सो उठनै हालतो हुई । तरै श्री महादेवजी रा गण था सो दौडिया, पहुँच नै कहै छै-राज रै श्री महादेव जी सारीखौ भरतार नै राज अकेलाहीज पाछा बाप रै क्युं पधारौ छौ । तरै सती नै ऊभौ राखी नै सांडियौ असवारी नै लेनै आया छै । छत्र चंवरा ले आया छै । पछै सती नै असवार करनै,

तुम जानोगी-मुझे मेरे पिता के यहाँ जाने को रोक रहे हैं—सो तुम्हें अपना पिता तो प्यारा है ही ! लेकिन तुम्हें मेरे साथ विवाही गई है । तुम्हारा पिता मुझ से बैर रखता है, तो तुम्हें कौन आदर सम्मान देगा !

इसके उपरान्त श्री महादेवजी तो अपना ध्यान लगाने बैठ गए । लेकिन सती का मन आकुल-व्याकुल हो रहा है—वह विचार करती है, मैं अपने पिता के यहाँ जाऊँ ! अकेली ही चली जाऊँ !! फिर मन में दुबारा विचार करती है । इतने में सती का मन चलायमान हुआ, अतः वह उठकर चलती बनी । तब महादेव जी के जो गण थे वे सब भागे । वे पहुँच कर कहते हैं—आपके महादेव जी के समान पति हैं, आप अकेली और पंदल ही अपने पिता के यहाँ क्यों जा रही हैं ? तब सती को वहाँ खड़ी रख बैल सवारी के लिए लाये हैं । छत्र-चंबर आदि ले आये हैं । फिर सती को सवारी करवा कर, सिर पर छत्र धारण करवाकर, मुँह के आगे चंबर डौलाते हुए, नृत्य करते जाते हैं । बाजे बजते हैं । इस प्रकार सती को उसके पिता के घर ले गए ।

माथै छत्र धार नै चमर मुंहड़ा आगै करता नृत करता जावै छै ।  
बाजत्र बजावै छै । इण भांत सती नुं बाप रै लेगया ।

आगै जिग होय छै । देवता बैठा वेद भणै छै—होम होइ  
रखौ छै । दिख प्रजापति नै दिखरी बहू छेहड़ा-छेहड़ी बांधिया छै,  
बाजौट ऊपर बैठा छै । होम होय छै, आहुत दीजै छै । माथै  
मुकुट दोनुं जणां रै बांधिया छै—होम रै कुंड आगै बैठा छै ।  
जितरा मांहैलो सती सुं एकही कोई बोलै नहीं । थोड़ौ सो  
आ-उकार बहिणा दियौ, पण बीजौ कोई बोल्यौ नहीं । आय,  
बैस किण ही कहौ नहीं । तरै सती नुं रीस चढ़ी, घणौ क्रोध  
चढ़ियौ । तरै सती कहै छै—फिट रै बाप तोनै ! तू बड़ौ अधरमोछै-  
तें महादेव सुं बैर करनै हिसो जग मांहसुं परहो कीयौ, सो  
थारौ जिग पूरौ पड़ै नहीं । तूं महादेव जी मांहै काहुं समझै ?

वहाँ ( देखा तो ) यज्ञ हो रहा है । देवता बैठे वेद पढ़ रहे हैं—  
होम हो रहा है । दक्ष प्रजापति और उसकी स्त्री ने गठ-जोड़ा बांधे  
हुए हैं—वे एक पाटे पर बैठे हैं । होम हो रहा है—आहुति दी जा रही  
है । दोनों के सर पर मुकुट बांधा हुआ है—होम के कुण्ड के आगे बैठे हैं ।  
इनमें से सती से कोई बोल भी नहीं रहा है । थोड़ा बहुत आदर-सत्कार  
बहनों ने दिया, दूसरा कोई बोलता ही नहीं है । आबो, बैठो, ऐसा किसी  
ने भी नहीं कहा । तब सती को बड़ी नाराजी हुई—उसे क्रोध  
चढ़ा, उस पर सती कहती है—‘हे पिता, तुम्हें धिक्कार है ! तुम बड़े ही  
अधर्मी हो—तुमने महादेव जी से बैर रख कर, उनका हिस्सा यज्ञ में से  
बाहर किया—अतः तुम्हारा यज्ञ पूरा नहीं पड़ सकेगा । तुम महादेव जी  
को क्या समझ सकते हो ? ( अर्थात् तुम्हें इतना ज्ञान कहाँ जो महादेव  
जी के महिमा, उनके महत्व को समझ सको ) । मुझे महादेव जी  
हमेशा ही दाक्षायनी कह कर पुकारते हैं । लेकिन मेरा यह शरीर पिता



मोने महादेवजी सदा ही दाख्यायनी कह बतलावै छै । पण ओ सरीर माहरो बाप सुं पैदा हुई छै तो यो सरीर हूँ कोई राखु नहीं । तरै सती-जिग मांहै, होम रा कुंड थौ तिण मांहै कूद पड़ी । उणरो पडणौ हूयौ नै तुरतज ऊपर सूं धिरखा हुई । पण सती तो बळी छै । नै सती साथै महादेवजी रा गण आया था, तिणा पण मनमें क्रोध घणौ कियौ । गणांनु रीस आई, सो गण देवतासुं लड़ाई करण लागा छै । जिग रौ विधवंस करण लागा छै । सो देवता तिल जवां रा धोवा मंत्र भण नै होम रा कुंड मांहै नांखियौ सो जितरा जीव तिलरा दांणा होमिया था, जितरा कुंड माहथा जोधां होय नीसरिया । सो गणां सुं जुध करण लागा छै, सो गण सारा मारिया छै । नै कितरायक गण लोहां पूरति, के लोही बहतां नाठां । सु गण श्री महादेवजी कनै आया । सो आ हकीकत आगै नारदजी महादेवजी नै कहता था ।

से पैदा हुआ है, यह शरीर मैं अब रखूँगी नहीं । तब सती यज्ञ में जो होम का कुण्ड था उसमें कूद पड़ी । उसका गिरना ही था कि तत्काल वर्षा हो चली । लेकिन सती तो जल ही गई । सती के साथ जो महादेव जी के गण आये थे, उन्होंने मन में बड़ा क्रोध किया । गणों को गुस्सा आया—अतः गण लोग देवताओं से लड़ाई करने लगे । यज्ञ को विध्वंस करने लगे हैं । देवताओं ने तब तिल और जव के दानों को मंत्र पढ़कर कुंड में फेंके जितने जीव थे, उतने ही दाने होम में फेंके थे । उतने कुण्ड में से योधे ( वीर ) पैदा होकर निकले हैं । वे गणों से युद्ध करने लगे हैं—सो तमाम गणों को मार दिए हैं । और कितनेक गण लहु-लुहान होकर लहु बहते भागे । तब गण श्री महादेव जी के पास आए । सो यही हकीकत ( चर्चा ) श्री नारद जी महादेव जी से कह रहे थे । इतने में गणों को खून से लथ-पथ देखकर, महादेव जी को गुस्सा आया । तब महादेव जी ने क्रोधित हो सिर की जटा खोली और उसे धरती

इतरे गणां रै लोही बैहतो देख नै महादेवजी नै क्रोध चढ़ियौ । तरे महादेवजी कूढ़ माथै री जटा खोलो नै धरती सुं पटकी छै । सु जटां मांह सूं एक भद्र पुरुष पैदा हुवौ, तिणरी नाम वीरभद्र नोसरियौ । सो श्री महादेव जी सूं अरज करै छै । तरे श्री महादेव जी कहै छै—दिख परजापत जिग करै छै । सो जायनै विधुंस करौ । नै जिग मांहै देवता होय, त्यां साराही नै मारी । जिके ही देवता जिसड़ा होय तिसड़ी मार देजौ । तरे वीरभद्र घणां गणा नै साथै लेने जठै जिग थौ जठै आयौ । जिग विधंसण कीयौ । भोजन साळ लूटी छै, देवतां रा हाथ पग भांजिया छै भृगु ऋषी सररी—दाढ़ी खोसी । दिख परजापत रौ माथौ बाढ्यौ छै । जिगरा कुंड मांहै नांख दियौ छै । सो माथो तो बळ गयौ छै, नै धड़ पड़ियौ छै । जिगरौ विधंसण करनै देवतां सूं सभा देनै वीरभद्र पाछौ श्री महादेवजी कनै आयौ छै ।

पर पटकी । जटा में से एक भद्र पुरुष पैदा हुआ—उसका नाम वीर भद्र रखा । वह महादेव जी से प्रार्थना करता है । तब महादेव जी उत्तर देते हैं—दक्ष प्रजापति यज्ञ करते हैं, सो तुम जाकर उसे विध्वंस करो । और जो देवता लोग यज्ञ में हैं उन सबको मारो । जैसे देवता हों, उनको उसी प्रकार की मार देना ।

वीरभद्र तब बहुत से गणों के साथ वहाँ आया जहाँ यज्ञ था । यज्ञ को विध्वंस किया । रसोई को लूटी है—देवताओं के हाथ पैर तोड़े हैं—भृगु ऋषी जैसे की भी दाढ़ी खोसी है । ( दाढ़ी—जीवी है ) दक्ष प्रजापति का सिर काटा है । उसे यज्ञ के कुंड में फेंक दिया है । इसलिए सिर तो जल गया है और घड़ रखा पड़ा है । यज्ञ को विध्वंस कर, देवताओं को सजा देकर, वीर भद्र वापिस श्री महादेव जी के पास आए हैं । पैरों पड़ा है । कई देवता भाग गये थे—उन्होंने ब्रह्माजी के पास आकर पुकार की है । कहा—श्री महादेव जी के गण वीरभद्र ने

पगै लागी छै । नै केईक देवता नाठा था-सो श्री ब्रह्माजी कनै जाय नै पुकारिया छै । कहौ-श्री महादेवजी रै गण वीरभद्र जिग विधंसियौ-देवतां नै मारिया, दिख परजापत रौ माथौ बाढ़ नै बाळ नाखियौ । सारी हकीकत देवतां श्री ब्रह्माजी ने कही । तरै श्री ब्रह्माजी कहण लागा-हूं इण जिग में इणहीज वासतै आयौ नहीं । हमैं थै श्री महादेवजी कनै जाय नै पगे लागौ, ऊभा रह नै वीनत कीजौ । श्री महादेवजी मोटा छै-ईस्वर छै । जो महादेवजी री अस्त्री मुई, सती हुई छै, तोही असतूत कीयां थानै गुनहौ बंकससी । नै थै, देवता डरता जावौ छौ तो हालौ, थांहरै साथै हूं हालूं । तरै श्री ब्रह्माजी देवतां नै लैनै कैलाश आया । तरै श्री महादेव जी ब्रह्माजी नुं आवता दीठा, तरै महादेवजी छठनै साम्हा आया छै-घणौ आदर सनमान दियौ छै । पछै

यज्ञ का विध्वंस किया, देवताओं को मारा, और दक्ष प्रजापति का सिर काटकर जला दिया । सारी ( तमाम ) घटना देवताओं ने श्री ब्रह्माजी से कही । तब ब्रह्माजी ने कहा—मैं इसीलिए ही यज्ञ में नहीं आया । अब तुम जाकर महादेव जी के पाँव पड़ो-बड़े रहकर विनती करना ! श्री महादेव जी बड़े हैं-ईश्वर हैं । यद्यपि महादेव जी की स्त्री मर गई है । ( वह ) सती होगई है, तब भी प्रार्थना करने पर वे आपको क्षमा कर देंगे । और यदि आप देवता लोग डरके मारे न जावें, तो चलिये, मैं आपके साथ चलता हूं ।

श्री ब्रह्मा जी तब देवताओं को लेकर कैलाश ( पर्वत ) पर आए । महादेव जी ने जब ब्रह्मा जी को आते हुए देखा, तब वे उठ कर सामने आये हैं, बड़ा ही आदर सन्मान दिया है । फिर यज्ञ की बात कही है । देवताओं ने तमाम हकीकत कही । तब ब्रह्मा जी ने कहा—श्री महादेव जी बहुत बड़े हैं ( बड़े महान् हैं )-मोटे हैं । अब तो जितने भी देवता लोग यज्ञ में मारे गए हैं-उन्हें जिलाइये ।



जिगरी बात कही छै । देवतां सारी हकीकत कही छै । तरै ब्रह्माजी कहौ—जो श्री महादेवजी राज बड़ा छौ, मोटा छौ हमें तो जिग मांहै देवता मारिया छै जिऔ सरब सरजीवन करौ । जिग पूरण करौ । तरै श्री महादेवजी, श्री ब्रह्माजी ने साथै लेनै, जिग थौ जठै आया सो वीरभद्र नै गणां काम कियौ थौ सो देखता फिरै छै । सो श्री महादेवजी रा मारिया पड़िया छै, सो किणी रौ हाथ, किणी रौ पग, कणी रौ घड़ पड़ियौ थौ । सो सारा ही भेळ करनै श्री महादेवजी सारा ही नै फेर सरजीवन किया । नै दिखराज रा जभाण, र दांत भांगा था, सुं दांत चेंढ़िया । भृगुरी दाढ़ी खोसी थी सो चेढ़ी । नै दिख परजापति रौ माथौ बळ गयौ थौ सो दिखरै बोकड़ा रौ माथौ लगाय दियौ । सगळ्य ही साजा किया छै ।

श्री ब्रह्मा जी तब महादेव जी को साथ लेकर जहाँ यज्ञ था वहीं आए । जो कुछ काम वीरभद्र ने किया था, उसे वहाँ धूम-फिरकर देख रहे हैं । वे सभी महादेव जी के मारे हुए हैं—अतः किसी का हाथ, किसी का पैर, और किसी का घड़ पड़ा है । उन सबको श्री महादेव जी ने इकट्ठे करके दुबारा जीवित किए । और दक्ष राज के दांत और जीभ टूट गई थी अतः ( श्री महादेव जी ने ) दांत चिपाए । भृगु का दाढ़ी खींची गई थी, उसे दुबारा चेपी गई । और दक्ष प्रजापति का सिर जल गया था, सो उसके सिर के स्थान पर बकरे का सिर लगा दिया । सबको जीवित कर दिए हैं ।

इसके बाद श्री महादेवजी होम के कुण्ड पर आए । वहाँ देखा तो सती तो उसमें जल गई हैं और उस स्थान पर 'ज्वारे' उग गए हैं । और जिस कुण्ड में सती की देह होमी गई थी, उस कुण्ड में चार देवियाँ पैदा हुई हैं । एक मुख से जो ज्वालामुखी हुई । उसका स्थान उत्तर में स्थापन

पछै श्री महादेवजी होम रै कुण्ड ऊपरै आया । सो देखै तो सती तो मांहै बळगई छै, जठै जवांरा ऊगा छै । नै सती री देही होमी थी तिण कुंड मांह थी देवी च्यार हुई छै । एक मुखरी तो ज्वालामुखी हुई । तिणरौ उत्तर मांहै थापना कीवी । दूजी कुम्भख्या देवी हुई । तिणरी थापना पूरब मांहै कामरू देस में । तीसरी तुलतादेवी पगांरी हुई, तिणरी दखिण मांहै थापना छै । चौथी भगौती हिंगुलाज देवी हुई, तिणरी पछिम मांहै थापना कीवी । तरै श्री महादेवजी कवै छै । ओ भाद्रवा वदि तीज रो दिन छै, सो गोरी रौ दिन छै, तिणसुं इण तीजरौ नाम कजळी तीज है । इण तीजरै नांव म्है व्रत करसौं, नै बीजी ही संसार में अस्त्रियां ओ व्रत करसी, सो सुहागण होसी, रूपवंत होसी, लिखमीवंत होसी, बेटा, पोता, बहु पड़पोता देखसी, कबीला रौ घणौ सुख देखसी । तरै देवतारी अस्त्रियां

किया । दूसरी कुम्भ्या देवी हुई । उसका स्थापन पूर्व में कामरू देश में (है) तीसरी देवी पैरों तुलता देवी हुई—जिसकी दक्षिण में स्थापना हुई । चौथी भगवति हिंगुलाज देवी हुई, जिसकी पच्छिम में स्थापना हुई । महादेव जी तब कहते हैं—यह भाद्रपद की कृष्ण तीज का आज दिन है, इसलिए इस तीज का नाम कजली तीज है । इस तीज के नाम से मैं स्वयं व्रत करूंगा, और संसार में जो स्त्रियां यह व्रत करेंगी, वे सौभाग्यवती होंगी, रूपवान होंगी, लक्ष्मीवान होंगी, बेटे, पोते और बहुत से पड़पोते देखेंगी । अपने कुटुम्ब का बहुत सुख लाभ करेंगी ।

इस पर देवताओं की जो स्त्रियां वहाँ खड़ी थीं, सभी व्रत करने लगीं और महादेव जी को देवताओं की स्त्रियां पूछने लगीं, महाराज ! कजली तीज के व्रत का विधि-विधान हमें बतावें ।

ऊभी थी, सो सारी व्रत करती हुई, श्री महादेवजी नै देवतां री अस्त्रियां पूछती हुई, 'महाराज, काजळी तीज रे व्रतरी म्हांनै विध विधानं बतावौ ।

तरे श्री महादेवजी कहै छै—'भादवा वदि तीजरै दिन परभातरा उठनै दांतण सीनान कीजै, काजळ-तिलक करिजै, अबौट कपड़ा पहिरिजै । गवर रै नांव व्रतरौ नेम घालियौ, आज म्हेँ एकासणौ करस्यां । एकहीज धान खावस्यां । गेहूँ, जव, चिणा, चावल यां च्यारां धाना में एक धान खावणौ । चन्द्रमा रौ दरसण कर पूजा कर, एकासणौ खोलिजै, नै बांसरी छावड़ी में दिन सात पहिली जवारां वाहीजै, जवां सुं तथा गेहूँ सुं । नै जवारां दिन सात रा होय तरै काजळी तीजरै दिन बीलपान मांहे काजळ सूं सती री-मूरती मांडिजै । जवारां मांहे मूरत मांडी

---

तब महादेव जी कहते हैं—भाद्रपद की कृष्णा तीज के दिन सुबह उठकर दंतुन, स्नान करना, काजल, तिलक आदि करना—फिर नए कपड़े पहिनना । गवर के नाम पर व्रत करने का—दृढ़ निश्चय करना—( ऐसा सोचना ) में आज उपवास करूंगा । एक ही प्रकार का अनाज खाऊंगा । गेहूँ, जव, चने और चावल इन चारों अनाज में से एक अनाज खाना । चन्द्रमा का दर्शन करके पूजा करनी चाहिए । इसके बाद उपवास खोलना चाहिए । सात दिन पूर्व ही बांस की टोकरी में 'जुआरे' उगाने चाहिए—जव के दानों से अथवा गेहूँ के दानों से । और जवारे जब दिन सात के हो जायें तो काजली तीज के दिन बील के पान में काजल द्वारा सती की मूरती मांडनी चाहिए । जवारों में जो मूरती मांडी हो, उस पर बील का पान घर देना । इसके ऊपर फल रखने चाहिए । फूल जितने भी प्रकार के हों, तमाम भीति के मंगवाकर, मूरति मांडी हो, उस पर चढ़ा देने चाहिए । उसके ऊपर



होइ, जिकौ बीलरौ पांन धरिजै । ऊपर फळ मेलहीजै । फूल जिकै ही होय सो सारी जातरा मंगाय नै मूरत मांडै ऊपर चढ़ाईजै । ऊपर पीळी कपड़ौ चढ़ाईजै । पछै चंदण केसर सुं पूजा कीजै । धूप, अगर मुहड़ा आगै खेविजै । घिरत रौ दीवौ कीजै । नैवेद, मुखवास, मुदा पण, पान चढ़ाईजै । ब्राह्मण कनै प्रतिष्ठा कराईजै । भलीभाँति सुं शिव मंत्र भणाई जै । पछै चढ़ावौ होय सो सरब ब्राह्मण नुं दीजै । सातूरा लाहू कीजै, तिण माँहै सुं सातूरो लाहू एक देवतां नुं चढ़ाईजै । सो लाहू एक चढ़ावारौ ब्राह्मण नुं दीजै । बीजा लाहू सातूरा कीधा होइ सो चन्द्रमा री पूजा कीयां पछै खाईजै, पण थोड़ौ-थोड़ौ सगळं सुं बांट खाईजै । इण भाँति सुं पूजा करनै एकासणौ कीजै । जिकाई अच्छी ओ व्रत करसी, तिणरो मुहाग भाग अवचळ रहसी । भरतार सुं घणौ हेत पियार रहसी । तिणरै कदैई भूख न आवै ।

पीला वस्त्र चढ़ाना चाहिए । इसके बाद चंदन-केशर से पूजा करनी चाहिए । धूप, अगर उसके आगे जला रखना चाहिए । घी का दीपक करना चाहिए । नैवेद्य, सुपारी, आदि पांन-पांन पर चढ़ानी चाहिए । ब्राह्मण द्वारा प्रतिष्ठा करवानी चाहिए । अच्छी प्रकार से शिव के मंत्र का उच्चारण करना चाहिए । इसके बाद जो प्रसाद चढ़ाये के रूप में रखा हो सो सारा का सारा ब्राह्मण को दे देना चाहिए । सातूओं के लड्डू बनाने चाहिए उनमें एक सातू का लड्डू देवताओं को चढ़ाना चाहिए । वह एक चढ़ाया हुआ लड्डू ब्राह्मण को देना । दूसरे लड्डू जो बनाए हों, उन्हें चन्द्रमा की पूजा के उपरान्त खाने चाहिए । लेकिन थोड़ा-थोड़ा सभी लोगों को बाँटना चाहिए । इस प्रकार पूजा करने के बाद उपवास करना चाहिए । जो भी स्त्री इस व्रत को करेगी, उसका सोभाग्य-मुहाग अचल रहेगा । उसका अपने पति के साथ बड़ा प्रेम रहेगा । उसके घर में भूख ( दारिद्र ) कभी भी नहीं आवेगी । वह

दोहरी कदैई न रहै—सदा सुखी रहै । इतरौ कहनै श्री महादेवजी कैलास पधारिया । पछै एकण दिन इन्द्र देवता जिग मांडियौ । सो सारा देवता तैडिया छै, श्री ब्रह्माजी आया छै, श्री ठाकुर पधारिया छै । सो जिग करै । अस्त्री होय सो जीवणै अंगै बैसे । सु इन्द्र बैठा छै । इन्द्राण्यां सोळै सिंगार करनै इन्द्रजी रै जीवणै कानै बैठी छै । इन्द्राणी सुहागण मानैती छै । सो कनहै बैठी छै । तरै जिग पूरौ करनै उठिया । श्री इन्द्राण्यां ठाकुरां नै कहै छै—महाराज म्हानुं इसइौ व्रत बतावौ, जिण कियां सुं भरतार म्हौंसुं—मौया करै । रूपवंती घणी हुवै, लिखमी अनघन पामीजै ।

तरै श्री ठाकुर कहैछै—एक व्रत छै, सो महादेवजी सुन ! पुराणी कनुं कखौ छै । सो हूं तोनै व्रत कहीस । तरै इन्द्राणी

कभी भी दुःखी न रहेगी—हमेशा सुखी ही रहेगी । इतना कह कर महादेव जी कैलाश पर्वत पर गए ।

इसके उपरान्त एक दिन इन्द्र ने यज्ञ रचा । उसने तमाम देवताओं को बुलाए हैं—श्री ब्रह्मा जी आए हैं, श्री भगवान भी आए हैं । वह यज्ञ कर रहा है । स्त्री जो हो वह उसके दाहिनी ओर बैठती है । अतः इन्द्र बैठे हैं । इन्द्राणी सोलह शृङ्गार युक्त इन्द्र के दाहिनी ओर बैठी है । इन्द्राणी सुहागन है—मानेतन है । अतः वह इन्द्र के पास बैठी है । इसके बाद यज्ञ समाप्त करके उठे । श्री इन्द्राणी भगवान से कहती है—महाराज ! मुझे ऐसा व्रत बतावें, जिसके करने से पति हमसे प्रसन्न हो जाय । हम बहुत ही रूपवाली बन जायें, बड़े धनधान वाली बन जायें ।

तब श्री ठाकुर ( भगवान ) कहते हैं— एक व्रत है सो वह ( व्रत ) महादेव जी ने सुन ! पुराणी से सुना है । वह व्रत मैं तुम्हें कहूंगा । तब

कहै छै—महाराज ओ व्रत मोनै कहिजै । तरै श्री ठाकुर कहै छै—  
भाद्रवा वदि तीज अंधारा पखरी आवै, सो काजळी कहीजै ।  
काजळी तीज रै दिन गौर रौ व्रत कीजै । प्रभातै उठनै दांतण  
स्नान करनै नेम घालिजै । चन्द्रमा देखनै पूजा कीजै । एकासणौ  
करस्यां, पछै सात्तू करस्यां । गौर री मूरत मांडीजै । सात दिन  
पैहली जवारा वाहीजै । एक बीलरा पांन ऊपर सती री मूरत  
मांडीजै, काजळ सूं । दूजै पांन ऊपर केसर री मूरत मांडीजै ।  
गौर री मूरत बीजा पांन ऊपर मांडीजै । पछै मूरत लेनै जवारा  
ऊपर मेल्हीजै । केसरियौ कपड़ौ कर ऊपर चढ़ाई जै—धूप  
अगर खेवीजै, घृत रौ दीवौ कीजै । कुंकुम केसर चंदण सूं  
पूजा कीजै । फूलां सूं जवारा छाईजै—फूलां रौ बारणौ, पौळ  
कीजै । केसरियौ कपड़ौ पौळ-पौळ ऊपर नाखिजै । नैवेद्य, लाह  
सातुरौ चढ़ाईजै । मुखवास, मुद्रा पण चढ़ाई जै । घणी प्रीतभाव

इन्द्राणी कहती हैं—महाराज ! वह व्रत मुझे कहें । तब श्री भगवान  
कहते हैं—भाद्रपद की कृष्ण की जो तीज आती है, वही कजली तीज  
कहलाती है । काजली तीज के दिन गौरी का व्रत करना ( चाहिए ) ।  
सुबह उठकर दंतुन, स्नान आदि करके नियम धारण करना चाहिये ।  
चन्द्रमा उदय हो तब पूजा करके चन्द्रमा का दर्शन करके 'गौरणीया'  
को भोजन करवाना चाहिए । जैसी बारी हो ( सत्तू खाने की ) उन  
स्त्रियों को उसी धान का सत्तू खाना चाहिए । चन्द्रमा को देखकर पूजा  
करनी चाहिए ।

..... । गौरी की मूर्ती बनानी चाहिए । सात दिन पूर्व ही  
जवारे उगाने चाहिए । एक बील के पत्ते पर काजल से सती की मूर्ती  
बनानी चाहिए । दूसरे पान पर केशर से मूर्ती बनानी चाहिए । गौरी  
की मूर्तियां और भी दूसरे पत्तों पर मांडनी ( बनानी ) चाहिए । फिर  
मूर्ती को लेकर जवारों के ऊपर रखनी चाहिए । कपड़े को केशर से



सूं पूजा कीजै । ब्राह्मण कनै पूजा कराईजै । पछै चढावौ होय सो ब्राह्मण नुं दीजै । पण आपी पूजा न कीजै ।

एक अस्त्री थी सो आपीज पूजा करती । ब्राह्मण कनै पूजा न करावती । नै पूजा में चढ़तौ सो ब्राह्मण नुं देती नहीं । युं कहती ब्राह्मण काहुं करसी, जिकै ब्राह्मण करसी सुं म्हाहीज करसां । तरै वा अस्त्री मर गई । तरै वा फोही हुई । सु पूजा आपीज करिजै नहीं ।

एक अस्त्री थी सो वा काजळी री पूजा विध सुं करती, नै एक दिन दीवौ न करती । सो मुई, तरै वा गुण चमचेड़ हुई । सो आपहीज पूजा न कीजै-लिखियौ छै तिण विध सूं पूजा कीजै ।

श्री ठाकुर कहै छै-हे इन्द्राणी, ओ व्रत तूं धणी सरधा सूं, प्रीत सूं करै तो थारै लखमी रौ वासौ हुवै, सुहाग-भाग

रंगकर ऊपर चढ़ाना चाहिए-धूप, अगर खेना चाहिए, धो का दीपक करना चाहिए । कुंकुम और केशर, चंदन से पूजा करनी चाहिए । फलों से जवारों को लाद देने चाहिए ( इतने फूल चढ़ाने चाहिए कि जिससे जवारे ढक जायें ) फूलों का ही दरवाजा और प्रोल ( बड़ा दरवाजा ) बनाना चाहिए । केशरिया कपड़ा हर प्रोल पर रखना चाहिए । नैवेद्य, लड्डू सत्तू का चढ़ाना चाहिए । पान, दक्षिणा, चढ़ानी ( चाहिए ) बड़ी ही श्रद्धा और भक्ति से पूजा करनी चाहिए । पूजा ब्राह्मण से करवानी चाहिए । इसके बाद जो प्रसाद हो वह ब्राह्मण को दे देना चाहिए । पूजा स्वयं न करे ।

एक स्त्री थी वह अपने आप पूजा किया करती थी । ब्राह्मण से पूजा नहीं करवाया करती । पूजा पर जो चढ़ावा होता, वह ब्राह्मण को नहीं देती । ऐसा कहा करती-ब्राह्मण क्या करेगा, जो ब्राह्मण करेगा-वह मैं भी कर लूंगी । फिर ( समय पा कर ) वह स्त्री मर गई । तब वह 'फोही' हुई । इसलिए पूजा स्वयं नहीं करनी चाहिए ।

अवचल रहे । तरै ओ व्रत इन्द्राणी भली विध सूं-करण लागी । सु श्री ठाकुर कहै छै ओ व्रत द्रोपदी नुं कहाँ छै । द्रोपदी तू ओ व्रत भादवा वदि तीज काजळी-तीज रौ आवै तरै करै । एक धान वरस सौळह लग खाई । भावै आठ वरस ताई खाईजै । भावै च्यार वरस ताई खाईजै । पछै काजळी नै जजमीजै । सोळै गौरणी हुवै तिणां नुं पहलो तो गुळरौ पाणी पाई जै । पछै सात्त घणौ घृत खांड घाल कीजै सो चन्द्रमा उगै तरै पूजा करनै चन्द्रमा रा दरसण करनै गोरणियां नूं जीमाइजै । जिणा री बारी होय तिणां स्त्रियां नूं ऊण धान रौ सातू खवाइजै । पछै जीमीजै । पछै महादेवजी नुं बागो करी जै । महादेवजी री भूरत रूपारी कराईजै । आपरी सरवा सांरु, सहु करीजै ।

एक स्त्री थी वह काजली तीज की पूजा तो विधि से किया करती लेकिन दीपक कभी भी नहीं जलाती । वह मरी-तब चमगादड़ बनी । अतः स्वयं अपने हाथों पूजा नहीं करनी चाहिए-जैसा लिखा हुआ है, उसी विधि-विधान से पूजा करनी चाहिए ।

श्री ठाकुर कहते हैं—हे इन्द्राणी, यह व्रत तुम यदि बड़ी श्रद्धा से, प्रेम से करो, तो तुम्हारे यहाँ लक्ष्मी का निवास हो, सुहाग-भाग अवचल रहे । तब यह व्रत इन्द्राणी बड़ी अच्छी विधि से करने लगी । श्री भगवान कहते हैं—यह व्रत द्रोपदी से कहा है । हे द्रोपदी, तुम यह व्रत भाद्रपद की कृष्णा तीज आए, तब करना । एक ही भाँति का अनाज वर्ष सोलह तक खाना । या फिर आठ वर्ष तक खाना । चाहे फिर चार वर्ष तक खाना । फिर कजली तीज का उजाना करना । सोलह कन्याओं को ( कुंवारी कन्याओं को ) पहले गुड़ का पानी पिलाना । फिर सत्तू बहुत-सा धी और खांड के युक्त बनाना । चन्द्रमा के उदय होने पर चन्द्रमा के दर्शन करके गोरणियां को भोजन करवाये । जिस

पछै च्यार पोहर रात राजीजगौ कराईजै । पछै च्यार पुहर री पूजा चार कीजै । पछै गोरणियां रै कुंकुंरा टीका कीजै । टीकां ऊपर चौखा चेदीजै काजळ गोरणियांरी आंख मांहै धातीजै । मैहदी हाथां पगां रै दीजै । बीड़ा खाईजै । पछै सूंधोवो तेल, फळ, चंदण, कपूर, कस्तूरी चढ़ाई जै । चढियौ होय सो ब्राह्मण नुं दीजै रातीजोगो दिराई जै । बांभण नुं अमन दीजै सो श्री ठाकुर कहैछै-द्रोपदी तूं व्रत पूछती थी, सूं इण भांत सूं व्रत कीजै । नै व्रत इण भांत उजमीजै । इण भांत सूं व्रत गौररी छै । श्री महादेवजी कछौ छै, सो द्रोपदी म्है तोनै कछौ छै । तरै द्रोपदी व्रत भली-भांत सूं करण लागी छै ।

धान की बारी हो, स्त्रियों को उसी धान का सतू खिलाए फिर भोजन करना-बाद में श्री महादेव जी को पोशाक पहिनाना । महादेव जी की मूर्ती चांदी की बनाना । अपनी यथा शक्ति सहित सब यह करना । फिर रात्रि के चार पहर तक जागरण करना । फिर चार पहर की चार पूजा करना । फिर गौरणियों को ( कन्याओं को ) कुंकुम का टीका लगाना । टीके पर चावल चपना । गौरणियों के अंगों में काजल से अञ्जन करवाना । उनके हाथों और पैरों में मैहदी लगाना । पान खाना चाहिए । फिर सुगन्ध वाला तेल, फल, चंदन, कपूर, कस्तूरी आदि चढ़ाना चाहिए । चढ़ावा हो वह ब्राह्मण को देना । रात्रि भर जागरण करना । ब्राह्मण को सुख शान्ति देना । तब श्री भगवान कहते हैं-तुम व्रत पूछ रही थी, सो इस प्रकार व्रत करना चाहिए और इसी प्रकार इस व्रत का उजाना करना चाहिए । इस प्रकार यह व्रत गौरी का है । श्री महादेव जी ने कहा था-वही मैंने हे द्रोपदी ! तुम्हें कहा है तब, द्रोपदी भली प्रकार से व्रत करने लगी ।



## ४-जन्माष्टमी की कथा

श्री गणेशायनमः । अथ श्री जन्माष्टमी की कथा लिख्यते । एकण समीयै ब्रह्माजी दरवार जोडनै बैठा छै, तठै महादेवजी पिण आया छै । बीजा ही देवता ब्रह्माजी रै दरवार आया छै । बड़ा-बड़ा रिखीसुर दरवार में बैठा छै । ब्रह्माजी छै, सु सेष्टरा करता छै । बड़ी पदवी बैठा छै । तारै सब कोई आय आय नै नमसकार करैछै । सू सकोई बैठा छै । तिण समीयै नारद जी आया । सु नारद जी छै सु बड़ा भगत छै । सु ठाकुर नै राति दिन वीणा लीयां गावै छै । सु नारद जी ब्रह्माजी ने पुछैछै । सू राज ! आज जनमाष्टमी की कैसि मैहैमा छै !! सु राज मोनै कहो । तारै ब्रह्माजी कहैछै । स्यावास पुत्र तैं ठाकुर रो नाम जस छै । सू मोनुं कह्यौ । तरै ब्रह्माजी कहैछै, नै नारद जी

## जन्माष्टमी की कथा

एक समय ब्रह्मा जी दरवार जोड़कर बैठे हैं—वहाँ महादेव जी भी आये हैं । दूसरे देवता भी ब्रह्मा जी के दरवार में आये हैं । बड़े-बड़े ऋषि लोग दरवार में बैठे हैं । ब्रह्माजी हैं वे सृष्टि के कर्ता हैं ( सृष्टि के निर्माण करता हैं ) बड़े ( ऊँचे ) आसन पर बैठे हैं । वहाँ सभी लोग बैठे हैं । उस समय नारद जी आये । नारद जी हैं—वे बड़े ही भक्त हैं । वे रात-दिन वीणा लिए भगवान का स्मरण करते रहते हैं । अतः नारद जी—ब्रह्मा जी से पूछते हैं—भगवान्, आज जन्माष्टमी कैसी है, कैसी महिमा है, कृपया मुझे बताएँ । तब श्री ब्रह्माजी कहते हैं । पुत्र, धन्यवाद ! उस भगवान के नाम का बड़ा ही यश है—वह तुमने मुझ से पूछा है । तब ब्रह्मा जी कहते हैं और नारद जी सुनते हैं । भाद्रपद की कृष्ण पक्ष में अष्टमी आवे, वह जन्माष्टमी का व्रत राजा अमरीख करता है । राजा बली(प)

सांभलें छै । भादवा मांस अंधारा पखरी आठम आवै सु  
जनमाष्टमी रो वरत राजा अमरीख करै छै । राजा बलीप करतो ।  
राजा बिभीषण करतो । विजाहो बडा-बडा राजा जन्माष्टमी रो  
वरत करै छै । सु इण वरत कीया रो इतरो पुन्य छै । कपिला गाय,  
सोवन सींगी, रूपा खुरी, तांब पुछी तितरो पुन्य हुवै । नै वळै  
कुरु खेत मांहे सुरज गिरहण मांहे सोनो दीजै, सो भादवानो  
दीया रो पुन्य होवै तितरो पुन्य हुवै । वळै जेतलाई तीरथ छै, तितरा  
नाया रो फळ हूवै, इतरो फळ छै । तारै नारद जी कहै छै, राज !  
जनमाष्टमी रो विधान छै, सो कछो-कैसी विधि सु वरत कीजै ।  
तारै ब्रह्माजी कहै छै-नारद, भादवा वदि अष्टम रै दिन गोकुल  
मांडीजै, चंदण सु मांडीजै । पछै देवकी माता मांडीजै । पछै  
जसोदा माता ढोलोयै ऊपर सूता मांडीजै । जसोदा माता-नंद-  
बाबो मांडीजै । पाछै श्री क्यनंजी माता री छात करवट कनै

---

भी करता, राजा बिभीषण भी किया करता-दूसरे भी बड़े-बड़े राजा  
जन्माष्टमी का व्रत करते हैं । अतः इस व्रत के करने का बड़ा पुण्य है-  
कपिला गाय, सोने की सींगोंवाली, चांदी के खुरोंवाली तथा तांबे की  
पूँछवाली, ( ऐसी ) गाय जो पुण्य करता है इतना बड़ा पुण्य-सूर्य  
ग्रहण में कुरुक्षेत्र के स्थान पर जाकर जो सोना दान दिया जाता है,  
वही भाद्रपद में देने पर पुण्य होता है; उतना पुण्य हो । फिर ( सुनो )  
जितने तीर्थस्थान हैं, उनमें स्नान करने का पुण्य लाभ होता है ( इतना  
इस व्रत से होता है ) तब नारद जी कहते हैं-जन्माष्टमी का कैसा विधि-  
विधान है वह कहिए । किस विधि से यह व्रत करना चाहिए । तब ब्रह्मा  
जी कहते हैं, हे नारद ! भाद्रपद की कृष्ण पक्ष के दिन गोकुल माण्डना  
चाहिए.....उसे चंदन से मांडना चाहिए । फिर देवकी माता मांडनी  
( चित्रित करना ) चाहिए । फिर यशोदा माता का चित्र जैसे वह  
खाट पर बैठी हों, चित्रित करनी चाहिए । यशोदा माता और बाबा

मांडीजै । पछै रोहली माता मांडीजै । पछै बलभद्र जी मांडीजै । पछै श्री महादेव जी मांडीजै । बीजा ही तेतीस कोटि देवता मांडीजै । देवी मांडीजै । पछै गाय़ा घणी मांडीजै । बछा घणा मांडीजै । पछै गोपी गोप मांडीजै । पछै काळीनाग मांडीजै । पछै परतिष्ठा भणीया ब्रामण कनै कराई जै । पछै आगै कुंभ एक मेलिजै । ऊपर सांळिगराम जी पधराइ जै । पाछै पूजा कीजै । पछै धूप अगारढ खेविजै, दीबो घिरत रो कीजै । चंदण, कुंकुम, केसरि सुं पूजा कीजै । पछै अखित चढ़ाई जै । नैइवेद हुई सो आण नै समरपीजै । पछै तांबोळ समरपीजै । पछै भला छै दिखणा ब्राह्मण नै दीजै । चढ़ायौ हुवै सो ब्रमण नुं दीजै । इण विधि सुं वरत करनै, पछै आप पारणौ कीजै । सु नारद जी इण विधि वरत करै तो तिण रै पाप रौ खै होवै ।

नन्द भी चित्रित करना चाहिए । फिर भगवान श्रीकृष्ण माता की छाती से लगे—करवट के पास (लेटे) चित्रित करना चाहिए । फिर रोहनी माता चित्रित करनी चाहिए । फिर बलभद्र जी चित्रित करना । फिर महादेव जी चित्रित करना । फिर दूसरे तैंतीस करोड़ देवता चित्रित करना । देवी चित्रित करना । फिर बहुत सी गायें चित्रित करना, बहुत से बछड़े अंकित करना । फिर गोप और गोपियाँ चित्रित करना । फिर काली नाग को चित्रित करना । इसके उपरान्त (इन सभी उपकरणों की) प्रतिष्ठा पढ़े लिखे ब्राह्मण से करवानी चाहिए । फिर एक बड़ा मेलना चाहिए—उस पर सालगरामजी की मूर्ति स्थापन करनी चाहिए । फिर पूजा करनी चाहिए । इसके उपरान्त धूप, अगार से अर्चना करनी चाहिए—घी का दीपक रखना, चंदन, कुंकुम और केशर से पूजा करनी चाहिए । फिर अक्षत चढ़ाने चाहिए । नैवेद्य हों उन्हें लाकर (भगवान के) समर्पण करे । फिर पाँच समर्पण करना चाहिए । इसके उपरान्त अन्धरी सी दक्षिणा ब्राह्मण को देनी चाहिए । प्रसाद जो भगवान पर भोग निमित्त चढ़ाया हो, वह



घरमरी बेरध हूवै । तिण रै पुत्र हूवै, लिखमी अखूट रहै । उण नुं दोहरम कदै नावै । पुरुष जिकोई जन्माष्टमी रो वरत करै सु सदा सरवदा लखमीवेत हूवै रहै जस सोभाग हूवै । नै मरा, बैकुंठ पदवि पावै । नै जो कोई पुरुष आष्टम रो व्रत न करै छै सु राख्यरौ जमारौ लहै । नै असत्री जिका ओ वरत न करै छै, तो सापिनीरौ जमारौ लहै; उजड़ि वन रो वासौ हूवै । सु नारद जन्माष्टमी रो वरत रो अनंत फल छै, घणो पुण्य छै, जिण पुण्य रौ पार कोई नहीं । ठाकुर कहै छै—ओर वरत घणाई छै पिण ग्नतिस वरत महारा छै । सु करै—चोईस इंग्यारिस करै, एक रामनवोमी जनमआष्टम, नरसिंघ चतुरदसी, सिवराति, वामन द्वादसी, ए वरत म्हारा छै । मनुष्य अवतार आयनै ए गुणतिस वरत करसी तिणनुं हूं बैकुंठ पदवि मेलिस—इण वातरौ संदेह नहीं । तिण म्हारी पीति घणी महावालो भगत छै ।

आहारण को दे देना चाहिए । इस प्रकार से व्रत करने के बाद फिर खुद व्रत को खोले ( एक स्थान पर बैठकर एक समय भोजन करना चाहिए ) हे नारदजी ! यदि कोई व्यक्ति इस रीति से व्रत करता है—तो उसके पापों का क्षय होता है । उसके धर्म की वृद्धि होती है—उसके सन्तान हो, लक्ष्मी उसके यहाँ अखूट रहे । उसे कभी भी कष्ट न हो । जो पुरुष जन्माष्टमी का व्रत करता है, वह हमेशा लक्ष्मीवान होता है । और यश का भागीदार बने और मरणोपरान्त बैकुण्ठ में स्थान प्राप्त करे । यदि कोई व्यक्ति अष्टमी का व्रत नहीं करता है, वह राक्षस का जन्म पाता है । और स्त्री यदि व्रत नहीं करती है, उसे सापिन ( नागिन ) का जन्म लेना पड़ता है । उसे निर्जन वन में वास करना पड़ता है । अतः हे नारद ! जन्माष्टमी के व्रत के असंख्य फल हैं; बड़ा ही पुण्य होता है, जिस पुण्य की महिमा का कोई पार नहीं पा सकता । भगवान कहते हैं—और तो बहुत से व्रत हैं, लेकिन उन्तीस व्रत मेरे हैं । अतः उन्हें भी करें

एक दिन राजा युधिसृष्ठर जी बैठा छै तिन सभियै श्रीकृष्ण जी पधारया । तारै राजा युधिसृष्ठर नमस्कार करिनै हाथ जोरि नै श्री ठाकुर नै कहै छै—राजरी, आजो जनमआष्टमी हुई छै, तू कही मोनै । तारै श्री कृष्णजी कहै छै, राजा युधिसृष्ठर जी सांभळै छै । ठाकुर कहै—धरती में कंस रौ जोर हूवो । तारै देवता प्रथी में भेलें होय नै ब्रमाजी कनै आय पुकारीया । तारै ब्रमाजी, देवता प्रथी में भेल्य होय नै खीर सागर में आया । आयनै हमारी असतूति करै छै । तारै मैं दरसन दयो । तारै ब्रह्माजी कहै छै । राजा मिरत लोक मांहे मथुरा नगरी छै, तिठै दैत कंस अवतरीयो । सु मनिखा नुं घणा दुख देवै छै । औ किणहिवि ते मरै नहीं । तारै ठाकुर बोलया । हूँ मथुरा जी मांहे बसुदेव जी

चौबीस एकादशी के व्रत, एक व्रत राम नवमी का, एक जन्माष्टमी का, नृसिंह चतुर्दशी का, एक शिवरात्रि का और एक वामन द्वादशी—ये व्रत मेरे हैं । मनुष्य जन्म लेकर ये उन्तीस व्रत जो व्यक्ति करेगा, उसे वैकुण्ठ में स्थान प्राप्त हो, इस बात में किसी प्रकार का संदेह नहीं । उस ( व्यक्ति ) पर मेरा बहुत ही प्रेम रहता है और वह मेरा भक्त होता है ।

एक दिन राजा युधिसृष्ठर बैठे हैं—उस समय श्री कृष्ण जी पधारे । तब राजा युधिसृष्ठर नमस्कार करके और हाथ जोड़ कर श्री ठाकुर से कहते हैं—भगवान्, आपकी जो यह जन्माष्टमी हुई—उसके विषय में मुझ से कहिए ! तब श्री कृष्ण जो कहते हैं और राजा युधिसृष्ठर सुनते हैं । भगवान् कहते हैं—पृथ्वी पर कंस बलवान हुआ । तब देवता लोग इकट्ठे होकर ब्रह्माजी के पास आए और ( आकर ) पुकार की । तब ब्रह्माजी और सभी देवता इकट्ठे होकर क्षीर सागर में आए । आकर

यदिव छै । तिण रै घरै अवतार लेइस । नै देवता नुं कहीयो थे थांहरो अंस मैलनै मथरा जी मांहै अवतार लेजो । हवै थे जावो । तारै ब्रह्माजी देवता इसी बात सुण नै पिरथी मै आपरी जायगा आया । पाछै कंस वसदेवजी नुं आपरी बेहनि देवकी माता परणाया, तारै घरानुं हालिया । साथै कंस पोहोचावण आयो थौ । सु आकासवाणी हुई । जू आठमो गरभ ईण रै उदर आवसी, सु थारो मारणहार हूस्यै । तारै कंस दौड़ नै देवकी री चोटी पकड़ी नै खडग काढनै मारण लागो । तारै वसदेव जी कहै—थारे तो गरभ सु काम छै बेहनि कांयों मारै । थारो दाय आवै तो आठमो गरभ लै, तारै आ बात कही । तारै कंस देवकी नुं छोड़ी । बरस दिन हूवो, ज्युं एक बालक जायो । सु वसदेव जी कंस कनै आंणीयो । तारै कंस जोयनै ढीलो होयो । तारै कंस कनै नारद जी आया । आयनै कहै,

---

मेरी स्तुति करते हैं । तब मैंने दर्शन दिए—तब ब्रह्माजी कहते हैं—भगवन्, मृत्युलोक में मथुरा नगरी है, वहाँ कंस नाम का दैत्य पैदा हुआ है । वह मनुष्यों को बड़े ही कष्ट देता है और किसी से भी मरता नहीं । तब भगवान् बोले—मैं, मथुरा नगरी में वसुदेव जी यादव हैं उनके यहाँ अवतार लेऊंगा । और देवताओं से कहा—आप अपना-अपना अंश रखकर मथुरा जी में अवतार लेना । अब आप जाइयेगा । इस प्रकार ब्रह्मा जी व देवता लोग ऐसी बात सुनकर पृथ्वी पर अपनी-अपनी जगह आए । समथोपरान्त कंस ने वसुदेव जी को अपनी बहन देवकी माता विवाह दी—वे लोग अपने घर को चले । साथ में कंस उन्हें पहुँचाने आया था । रास्ते में आकाशवाणी हुई—इसके आठवाँ गर्भ जो होगा, वहीं तुम्हें मारने वाला होगा । तब दौड़कर कंस ने देवकी की चोटी पकड़ी (बह) तलवार निकाल कर उसे मारने लगा । तब वसुदेवजी कहने लगे—तुम्हारा तो गर्भ से काम है, बहिन को क्यों मारते हो ! तुम्हें ठीक



थे बालक परा मारौ । कुंण जाणे कोई आठमों गरब छै । तरै कंस छ बालक मारीया-सातमै गरभ बलभदर जी पधारीया । सु कंस जाणै देवकी रो गरभ आळ-भाळ होय गयो । ता आठमै गरभ हूँ आयो । तरै देवकी माता वसदेव जी बंदीखांना मांहे कंस रै हुता, सु म्हारो जनम हूवो । तरै म्हे वसदेवजी नुं देवकी माता नुं चुतरभुज रूप रो दरसन दीयो । इणां महारी असतूती कीनी । तरै मै कह्यो । थे मोनुं गोकूल मांहे जसोधा माता रै-नजोरै लैजावो । थे कंस थी बीहो मां । तरै रखवाळ था स सोगया । ताला था सु झडी परी अया । तरै वसदेवजी श्री ठाकुरां नुं लैनै गोकुल जी माहौं आया । शेषजी छत्र करै छै । यमुना पागे लागी नै मारग दिय छै । ताय नंद जी मिलिया । जसोधाजी तिणसमै बैठी-जागै छै । सू सूति छै, तिण सुं सुधि काई नही ।

लगे तो आठवाँ गर्भ ले लेना ऐसा (उसे) कहा । तब कंस ने देवकी को छोड़ा । एक वर्ष का समय व्यतीत हुआ, तो एक बालक पैदा हुआ । तब वसुदेव जी ने कंस को लाकर वह दे दिया । तब उसे देखकर कंस जरा नम्र पड़ा । तब कंस के पास नारद जी आए । आकर कहा—आप इस लड़के को मार दीजिए । कौन जानता है आठवें गर्भ में क्या होगा । तब कंस ने छः बालक मारे, सातवें गर्भ में बलभद्र जी पधारे । कंस ने समझा—देवकी का गर्भ अट-संट होगया है । इस प्रकार आठवें गर्भ में मैं आया । उस समय देवकी माता और वसुदेव जी—कंस के बन्दीखाने में थे; वहाँ मेरा जन्म हुआ । तब मैंने वसुदेव जी एवं देवकी माता को चतुर्भुज रूप धारण करके दर्शन दिए । इन्होंने मेरी प्रार्थना की । तब मैंने कहा आप मुझे गोकुल में यशोदा माता के पास पहुँचा दें । आप कंस से डरो मत..... । उस समय जो रक्षक लोग थे, वे सभी सो गए । ताले थे, सो खुल गए । तब वसुदेव जी भगवान को लेकर गोकुल में आए । शेष भगवान् छत्र करते हैं । यमुना पाँव पड़कर उन्हें

किसन जी नुं जसोदा कनै सुवांव नै बेटी लेनै प्राछा आय देवकी माता नुं दीनी । तरे केवार जड गया । ताला जडोया छै- नै माहे बाळकी रोई । तरै कंस दौड़ी नै आयो । ताला खोलीया । किवाड खोल दीवो लीया मांहे आया अयुं देखै तो देवकी बाळकी लीया बैठी छै । तरै कंस दीठो यौ कैसो हूवो ! बेटी थो नै आ बेटी क्युं हुई । तरै बेटी देवकी कनै सुं कंस मागै छै, जु आ बेटी मोनु वकस । तरै कंस खोसनै बारै लै आयौ । नै बाळकी थी सु देवी रो रूप थो सू कंस रा हाथ महि थी, ऊडनै उंची गई । सु देवता सिंहासन आण दियो छै । अष्टभुजि देवी बैठी छै । हाथ मांहि आयुध छै । कानां मांही कूंडील छै । वागो बिहरीयो छै । देवता हाथ डोयां असतूति करै छै । देवी रो नाम बीजुली देवी छै । तरै कंपिण ऊभो देखै छै । तरै देवी कहै छै, रे कंस तुं

मारग देती है । वहाँ आकर नन्द जी मिले । उस समय यशोदा जी जागती हुई बैठी है । वह सो जाती है—इससे उसे कोई सुधि (खबर) नहीं रहती । ( वसुदेव जी ने ) श्री कृष्ण को यशोदा के पास सुलाकर, पुत्री को लेकर वापिस आकर उसे देवकी माता को दी । तब किवाड़ सभी बन्द होगए । किवाड़ बन्द हैं—उनमें से लड़की रोई । तब कंस दौड़कर आया । ताले खोले । किवाड़ खोलकर दीपक लिए अन्दर आकर देखा, तो देवकी लड़की लिए बैठी है । तब कंस ने देखा—यह कैसे होगया ? लड़का था—( लड़का होने को था ) यह लड़की कैसे होगई ? तब देवकी से लड़की को कंस मांगता है—यह लड़की तुम मुझे भेंट करदो । तब कंस उसे छीनकर बाहर ले आया । लड़की थी—वह देवी थी । वह कंस के हाथ में थी, उड़कर ऊपर को गई । उसे देवताओं ने आसन दिया है । अष्ट-भुजाओं वाली देवी बैठी है । हाथों में आयुध (हथियार) हैं । कानों में कुण्डल हैं । पोशाक पहिनी हुई है । देवता हाथ जोड़े प्रार्थना करते हैं । देवी का नाम बिजुली है । तब (कंस)

मोनुं मारतो थो । देवकी नुं तो बकसी नहीं । बगसी हुँती तो थारो भल्लो हूवत । म्हे देवी, महांनुं कुण मारै ! पिण थारो माराहार बाळक परगटीयो छै । आ बात कह नै आपरी जाइगा गई । नै कंस मन मांहे पछतावो करै छै-चिन्ता करै छै, जु म्हे भूंडो कीयो । देवकी नै मै बेटी खोस लीनी, नै वसुदेव नुं बंदी-खाना दीयो । बडो साध छै-ए रीस करसी सराप देसी-तो हूँ नरक गांमी हूईस । तरै वसदेवजी कनै कंस आयनै वीनती करै छै-मै थांनुं दुख दीयो, सो आकासवाणी कयो थो । नै आकास-वाणी कुडो होय तो किसो दोस । थे बडा साध छौ-मोनुं क्षमा करो । तरै वसदेव जी कहै छै-कंस, थारो दोस नहीं । आ बात हूण पदारथ छै, दईव रै सारै छै । तोनुं दोस कोई नहीं । तरै वसदेवजी नुं देवकी माता नुं घर री सीख दिनी । घरै आया ।

कांपता हुआ खड़ा देखता है । तब देवी कहती है—रे कंस, तू मुझे मारता था न ! देवकी को तो तूने क्षमा नहीं किया । तूने उसे क्षमा कर दिया होता, तो तेरा कल्याण होता । मैं तो देवी हूँ, मुझे कौन मार सकता है ? लेकिन तुम्हें मारने वाला बालक पैदा हुआ है । यह बात कहकर वह अपने स्थान पर चली गई । कंस अपने मन में पश्चाताप करता है—मैंने बहुत ही बुरा किया । देवकी की पुत्री मैंने छीनली—और वसुदेव को मैंने बन्दीखाने में डाल दिया । वह (वसुदेव जी) तो बड़े ही साधु पुरुष हैं । इन्हें गुस्सा आया और इन्होंने शाप दे दिया तो मैं नरक का भोगने वाला हो जाऊँगा । तब कंस वसुदेव जी के पास आकर प्रार्थना करता है—मैंने आपको कष्ट दिये थे, इसके विषय में मुझे आकाशवाणी हुई थी ( इसी-कारण ) और अब आकाशवाणी भी भूठी सिद्ध हो जाए, इसमें किसका दोष है । आप तो बड़े ही साधु-पुरुष हैं—मुझे क्षमा कर दें । तब वसुदेव जी कहते हैं—हे कंस ! इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है । यह बात इस प्रकार होनी ही थी—होनहार विधि



कंस पिण आपरै घरै आयो । नींद न आई । सवारै कंस कनै दुष्ट दैत था सु आया । ता रात री बात कही । दुष्ट कंस मतो दीयो—सु धरती माँहें बाळक जनमीया छै, सू सोह मारसां । गाय बांभण रिखीसर नुं परा मारसां । वेद रो नास करसां । ओ मतौ करनै ऊठीया । पहिली तो ठाकुरां पूतनां नुं मारी । बीजै फेरै ठाकुर सूता था नै त्रणावरत छैनै ऊँचो ऊढीयो । उठै ठाकुरां गलै द्रपोदे नै तणवरत मारीयो । सिला ऊपर पढतां रो माथो फाटो । पछै ठाकुरा माता नुं मुख माँहें बैकुंठ देखायो । पछै माखण खायो । पछै माता कनै ऊखळ सो बंधायो । पछै गोवर्धन परबत दिन सात उचाय नै राखीयो । इंदर रो गरब गमायो । पछै काळो नाग रै माथै पग दीया काळी नाग नुं यमुना माहि थी काढि नै रमणीक समद मेलीयो । पछै घणा

के हाथ में हैं । तुम्हें इसका कोई दोष नहीं । तब उसने वसुदेव जी को एवं माता देवकी को घर जाने की इजाजत दी । वे लोग घर आए । कंस भी अपने घर आया । उसे नींद नहीं आई । तड़के बहुत ही जल्दी कंस के पास दुष्ट दैत्य आये । उन्होंने रात्रि की बात कही । दुष्ट कंस ने राय दी कि जितने भी बच्चे पृथ्वी पर जन्मे हैं, उन सभी को मार देंगे । वेद का नाश करेंगे । ऐसी बात सोचकर उठे ।

पहले तो भगवान् ने पूतना को मारी । दूसरी बार भगवान् सोए हुए थे । उन्हें त्रणावरत लेकर ऊपर आकाश में उड़ा । वहाँ भगवान् ने उसका गला दबोचकर त्रणावरत को मारा । उसका शिला पर गिरते ही सिर फूट गया । फिर भगवान् ने माता के मुँह में बैकुण्ठ (उन्हें) दिखाया । बाद में मक्खन खाया । फिर माता द्वारा अपने आपको ऊखल से बंधवाया । इसके बाद गोवर्धन पर्वत को सात दिनों तक ऊपर उठाकर रखा । इन्द्र का गर्व दूर किया । फिर काली—नाग के शिर पर

चरित मुथोरा गोकुल में कीया । पछै नारद जी जायनै कंस नै जगायो । तरै कंस अकुर मेल नै मानुं तेढायौ । मारग मांहे आप आबतां आपरी माया दिखाई । अकुर रै साथै मथुरा जी आया । रजक ( धोबी ) नै मार कपड़ा लीना । कुबजा रो चंदन लै नै सुधी कीनी । तीन लोक रो रूप दीयो । पछै सुदामा रै घरै आया—राति सूता । उण रो दालेदर गमायो । परभात रा धनुंखसाळा धनुंख भांजीयो, रखवाळा मारीया । पछै कवळीया पीड हाथी रो दांत उपाड़ नाखीया । पछै पकड़ माथा ऊपर भमाय धरती सु पटकीयो । पाछै महा चंकर सुलंडीया, उणनुं मारीया । पाछै रंगभूमि मांहे आया । कंस माचा ऊपर बैठो थो । कंस मुहडा थी—वसुदेव जी नुं उग्रसेनिजी नुं कुवचन कहीयौ । तरै कीसनजी दौड नै कंसरी चोटी पकड़ी नै इसडो मार दीयो ।

पैर रखा—काली नाग को यमुना में से निकालकर सुन्दर समुद्र में जा रखा । फिर नाना प्रकार के चरित्र मथुरा और गोकुल नगर में किए । तब नारद ने जाकर कंस को जगाया ( उसे सचेत किया ) तब कंस ने अकूर को भेजकर मुझे बुलवाया । रास्ते में मैंने उसे अपनी माया दिखाई । अकूर के साथ मथुरा आया । रजक ( धोबी ) को मारकर उससे कपड़े छीन लिए । कुब्जा का चंदन लेकर उसे सीधी बनाई ( उसकी कूबड़ निकाल दी ) । उसे तीनों लोकों का सौन्दर्य प्रदान किया । फिर सुदामाजी के घर आया—उसके यहाँ रात्रि में विश्राम किया । उसका दारिद्र नष्ट कर दिया । सुबह धनुष—भण्डार का धनुष तोड़ा । उसके रक्षकों को मारे । इसके बाद कवलियापीड़ हाथी के दांत उखाड़ फेंके । फिर उसे पकड़—सिर से घुमाकर पृथ्वी पर गिराया । इसके बाद महाचक्र से लड़े, उसे मारा । फिर रंगभूमि में आए । कंस ( उस—समय ) मंच पर बैठा था । कंस ने मुँह से वसुदेव जी को और उग्रसेन को बुरे बचन कहे । तब कृष्ण जी ने दौड़कर कंस की चोटी पकड़ी । और उसे ऐसा

सू कंस उठै ही नुं मूँवो । तरै किसन जी वसदेवजी देवकी माता कनै आया । वसदेव नुं माता नुं ग्यान उपनो । जमै बेटा विण रा । ओ परमेशुर आप परगट हुवो छै, घरती रो भार उतारण नुं । सु हाथ जोड वसदेव जी नै देवकी ऊभा छै । तरै ठाकुर रो दीयो इण नुं ग्यान उपनो । सु यमरूँ ग्यान री वेळा नहीं । महारै अजुंस घणो काम करणो छै । तरै कृष्णजी कहै छै माता जी, थे मोनुं कांय न मिलिया । माताजी—थे बंदीखाना माहै घणो दुख पायो तिण बात सै न मेलौ छौ । सू माताजी माहरो दोस कोई नहीं । हुँ पार के घर मोटो हुवो । सू इण कंस दुष्ट थी डरता थे मोनुं नंदजी रै घरै मेलीयो तरै हुँ उठै मोटो हुवो । थांहरा हीडा क्यु करि हवै । सू माताजी थे मानुं रमायो नहीं । चुं पायो नहीं । मोटो न कीयो । सु थांहरो दोस छै ।

( बुरी तरह से ) मारा, कि कंस उसी स्थान पर ही मर गया । तब कृष्ण जी वसुदेव जी और देवकी माता के पास आए । वसुदेव जी और माता को ज्ञान उत्पन्न हुआ—ये पुत्र किसके ? यह तो स्वयं ईश्वर—अवतार लेकर आया है । पृथ्वी का भार उतारने को । अतः (वे) हाथ जोड़कर वसुदेव जी और देवकी जी खड़े हैं ।

..... । मुझे अभी काफी काम करना है । तब कृष्ण जी कहते हैं—माता जी आप मुझे क्यों नहीं मिलीं ? आपने बन्दीखाने में बड़ा ही कष्ट पाया है, इसी-लिए नहीं मिल रही हैं । उसमें हे माता, मेरा कोई दोष नहीं है । मैं तो पराये (किसी दूसरे के) घर में बड़ा हुआ । इस दुष्ट कंस से भयभीत होकर आपने मुझे नन्द के घर भेजा—अतः मैं वहीं बड़ा हुआ । तुम्हारा (मुझ पर) स्नेह कैसे हो सकता है ? अतः हे माता, तुमने मुझे बचपन में खेल नहीं खिलाये । आपने अपना (स्तनों से) दूध नहीं पिलाया । मुझे बड़ा नहीं बनाया । इसमें तो आपका ही दोष है । अब मैं बड़ा होगया, तब



हवै हूँ मोटो हूवो, तरै मैं कंस नै मार नै बंदी खाना थो छुड़ाया । तरै वसुदेव जी नै मोह लागो । तरै कहै, रे बेटा ! तो बिन मेह दुःख पायो । नै ओ कंस छै सुरखै मिस करनै सूतौ होसी । ओ बळै उठनै साध छै तिणानु दुख देसी । तरै श्री कृष्ण जी कंस नै घीसनै बारै नांखीयौ । तरै जिकै भगत छै सु आय आय नै ठाकुर रै पगै लागे छै । उग्रसेन राजा नुं मथुरा रो राज दीयो छै । सु बेसन भगत छै सू महोछो करै छै । सू कहैछै—राज मथुरा मांहे आजु पधारीया छो सू आज ही राज रो जनम हूयो । तरै ठाकुर कहै छै—आज जनमाष्टमी करो । मथुरा मांहे था त्यां वरत कीयो । चांद देखनै चांदनै अरव देवै । आधी राति रो ठाकुर रो जनम हूवो । तरै वाजित्र बजाइ छै ताल, पखावज, मिरदंग,

मैंने कंस को मारकर ( आप लोगों को ) बन्दी-खाने से छुड़ाये हैं । इस पर वसुदेव जी को मोह होगया । तब कहने लगे—बेटा ! तुम्हारे बिना हमें बड़े ही कष्ट पाने पड़े और यह जो कंस है यह ऐसे ही बहाना बनाकर सो गया होगा । यह फिर उठकर अपने कुकर्म करेगा । मनुष्यों को दुःख देगा । तब श्रीकृष्ण जो ने कंस को घसीटकर बाहर फेंक दिया । इस पर भगवान के जितने भी भक्त लोग थे सभी आकर भगवान के पैरों पड़ते हैं । उग्रसेन राजा को मथुरा का राज्य दिया है । अतः जितने भी वहां भक्त लोग हैं वे सभी उत्सव आदि करते हैं । वे कहते हैं—भगवान ! आप तो मथुरा में आज ही पधारे हैं—अतः ( हमारी तरफ से तो ) आपका जन्म आज ही हुआ समझा जायगा । तब भगवान कहते हैं—आज जन्माष्टमी ( का व्रत ) करो । मथुरा में ( भगवान थे ) तभी व्रत किया गया । चांद को देखकर चांद को अर्घ्य देकर ( व्रत किया गया ) । अर्द्ध—रात्रि में भगवान का जन्म हुआ । तब बाजे बजते हैं—ताल, पखावज, मृदङ्ग, बांसुरी, शंख—भालर, दमामा, डोल बहुत प्रकार से बजते हैं । रात्रि में जागरण करना चाहिए ।

वांसली, संख, झाळरी, दमामा, ढाल घणा वाजा बजाईजै । रातै जागरण कीजै, दान-पुन घणो कीजै । पछै धूप, दीप, नैवेद, तंबोल, पोहपा सूं पूजा करीजै, घणा उछाह कीजै । ठाकुर कहै छै—ओ माहरी जनमष्टमी रो वरत करसी, तिण रै जनम-जनम रो पाप जावसी । नै वैकूँठ पदवी पावसी या ठाकुर री जनमष्टमी रो वरत करै तिण कै अनंत फल छै । इति श्री जनमासटमी री कथा-वारता संपूर्ण सरव सिधदायक श्री कृष्ण सदासहाय छै ।

---

दान-पुण्य बहुत सा करना चाहिए । इसके बाद धूप, दीप, नैवेद्य, पान, फूलों आदि से पूजा करनी चाहिए । बड़ा ही हर्ष, आनन्द-मनाना चाहिए । भगवान कहते हैं—मेरी ( इस ) जन्माष्टमी का जो व्रत करेगा, उसके जन्म-जन्मान्तर के पाप कट जायेंगे और वह स्वर्ग में उच्च स्थान को प्राप्त करेगा । भगवान की इस जन्माष्टमी का व्रत जो करता है, उससे अनन्त फल प्राप्त होते हैं ।

---

## ५—रिषि पंचमी की कथा

श्री गणेशायनमः । अथ रिषि पंचमी की कथा लिख्यते ॥  
 युधिष्ठिर उवाच । हे कृष्ण मैं थां कन्हा अनेक व्रत सुणिया छै ।  
 अब अनेक पाप दूर करै इसो व्रत सुणियो चाहूं छूं । श्री कृष्ण  
 उवाच । राजा थांनुं और रिषि पंचमीं रो व्रत कहूं छूं । जिकै  
 व्रत कियां इसी अनेक पाप सूं छूटै । युधिष्ठिर उवाच—हे कृष्ण  
 उवा पंचमी किसी अर रिषपांच्यो क्यूं कहावै । नारी व्रत कियां  
 किसै पाप सूं छूटै । पाप तो अनेक छै, रिषि पांच्यो रै व्रत सूं  
 किसै पाप सूं छूटै । श्री कृष्ण उवाच । जिका नारी रजस्वला हुई  
 थकी जाण अजाण घररा भांडा भीटै तिकै नूं बहोत पाप हुवै ।  
 चारूं वरणा रां लोकां रजस्वला इसी नुं घर बाहर राखणी ।  
 तिण रो कारण सुण । आगै इंद्र व्रतरासुर नूं मारियो तद ब्रह्म हत्या

## ऋषि पंचमी की कथा

युधिष्ठिर ने कहा—हे कृष्ण, मैंने आपसे अनेक व्रत सुने हैं । अब  
 ऐसा व्रत सुनना चाहता हूं, जिससे अनेक पाप दूर हों । श्री कृष्ण बोले—  
 राजा, तुम्हें एक ऋषि पंचमी की कथा और कहता हूँ, जिस व्रत के  
 करने से स्त्रियाँ अनेक पापों से छूटती हैं । युधिष्ठिर बोला—हे कृष्ण, वह  
 कौनसी पंचमी है और ऋषि पंचमी क्यों कहलाती है । व्रत करने से  
 नारि कौन से पाप से छूटती है ? पाप तो अनेक हैं—ऋषि पंचमी के  
 व्रत से कौन से पाप से छुटकारा हो ? श्री कृष्ण ने कहा—वह स्त्री  
 रजस्वला हो जाने पर जान में अथवा अजान में घर के बतनों को छूए,  
 उसको बहुत पाप होता है । चारों वरुणों के लोगों को रजस्वला स्त्री को  
 घर से बाहर रखनी चाहिए । उसका कारण सुनो । पहले इंद्र ने  
 वृतासुर को मारा—तब इंद्र को ब्रह्महत्या का पाप लगा । तब इंद्र



इन्द्र नुं लागी । तद इन्द्र लाज करतो थको-ब्रह्मा जी रै सरण गयो । तद ब्रह्माजी इन्द्ररी ब्रह्म हत्या च्यारै ठिकाणै विहच दीवी । अगनरी पहली ज्वाला नुं, नदी नुं, पर्वत नुं, अर नारी नुं-इण ठिकाणै विहच दीवी छै । इण वासतै रजस्वला नारी सूंवात न करणी । पहिलै दिन चांडाळी जाणणी, दूसरै दिन ब्रह्मघातकी जाणणी । तीसरै दिन रंगारी जाणणी, चौथे दिन सुद्ध हुवै । अजाण अथवा जाण अर इसी जो किणी वस्त नूं भीटी हुवै तो रिपि पांच्या रो व्रत करै तद पाप सूं छूटै । तिण वासतै ब्राह्मणी, क्षत्राणी, विण्याणी, शूद्री ओ व्रत करणो । श्री कृष्ण उवाच । हमै राजा रिपि पांच्या रो इतिहास कहूँ छूँ । आगै सत्ययुग मांहै धर्मात्मा सेनजित नामा राजा हुवो । तिणरै देश मांहै वेद रो जाणणहारो एक सुमितर नाम ब्राह्मण हुवो । खेती कर आजीविका करै । तिण रै जय श्री नाम स्त्री हुई-पतिव्रता हुई । घणा चाकर

---

शर्म करता हुआ, ब्रह्मा की शरण में गया । तब ब्रह्माजी ने इन्द्र की ब्रह्महत्या चार स्थानों पर बाँट दी । पहले अग्नि की ज्वाला को, नदी को, पर्वत को, और नारि को—इस ठिकाण बाँट दी । इसलिए रजस्वला स्त्री से संभाषण नहीं करना । रजस्वला को पहले दिन चंडालनी समझना दूसरे दिन ब्रह्मघातकी समझना । तीसरे दिन रंग-रेजन समझना—चौथे दिन शुद्ध होती है । अजान में अथवा जान में स्त्री ने यदि किसी वस्तु को स्पर्श कर दी हो तो ऋषि-पंचमी का व्रत करे, तभी पाप से छूट सके । इसलिए ब्राह्मणी, क्षत्रियाणी, वनियानी और शूद्राणी को यह व्रत करना चाहिए । श्री कृष्ण बोला, अब राजन, ऋषि पंचमी का इतिहास कहता हूँ । पहले सत्ययुग में धर्मात्मा सेनजित नाम का राजा हुआ । उसके देश में वेदों का ज्ञाता एक सुमित्र नामक ब्राह्मण हुआ । खेती पर अपनी आजीविका करता । उसके जयश्री नाम की स्त्री हुई—पतिव्रता हुई । उसके काफी नौकर—चाकर और कुटुम्बी थे ।

कुटुंब जिण रै। तिका जयश्री रजस्वला एक दिन हुई थकी घर रो काम कियो, भांडा सगळै भींटिया। तिकै पाप सूं कुत्ती हुई। भरतार सुमितर पण लुगाई रै दोष सूं बळद हुवो। दूने ही बुरी गति पाई। सुमितर रै पुतर सुमति नाम हुवो-देवतांरी पूजा रो करणहार हुवो, तिकै रा माता-पिता रितुरे दोष सूं पसुरी योन पाई ता पण जात समर हुवा। उवा कूतरी जूठ पावती, फिरै आपरै पाप नूं याद करै। सुमितर ब्राह्मण बळद हुवो। अठा उपरांत सुमति आपरै बापरी संवळरी आई देख अर आपरी लुगाई चंद्रवती नूं कहै छै-आज म्हारै बापरी संवळरी छै। ब्राह्मणां नूं जीमावण रै वासतै रसोई बनाई। तिकै चन्द्रवती भरतार री आज्ञा सुं रसोई बनाई पक्वान्न बनायो। तद खीर मांई साप आय अर गरळस नांखियो। कुत्ती ऊभी दीठो। तद रसोई आभइ दीन्ही। कुत्ती जांणियो विष सुं ब्राह्मण मरसी, इसो

उस जयश्री ने रजस्वला की हालत में एक दिन घर का काम किया-सभी वर्तन छूए। इस पाप के कारण वह कुत्तिया हुई। पति-सुमित्र भी औरत के दोष से बैल हुआ। दोनों ने ही खराब गति पाई। सुमित्र के सुमति नाम का पुत्र हुआ-वह देवताओं की पूजा करने वाला। उसके माता-पिता ने रितु-धर्म के दोष से पशुयोनि पाई-उन्हें भी जाति स्मरण थी। वह कुत्तिया भूठन खाती फिरती-अपने पापों को याद करती। सुमित्र ब्राह्मण बैल हुआ।

इसके उपरान्त सुमति अपने पिता की समत्सरी आई देखकर अपनी स्त्री-चन्द्रवती से कहता है-आज मेरे पिता की समत्सरी है। ब्राह्मणों को भोजन करवाने के लिए रसोई बनाओ। तब चन्द्रवती ने (अपने) पति की आज्ञा से रसोई बनाई-पक्कवान बनाये। तब एक साँप ने आकर खीर में जहर डाल दिया। कुत्ती ने खड़ी हुई (यह) देखा। तब रसोई (को) उसने छूली। कुत्ती ने समझा। जहर से ब्राह्मण

जाण अर रसोई आभइ। सुमितर री लुगाई कुत्ती नूं मूसळ सूं मारी। अर ब्राह्मणां नूं बीजो भोजन दीन्हो। आद्ध संबळरी रोकियो। ब्राह्मणां भोजन कियां पछै चंद्रमती जूठ कुत्ती नूं बाहर न घाली। कुत्ती बारणै भूखी रही। ता पछै रातरौ कुत्ती भूखी थकी भरतार बळद कन्है जाई अर कहण लागी। आज हूं भूखी रही छूं, मनूं भोजन न दीन्हो। मनूं भूख बहुत लागी छै। आगै पुतर मनूं ग्रास देतो आज किम दीन्हो नहीं। खीर मांहै साप गरळस नांखियो—मैं देखियो, ब्राह्मण मरसी। इयां जाण रसोई भीटी। बहु मनूं मारी, म्हारी कटि भागी छै, हूं किसुं करूं। इसा वचन कुत्तीरा सुण भरतार बळद, बोळियो हूं किसुं करूं? थारै पाप सूं हूं बळद हुवो छूं। आज मनूं बेटै सारो दिन खेत महै बाह्यो मुख बांध। अर हुंई भूखां मरूं छूं। बेटै आद्ध उही कियो-मनूं तो आज बड़ो कष्ट हुवो। इसो माता-पिता

मरेंगे, ऐसा जानकर उसने स्पर्श करली। सुमित्र की औरत ने कुत्तिया को मूसल से मारा और ब्राह्मणों को दूसरा भोजन करवाया। ( इस प्रकार ) समत्सरी का आद्ध पूर्ण किया। ब्राह्मणों के भोजन करने के उपरान्त चन्द्रमती ने भूठन बाहर कुत्तिया को नहीं डाली। कुत्ती बाहर भूखी बैठी रही। उसके बाद रात को कुत्तिया भूखी रही हुई अपने पति-बैल के पास जाकर कहने लगी—आज मैं भूखी रही, मुझे भोजन नहीं दिया गया। मुझे बड़े जोरों की भूख लगी है। पहिले तो बेटा मुझे ग्रास दिया करता था, आज कुछ भी नहीं दिया। खीर में साँप ने जहर डाला था—मैंने देखा ( इसके खाने से ) ब्राह्मण मरेंगे। ऐसा विचार कर रसोई को छूली। वह ने मुझे मारी—मेरी कमर तोड़ दी, मैं क्या करूं? इस प्रकार कुत्तिया के वचन सुनकर पति—बैल बोला—मैं क्या कर सकता हूँ? तुम्हारे पाप से तो मैं भी बैल बना हूँ। आज पुत्र ने मुझे मुँह बाँध कर तमाम दिन भर चलाया। और मैं भी भूखों



रो संवाद रात रो पुतर सुमति सुणियौ । सुण अर तुरंत दोनूं ही नूं भोजन दीन्हो—कुत्ती अर बळद नूं । माता-पिता जाणिया अर मन मांहे दुख पायो । माता-पिता रो इसी अवस्था जाण अर रिखीसुरां नूं पूअण रै वासतै वन मांहे गयो । तठै वन मांहे मोटां रिखीसुरां नूं बैठा देख अर नमसकार कर माता-पिता रै हित रो बात पूअण लागो । सुमंत उवाच । रिखीस्वरां ! कहो, म्हारै मात-पिता रो किसै कर्म सूं इसी अवस्था हुई, अर इण बळद कुत्तैरी योनि सूं किण तरह छूटसी सो बात कहो । रिखीस्वरां ऊचु । थारी माता आपरै घर मांहे अजाण थकी रजस्वला थकी भांडा भीटिया, तिण पाप सूं कुत्ती हुई छै । अर थारो पिता तैरै दोष सूं बळद हुवो । इणां रो मुक्ति रै वासतै तूं रिख पांच्यांरो व्रत कर । आपरी लुगाई सहित रिखीस्वरां रो पूजा कर सात बरस ताई । पछै ऊजाणो कर । शिवाक अडव ।

मरता हूँ । बेटे ने श्राद्ध वैसे ही (व्यय में ही) किया—मुझे तो आज बड़ा ही कष्ट हुआ । इस प्रकार की अपने माता-पिता की बातचीत पुत्र-सुमति ने सुनी । सुनकर दोनों को ही भोजन दिया—कुत्ती और बैल को । ( उन्हें ) अपने माता-पिता जाना तो मन में बड़ा दुःख हुआ । माता-पिता की ऐसी हालत जान ( कर ) ऋषियों को पूछने के लिए वन में गया । वहाँ वन में मोटे ऋषियों को बैठा देख कर ( उन्हें ) नमस्कार कर, अपने माता-पिता के हित की बात पूछने लगा । सुमति बोला—ऋषि लोगों कहिए, हमारे माता-पिता की कौन से कर्म से यह दशा हुई है—और इस बैल और कुत्ते की योनि से किस प्रकार छूट सकते हैं—वह बात कहें । ऋषियों ने कहा—तुम्हारी माता ने अपने घर में जानते हुए भी रजस्वला के समय बर्तनों को स्पर्श किए, उसी पाप के कारण कुत्तिया हुई है । और तुम्हारा पिता उसी के दोष के कारण बैल हुआ है । इनकी मुक्ति के लिए तू ऋषि-पंचमी का व्रत कर । अपनी स्त्री सहित

एक टंक भक्त करणो । हमें विधि कहै छै । भाद्रवा रै महीनै में  
शुक्ल पक्ष री पांच्यां रै दिन सरोवर विषै जाई दांतण करे, ताहरां  
ओ मंत्र पढ़े ।

आयुर्वलं यशोवर्चः प्रजापशुवसूनिच ।

ब्रह्म प्रज्ञांचमेधां चत्वनोदेहि वनस्पते ॥

इण मंतर सूं दांतण कर अर तिल अर आवळा केसां रै  
लगाइ अर सनान करै । नवा सुध वसतर पहिर अर अरुंधती  
सहित सपत रिखीश्वरां री पूजा करै । कशयप (१), अत्रि (२),  
भारद्वाज (३), विश्वामित्र (४), गौतम (५), जमदग्नि (६),  
वशिष्ठ (७) । अरुंधती औ नाम ले पूजा करै । इणी तरह रिखि  
पंचमी रो व्रत कियां थकां रजस्वला रै सपरस रो दोष मिटै । श्रीकृष्ण  
उवाच । इसा रिखीश्वरां रा वचनु सुमति सुण घरै आय, आपरी

ऋषि लोगों की सात वर्ष तक पूजा करो । फिर 'उजावना' कर बिना  
बोया हुआ धान, एक समय ही भोजन करना । अब ( उसकी ) विधि  
कहते हैं । भाद्रवा के महीने में शुक्ल-पक्ष की पंचमी के दिन तालाब  
जाकर दतुन करना, तब यह मंत्र पढ़ना ।

आयुर्वलं यशोवर्चः प्रजा पशुवसूनिच ।

ब्रह्म प्रज्ञांचमेधां चत्वनोदेहि वनस्पते ॥

इस मंत्र से दातुन करके तिल और आवले वालों में लगाकर स्नान  
करें । नये वस्त्र पहिनकर सप्त ऋषियों की पूजा अरुंधती के सहित  
करें । (१) कशयप (२) अत्रि (३) भारद्वाज (४) विश्वामित्र (५)  
गौतम (६) जमदग्नि (७) वशिष्ठ अरुंधती ये नाम लेकर पूजा करे ।  
इस प्रकार ऋषि पंचमी का व्रत करने से रजस्वला के स्पर्श का दोष  
मिटता है । श्री कृष्ण जो ने कहा—ऐसे ऋषियों के वचन सुमति सुनकर,

इस्त्री सहित रिखि पांच्या रौ व्रत कर अर माता-पिता नं फळ दीन्हो व्रतरै प्रभाव सूं माता कुत्तीरी योनि सूं छूट अर विमान पर बैठ दिव्य वसनर पहिर स्वर्ग गई। पिता पण बळद रो देह छोड़ अर स्वर्ग गयो, पांच्या रै व्रत रै प्रभाव सूं। काया, वाचा, मनसारो कियो पाप इण व्रत सूं दूर हुवै। सगळै दान कियां जितरा फळ हुवै इसो फळ रिखि पांच्यां रै व्रत सूं हुवै। जिका लुगाई इण व्रत नूं करै, तिका सुख सुहाग पावै। रूप पावै। पुतर पोतरा पावै। इह लोक में सुख पावै। परलोक मांहै भली गति पावै। पढ़ै सुणे तिकै रो पाप दूर हूवै। इति श्री रिखिपांच्यांरी कथा संपूर्ण। शुभंभवतु। कल्याण मस्तो।

घर आकर अपनी पत्नी सहित ऋषि पंचमी का व्रत करके माता-पिता को ( व्रत का ) फल दिया। व्रत के प्रभाव से माता कुत्ती की योनि से छुटकारा पाकर, विमान में बैठकर सुन्दर वस्त्र पहिनकर स्वर्ग को गई। पिता भी बल का शरीर छोड़कर स्वर्ग को गया—पंचमी के व्रत के प्रभाव से। इस व्रत से मन, वचन और कर्म द्वारा किया गया पाप दूर होता है। सब प्रकार का दान करने से जो फल होता हो, ऐसा फल ऋषि पंचमी के व्रत से होता है। जो औरत इस व्रत को करती है, उसे सुख और सुहाग प्राप्त होगा। उसे सौन्दर्य की प्राप्ति होगी। पुत्र और पोतों को पाने वाली होगी। दूसरे लोक में सद्गति प्राप्त करेगी।

( इस कथा को ) पढ़ता है, सुनता है—उसके पाप दूर हों।



## ६—अथ अनंत देवतारी कथा लिख्यते

भादवा सुदि चवदस रै दिन वरत एकासणौ कीजै । चूरमौ श्री ठाकुरां नै भोग लगाई जै । चवदै तार रो डोरो, तिण रै चवदै गांठ देनै हाथ रै बांधोजै । धूप-दीप-नैवेद कीजै । पछै कथा सांभळी जई । तिण रीति कथा श्रीकृष्ण जी राजा युधिष्ठिर जी नुं कहै छै । सोमित्रा री बेटी, जाति ब्राह्मण । एक जणी बहू रामसरण हुई । बीजी ब्राह्मणी परणी । सो बेटी मोटी हुई तरै रिखीसर कूबड़ नै परणाई । तरै माटो दीयो । तद बाप तो पकवान कराया नै मां माटा मांहे ढळ नै लैवड़ा घातनै माटो बोडियो । नै कोथला मांहि सुं नवा बैस काढनै पुराणा बैस घातिया । तरै बेटा बेटी देखै छै, पिण बोलै नहीं । परणाय नै चलाय दीनी । तरै बिच में एक तळाव आयो । तरै सखरी छांअडी देख नै उतरीया ।

## कथा अनंत देवतारी

भाद्रपद की शुक्ल पक्ष की चौदस के दिन व्रत-एकासना करना, चूरमे का भोग भगवान के लगाना । चौदह तारों का डोरा उसमें चौदह गांठें लगाकर हाथ में बांधना । धूप-दीप, नैवेद्य करना, फिर कथा सुननी चाहिए । इस प्रकार कथा श्री कृष्णजी राजा युधिष्ठिर को कहते हैं । सुमित्रा की बेटी जाति की ब्राह्मण, उसकी मृत्यु ( पुत्र ) पैदा करते समय हुई । दूसरी ब्राह्मणी से शादी की । सो जब बेटी बड़ी हुई, तब एक कूबड़े ऋषि से उसका विवाह कर दिया । तब माटा साथ में दिया । तब पिता ने तो पकवान बनवा कर और मां ने मिट्टी के डेले आदि डालकर मांटे को बन्द कर दिया । और गोयली में से नये वस्त्र ( कपड़े आदि ) निकालकर उसमें पुराने वस्त्र डाल दिए । इस प्रकार बेटे-बेटी देखते हैं, लेकिन बोलते नहीं । विवाह करने के बाद उसे मुकलावा दे दिया ।

तुरै बहू जाणीयो सीरावणी तो माटा मांहि ढळ नै लेवड़ा घातीया छै । करवैरी जागा खीच रांध नै घातीयो छै । सो हूं कासूं देईस । तो हमें हूं मूं हंडो लेई नै जाऊं तो सखरी । तुरै गाढा थी उतर नै चाली जावै छै । तुरै तळाब एक आयो । सो तळाब री तीरै नागपुत्री देवांगना बैठी छै, पूजा करै छै । तुरै उणै युं कणो—मैं तो अनंत देवतारीं पूजा करां छां । तुरै उवा कहै, अनंत देवता री पूजा कीयां—कासूं हूवै । तुरै कहै, इणरी पूजा कीजै, अन-घन हूवै, लिखमी रो घरै वासौ हूवै । जिकाई मन मांहे वसत चितवै सो अनंजी देवै । तुरै कहै, हूंई वरत करूं । तुरै बहू ही उण कनै बैस नै अनंतदेव जी री पूजा कीनी, कथा सांभळी । डोरारी पूजा करनै डोरो हाथै बांधीयो, नै मन मांहे चितवीयो, सावकीया माहरै साथै माटो घालीयो छै—तिण में ढळ-लेवड़ा घातीया छै, सो मिठाई होय जो । सो पाछी आय नै गाढी मांहे बैठी छै ।

तब बीच में एक तालाब आया । वहाँ घनी छाया देखकर उतारा लिया । तब बहू ने जाना—कलेवे के लिए तो पत्थर, डेले डाले हैं । करवे के स्थान पर खीचड़ा डाला है । सो मैं ( इन्हें ) अब क्या दूंगी ? इसलिए मुंह लेकर चली जाऊँ तो बहुत ही अच्छा ।

गाढ़े से उतर कर चली जाती है । तब एक तालाब आया । इस तालाब के किनारे देवांगना—नागपुत्री बैठी है, पूजा करती है । तब उसने ऐसा कहा—मैं तो अनंत देवता की पूजा करती हूँ । तब उसने उत्तर दिया—अनंत देवता की पूजा कैसे और किससे हो ? तब कहती है ( तब कहा ) इसकी पूजा करना ( इससे ) अन-घन हो, घर में लक्ष्मी का वास हो । जो भी मन-इच्छित वस्तु के लिए सोचे, वही अनंत जी दे । तब कहा—मैं भी व्रत करूँ । तब बहू ने भी उसके पास बैठकर अनंतदेव जी की पूजा की—कथा सुनी । डोरे की पूजा करके डोरा हाथ में बाँधा और मन में विचार किया—सौतेली मां ने मेरे साथ माटा

पछै घरै आया, तरै सासू माटो खोलनै जोयो, ज्युं मांहि था पकवान नीसरया । अनंतजी तूठा । सो एकण दिन रिखीस्वर बहू रै हाथै डोरो दीठौ । तरै मन में जाणियो, बैर मोनुं कामण कीया छै, नै डोरो हाथै बांध्यो छै । तरै हाथ घालिनै डोरो तोड़ नै चूल्हा मांहै नांखीयो । तरै बहू दौड़ नै डोरो उरो लीयो । आधो एक बलिया, आधो दूध सूं पखाळियो । तरै ठाकुर रीसांणा नै रिखीस्वर रीसांणा । सो रिखीसर नुं कोढ़ हुवो, डील अजक धणौ । तरै बैर नुं कह्यौ, ओ कासूं सूळ हूयो । तरै बहू कहै—ठाकुर अनंतजी रीसांणा । तरै घर री लिखमी सरब थी सो गई । तरै रिख अनंतजी ऊपर इकतार करनै निकळियो । तरै मनमें चितव्यो, ज्युं चालतां-चालतां जठै अनंतजी मिलस्यै, तठै रह्योस । अनंतजी दरसण देसी तरै आईस । सो चालियो जायछै । सो कहै छै, हूं अनंतजी कनै जाऊंछूं । तरै बहू कहै,

---

डाला है ( माटा रखा है ) उसमें डेले-पत्थर आदि डाले हैं—वे मिठाई बन जाय । सो वापिस आकर गाड़ी में बैठी है । पीछे घर आये, तब सास ने माटा खोलकर देखा—तो जैसे पकवान अन्दर थे, (वे) बाहिर निकले । अनंत जी प्रसन्न हुए ।

सो एक दिन ऋषिवर ने अपनी बहू के हाथ में डोरा देखा । तब मन में सोचा—धौरत ने मुझ पर 'कामण' ( जादू टोना आदि ) किया है । अतः डोरा हाथ में बाँधा है । तब हाथ डालकर, डोरे को तोड़कर ( उसे ) चूल्हे में फेंक दिया । तब बहू ने भागकर डोरा अपने पास ले लिया । आधा तो जल गया, आधे को दूध से धोया । तब ठाकुर भी क्रोधित हुए और ऋषि भी । ऋषि के तब कोढ़ हुई शरीर में तकलीफ बहुत हुई । तब पत्नी से कहा—यह पीड़ा किस प्रकार हुई । इस पर धौरत ने कहा—अनंत भगवान् कुपित हुए हैं ।

इसके उपरान्त घर की जो सब लक्ष्मी थी, सो भी गई । यह ऋषि



अनंतजी कठै मिलसी-विचै नार, चोर मारसी । तरै ब्राह्मण कहै, जठै मूओ तठै छूटो तोनुं मिलतो । तरै उठासुं चालियो । विचै एक आंबो मिलियो । सो आंबो पाको छै पिण आंबो कोई जीव-जिनावर ही खाय नहीं । आगे चालियो जावै छै । तरै तळवडी दोय भरी छै—उणरौ पाणी उणमें जाय छै । तरै तळवडी उण बांमण नुं पूछ्यो, तूं कठै जाय छै । तरै रिखीसर कहै, हूं अनंतजी कनै जाऊं छूं । तरै कहै माहरौ संदोसो एक लेतो जा-ज्युं मीठो पाणी छै, पिण जीव-जिनावर पीवै नहीं । सो मोमें कासुं अवगण छै । तरै रिख कह्यो—भली बात । पछै बळी आघो चालियो जायछै, तरै बळध एक मिलियो । आगे एक घोडो सोनारी साग तथा ऊभौ छै, पिण ऊपर कोई चढै नहीं, सो मोमें कासुं अवगण छै । आगे जावतां बोरडी एक दीठी, सो बोर पाका लागे छै पिण कोई जिनावर ही खाय नहीं । सो मोमांहे

---

अनंत जी पर विश्वास करके निकला । मन में ऐसा सोचा—चलते-चलते जहाँ भी अनंत जी मिलेंगे, वहीं रहूंगा । अनंत जी दर्शन देंगे—तभी आऊंगा । इसलिए चला जा रहा है । ऐसे कहता है—मैं अनंत के पास जाता हूँ । तब औरत ने कहा—अनंत जी कहाँ मिलेंगे ? बीच में भेड़िये, चोर आदि मार देंगे । तब ब्राह्मण ने कहा—जहाँ मरा, वहीं तुम से मिलने से छूटा । तब वहाँ से चला । बीच में एक आम का पेड़ मिला । वह आम पका हुआ है, लेकिन उसे कोई जीव-जानवर खाते नहीं हैं । आगे चला जा रहा है । तब तालाब ने ब्राह्मण से पूछा, तू कहाँ जाता है ? इस पर ब्राह्मण कहता है—मैं अनंत भगवान के पास जाता हूँ । तब उसने कहा—मेरा एक संदेश ले जावो—मीठा पानी होते हुए भी कोई इसे पी नहीं रहा है । मुझ में ऐसा कौनसा अवगुण है । इस पर ऋषि ने कहा—अच्छी बात है । फिर दूर चला जाता है, तब एक बँल मिला । आगे एक घोड़ा सोने की जीन आदि

कासूँ अवगुण छै । आगै जावतां ठाकुरां बांमण रो रूप करनै हाथ में डांग भालनै डोकरो हुय नै दरसण दीयो, तूँ कठै जाय छै । तरै कह्यो—अनंतजी कनै जाऊं छूँ । तरै कहै, अनंत तोनुं कठै मिलसी । तरै कह्यो, न मिलै तो आ देही त्याग करीस, इसडो निहचो कीयो । तरै ठाकुरां चतुरभुज रूप करिनै दरसण दीयो । ठाकुर कहै, तो मोनूँ चूँलै में नांथीयो तिणरा माहरे डीलरै छाव्य हुया छै । सो हमें रिखीस्वर नुं श्री ठाकुरां तूठा-डोल रो कोढ़ गयो । घरै लिखमी अनै धन-माल हुआ । तरै बांमण श्री ठाकुरां नै संदेसो कहायो, आंवा पाका छै सो कोई खावै नहीं । सो किसै वासते ? तरै श्री ठाकुर कहै छै, आवां आगळै भव बांमण थो । विद्या घणी भणियो थो पिण विद्या किणही नै सीखाई नहीं । तिण रौ फळ खाईजै, सोए फळ खावसी । बोरडी री हकीकत कही । सो ठाकुर कहै, बोरडी जातरी—गूजरी

की हुई खड़ा है, लेकिन उस पर कोई सवार नहीं होता है । ( उसने पूछा ) मुझ में ऐसा कौनसा अवगुण है । आगे जाते एक बोरटी देखी—उसमें पके बेर लगे हुए हैं, लेकिन कोई जानवर खाता नहीं है । ( उसने पूछा ) मुझ में ऐसा कौनसा अवगुण है । आगे जाते भगवान् ने ब्राह्मण का रूप बनाकर, हाथ में लाठी लिए बूढ़े आदमी का रूप बनाकर दर्शन दिया । तू कहाँ जाता है ? तब (उसने) कहा—अनंत जी के पास जाता हूँ । उत्तर में कहा—अनंत जी तुम्हें कहाँ मिलेंगे ? तब कहा—नहीं मिलेंगे तो अपनी देह त्याग दूँगा, ऐसा निश्चय किया है ।

इस पर भगवान् ने चतुर्भुज रूप धारण करके दर्शन दिये । भगवान् ने कहा—तुमने मुझे चूल्हे में फेंका—इसलिए मेरे शरीर पर छाले हुए हैं ।

अब ऋषि को श्री भगवान् तूटे ( उन पर प्रसन्न हुए )—(उनके) शरीर की कोढ़ चली गई । घर में लक्ष्मी और धन—माख (बहुत) हुआ ।

थी। छाछ किणनुं देती नहीं। तरै बोरडी री अरज करी। ठाकुर कहै—तू बोरडी रा बोर खाए। पछै सकोई खावसी। नाडियां री अरज करी। तद ठाकुर कहै, ओ देरांणी जेठांणी थीं। उणरी हांती उवा खावती, बीजा ही किणनुं देती नहीं। पछै घोड़े री अरज कीनी। तरै कहै, घोड़े ऊपर कोई चढै नहीं। तद ठाकुर कहै—ओ घोड़ो रिण संग्राम मांहै धणी नांखनै आयो थो। सो ठाकुर विरांमण नुं तूठा व्युं सकोईनुं तू समान हुयज्यो। बांमण घरै आयो। बधाई हुई चैन पायो।

इति श्री अनंतदेवता री कथा संपूरण।

इस ब्राह्मण ने भगवान् को संदेश कहा—आम पके हुए हैं, लेकिन उसे कोई खाता नहीं? इसका क्या कारण है? तब श्री ठाकुर ने कहते हैं—आम पूर्व जन्म में ब्राह्मण था। विद्या काफी पढ़ी थी लेकिन (इसने) विद्या किसी को सिखाई नहीं। (तुम) इसका फल खाना, तो सभी (लोग) इसका फल खायेंगे। बोरटी ( बेर का पेड़ ) की बात कही। तब श्री भगवान् कहने लगे—बोरटी जाति की गूजरनी थी। (यह) छाछ किसी को डाला नहीं करती। इस पर बोरटी की ( ब्राह्मण ने ) अर्ज की। भगवान् ने कहा—तू बोरटी के बेर खाना। इसके बाद सभी इसे खायेंगे। पोखर ( छोटी तलाई ) की अर्ज की। तब भगवान् कहते हैं—ये देवरानी और जेठानी थीं। उसकी 'हांती' ( त्योहार आदि पर दिये जाने वाली मिठाई आदि ) यह खा जाती, किसी अन्य को नहीं देती थी। इसके बाद घोड़े की अर्ज की। आगे कहा—घोड़े पर (कोई) चढ़ता नहीं है। तब भगवान् ने कहा—यह घोड़ा युद्धस्थल में अपने स्वामी को फेंककर ( भाग ) आया था।

इस प्रकार जैसे भगवान् ठाकुर पर प्रसन्न हुए—हे भगवन् वैसे आप सब पर प्रसन्न होंगे। ब्राह्मण घर आया। बधाई मनाई गई—आराम से बह रहने लगा।



## ७—अथ दीपमालिका री कथा लिख्यते

एक दिन राजा युधिष्ठिरजी दरबार करने बैठे हैं तब व्यासजी श्री कृष्ण द्वीपायन पधारथा । तब राजा सांभलो जाय परकमा दे डंडोत करने पग पखाळ चरणोदक माथेमेले सिंघासन दियो । व्यासजी सूं राजा चरचा करै छै । पछै राजा हाथ जोड़ नै व्यासजी सूं अरज करै छै । महाराज काती वदि अमावस रै दिन दीपमालिका री पूजा कीजै छै । ऊजळ कपड़ा पहिरै छै । ग्रहणा पहिरै छै । घर ऊजळ करै छै—नै दीपक घणा करै छै । सो इण दिन री महिमा राज मांहनू कहो । तब व्यासजी कहै छै, राजा सांभळ ! काति वदि ११ श्रीमहालिखमीजी जागै छै नै काती वदि अमावस श्री महालिखमी जी रो दिन छै । सो लोक घर नीपै छै धवळै छै, ऊजळाई करै छै । जाणै छै, काति वदि इग्यारस

### कथा दीपमालिका की

एक दिन राजा युधिष्ठिर जी दरबार लगाकर बैठे हैं—इतने में व्यास जी श्री कृष्ण द्वीपायन आये । तब राजा सामने जा, परिक्रमा दे, दण्डवत् करके, पैर धोकर, चरणामृत सिर पर धरकर सिंहासन पर बिठाया । व्यास जी से राजा चर्चा करते हैं । फिर हाथ जोड़कर व्यास जी से अर्ज करते हैं । महाराज, कार्तिक कृष्णा अमावस के दिन दीपमालिका का पूजन करते हैं । स्वच्छ कपड़े पहिनते हैं । गहने पहिनते हैं । घर स्वच्छ करते हैं और दीपक बहुत जलाते हैं । अतः इस दिन की महिमा, राजन् ! हम से कहें । तब व्यास जी कहते हैं, राजन् सुनो ! कार्तिक कृष्णा एकादशी को श्री महालक्ष्मी जी जागती हैं और कार्तिक कृष्णा अमावस श्री महालक्ष्मी जी का दिन है । अतः लोग घरों को लीपते हैं, धोते हैं, स्वच्छ करते हैं । जानते हैं—कार्तिक कृष्णा एकादशी

श्री लिखमी जागिया छै सो माहरै घरै पधारसी । तिण सूं लोक  
 वर सिणगारै छै । राजा काती वदि अमावस रो दिन आवै तिण  
 दिन परभात रा उठनै दांतण सिनांन करीजै । रोक रूपईआंरी  
 पूजा कीजै । केसर कुंकम सौं पूजा करीजै, अक्षत चढ़ाईजै, फूल  
 चढ़ाई जै । अगर धूप खेबीजै, नेवेद चाढीजै । मुखवास मुदरा  
 पिण चढ़ाईजै । पान बीडा चढ़ाईजै । परसाद मिठाई पतासा  
 बांटीजै । घणो उछाह कीजै, बांमणा नूँ सकत माफक दिखयणा  
 दीजै । पछै नाना प्रकार रा भोजन करायनै एकासणों करीजै ।  
 पूजा कियां बिना जीमीजै नहीं, नै रातै जागरण कीजै । तरै  
 युधिष्ठिर बळै कहै छै—महाराज इण दिन री पूजा किणहीनूँ फळ  
 प्राप्ति हुई छै । इण पूजा सूँ फळ परापत जिकोही हुबो होय तिको  
 कहो, नै इण दिन दीपक घणा कीजै छै तिण री विध राज मोनूँ  
 कृपा करिनै कहो । तरै व्यासजी कहै छै—राजा सांभळ ! एक

को श्री लक्ष्मी जी जागे हैं—वे हमारे घर पधारेंगी । राजन् ! कार्तिक  
 कृष्णा अमावस का दिन आए, उस दिन प्रभात को उठकर दातुन स्नान  
 करना । रोकड़ी रूप्यों की पूजा करना । केशर, कुमकुम से पूजा करके  
 अक्षत चढ़ाना, फूल चढ़ाना । अगर, धूप, खेकर—प्रसाद चढ़ाना । मुख-  
 वास और मुद्रापण करना । पान, बीड़ा चढ़ाना । प्रसाद, मिठाई बतासे  
 बाँटना । बड़ा उत्सव करना, ब्राह्मण को यथाशक्ति दक्षिणा देना ।  
 फिर नाना प्रकार का भोजन करवाकर उपवास करना । पूजा करने  
 से पहिले नहीं जीमा जाय और रात में जागरण करना । तब युधिष्ठिर  
 फिर कहता है—महाराज, इस दिन की पूजा का किसी को फल मिला  
 है, इस पूजा से फल की जिसे प्राप्ति हुई हो वह कहें और इस दिन  
 दीपक बहुत जलाये जाते हैं, उसकी विधि राजन् ! हमें कृपा करके कहें ।  
 तब व्यास जी कहते हैं—राजन् सुनो । एक इतिहास कहता हूँ । सतयुग  
 में एक आनन्द नामक ब्राह्मण हुआ—उसकी स्त्री का नाम मुलक्षणी था ।

इतिहास छै सो कहुं छुं । सतयुग रै विसै एक आखंड नामैं  
 ब्राह्मण हुआ तिनरै अस्त्री रो नाम सुलखणी । सो पति भरतार  
 महा चतुर । सो एक दिन आपरा भरतार नै कह्यो—पांडे  
 नारायण थे बारे कण वरत नूं जावो तरै पाछा घर मांहे खाली  
 आवो मती । हर क्युं ही लेई नै आवज्यो, पिण खाली न आईजै ।  
 तठा पछै बांभण नूं कांई मिलियो नहीं । सो पाछो घरै आवतो  
 थो, पिण मन में जांणै छै—क्युं ही मिलै तो लेई जावूं । अस्त्री  
 कह्यो कै खाली आईजै नहीं । तरै देव संयोग देखै तो गऊ ब्याई  
 छै, तिण री जर पड़ी छै । तरै बांभण विचारियो और तो आज  
 कांई नहीं—आहीज लेजाऊं । तरै जर डोका मांहे घाल नै आयो ।  
 आयनैं ब्राह्मणी नूं कह्यो—आज तो आ जर मिली छै नै बीजो  
 तो कांई मिलियो नहीं । तरै ब्राह्मणी कह्यो, आहीज आछी—  
 नोहरा मांहे नांखनै आवो । तरै जर नोहरा मांहे नांखनै आयो ।

वह बड़ी पतिव्रता और महाचतुरा थी । उसने एक दिन अपने पति से  
 कहा—हे ब्राह्मण नारायण, आप बाहर अन्न मांगने जावें तो वापिस  
 घर में खाली न आवें । कुछ भी लेकर आना लेकिन खाली मत आना ।  
 तब उसके बाद ब्राह्मण को कुछ मिला नहीं । सो वापिस घर आरहा  
 था—लेकिन मन में जानता है—कुछ भी मिले तो लेता आऊँ । स्त्री ने  
 कहा है कि खाली आना नहीं । तब देव संयोग से देवता है—तो एक  
 गाय ब्याही है—उसकी जर पड़ी है । तब ब्राह्मण ने विचारा—और तो  
 आज कुछ नहीं, यह ही ले चलूँ । तब जर को एक लकड़ी के टुकड़े पर  
 डालकर लाया । आकर ब्राह्मणी से कहा—आज तो यह जर मिली है  
 और तो कुछ मिला नहीं । तब ब्राह्मणी ने कहा—यह ही ठीक है;  
 जाकर नोहरे में डाल दो । तब जर को नोहरे में डालकर आया ।  
 सो राजा की रानी स्नान करती थी, गहने धोकर रखे थे, उनमें हार  
 एक सवा लाख का था । उसे चील लेकर उड़ी । सो उस चील की



सो राजा री रांणी सिनांन करती थी नै गेहणों घोवाय नै मेलियो थो, तिण मांहै हार एक सवालाख रो थो । सो सांवळी लेई नै उड़ गई । सो सांवळी उड़ती उड़ती बांभण रा नोहरां मांहै जर पड़ी थी तिण ऊपर निजर पड़ी । तरै चील नीची उतरी नै जर ऊपरै आई । सो हार तो नोहरा मांहै नांख गई नै जर लेई गई । सो बांभण सहज मांहै नोहरै गयो थो, सो देखे तो हार पड़ियो छै । तद ब्राह्मणी कह्यो लेआवो । तरै ब्राह्मण घर मांहै लेई नै आयो, देखै हार तो राजा रा घर रो छै । तरै बांभणी कह्यो हार—ऊंचो घर राख जो । .....तरा मांहै भेदणो देखे तो हार नहीं । तरै रांणी राजा नूँ कहायो—अठा थी हार सांवळी लेइ नै उड़ गई । तरै राजा कोटवाळ नूँ तेड़ियो, सहर मांहि खबर करो । तरै कोटवाळ सहर मांहै ढंडोरो देतो फिरै छै । सो बांभण रा घर आगै आय नीसरीयो । तरै बांभण कह्यो—हार मैं लाधो छै । तरै

उड़ते-उड़ते ब्राह्मण के नोहरे में पड़ी—जर पर नजर पड़ी । तब चील नीचे उतरी और जर पर आ ठहरी । सो हार को नोहरे में पटक गई और जर को ले गई । ब्राह्मण वैसे ही नोहरे में गया था, देखा तो हार पड़ा है । तब ब्राह्मण घर में ले आया, देखा तो हार तो राजा के घर का है । तब ब्राह्मणी ने कहा—हार ऊपर घर कर रखदो ..... इतने में गहनों को देखा, तो हार नहीं । तब रानी ने राजा से कहलवाया—यहाँ से हार एक चील लेकर उड़ी । तब राजा ने कोटवाल को बुलाया—शहर में खबर करो । तब कोटवाल शहर में ढिंढोरा देता फिरता है । वह ब्राह्मण के घर यहाँ आकर निकला । तब हार लेकर ब्राह्मण राजा के दरबार में जाने लगा । इतने में ब्राह्मणी ने कहा—राजा जी आपको हार की बधाई दें, तो कहना कि ब्राह्मणी से पूछकर लूँगा । तब हार लेकर ब्राह्मण राजा के दरबार में गया । राजा ने देखकर, ब्राह्मण से कहा—तुम्हारे ईमान को धन्यवाद । ब्राह्मण नूँ

हार लेईनै बांभण राजा री हजूर जावण लागो । जितरै बांभणी बोली—राजाजी थानू हार री बधाई देवै तो कहेजो कै बधाई तो बांभणी नै पूछनै लेस्युं । तरै हार लेनै बांभण राजा री हजूर गयो । सो राजा देखनै बांभण नू कह्यो—स्यावास रे थारा आकीन नै । बांभण तू मांग—हूँ तो सू रीभियो । तरै बांभण कह्यो—महाराज, मारी बांभणी नै पूछनै बधाई लेईस । तरै राजा कह्यो, जायनै पूछि आव । तरै बांभण आपरी बांभणी नू पूछनै राजारी हजूर गयो । महाराजाजी, राज तूठाछो वचन पाऊ । तद राजा कह्यो—मांग । तरै बांभण कहै, महाराज काती वदि अमावस रै दिन दीपक होय छइ । सो कातो राजा रै भंडार हुवै, का माहरै घरै होय और बीजा रै घरै हूण पावै नहीं । तरै राजा कह्यो—रे तैं कांसू मांगियो । गांव, घरती, हाथी, घोड़ा मांगिया हूंत । तरै बांभण कहै—लुगाई ओहीज कह्यो छै । तरै राजा कह्यो—

---

मांग—मैं तुमसे प्रसन्न हुआ । तब ब्राह्मण बोला—महाराज, मैं बधाई मेरी ब्राह्मणी को पूछकर लूंगा । तब राजा ने कहा—जावो पूछकर आवो । तब ब्राह्मण अपनी ब्राह्मणी से पूछकर ( वापिस ) राजा के दरबार में गया । राजनू, यदि आप प्रसन्न हुए हैं तो मैं वचन पाऊँ । तब राजा ने कहा—‘मांग’ । तब ब्राह्मण कहता है, कार्तिक कृष्णा अमावस के दिन दीपक जलते हैं । सो ( दीपक ) या तो राजा के महलों में हों या मेरे घर पर—दूसरों के घर न हो सकें । तब राजा ने कहा—अरे, यह तुमने क्या मांगा ! गांव, घरती, हाथी, घोड़े मांगे होते । तब ब्राह्मण कहता है—औरत ने यही कहा है । राजा ने कहा—अच्छी बात है, मेरा वचन है ।

अमावस का दिन आया, तो ब्राह्मण ने जाकर राजा के दरबार में अर्ज की—महाराज, आज कार्तिक कृष्णा अमावस है, मुझे अपना वचन मिले । तब राजा ने कोटवाल को बुलाकर कहा—गांव में सबसे कहदो,

भली बात—माहरो वचन छै । अमावस रो दिन आयो, सो बांभण राजारी हजूर जायनै अरज कीवी—महाराज, आज काती वदि अमावस छै, वचन पांऊ । तरै राजा कोटवाळ नूं बुलाय नै कह्यो—गांम मांहि सगळेई कहाय, कोई आज दीपक करण पावै नहीं । तरै कोटवाळ सगळेई सहर मांहै गयो, ढंढोरो फेरियो । तरै साहूकार सहरा मिलनै राजा कनै आयनै अरज कीनी—महाराज आज दीपमाळिका रो दिन छै, दीपक तो सारा ही किया चाहै । तरै राजा कह्यो—म्हैं बांभण नूं वचन दियो छै, थे सको दीवा काले करीजो । तठा पछै दीपक दोय दिन हुवण लाग़ा । तरै साहूकार आप आप रै घरे आया । सो आथणरा दीपक राजरै भंडार कनां बांभण रै घरै हुया छै । सो आधी रात रै समईयै श्री लिखमी जी सहर मांहै सगळै फिरिया सु दीवो कठैई निजर आवै नहीं । एकण बांभण रै घरे दीवो दीसै छै । तरै

आज कोई दीपक न कर सके ( न जला सकें ) । तब कोटवाल तमाम शहर में गया, ढिंढोरा पीटा । तब शहर के साहूकारों ने मिलकर राजा के पास आकर अर्ज की—राजन् ! आज दीपावली का दिन है, दीप तो सभी करना (जलाना) चाहते हैं । तब राजा ने कहा—मैंने ब्राह्मण को वचन दिया है, आप सब लोग दीपक कल करना ।

उस दिन से दीपक फिर दोनों दिन होने लगे । तब साहूकार अपने-अपने घर आए । सो शाम को दीपक राज मन्दिर में और ब्राह्मणी के घर में जले हैं । अतः अर्द्ध—रात्रि के समय श्री लक्ष्मी जी तमाम शहर में फिरीं—दीपक कहीं भी दिखाई दे नहीं । एक ब्राह्मण के घर दीपक दिखाई देता है । तब ब्राह्मण के घर लक्ष्मी जी आई—आकर कहा, कुण्डा खोलना । तब ब्राह्मण ने कहा, कौन है ? तब लक्ष्मी जी बोली—मैं लक्ष्मी हूँ । तब ब्राह्मण बोला, 'महाराज, मेरे यहाँ सात पीढ़ी तक



बांभण र घरे श्री लिखमी जी आया, आयनै कहै—कुंहटो खोलियो ! तरै बांभण जाणियो, कुंण छै । तरै महालिखमी जी बोलिया—हूं महालिखमी छूं । तरै बांभण कह्यो—महाराज, मांहरै सात पीढी रहो तो कुंहटो खोलूं । तरै आप कह्यो—पीढी एक तथा दोय रहसां । तरै बांभण कमाइ खोलिया नहीं । श्रीमहा-लिखमी जी पाछा गया । बळै सहर में फिरनै पाछा इणरै घरै पधारिया—कह्यो किमाइ खोल । तरै बांभण कह्यो—सातां पीढीयांरा वाचा देवो तो खोलूं । तरै आप लिखमीजी कह्यो—पीढी छ तो म्है रहस्यां । तरै बांभण बोल्ह्यो..... हमें पांडे नारायण, थे पिण हठ मती करो । श्री लिखमजी, सात पीढी तो किणही रै रहै नहीं नै छः पीढी तो आप कृपा करनै महरवान हुयनै रहो छो । तरै किवाड़ खोलिया । सो श्री महालिखमी जी पधारिया । तरै श्री लिखमीजी पधारत-संवाही बांभण आणंद रै

---

रहैं तो कुण्डा खोलूं । तब उन्होंने कहा, पीढ़ी एक या दो रहूंगी । तो ब्राह्मण ने किवाड़ खोले नहीं । श्री लक्ष्मी जी वापिस गई । फिर शहर में घूमकर वापिस इसके घर आई—कहा किवाड़ खोल ! तब ब्राह्मण ने कहा, सात पीढ़ी तक रहने का वचन दें तो खोलूं । तब लक्ष्मी जी ने कहा—छः पीढ़ी तो मैं रहूंगी । तब ब्राह्मण बोला ( अपने आपको कहा )—अब नारायण पाण्डे ! तू भी हठ मत कर । श्री लक्ष्मी जी सात पीढ़ी तक तो किसी के यहाँ रहती नहीं हैं और छः पीढ़ी तक स्वयं महरवान होकर रहने को कहती हैं । तब किवाड़ खोले । अतः श्री लक्ष्मी जी पधारिं । तब श्री लक्ष्मी जी के पधारते ही—ब्राह्मण आनन्द के घर में 'नवनिधि' हुई—चारों ओर लक्ष्मी ही लक्ष्मी ( दौलत ही दौलत ) होगई । सो श्री व्यास जी राजा युधिष्ठिर से कहते हैं—राजन, तुमने कार्तिक कृष्ण अमावस के दिन की तथा दीपक की महिमा पूछी थी—वही कहा ।

घरै नवेनिध हुआ, चतुरंग लिखमी हुई। सो श्री व्यास जी श्री राजा युधिष्ठिर नै कहे छै—राजा तैं काती वदि अमावसरा दिनरी तथा दीपक री महिमा पूछी थी सो कही। इण भांत बांभण आणंद सूं श्री महालिखमी जी सुप्रसन्न हुआ। सो हमैं जिकोह मनुष्य दीपमालिका रै दिन श्रीमहालिखमीजी री पूजा घणो ऊजळाई सूं घणा उद्धाह सूं करसी तथा दीपक घणा करसी, च्यारै पुहर रात जागरण राखसी जिन सुं श्री महालिखमीजी आणंद बांभण सुं .....तुष्टमान होसी। तरै आ कथा सुणनै त्युं सकोही नूं तुष्टमान हुयजो। पछै राजा युधिष्ठिर दीपमालिका रै दिन श्री महालिखमी जी री पूजा और दीपक घणा उद्धाह सूं उतमाई सूं करण लागो।

इति श्री दीपमालिका री लिखमीजी री कथा संपूरण।

इस प्रकार ब्राह्मण आनन्द पर श्री महालक्ष्मी जी प्रसन्न हुई। सो अब जो भी व्यक्ति दीपमालिका के दिन श्री महालक्ष्मी की पूजा बड़ी स्वच्छता और बड़े उत्साह के साथ करेगा—तथा बहुत से दीपक जलायेगा, रात को चार पहर तक जागरण रहेगा उसके साथ श्री लक्ष्मी जी आनन्द ब्राह्मण के साथ..... वैसी तुष्टमान होगी। तब यह कथा सुनकर तू सबको तुष्टमान होना। फिर राजा युधिष्ठिर दीपमालिका के दिन श्री महालक्ष्मी जी की पूजा और दीपक बड़े ही उत्साह और उमंग से करने लगा।

## ८—कथा काती वदि एकादसी री

युधिष्ठिर उवाच—हे स्वामी ! काती वदि एकादसी कौ नांम कासूं, कूण देवता पूजी जै, इण मास श्री परमेश्वर जी जागै सो महिमा कहो । आ बड़ी इग्यारस छै । श्री कृष्ण उवाच— हे राजा युधिष्ठिर, काती वदि एकादसी कौ नांम रमा, इण रै व्रत कीयां बैकुंठ नै प्राप्त होइ । भली गत नै प्राप्त होइ । हे राजा हेक इतिहास सुण । औसी अद्भुत कथा सुणो । एक समै तेरा जुग विषै मुचकंद नाम राजा । मुचकंद नागपुरी कौ राजा हो । तैं राजा रै देवता सूं मित्राई हुई । इन्द्र, वायव, रण, कुबेर, जिम, विभीषिण, इतरा सपा हुवा । और ही नाना भांत रा देवता सूं भांत भांत कर प्रीत हुई । तिण रौ राजा भगत हुवौ । तैरै एक चन्द्रभामा नाम बेटी हुई । सो बेटी चन्द्रसेन राजा रै बेटी सोभन नै परणाई । सो

## कथा कार्तिक कृष्णा एकादशी की

युधिष्ठिर बोला—हे स्वामी ! कार्तिक एकादशी का नाम कैसे पड़ा ? किस देवता की पूजा की जाय ? इस महीने भगवान् जागते हैं—उसकी महिमा कहें । यह बड़ी एकादशी है । श्री कृष्ण बोला—हे युधिष्ठिर कार्तिक कृष्णा एकादशी का नाम रमा है—इसे करने से बैकुण्ठ की प्राप्ति होती है । उसे अच्छी गति प्राप्त होती है ।

हे राजन् ! एक इतिहास सुनो । बड़ी विचित्र कथा है सुनो । एक समय की बात है—वैतायुग में मुचकंद नाम का राजा था । मुचकंद नागपुरी का राजा था । उस राजा की देवताओं से मित्रता हुई । इन्द्र, वायव, रण, कुबेर, यम, विभीषण इतने ( उसके ) मित्र बने । और कई प्रकार के देवताओं से कई प्रकार की उसकी मित्रता हुई । राजा उनका भक्त बना ।



सोभन एक समै सासरै आयौ । तितरै एकादशी आई । राजा नगर में ढंडोरौ फेर्यौ । जिकोई एकादशी कै दिन जीमै, तैरो घर लूट लेसौं । अर राजा ढंड कर सी ।

पछै राजा को जवांई सोभन भूखो रह्यौ एकादशी के दिन तीसरा पहर ताई । पछै अन बिना आथण मर गयौ । रात पड़ियौ रह्यौ । प्रात हुबौ, तद दाग देवां नै चाल्या । राजा की बेटी चन्द्रवती नाम साथे बळवा लागी । तद राजा कहै— बाई बळै मतां, दान-पुन, व्रत करै । तूं भली गति पाईस । तद बाई बळती रही ।

पछै धर्म नैम करै । नागपुर कै विषै एक बांभण वसै थौ । सोमसर्मा नाम थौ । धनहीन थौ । भीख मांग-मांग पेट भरतो तो । सो बांभण अवर गांव नै चाल्यौ । तठै पंथ विषै आवै थो । तठै दिन अस्त हुई गयौ रात पड़ी पठै पीपळ उजाड़ में । संघ

इस राजा के चन्द्रभामा नाम की एक पुत्री हुई । वह पुत्री चन्द्रसेन राजा के पुत्र सोभन को विवाही । सोभन एकबार समुराल आया । उस समय एकादशी आई । राजा ने शहर में मुनादी फिराई— जो व्यक्ति एकादशी के दिन भोजन करेगा, उसका घर मैं लूट लूंगा और राजा उसे दण्ड भी देगा ।

इस प्रकार राजा का दामाद सोभन भूखा रहा, एकादशी के दिन तीसरे पहर तक । इसके उपरान्त, बिना अन्न के शाम को मर गया । रात तक पड़ा रहा । जब प्रातःकाल हुआ, तो उसे जलाने को लेगये । राजा की पुत्री चन्द्रवती उसके साथ जलने को तैयार हुई । तब राजा ने कहा—बाई, जलना मत ! दान, पुण्य, व्रत इत्यादि करना । तुझे सद्गति प्राप्त होगी । इस पर वह जलती हुई रुक गई ।

इस प्रकार वह धर्म-पुण्य करने लगी । नागपुर नगर में एक ब्राह्मण रहता था । उसका नाम सोमशर्मा था । वह धनहीन (गरीब) था ।

बाघता डरती ऊँचो चढ़ गयी। तठै बैठो देखे तो एक कालेहार हिरण आयी। तँ साथै अनेक जीव, मृग, सिसीया रोम्ह, वाराह, गेंडो। अनेक भांत-भांत रा जीव आया। तठै रात एक नगर बस्यौ। उद-बुद नगर बस्यौ। भांत-भांत रा देहरा, मंदिर, विध-विध रौ बाजार मंझ्यौ।

सो राजा रो जंवाई एकादशी कै दिन मुवौ थो। सो दिन विषै तो हिरण होवै, रात विषै राजा होय। अनेक दरीखाना जुडै। आप सुंघासण बैसे, ऊपर छत्र दुलै। बड़ा बड़ा जोधा आय अर दरबार मंडै। और ही नाना भांत रा हाथी, रथ, घोड़ा, प्यादा भाँत-भाँत रौ दरबार आय मंडै। अर परभात रौ अलोप हुई जावै। तठै राजा संघासण बैठो थको ऊपर रुंख हतो तिकै ऊपर नजर कीवी। सू दीवटां रै चानणै सू ऊपरलो पुरख नजर आयी। तद राजा बोलियौ—तू एक तौ मनुस बैठो

भीख मांग-मांग कर पेट भरता था। वह अपने रास्ते पर चला आरहा था। उसे वहाँ दिन अस्त हो चला—रात पड़ गई। वहाँ उस उजाड़ में एक पीपल का पेड़ था। सिंह-बघेरो से डरता वह उस पर चढ़ गया। वहाँ बैठे उसने देखा—एक 'कालेहार'—काला हरिण आया। उसके साथ कई जीव मृग, खरगोश, रोम्ह, सूअर, गेंडा अनेक प्रकार के जीव आए। वहाँ रात्रि में एक नगर बसा। वह नगर बड़ा ही अद्भुत बसा। भांति-भांति के देवस्थान ( मन्दिर आदि ) और भांति-भांति का बाजार लगा।

राजा का वह दामाद जो एकादशी के दिन मरा था, वह दिन में तो हरिण बन जाता और रात्रि में राजा बन जाता। अनेक प्रकार के दरबार जुड़ता। खुद सिंहासन पर बैठता, ऊपर (उसके) चंवर दुलती। बड़े-बड़े घोड़े आकर दरबार में बैठते। और भी नाना प्रकार के हाथी, रथ, घोड़े, प्यादे दरबार में आकर जुड़ते, और प्रभात को विलीन

नजर आवै छै । इण मनुस नां बोलाय अर पूछियौ—तूं कुण छै तरै ब्राह्मण राजा नूं देख अर बोलियौ, जू ओ तौ राजा रौ सागी जवांई—राजा मुचकंद रौ सागी जवांई । तरै राजा नूं खबर पड़ी । तरै बांभण नूं निमसकार कीयौ । ब्राह्मण आश्रीवाद दीवी । तरै राजा पूछियौ—हे देव, ब्राह्मण, हमारी असत्री कासू करै छै ।

तरै ब्राह्मण कही—महाराज थांहरी असत्री धरम—नेम भली—भाँत करै छै । पिण महाराज, थांहरौ व्रतांत कहि थांहरी रिण कैसूं जो इतरौ नगर बसौ । तरै राजा सोभन बोल्यौ—हे देव, म्हे सगत बिना एकादशी करी थी, सो फळ पायौ नहीं । रात नगर बसै, दिन प्रलै, हुवै ।

हो जाता । राजा ने वहाँ सिंहासन पर बैठे ऊपर को देखा । दीपक के प्रकाश में ऊपर एक पुरुष नजर आया । तब राजा बोला—एक आदमी बैठा दृष्टिगोचर हो रहा है । उसने पुरुष को बुलाकर पूछा—तुम कौन हो ? तब ब्राह्मण राजा को देखकर बोला—यह तो राजा का सगा दामाद—राजा मुचकंद का सगा दामाद है । तब राजा को खबर लगी । उसने तब राजा को नमस्कार किया । ब्राह्मण ने आशीर्वाद दिया । तब राजा ने पूछा—हे देव, हे ब्राह्मण हमारी स्त्री क्या कर रही है ?

तब ब्राह्मण ने कहा—महाराज ! आपकी स्त्री, धर्म, नियम, व्रत भली—भाँति करती है । लेकिन महाराज, आप अपना तो हाल कहें ! आप पर इस प्रकार का कितका कर्ज है जो उक्त प्रकार का नगर बस जाता है । तब राजा सोभन बोला—हे देव, मैंने बिना शक्ति के एकादशी का व्रत किया, इसलिए उसका फल पा नहीं सका । रात्रि में तो नगर बस जाता है, लेकिन प्रातः नष्ट हो जाता है ।



तठै देव बोल्यौ—राजा, कोई उपाय करौ तो थारौ नगर वसै । तब राजा सोभन बोल्यौ, जे हमारी अस्त्री अठै आय एकान्त एकादशी को एकान्त व्रत कर अर पुन्य देवै तो नगर वसै अर थिर होवै । तब ऐसो वचन राजा मुचकंद नू जाय कही । आद-अंत दीठी जिका जाय कही । तरै ऐसी ब्राह्मण री बांणी सुण राजा अचरज उपायौ अर आपरा हुवाली माली हंता तिकानू वात कही । तरै राजा राजारी बेटी और ही आपरा तब हिंता तिकानू साथ ले अर आप एकै आश्रम बैठा । इतरै आथण हुवौ । तठै फेर नगर वसै । पछै चन्द्र भागा नै लेअर ब्राह्मण गयो जाय ऊभो करी । राजा आपरी राणी नू देख बोलाई—आदर कियौ । पछै कइयो—थे काती वदी एकादसी को व्रत देवौ जो अपणौ नगर थिर होवै ।

तब ब्राह्मण बोला—राजन, कोई उपाय करें तो आपका नगर बस सकता है । तब राजा सोभन बोला, यदि हमारी स्त्री यहाँ आकर एकान्त में एकादशी का एकान्त व्रत करे और उसका पुण्य मुझे देदे तो, यह नगर बस जाय और फिर कभी नष्ट हो भी नहीं । तब इस प्रकार के वचन ( उस ब्राह्मण ने ) राजा मुचकंद से जाकर कहे । आदि और अन्त तक जो कुछ देखा था, वह कहा । राजा ने ब्राह्मण की इस प्रकार बात सुनकर बड़ा ताज्जुब किया और अपने जो रिस्तेदार आदि थे, उन्हें यह बात उसने कही । फिर राजा और राजा की पुत्री अपने अधिक नजदीक के सम्बन्धियों को साथ लेकर एक स्थान पर आकर बैठे । इतने में संध्या हुई । वहाँ फिर नगर बसा । तब ब्राह्मण चन्द्रभामा को लेकर गया । राजा ने अपनी राती को देखकर उसे बुलाया । उसका आदर किया । फिर कहा—तुम कार्तिक कृष्ण की एकादशी के व्रत का फल दे दो तो अपना नगर स्थिर रह सकता है । तब चन्द्रभामा ने कहा—हे प्रभु, मैंने जन्म से लेकर आज तक का अपना पुण्य नगर को दिया ।

तैरै चन्द्रभागा कह्यौ-हेप्रभु, आजन्म हुती आज्ञ ताई इसो पुन छै, सो नगर नै म्हैं दियौ ।

तद् नगर थिर रह्यौ । उन नगर जिसड़ो द्वारकाकौ नाम जिसौ एक बड़ी पुरी तैसो नाम हुवो-सोभन नाम हुवो । सोभन नाम राजा घणा वरस ताई राज कियौ-अनेक पुत्र, धन, लखमी लाछ की वृद्ध हुई । पछै राजा राणी नै बैकुण्ठ गत हुई । जे कोई कथा सुणै, व्रत करै तौ भली गत नूँ प्राप्त हुवै और अश्वमेध जग्य को फल होवै ।

तब नगर स्थिर रह गया । उस नगर का नाम जैसा द्वारिका का नाम हुआ, उस बड़ी नगरी की शोभा हुई, वैसा ही हुआ । सोभन उसका नाम पड़ा । सोभन नामक राजा ने कई वर्षों तक राज्य किया । उसके कई पुत्र हुए, अन्न-धन लक्ष्मी की उसके यहाँ वृद्धि हुई । इसके उपरान्त राजा और रानी को बैकुण्ठ प्राप्त हुआ । जो व्यक्ति यह कथा सुने व्रत करेगा उसे अच्युत गति प्राप्त होगी और उसे अश्वमेध का सा पुण्य फल होगा ।

## ६-श्री सीव रात्री री कथा लिख्यते

श्री गणेशायनमः । श्री सीवरात्री री कथा लिख्यते ॥ श्री महादेवजी कैलास ऊपरा विराजा है, सु कैलास फिटकमणि सारीखो उजलो है । सूर्ज री कीरणा अयुं ही जगमग करै । सुं च्यार कोस ऊंचो है । अति सुन्दर है जठै श्री महादेवजी विराज्या है । श्री पारवती जी हाथ जोड़ अरज करै, महादेव का देव काईक वारता कहो । तदे श्री महादेव जी कहै, पारवती जी आ-वारता श्री नारायण जी इन्द्र जी सूं कही, सुं वारता थासुं कहूँ, थे येकचोत होय सुणो । फागुण वदि १४ अंधारो पखतीको दीन मारो है । मीनख मारो वरत करसो, तिणरै पाप रो खय होसी, पदवी बैकूठ रो पावसी । पारवती जी कहै, 'इण वरत री विधान कहो ।' श्रीमहादेवजी कहै-फागुण वदि १४ रै दिन व्रत कीजै ।

## शिव रात्रि की कथा

श्री महादेवजी कैलाश पर विराजते हैं—वह कैलाश सफेद मणि के समान उज्ज्वल है । सूर्य की किरणें जैसे ही जगमग करती हैं । ( सूर्य की किरणें चमक रही हैं ) ( वह ) पहाड़ चारकोस ऊँचा है अति सुन्दर है ( यह पर्वत ) वहाँ श्री महादेवजी विराजमान हैं । श्री पार्वती जी विनती करती हैं, हाथ जोड़ कर—हे महादेव, देवों के देव, आप कोई कहानी कहें । तब कहने लगे—पार्वती जी, यह वार्ता श्री नारायण भगवान ने इन्द्र से कही थी, वही वार्ता मैं आपसे कहता हूँ, आप चित लगाकर सुनें । फाल्गुण कृष्ण चौदस यह मेरा दिन है । जो व्यक्ति मेरा व्रत करेगा, उसके पापों का नाश होगा, उन्हें स्वर्ग में स्थान मिलेगा ।

पार्वती ने उत्तर में कहा—'इस व्रत का विधान कहिये' । श्री महादेवजी ने कहा—फाल्गुण कृष्ण चौदस के दिन व्रत करना चाहिए ।



राते जागरण कीजै । च्यार पोहर में च्यार पूजा कीजै । पाचाईमृत सूं केसर, चंदण, नवैद्य, धीरत रो दीपक कीजै । च्यार पोहर सीव-सीव कीजै । इणरा करणवाळा नै मनोवाचीत फळ देवुं । पारवती जी कहै, है देवां-का-देव इण व्रत सुं आगै कृण उधरीयो सुं कहो । श्री महादेव जी कहै-येक भील सुं प्रवता मै रहै । तिकण रै परवार घणो । सु बन में जीव मारनै आजीवका करै । सुं येकण दीन च्यार पोहर भटको, कोई चुगो मील्यो नहीं । सुं भूखो वनि मांहे बैठो । उठै एक तळाब है-उठै घणा बील-रा रूख है । सुं उठै सीया मरै । भुखो, सु बीलरा रूख उंपरा चढै उतरै, पां तोड़ै नाखै । सीया मरतो सीव-सीव करै । उठै श्री महादेव जी री जायगा पूजनीक ही । भील तो कुटो जाणै नहीं-भुखो जागतो रयो । फागुण वदि १४ रो दीन हो- पान तोड़ नाखीयां सुं पुजा मानी । उठा सु चालो । सामी चमकती

रात का जागरण करना । चार पहर में चार पूजा करनी चाहिए । पंचामृतों केशर, चंदन, नवैद्य, घृत का दीपक करना । चारों पहर शिव-शिव करना चाहिए । इस प्रकार का व्रत करने वाले को ( मैं ) मनोवांछित फल की प्राप्ति देता हूँ । पार्वती कहती हैं—हे देवों के देव, इस व्रत से पहले किस व्यक्ति का उद्धार हुआ, सो कहना । श्रीमहादेवजी कहने लगे—एक भील, वह पर्वत में रहता था । उसका बड़ा परिवार था । वह बन में जीवों को मारकर अपनी आजीविका किया करता । वह एक दिन चार पहर तक भटकता रहा—उस दिन उसे कहीं भी शिकार हाथ नहीं आया । इस प्रकार वह बन में भूखा बैठा रहा । वहाँ एक तालाब है—वहाँ बहुत से बील के वृक्ष हैं । वहाँ वह ठंड से मरने लगा । भूख के मारे बील के पेड़ पर चढ़ने और उतरने लगा—इस प्रकार वह पान तोड़ कर खाने लगा । ठंड के मारे वह 'ठंड लग रही है'—'ठंड लग रही है' ऐसा चिल्लाने लगा । वह स्थान

येक हीरणी आई। सु विचारो, हीरणी मारनै उरी लेबुं। तरै हीरणी बोली, 'रे भील, तुदे मोनुं मारै मती। तदे भील विचार कीयो-मोनुं इण वन माहे भटकता घणा वरस बीता, पीण हीरणी सुंढै बोलती कदे सुणी नहीं। तदे हीरणी बोली, 'रे भील, हूं इन्द्रजी री अपछरा ही, रंभा थी, जोवन भरपूर थी। इन्द्र जी मारा नाच सुं वोहोत खुसी हुंता, तारा मोनुं बडेरी सीरोमण कीवी। सगळ्यां अपछरा मारै लारै-हुं सीरोमण। येकण दीन श्री माहादेव जी इन्द्र जी कनै पधार्यां, सु समस्त अपछरा नाचती हुई। हूं पीण आवती थी मुरग माहे। बीच ही मैं मोनुं हीरण मई-दांणव रोक राखी। सु उणरो हूं मन मनाय राजी कर मोडी-सी आई। आयकर मुजरो कीयो। तदे माहादेवजी बोल्या-तुं सगळा माहे मोटी अरू बडेरी, मोड़ी आई-सुं साच कहो कूड मति बोली जै, भसम कर नाखहुं। तदे रंभा बोली-'राज,

श्री महादेवजी का था—पूजनीय ( पूजन करने योग्य ) था। भील तो भगवान की कुटिया ( यहाँ भगवान का निवास स्थान है ) जानता नहीं था—वह तमाम रातभर-भूला रहकर जागता रहा। फाल्गुण कृष्ण चौदस का दिन था, पान तोड़कर नीचे गिरा देने से वह (क्रिया) पूजा में मानी गई। फिर वह वहाँ से खाना हुआ। सामने चमकती हुई एक हरिणी दिखाई दी। उसने ( सोचा ) इसे मारकर अपने पास रख लूँ। इस पर ( तब ) हरिणी बोली—अरे भील ! मुझे तुम मारना मत ! तब भीलने सोचा, मुझे इस वन में भटकते-भटकते कई वर्ष हो गये हैं। लेकिन कभी भी हरिणी को मुँह से बोलती हुई नहीं सुनी है। तब हरिणी ने कहा—मैं भगवान इन्द्र की अप्सरा थी रंभा थी जोवन में मैं भरपूर थी। भगवान इन्द्र मेरे नाच से बड़े प्रसन्न होते थे। तब मुझे सबसे बड़ी और शिरोमणी बना दी। सब अप्सरायें मेरे बाद में शिरोमणी बनीं। एक दिन श्री महादेव जी इन्द्र के पास

मारो बस कोई नहीं । मोनुं हीरण—मई दाणव सुं हेत हुंतो । सुं उ जोरावर, आवण दीवी नहीं । उणरो मन मनायो, जदे आवण, दीणी । तदे माहादेव जी कोप कीयो तोनु, देवता थोड़ा छा ? दाणवा सुं कांई घरवास मांडीयो ? कोप सुं बोल्या, कहो—थे अरु हीरण—मई दाणव सराप भुगतो । तरै मैं वीनती करी—महाराजा, महारै छूटेपो कदे हुसी । तदे श्री माहादेव जी कयो—बारै बरस पाछै सीव रा लींग रो दरसण होसी । सुं माहादेवजी रो दरसण नुं भटका छां । तरै भील बोल्यो—हीरणी, थारी सलाहुवै जीतरी बाता कहो, थानु कदे ही छोडु नहीं । मारा बाळक भुखा है । इण बन माहे जीनावर मार आजीवका करूं । तरै हीरणी बोली, हुंतो गरभवंती, पेट माहे बचा है । बचा हुवा पाछै आवुं । नहीं आवुं तो सोस काहु तळावरी पाळ फोडारो पाप मोनुं नहीं आवुं तो देवता नीदै, तीरथ रोवुण, पुरुष रै भाव नहीं, जीकण रो पाप

आए अतः सभी अप्सराओं ने नाच प्रारम्भ किया । मैं भी स्वर्ग को आ रही थी । बीच में मुझे हीरणमई दानव ( हीरण के रूप में दानव ) ने रोक लिया । अतः उसका मन प्रसन्न—कर उसे प्रसन्न कर, मैं देर से ( वहाँ ) पहुँची । तब महादेवजी ने कहा—तुम सबसे बड़ी ( होकर ) और सबसे प्रधान ( होकर ) देर से आईं ! अतः सच बात कहना—भूठ बताना मत, नहीं तो तुझे भस्म कर दूँगा ।

तब रंभा ने उत्तर दिया—राजन् ! मेरा कोई वश नहीं है । मेरा हीरणमई दानव से प्रेम होगया था । वह बड़ा ही ताकतवर है—उसने आने नहीं दी । उसका मन प्रसन्न रखा, तब उसने मुझे आने की अनुमति दी । तब महादेवजी क्रोधित हुए—क्या तुम्हें देवतालोक दिखाई नहीं दिए ? क्या तुम्हें देवता कम मालूम हुए जो एक राक्षस से तुमने सुख—संभोग किया । क्रोध में आकर उन्होंने कहा—तुम और हीरणमई दानव दोनों ही शाप को भोगो । तब मैंने विनती की—मेरा



मोनु' तो कने नहीं आऊं तो लागसी । हूं बेगी आऊं । हिरणी सोस खाई तदे भील मारी नहीं—जावण दीवी । भील तो उठीही उभो सीव-सीव करै, जीतरै हीरणी दुजी आई, तिकण नु तीर सामो वाहण लागो । तदे हीरणी बोली, रे भीलजी, मोनु' मती मारै । लारा सुं मारो धणी आवसी, तिकाना मारी । बचा मारा छोटा छै । बचानुं चुगायं आवुं । नहीं आवुं तो सोस करूं बाभण री देह पाय सीभया तीरपण नहीं करै, तोकण रो पाप मोनुं । नहीं आवुं तो गवु बैठी नै ठोकर दे उठाणै सु पाप नहीं आवुं तो लागजो । तरै भोल जाणौ, हीरणी येक आगै आई, दुजी पाछै आई—सु साचा दीसे है, जाण दीवी । तुरत हेरण आयो । तदे भील हेरन नु मारण लाग्यो, तदै हेरण बोल्यो, 'रे पापी, मारै मति । अठै दोय मारी असतरी आई । तदै भील बोल्यो, 'आ जायगा कोई बड़ी पुजनीक है—जीनावर मानवी उयुं' बोल्या ।

छुटकारा कब होगा ? इस पर श्री महादेव जी ने कहा—बारह वर्षों के उपरान्त शिवलिङ्ग के दर्शन होंगे । इस लिए मैं ( हरिणी ) महादेवजी के दर्शन के लिए भटक रही हूँ । तब भील बोला—हे हरिणी तुम्हारी इच्छा हो, उतनी बातें तू कह, मैं तुम्हें किसी भी प्रकार से छोड़ने का नहीं । मेरे बालक भूखे हैं । मैं तो इस वन में जीवों को मार कर ही अपनी आजीविका उपार्जन करता हूँ । इस पर हरिणी ने कहा मैं गर्भवती हूँ, मेरे पेट में बच्चा है । बच्चा होने के बाद ( मैं ) आऊँगी । यदि मैं नहीं आऊँ, तो शपथ पूर्वक कहती हूँ इस तालाब की पाल फूटने का पाप मुझे लगे । यदि मैं तुम्हारे पास नहीं आऊँ तो मुझे देवताओं की निन्दा करने का पाप, तीर्थों की बुराईयाँ करने का पाप तथा अपने पुरुष में अनुरक्ति न रखने का पाप ( जो एक स्त्री को लगता है ) मुझे लगे । मैं बहुत जल्दी आऊँगी । हरिणी ने शपथ खाई—तब भील ने उसे मारी नहीं उसे ( वैसे ही ) जाने दिया । भील वहाँ

तदै भील हरख पाम्यो, च्यार पोहर राते हेरण हीराण्यां सुं  
 भूखो रात रहो । भूखो बीलरा पांन तोड-तोडी नाखतो रहो,  
 सीया मरतो सीव-सीव कीयो । सु वाहा सीव रात्र थी,  
 जायगा सीव जी रो मंदिर छो । सुं भील नु श्री माहादेव जी  
 तुसटमांन हुवा । भील नु परम पदवी दीवी, अपछरा आंप सुं  
 नीवरत हुई; इन्द्रलोक गई । बिमान बैसि सुरग गया । सु आकास  
 मै उडै छै । हीरणा खासे हेरण तीनु तारा पाछै, सुं आदेडी  
 कही जे । सुं भील जी है सुं श्री माहादेव जी रा प्रताप सुं  
 मोखनु पराप्त हुआ । सु परतत्त आसमांन मै दरसण दीसै है ।

खड़ा-खड़ा 'ठंड लग रही है', लग रही है' ऐसा कह ही रहा था कि  
 इतने में एक दूसरी हरिणी आई ( वह ) उसे तीर मारने को उद्यत  
 हुआ । तब हरिणी बोली—हे भील, मुझे मारना मत । पीछे से मेरा  
 पति आ रहा है—उसे मारना । मेरे बच्चे छोटे हैं । मैं उन्हें चुगा-पानी  
 देकर आऊँ ! यदि मैं तुम्हारे पास नहीं आऊँ तो मुझे उस ब्राह्मण का  
 पाप लगे जो संध्या, तर्पण आदि नहीं करता है । यदि मैं तुम्हारे पास  
 नहीं आऊँ तो मुझे बँठी हुई गाय को ठोकर मारकर उठाने का जो  
 पाप है—वह लगे । तब भील ने विचारा हरिणी एक पहले भी आई;  
 दूसरी पीछे से भी आई, अतः यह सच्ची मालूम होती है, उसे जाने दिया ।  
 जल्दी ही हरिण आया, तब भील हरिण को मारने लगा । तब हरिण  
 बोला—अरे ओ पापी, मुझे मत मारना । यहाँ अभी मेरी दो स्त्रियाँ  
 आई थीं । तब भील बोला—यह जगह कोई बड़ी पूजनीक मालूम होती है  
 यहाँ जानवर भी मनुष्यों की तरह बोलते हैं । तब भील बड़ा ही हर्षित  
 हुआ । चार पहर तक रात्रि में हरिणों को हेरता, हैरान होकर भूखों  
 मरता रहा । भूखा बैठा बील के पत्ते तोड़-तोड़कर फेंकता रहा और  
 ठंड के मारे सी-सी-सी करता रहा । उस दिन शिवरात्रि थी—और  
 उस स्थान पर शिवजी का मन्दिर था । अतः भील को श्री महादेव जी

आ कथा श्री महादेव जी श्री पारवती जी नुं कही । श्री पारवती जी सीवरात्री को व्रत प्रगट कीयो । करसी सु मनोवाछीत फल पावसी, परमगति नुं परापत हुंसी । सीवरात्री रो व्रत रो पुनरो पार कोई नहीं । सीव ईसुर अविनासी परमात्मा है । व्रत करसी, कथा कहसी, सुणकर धारसी-सुं भगति पावसी । इति श्री सीवरात्री कथा । श्री रामजी आवण सुद १५ सं० १८५० । श्री हरी ।

---

तुष्टमान ( प्रसन्न ) हुए । भील को बड़ी पदवी ( अच्छा स्थान ) दी और अप्सरा को उसके शाप से मुक्त की, वह इन्द्रलोक गई । विमान में बैठकर वे स्वर्ग को गये । अतः आकाश में निकलते हैं । हरिण दोनों तरफ और हरिणी तीनों तारों के पीछे । इसे आहेड़ी कहते हैं । ( वह आहेड़ी कहलाता है ) । भील है, वह श्री महादेवजी के प्रताप से ( कृपा से ) मोक्ष को प्राप्त हुआ । वह प्रत्यक्ष आकाश में दर्शन देता है । ( आकाश में प्रत्यक्ष दिखाई देता है ) । यह कथा श्री महादेवजी ने पार्वती जी से कही । श्री पार्वती जी ने यह शिवरात्रि का व्रत संसार के सामने रखा । जो ( व्यक्ति ) इस व्रत को करेगा, उसे अपनी इच्छानुसार फल की प्राप्ति होगी—वह परमगति ( सद्गति स्वर्ग ) को प्राप्त होगा । शिवरात्रि के व्रत के पुण्य की बड़ी ही महिमा है इसका कोई पार नहीं है । शिव जी भगवान, अविनाशी हैं—परमात्मा हैं । जो व्यक्ति यह व्रत करेगा, इसकी कथा कहेगा, अथवा इसे सुनकर इसे चित में धारण करेगा उसे ( शिव की ) भक्ति मिलेगी ।

---



## १०—अथ होली की कथा

एक राक्षस मालाण की बेटी, दूढ़ा राक्षसणी । सो दूढ़ा राक्षसणी श्री महादेवजी ऊपर तपस्या कीबी । सो ऐसी तपस्या कीनहीं जो एक सिव-सिव करें । बीजो क्युं खावै न पीवै । तरै श्री महादेवजी प्रसन्न होय दरसन दीयौ, नै महादेव जी कह्यौ, 'हूं तूठो, तू मांग' तरै दूढ़ा राक्षसणी बोली, जो राज म्हाँनै तूठा छै, तो इतरी देवो, जो हूं किणीवतै मरूं नहीं । देवतां सूं, मनखां सूं न मरूं । हथियारां सूं मरूं नहीं, ईसडी मौनूं करो । तरै श्री महादेव जी जाणोयाँ—आतौ रांड राक्षसणी, नै इणरै तो कपट घणौ । आ मांणसां नूं दुख देसी । नै म्हाँ तो इणनु वचन दियो । तरै श्री महादेव जी कहै छै—बाळक, मनिख री तौ हूं न जाणूं, नै बीजा तौ सकोई थारी पूजा करसी । तरै राक्षसणी

### कथा होली की

राक्षस मालाण की बेटी...दूढ़ा राक्षसणी थी । उस दूढ़ा राक्षसणी ने श्री महादेव जी की तपस्या की । उसने ऐसी तपस्या की कि केवल 'शिव' 'शिव' करती रहे—इसके अतिरिक्त न वह कुछ खाती और न कुछ पान ही करती । तब श्री महादेव जी ने प्रसन्न होकर उसे दर्शन दिए । वे कहने लगे, 'मैं तुझसे प्रसन्न हूँ—तू मुझसे वर मांग !' तब राक्षसणी ने उत्तर दिया, यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो ऐसा वरदान दें जो मैं किसी के मारे मरूं ही नहीं । देवताओं से न मरूं, मनुष्यों से न मरूं, हथियारों से न मरूं, मुझे ऐसी वना दें ( वरदान द्वारा ) । महादेवजी ने तब सोचा, यह तो राक्षसणी है—इसके ( हृदय में ) कपट बहुत है । यह प्राणीमात्र को कष्ट देगी । और मैंने तो इसे वचन के लिए कह दिया है ! इस पर श्री महादेव जी ने कहा, 'वच्चों की और मनुष्यों की

जाणियो, बाळक रौ भौ कोई नहीं बाळकां नुं हूं खाय जाईस । बीजौ मांग्यौ सो सरब दियो । नै श्री महादेव जी अन्तरध्यान हुआ । पछै राकसणी दूँढे गांव रहै छै । सो महाजोरावर हूइ, सो संसार में नाना छोरुवां नुं घर माहैं सूं सूता नै बैठां नुं उपाइ उपाइ नै जावइ है—मार नै खाया । सो धरती सारी ऊगै नै आयबौ जितरी में फिरै, नै नाना छोरु मार नै खावै । सो राकसणी जोरावर हूइ । मारी मरै नहीं । च्यांरु ही खूंट में राकसणी री हूक हूइ । सो राजा रूच नव खंड सात दीप रौ घणी, धरमात्मा-तिण री धरती माहैं अन्याव कठै ही नहीं । न्याव रौ पइसौ लेवै, सो दुनियां सारी ही राजा कनै पुकारूं आई । कइ-महाराज, दूँढा राकसणी धरती माहैं अन्याव करै छै, नान्हा टाबरां नुं मारनै खाय छै ।' तरै राजा नुं सोच ऊपनौ ।

तो मैं कह नहीं सकता—अन्य सभी तुम्हारी पूजा करेंगे । तब राक्षसणी ने सोचा, ' मुझे वच्चों से तो कोई भय है ही नहीं; उन्हें तो मैं खा जाऊँगी । और जो कुछ मैंने मांगा था, सो तो मिल ही गया ।

इस पर महादेव जी अलोप हो गए । इसके बाद राक्षसणी दूँढा गाँव में रहती है । वह बड़ी ही शक्तिशालिनी होगई । संसार में कई वच्चों को उनके घरों में से सोते हुआओं को, बैठे हुआओं को, उठा-उठाकर भाग जाती है, उन्हें मारकर खाती है । तमाम पृथ्वी पर जहाँ तक सूर्य उदय होता है और अस्त होता है वह वहाँ घूमती है और नाना-प्रकार के वच्चों को मारकर खा जाती है । इस प्रकार वह राक्षसणी ताकतवर होगई—किसी के मारे मरती नहीं । चारों दिशाओं में उसकी धाक जम गई ।

राजा रूच, नव खण्ड, सात द्वीपों का स्वामी, बड़ा धर्मात्मा जिसकी धरती में अन्याय कहीं नहीं होता था—ऐसा था । वह न्याय का ही

तरै राजा गुरु वसिष्ठ जी नै पूछै छै, जो लोक दुनियां सारा ही पुकारू आया छै । ठूँडा राक्षसणी धरती मांहै अन्याय करै छै, नांन्हा बाळक सहु मारै छै, तिणरौ कासुं करणौ । तरै वसिष्ठ जी कछौ-इण राक्षसणी नै श्री महादेव जी रो वरदान छै । सो आ क्युं ही कीयां मरै नहीं । एक उपाव छै, तिण करनै रहसी । श्री महादेव जी एक सेरी राखी छै । तरै राजा कहै छै-वसिष्ठजी उपाव बतावौ । तरै वसिष्ठ जी कहै छै—गांव रै बारै होळी मातारौ थान छै । थै सकौई जाय नै माताजी री पूजा करौ, बाजा बजावतां, गावतां पूजा करौ । फागुण वदि एक मरै दिन होळी रौ डांडौ रोपिजै, ऊपर धजा बांधिजै । नै छोकरां नै कहौ जु मुहडा मांह सूं भूँडा बोलै, कुफार काढै, नाचै, कूदै, पांणी नाखै । धूड, राख नाखै, भीटोडा छांणा, लकड़ी चोर खोसनै भैळ करौ ।

पैसा लिया करता । अतः तमाम संसार (के लोग) राजा के पास फरियाद करने को आए । कहने लगे—राजन् ! ठूँडा राक्षसणी पृथ्वी पर अन्याय करती है । छोटे-छोटे बच्चों को मारकर खाती है । तब राजा को बड़ा ही फिक्र हुआ । वे इस पर गुरु वसिष्ठ जी से पूछते हैं । दुनियां के सभी लोग पुकार लेकर आये हैं । ठूँडा राक्षसणी पृथ्वी पर अन्याय करती है, छोटे-छोटे तमाम बच्चों को मारती है, उसका क्या (उपाय) करना चाहिए । तब वसिष्ठ जी ने कहा, इस राक्षसणी को श्री महादेवजी का वरदान है । अतः यह किसी से भी मर नहीं सकती । एक उपाय है—उससे यह रह सकती है । श्री महादेवजी ने एक छूट रखी है । तब राजा कहते हैं—हे वसिष्ठ जी उपाय बतावें !

तब वसिष्ठ जी कहते हैं—गांव के बाहर होली माता का एक मन्दिर है । आप सभी उसकी पूजा करे—बाजा बजाते, गाते हुए उसकी पूजा करें । फाल्गुण कृष्ण एकम के दिन होली के नाम का एक



जो राक्षसणी नै बरदान छै-बरसाळै, सीयाळै उतहाळै न मरै। तिन सूं फागुण री महीनो छै । सो उन्हाळो लागतां नै सीयाळारी संघ छै । फागुण सुदि पूनम रै दिन डांडो रोपियो हुबो तिकोनै छोरकां लकड़ी छांणा भीटोरा भेळा किया होय तिको सारा भेळा करने डांडां कनै नांखीजै । ने पछै होळी री प्रतिष्ठा ब्राह्मण सुं कराई जै । पछै होळी री पूजा कीजै-कुंकुं चावल सूं पूजा कीजै, धूप खेईजै । मुहवा आगै नैवेद, सांकळो, फूली चढाईजै । बड़ा चढाई जै । लकड़ी रा खांडोला बाळकां रै हाथ में दीजै । पछै होळी प्रजलत कीजै । पछै भाळ निकलै, तरै परिकरमा दीजै । नालेर मांहै नांख नै उरीलै भाळ मांह सूं, नै पछै बधारिजै । हाथ में खांडोला होइ सो एक होळी.....।

मोटा सा लकड़ रोपना—उस पर एक ध्वजा बाँधना । फिर बच्चों से कहना—मुँह से बुरे शब्द कहना, गालियाँ निकालें, नाचें, कूदें, पानी फेंकें, धूँड व रातल फेंकें । जली-बली लकड़ियाँ और कण्डे इधर-उधर से चोर-खोस कर इकट्ठे करलें । राक्षसणी को बरदान है—वर्षाकाल, ग्रीष्मकाल, व शीतकाल में यह मरे नहीं । अतः फाल्गुण का महीना है यह गर्मी के प्रारम्भ होते तथा सर्दी के जाते समय दोनों का संधिकाल है । फाल्गुण शुक्ला पूर्णमा को जो लकड़ रोपा हुआ है—उसके पास लड़के चोरे हुए व लूट-तसोट किए हुए कण्डे व लकड़ियाँ इकट्ठी हुई हों, उन्हें वहाँ फेंक दें । इसके बाद होली की प्रतिष्ठा ( पूजाआदि ) ब्राह्मण से करवानी । फिर होली की पूजा करनी चाहिए । पूजा कुंकुंम चावल आदि से करनी चाहिए धूप भी करना चाहिए । उसके ठीक सामने प्रसाद-नैवेद्य आदि भी चढ़ाने चाहिए । बड़े चढ़ाने ( चाहिए ) लकड़ी के खांडोले ( लकड़ी की तलवार आदि ) बच्चों के हाथ में देनी चाहिए । फिर होली को जलाना चाहिए । इसके बाद होली की

भाळ देख नै नालेर बधारिजै । तिणरी धूँऔ सगळौ जासी । नै नान्हो छोरूँ जन्मे तिणरी पूजा सांकळी, बळी, फूली भेळ करनै ऊपर लाकड़ी आरी करनै नैचे छोरू नै बैमाणजौ । नै ऊपर खांडै री काटकल दीजौ नै गीत गाई जै । सो ये खांडोळा री काटकडे पडै सो राकसणी रै लागै । काटकड़ नै होळी रौ धूँऔ लागै । तिण आगै राकसणी आवसी नहीं, सो थै ओ उपाव करौ । तरै राज—लोक, दुनियां पुकारु आई थी तिणांकनै आ बात कही छै, थै सकोई इणभाँत सूँ होळी री पूजा करौ ज्यूँ राकसणी नहीं आवै । तरै सकोई इणभाँत सूँ पूजा करण लाग़ा । तरै राकसणी रौ दोस उतरियौ । हमै राकसणी न आवै । तरै बाळकां रौ कष्ट कटियौ ।

‘भाळ’ ( लौ ) निकले उस समय उसके चारों ओर परिक्रमा लगानी चाहिए । नारेल को जलती होली में डालकर फिर उसे निकालकर फोड़ना चाहिए । हाथों में जो ‘खांडोले’ हों उन्हें होली में गिरादेने...

अग्नि की लपट को देखकर नारेल को तोड़ना चाहिए । उसका धूँआ चारों ओर जावेगा । और छोटा बच्चा पैदा हो उसकी पूजा, बली से, फूलों से करके.....उसके नीचे बच्चे को बिठाना चाहिए । उस पर तलवार को रक्षा के रूप में रखना, फिर गीत गाने चाहिए । सो इसप्रकार तलवार काटकड़ जो गिरे वह राक्षसणी के जाकर लगे । काटकड़ को होली का धूँवा लगे । उसके समक्ष राक्षसणी आयेगी नहीं—अतः आप यह उपाय करें । तब जो लोग शहर के और दुनियाँ के पुकार लेकर आए थे, उनके पास यह बात पहुँची—आप सभी इसी प्रकार से होली की पूजा करें, जिससे राक्षसणी न आ सके । तब सभी लोग इस प्रकार से पूजा करने लगे । इस प्रकार राक्षसणी का दोष का खुटकारा हुआ । अब राक्षसणी आती ही नहीं । तब जाकर बालकों

पछै सकोई नान्हा, मोटा, भरद, अस्त्रियां, मुहडा मांहि  
थे भूँडा बोलैछै । माथा मांहि धूइ, राख, पांणी, मल, मूत, घालै  
छै । तिण थो दोस उतरै । पछै सकोई भेळा हूयनै ठूँडा राकसणी  
नूँ राव काठीजै । तिणरा गळा मांहि खडवंया री माळा घालिजै ।  
उणरै घणी राख लगाइजै । पछै उनूँ गधौडौ ऊपर चाड  
चढाइवै । मुहडे आगै बाजा बजाइजै । छोकरां कनै भूँडा बोलाइजै  
पछै भाटा बाहिजै । पछै रावनै गाँव बारै काडिजै । तरै भार  
उतरै छै ।

— — —

का कट्ट मिटा । उसके बाद सभी छोटे, मोटे, भरद, स्त्रियाँ, मुँह से बुरे बचन बोलते हैं । सिर पर धूल, राख, पानी, मल-मूत्र डालते हैं—इससे दोषका परिमार्जन होता है । फिर सभी इकट्ठे होकर ठूँडा राकसणी का स्वांग निकालना चाहिए । उसके गले में एक माला विशेष ( गोबर की बनी ) पहिरावें । उसके बहुत सी राख लगावें । फिर उसे गवे पर चढ़ा देनी चाहिए । उसके मुँह के आगे बाजे बजावें । लड़कों से बुरे बचन कहलायें । फिर पत्थरों की मार उसे मारना । फिर गवे को गाँव के बाहर निकालना । तब इसका भार कम हो ( तब जाकर यह काम हलका हो ) ।

— — —



## ११—अथ फल द्वितीया की कथा

श्री गणेशायनमः । अथ फल द्वितीया की कथा लिख्यते । एकदा समै राजा युधिष्ठिर, श्री कृष्णदेव को प्रश्न कियो, हे स्वामिन, हे जनार्दन, दांना करि, यज्ञा करि, किसौ पुण्य करि राज्य री प्राप्ति हुवै, सू थे निश्चय कर कहो ॥ १ ॥ तब श्री कृष्ण कहै—जो राजा, राज्य सुख बांछै छै तो व्रत करि, जिके व्रत कियां मनबांछितं फल हुवै, व्रतां मांहि उत्तम छै, मोटै पुण्य री करण-हार ॥ २ ॥ कैसो छै व्रत, जिकै एकै व्रत कियां जितरौ सारां तीर्थां विषै स्नान कियां पुण्य हुवै, तितरौ पुण्य हुवै ।

तब युधिष्ठिर कहै—हे कृष्ण, तिकौ व्रत किसो ? किसै देवता रो ? किसी विधि ? विस्तार सौं कहो । जो थे म्हाँ ऊपर

## कथा फल द्वितीया की

श्री गणेशायनमः । फल द्वितीया की कथा लिखी जा रही है । एक समय, राजा युधिष्ठिर ने श्री कृष्ण भगवान से प्रश्न किया—हे स्वामी, हे जनार्दन, दान और यज्ञ अथवा वह कौनसा पुण्य है जिसके करने से राज्य की प्राप्ति हो ? वह आप कृपा करके अवश्य कहें । तब श्री कृष्ण कहते हैं—जो राजा राज्य सुख चाहे, उसे व्रत करना चाहिए । उस व्रत के करने से मन-वाञ्छित फल होता है; यह व्रतों में उत्तम व्रत है, और यह बड़े पुण्य को देने वाला है । यह कैसा है व्रत—जिस एक व्रत को करने पर तमाम तीर्थों में स्नान करने के समान पुण्य होता है ।

तब युधिष्ठिर कहता है—हे कृष्ण, वह कौन सा व्रत है ? किस देवता का है ? कैसी उसकी विधि है ? विस्तार पूर्वक कहें—यदि

भाव राखो छौ तो । तब श्री कृष्ण कहै—राजा तू सुनि—व्रतां मांहि उत्तम व्रत छै । ओ व्रत आगै सौनकादिकां रिसीस्वरां नूँ सूत जी कह्यौ छै ॥ ५ ॥

पुराण पूर्वै एक समै दण्डकारण्य वन वासीयां रिखां नूँ आवतां नूँ सूत वचन कहत हुवौ ॥ ६ ॥ हे रिसीस्वरां कठै गया था, कासूँ इयै रौ प्रत्युत्तर हुवै ॥ ७ ॥ तब रिख बोलिया—हे सूत, म्हे श्री गंगा विषै स्नान करण गया था । तठै श्री भगवान पण आया । थानूँ आ सून्यशयन नाम व्रत पूछन आया छौ । जिकै व्रत कर राजा रुक्मांगद हुंतो हुवो, जिकैरी कीरति स्वर्ग ऊपरि जाय प्राप्ति हुई—तठै श्री भगवान विराजै । तब सूत कहै—आवणादि मास च्यार कृष्ण परव्य री द्वितीया तिकै आगै व्रत करि । जल शायी भगवान पूजीयो । धन धर्म सूँ उपायो ॥ १० ॥

आप मुझ पर कृपा भाव रखते हैं तो । तब श्री कृष्ण कहते हैं—राजन् ! तुम सुनो—(यह) व्रतों में से उत्तम व्रत है । इसी व्रत को पहले सौनकादिक ऋषि आदि को सूत जी ने कहा है ।

प्राचीन काल में एक समय बंडका वनवासी ऋषियों के आने पर, सूत जी इस प्रकार वचन कहने लगे । हे ऋषि लोगों—(आप) कहाँ गये थे ? (इस प्रकार के जाने का) क्या प्रयोजन था ? तब ऋषियों ने उत्तर दिया—हे सूत ! हम श्री गंगा जी में स्नान करने गये थे । वहाँ श्री भगवान भी आये थे । आपके पास (तो) 'शून्य-शयन' नामक व्रत के विषय में पूछने आये हैं । जिस व्रत के करने पर राजा रुक्मांगद था, उसकी कीर्ति स्वर्ग तक जा पहुँची, जहाँ श्री भगवान विराजमान है । तब सूत कहते हैं—आवण आदि महीने की चार कृष्ण-पक्ष की द्वितीया का (उसने) व्रत किया । जल में शयन करने वाले (विष्णु) भगवान को पूजा ।

तैं कर भगवान प्रसन्न हुई वाञ्छित फल देता हुआ। फेर ब्राह्मण  
री किरपा सूं पृथिवी रो राजा हुवौ। इयैहीज कथा नूं विस्तार  
कर कहूँ छूँ—थे एकाग्र मन श्रवण करो ॥ १२ ॥

पुराण पवैं राजा रुक्मांगद धर्मात्मा सारां राजवीयां विषै  
श्रेष्ठ। वामदेव रिषि रै आश्रम आय प्राप्त हुवो। तठै एकै  
रिखी नूं बैठो देख्यौ। तिकै नूं देखि राजा नमस्कार कीयो—  
चरणै लागो ॥ १४ ॥ रिसिस्वर पण उठो आसन अर्घ्य पाद्य  
सत्कार कियो। राज्य री कुशल वार्त्ता पूछी। तब रिख नूं  
कह्यौ—हे रिसिस्वर, थांहरी किरपा करि माहरो राज्य विषै  
कुशल छै। पण क्यूंक हूँ पूछण आयो छौं। म्हारै हृदै मांहि  
विस्मय छै ॥ १६ ॥ हे ब्रह्मन्, जिकै कर्म कर राज्य शत्रु वैरियां  
करि वर्जित म्हैं पायो, धर्मांगद सारीखो पुत्र पायो, मनो गामी

इससे भगवान प्रसन्न होकर ( उसे ) मनो-वाञ्छित फल का  
वरदान दिया। फिर ब्राह्मण की कृपा से पृथ्वी का राजा हुआ।  
इसी ही कथा को विस्तार पूर्वक कहता हूँ—आप लोग एक-चित्त  
होकर सुनें।

प्राचीन काल में राजा रुक्मांगद बड़ा धर्मात्मा, तमाम राजाओं में  
श्रेष्ठ ( हो गया है )। वह वामदेव ऋषि के आश्रम में आया। वहाँ एक  
ऋषि को बैठा हुआ देखा। उसे देखकर राजा ने नमस्कार किया,  
उसके पाँवों पड़ा। ऋषि ने भी उठकर अर्घ्य आदि से उसका सत्कार  
किया। राजा से उसकी कुशल मंगल पूछी। तब उसने ऋषि से उत्तर  
में कहा—हे ऋषिदेव ! आपकी कृपा से मेरे राज्य में सब कुछ कुशल है।  
लेकिन मैं कुछ पूछने को आया हूँ। मेरे हृदय में कुछ संशय है। हे ब्रह्मन्  
देवता, जिस कर्म द्वारा मैंने शत्रुओं द्वारा निसंकटक राज्य को प्राप्त किया,



अश्व पायो, संध्यावली भार्य पाई-पृथ्वी विषै औसी गुणशील  
आचार पतिव्रता और नहीं। और ही जिकौ देवता नूं दुर्लभ  
तिको म्हैं पायो, सू थे निश्चय कर कहौ। म्हैं किसै पुण्य तैं  
पायो। इयै भांत रूकमांगद पूछियो थको रिसीस्वर मुहूर्त मात्र  
ध्यान करि राजा रै पूर्व जन्मांतर री वार्त्ता जाँणी।

तठा उपरांत रिसिस्वर हंसकर राजा सौं कहतो हुबो।  
हे राजन्—तूं जन्मांतर रै विषै अबनीपाल नाम शूद्र हंतो।  
महा-दरिद्र कर पीडित थो। भूंडी भार्य थी। कुछित कर्मा  
री कर्ता। अकस्मात् कहीं ब्राह्मणां री संगति हुई। तिकै ब्राह्मण  
वरसा-वरस ओ असून्यश्यन व्रत करता। तिकां रै प्रसंग सूं  
तै पण व्रत कीयो तिकै रौ प्रताप छै। तै सब घर दोइ पर्यंत  
कियो-तिकै रा फळ छै।

धर्मांगद जैसा (गुणवान) पुत्र पाया, इच्छित स्थान पर ले जानेवाला  
घोड़ा प्राप्त किया, संध्यावली जैसी पत्नी प्राप्त की, पृथ्वी में जिसके  
समान गुणशीला, आचरण वाली पतिव्रता और कोई भी नहीं है। और  
भी जो चीजें जो देवताओं को दुर्लभ हैं वे सभी मुझे प्राप्त हुईं ऐसा  
व्रत आप मुझे निश्चय ही कहें। मैंने कौन पुण्य प्रताप से इन्हें प्राप्त  
किये ! इस प्रकार रूकमांगद के पूछने पर ऋषिदेव ने पल भर ध्यान  
लगाकर राजा के पूर्व जन्म की बात को समझली।

इसके उपरान्त ऋषिवर हंसकर राजा से कहने लगा। हे राजन्,  
तुम पूर्व जन्म में अबनीपाल नामक शूद्र थे। बड़ी दरिद्रता (गरीबी)  
के कारण दुःखी थे। तुम्हारी औरत बुरी थी। बुरे कर्मों को करने  
वाली थी। अकस्मात् तुम्हें किसी ब्राह्मण की संगति हो चली, वह (ऐसा)  
ब्राह्मण था जो कई वर्षों से यह 'असून्य-शयन' करता आ रहा था।

आवण री द्वितीया कियां तै संपदा री प्राप्ति हुवै । भाद्रपद री द्वितीया कियां तै पुत्रां री प्राप्ति हुवै । आश्विन मासि री द्वितीया कियां तै भली स्त्री पावै । स्त्री करै तो भलो पुरुष पावै । ओ व्रत चंद्रोदय व्यापिनी द्वितीया करै ।

ए राजा वचन रिसिस्वर रां सुनि आपरै नगर गयो । जायकर अशून्य-शयन व्रत करण लागो वरसां-वरस । तिकै सूं अतुल कीर्ति, अतुल बल पायो । आ कथा सूत पौराणिक शौनकादिकां प्रति कही । तब रिसिस्वरां फेर प्रश्न कियो । हे सूत, ओ व्रत क्यूं कर उत्पन्न हुवो ? कै कियो ? किसी विधि कर करणो ? किसो फल पाई जै ?

तब सूत जी शौनकादिकां नै कहै—पुरा कल्पांतर रै विषै, भगवान माकण्डेय रिसिस्वर नूं माया दिखाई । समुद्र, पृथ्वी,

उसी के प्रभाव से तुमने भी यह व्रत किया । उसी का यह प्रताप है । तुमने दो वर्ष तक किया, उसका फल है ।

आवण की द्वितीया करने पर सम्पदा की प्राप्ति होती है । भाद्रपद की द्वितीया करने पर पुत्रों की प्राप्ति होती है । आश्विन-मास की द्वितीया करने से अच्छी ( अच्छे आचरण वाली ) स्त्री प्राप्त होती है । स्त्री यदि इस व्रत को करेगी तो उसे अच्छा गुणवान पुरुष ( पति ) प्राप्त होगा । यह व्रत चन्द्रोदय व्यापिनी द्वितीया को करो (याने शुक्ल-पक्ष की द्वितीया को करो )

यह वचन सुनकर राजा अपने नगर को आया । आकर कई वर्षों तक 'अशून्य-शयन' व्रत करने लगा । जिसके कारण अतुल कीर्ति और अतुल बल उसे प्राप्त हुआ । यह कथा प्राचीन काल में सूत ने शौनकादिक ( ऋषि लोगों ) के प्रति कही थी । तब ऋषिवरों ने

जळ-जळात्कार करि आप एकै पदम रै पानरौ पीघौ करि तिकै मांहि सूता; तिकै समै मावडैय श्री भगवान सूं प्रश्न कीयो । हे ब्रह्मन्—थे औसे पदम रै पलंक उपरि रख्या रो करण हार कृण छै । थाने स्तन-पान कृण दे छै । कृण थांहरौ भरण-पोषण करै छै ? थे कठा सूं उत्पन्न हुवा छौ । हे बाळक, सर्व निश्चय करि कहो ॥ १ ॥

हमैं बाळक रूप भगवान कहै छै—हे रिसि, ऐ सर्व म्हैंहीज उत्पन्न कीया छै । ब्रह्मा, इन्द्र, महादेव, आदित्य, वसव, रुद्रा, रिसिस्वर, दिग्पाळ, लोकपाळ, गंधर्व, नाग, राख्यस, पिशाच, राजान, पर्वत, विद्याधर, प्रहा, पाताळ, पृथिवी, भूरादिचतुर्दश लोक, नख्यत्र, जोग, रासि, तारा, जळरासि, बात, अग्नि । और ही स्थावर, जंगम जीव ए सर्व म्हैंही तैं उत्पन्न हुवै । म्हैंही

फिर प्रश्न किया । हे सूत ! यह व्रत किस प्रकार उत्पन्न हुआ ? किसने इसे ( पहले पहल ) किया ? कौन सी विधि से इसे करना चाहिये ? इससे कौन-सा फल मिल सकता है ?

तब सूत जी शौनकादिकों से कहते हैं—बहुत ही प्राचीन काल में भगवान ने मार्कण्डेय ऋषि को अपनी माया दिखाई । समुद्र, पृथ्वी और जल सबको जल-मग्न कर स्वयं एक कमल के पत्ते को भूला बनाकर उसमें सो गये । उस समय मार्कण्डेय ने भगवान से प्रश्न किया—हे ब्रह्मन्, आपका इस प्रकार कमल के पत्ते पर ( शयन करते समय ) आपकी रक्षा कौन करेगा ? आपको कौन स्तन द्वारा दुग्धपान करवायेगा ? कौन आपका भरण-पोषण करेगा ? आप कहाँ से पैदा हुए हैं ? हे बालक—सब निश्चय पूर्वक कहिये ।

अब बालक रूप भगवान कहता है—हे ऋषि, यह सब मैंने ही उत्पन्न किये हैं । ब्रह्मा, इन्द्र, महादेव, आदित्य, रुद्र, ऋषिवर, दिग्पाल,



विषै लीन हुवै । म्हैही पाळन हुवै छै । हे रिसि, तू म्हों नू वृद्धि जाणै न छै । बाळक कहै छै ।

तब मार्कण्डेय कहन लागो—हे महाराज थांरी उतपति हूं न जाणू । थांरी विभूति कर्णा करि सुनी छै । तत् कारणात्, हे सुरोत्तम थांहरी किरपा सूं थांहरी हूं स्तोत्र वाचन करीस, सूत जी शौनकादिकां प्रति कहै छै । इयै भांत सूं मार्कण्डेय कहतां थकांहीज सारां लोकां रै सुख का वहणहार भगवान मुख प्रसार उवासी मात्र मुनि नू मुख मांहि प्रासन कियो । मुख मांहि प्रविष्ट थको रिसि नै उदर मांहि दौडतै थकै नै बरस एक सौ पांच व्यतीत हुवा । तिकौ रिसि धर्मात्मा बाळक रै उदर मांहि बैठ रह्यौ । तथा उपरांत निराश हुवो थको स्तुति करण लागो । तब रिसि स्तुति करै छै—तू सारां भूत-मात्र प्राणियां रौ माता छौ ।

लोकपाल, गंधर्व, नाग, राक्षस, पिशाच, राजा लोग, पर्वत, विद्याधर, ग्रह, पाताल, पृथ्वी, भूतादि, चतुर्दश लोक, नक्षत्र, जोग, राशि, तारा, जलराशि, वात, अग्नि । और भी जड़-चेतन यह सब मुझ से ही उत्पन्न हुए हैं । मेरे ही में लीन होते हैं । मेरे द्वारा पालन किये जाते हैं । हे ऋषि—तुम मेरी वृद्धि जानते नहीं हो । (अतः मुझे) बालक कहता है ।

तब मार्कण्डेय कहने लगा—हे महाराज, मैं आपकी उत्पत्ति के विषय में नहीं जानता । आपकी महिमा कानों से सुनी है । इस कारण हे देवादिवेद ! मैं आपके स्तोत्र आपकी कृपा से करूंगा, सूत जी शौनकादि के प्रति कहते हैं—

इस प्रकार मार्कण्डेय के कहने पर भगवान ने मुँह फैलाकर, उवासी मात्र से ही मुनि को अपने मुँह में रख लिया । मुख में प्रविष्ट होते हुए ऋषि को ( भगवान के ) पेट में भागते-तड़ते १२५ वर्ष व्यतीत

तून्हीज पिता छौ । गुरु रूप तून्हीज छै । जी वेदादिकारै उद्धार रो करण द्वार येहीज छौ । जी थांहरै उदर विषै प्रविष्ट हुवै थकै म्है उदर रौ पान पायो । एक सौ पांच बरस भ्रमकर थांहरै शरण आय प्राप्त भयौ । हे देव देवेश, हे शंख चक्र, गदाधारी, म्हों नूँ रख्या करौ । हे कमळा कांत प्रसन्न हुवो । हे मधुसूदन प्रसन्न हुवो । जगतां नाथ, हे गरुडध्वज, हे पुण्डरीकाक्ष, हे जलशायिन, थांहरी ताई नमस्कार हुवौ । थे देवतां, दैत्यां रा भर्ता छौ । मनुष्याणां का कथा नरक हुंता उद्धारण विषै थां हुंता परै और समर्थ कोई नहीं । तब भगवान कहै—हे ब्रह्मन् रिख, थारी स्तुति कर तैं ऊपरि हूं संतुष्ट हुवौ । तूं म्हैहुंता बर मांगि ! जो थारै मन भांति वांछित छै तिकौ मांगि ।

तब मार्कण्डेय कहै—हे देव, हे चतुर्भुज, जो थे म्हों ऊपरि तुष्ट छौ तो अशून्यशयनाम व्रत कहो । तिको व्रत व्रतां मांहि

होगये । वह ऋषि, धर्मात्मा बालक के पेट में बैठ गया । इसके उपरान्त निराश होता हुआ, भगवान की स्तुति करने लगा । तब ऋषि स्तुति करता है—तू सभी भूत-प्राणियों का, प्राणियों की माता है, तू ही पिता है । गुरु रूप में भी तुम्हीं हो । वेद आदि के उद्धार के आपही करने वाले हैं । आपके उदर में (पेट में) प्रविष्ट होकर मैंने आपके उदर से ही पान किया है ।

एक सौ पांच वर्ष धूम-भटककर आपकी शरण आकर प्राप्त हुआ है । देवदेवेश, हे शंख, चक्र, गदाधारी मेरी रक्षा करें । हे लक्ष्मीपति ( आप ) प्रसन्न होवें । हे मधुसूदन, आप प्रसन्न होवें । हे जगत के नाथ, हे गरुड-ध्वज, हे पुण्डरीकाक्ष, हे जल-शायन, मैं आपके प्रति नमस्कार करता हूँ । आप, देवता और राक्षसों के भर्ता हैं । मनुष्यों को नरक-लोक से उद्धार करने में आपके होते दूसरा कोई भी सामर्थ्यवान नहीं है ।

उत्तम छै जी । तिकै व्रत कीयां शयन कहावै । शय्या तिका शून्य न हुवै । अर्थात् सौभाग्य धणौ हुवै, तिको कहो । तद् श्री भगवान कहै, रिखि ओ व्रत किहीं ना म्हेँ कछो न छै । न संसार में विख्यात छै—तिकौ तनूँ कहूँ छूँ । तूँ एकाग्रमन सूँ श्रवण कर । संखरा श्रेष्ठ दिनां मांहे आरंभ करै । प्रथम श्रावण वदि द्वितीया सूँ मास चार व्रत करै । चंद्रमा उदय हुवै बीज में तिका द्वितीया करै । प्रातःकाल नित्य नैमित्तिक करि दिन रो व्रत करणौ ।

पश्चात् चंद्रमा उदय हुंता पैहली गोमयरी चोको दे तिण ऊपर अष्टदल चावळा रौ करि तिकै ऊपरि पात्र एक पूर्ण तांवै रौ तिकै मांदि मूर्ति श्री लखमीनाथ जी री स्थापति करणी । पात्र

तब भगवान कहते हैं—हे ब्रह्मन् ऋषि ! मैं तुम पर स्तुति करने के कारण बड़ा ही संतुष्ट हुआ । तुम मुझ से वर मांगो, जो तुम्हारी मन की इच्छा हो, वही मांगो ।

तब मार्कण्डेय ने कहा—हे देव, हे चतुर्भुज, यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं, तो मुझे आप 'अशून्य-शयन' व्रत का वर्णन कहें । यह व्रत सभी व्रतों में उत्तम है । जिस व्रत के करने से शयन कहता है—(व्यक्ति) उसकी शय्या कभी धूनी नहीं होती । अर्थात् उसका बड़ा सौभाग्य रहता है, वही कहें । तब भगवान् कहते हैं—यह व्रत मैंने किसी से भी कहा नहीं है । संसार में भी यह विख्यात नहीं है, वह मैं तुम्हें कहता हूँ । तुम इसे एक-चित्त होकर सुनना । अच्छे शुभ दिनों में इसे प्रारम्भ करना । पहले श्रावण की कृष्ण पक्ष की द्वितीया से चार महीनों तक व्रत करना । जिस दूज को चन्द्रमा उदय हो, उसी द्वितीया को करना । प्रातःकाल हमेशा के दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर दिन में व्रत करना (चाहिए) । फिर चन्द्रमा के उदय होने पर पहले गाय के गोबर का



मांहि जळ राखणौ । जळ मांहि पधरावणी विधि संजुगत प्रतिष्ठा कीजै । पछै केशर सूं पूजै । पछै भक्ति सूं पूजा करि विज्ञप्त घणी कीजै । हे देव, अशून्यशन देहि पुत्र, दार, धन-धान्य करि पूर्ण । पछै अगर, कपूर, चंदन, सुगंध लेपन ग्रहण करणौ । जायरा फूल, शत पत्र, कमळ, माळति मृङ्गराजक, तुळसी रा पत्र, बीजा ही उत्तम फूल समर्पण कीजै । धूप-दीप, नैवेद्य, मुखवास समर्पण कीजै । फळां विशेष पूजा कीजै । फळ च्यारां द्वितीयां नूँ नवानवा फळ समर्पण कीजै । तिकै सूं फळ द्वितीया कहै, जै नाम अशून्य शयन व्रत रौ छै । पछै दक्षिणां, तांबूल, आचमन समर्पजै । पछै अर्घ्य कीजै । एकै पात्र मांहि जळ, गंध, फूल, सौपारी, अख्यत ग्रहण कर ओ पढ़ीजै—हे कृष्ण हृषीकेश, हे देव-जगतरा पिता, थे लखमी सहित म्हैं दियौ तिकौ अर्घ्य थे

चौका देकर उस पर चावलों द्वारा अष्ट-दल बनाकर, उस पर तबि का पात्र धरना चाहिए । उसके अन्दर श्री लक्ष्मीनाथ जी की मूर्ति स्थापित करनी चाहिए । (उसे) पात्र में रखना चाहिए । जल में युक्ति सहित उसे पधरानी चाहिए । फिर केशर से पूजा करना । फिर भक्ति सहित पूजा कर, बहुत-सी बिनती करनी । हे देव, हे अशून्यशन, आप हमें पुत्र, स्त्री, धनधान्यसे पूर्ण करें—फिर अगर, कपूर, चंदन, सुगन्ध, लेपन आदि करना । जायके फूल, शत पत्र, कमल, मालती भृङ्गराज तुलसी पत्र, और भी प्रकार के उत्तम फूल ( भगवान को ) समर्पण करना । धूप, दीप, नैवेद्य, मुख-वास आदि समर्पण करना चाहिए । चारों ही द्वितीयाओं को नये-नये फल समर्पण करने ( चाहिए )—इसी कारण फल द्वितीया यह कहलाती है—नाम इसका 'अशून्य-शयन' का है । फिर दक्षिणा, पान-आचमन समर्पण करना चाहिए । फिर अर्घ्य देना चाहिए । एक वर्तन में जल, गंध, फूल, सुपारी, अख्यत लेकर यह ( इस प्रकार ) पढ़ना चाहिए—हे कृष्ण हृषीकेश, हे देव, जगत के पिता, आप, मैंने जो

ग्रहण करौ । इतरी प्रार्थना करि, भगवान् रै आगै समर्पये । पछै चंद्रमा री पूजा करि चन्द्रमा नूँ अर्घ्य दान करै । क्षीर सागर विषै उत्पन्न हुवो, अत्रि गोत्र विषै जनम, हे शशांक तूँ रोहिणी सहित अर्घ्य रौ ग्रहण करि । इयै भांत मास रै विषै करणो । कार्तिक विषै उद्यापन करै विधिकर संयुक्त ।

तब मार्कण्डेय कहै—हे भगवान्, व्रत रै दिन भोजन कासूँ कीजै, त्यागजै कासूँ, दान क्या दीजै ? उद्यापन ( किसी व्रत की समाप्ति पर किया जाने वाला कृत्य हवन, ब्राह्मण भोजन आदि ) किसी भाँति कीजै । फल कासूँ हुवै, तिकौ निश्चय करि कहवौ । तब श्री भगवान् कहै—हे रिष, हविस्त्र्यान्न ( सास्वत भोग ) भोजन करै, घृत, गुर, शर्करा संयुक्त । दधि, छाछ वर्ज्यो, गेहूँ,

अर्घ्य समर्पण किया है—उसे स्वीकार करें । इतनी प्रार्थना करके भगवान् के आगे इन्हें समर्पण कर दे । फिर चन्द्रमा की पूजाकर चन्द्रमा को अर्घ्य दान दे । क्षीरसागर में उत्पन्न हुए, अत्रि गोत्र में जन्म है ( जिसका ) ऐसे हे शशांक—आप रोहिणी सहित अर्घ्य को ग्रहण करें । इस प्रकार महीने के भीतर करना । कार्तिक के महीने में विधि—सहित उद्यापन करना ।

तब मार्कण्डेय कहते हैं—व्रत के दिन भोजन किस से करना चाहिए ? त्यागना क्या चाहिए ? दान में क्या देना चाहिए ? किस प्रकार उद्यापन करना चाहिए ? फल की प्राप्ति किस से हो, वही निश्चय पूर्वक कहें । तब श्री भगवान् कहते हैं—हे ऋषि, सात्विक भोजन करे घृत, गुड़, शक्कर युक्त । दही और छाछ निषेध—गेहूँ और जव खाने चाहिए । इसमें से आधा ब्राह्मण को देना, आधा भाग स्वयं खाना चाहिए । व्रत के दिन, काम, क्रोध, मद और मोह का त्याग करना चाहिए । कथा को सुनना—इस प्रकार व्रतकर चौथे वर्ष अथवा सोलहें वर्ष

जब खावणा । आधो ब्राह्मण नूं देणौ । आधो आप खाणौ ।  
व्रत रै दिन काम, क्रोध, लोभ, मोह रौ त्याग करणौ ।

कथा रौ श्रवण करणौ । ईयै भाँत सूं व्रत कर चौथे वरस  
अथवा सौठे वरसै उद्यापन करणौ । उद्यापन बिना व्रत रौ पूर्ण  
नाहीं तिके सूं अवश्य उद्यापन करणौ । ब्राह्मण री आज्ञा लेकरि  
शास्त्रोक्त विधि सूं करणौ । होम करणौ । ब्राह्मण री छ्हांरी वरणी  
अथवा असमर्थे च्यारां री । गोदान, वस्त्र स्त्री पुरुष रा, आभूषण  
स्त्री पुरुष रा, ब्राह्मण नूं दैवै । शय्या दान, सीरख पथरणा उसीसा  
सारी उपस्कर सामग्री संयुक्त सप्तनोक सहित ब्राह्मण नूं । ब्राह्मण  
सौठे भोजन खीर खांड सूं दख्यणा सहित, एका आपरी शक्ति  
सारु सुवर्ण रौ कव्वाश दूध भर, मांदि सुवर्ण घाति, सावट्ट वस्त्र

उद्यापन करना चाहिए । उद्यापन बिना व्रत सम्पूर्ण नहीं होता ।  
इसलिए उद्यापन तो अवश्य ही करना चाहिए । ब्राह्मण की आज्ञा लेकर  
शास्त्र की विधि से करना चाहिए । होम करना चाहिए । छः ब्राह्मणों  
को वरणी बैठाना ( माला फेरने के लिए बैठाना ) यदि असमर्थ हो  
तो फिर चारों को बैठाना । गोदान, वस्त्र-स्त्री पुरुष के, आभूषण-स्त्री  
पुरुष के, ब्राह्मण को देने चाहिए । शय्या दान, रजाई, बिछोना, छोटा  
तकिया, अपनी शक्ति अनुसार सप्तलीक ब्राह्मण को देना चाहिए ।  
ब्राह्मण को सोलह प्रकार के भोजन, खीर-खाण्ड सहित करवाना चाहिए  
उसे दक्षिणा देनी चाहिए । अपनी शक्ति अनुसार एक सोने का पात्र  
दूध भर कर उसमें सोना डालकर, ऊपर से पीले-रेडमी कपड़े से उसे  
लपेटकर, ब्राह्मण को देना चाहिए । ऐसा ब्राह्मण जो वैष्णव हो,  
कुटुम्बी हो, स्त्री हीन न हो, तपस्या का करने वाला हो, योग्य हो,  
विद्यावान हो, ऐसे ब्राह्मण को देना चाहिए । यदि सोने का पात्र  
बनवाने की शक्ति न हो तो, तबि अथवा मिट्टी का पात्र बनवाना



सूं बींटी ब्राह्मण कोई वैष्णव हुवै, कुटुंबी हुवै, स्त्री हीन न हुवै, तपस्या रौ करण हार हुवै, पात्र हुवै, विद्या पात्र हुवै, तिकै नूं देणौ । सुवर्ण री शक्ति न हुवै तो तांबै रौ अथवा माटी रौ पण करणौ । पछै आप भोजन करै—मन प्रसन्न सूं च्यार वरस व्रत कर ईयै भाँति सूं उद्यापन करै ।

श्री कृष्ण कहै—हे युधिष्ठिर, जिकै ईयै भाँति करि, उद्यापन करै, तिनकै रै फल री प्राप्ति हुवै । तिकौ सुणै, सूर्य ग्रहण विषै कुरुक्षेत्र माँहि जाइ पितृ-तर्पण करै, तिकै नूं कोई पुण्य हुवै, तिकौ पुण्य री प्राप्ति हुवै । तिकौ गया जाय पितृश्राद्ध करै, गिलिका विषै जाय स्नान करै, तिकै फल रौ भोगणहार हुवै । मथुरा मंडल विषै पंच भीषम माँहि जाई, भगवान रै आगै जागरण

चाहिए । इसके बाद फिर स्वयं भोजन करे । प्रसन्नचित्त होकर चार वर्ष तक इसी प्रकार से व्रत करे और इसी प्रकार से उद्यापन करता रहे ।

श्री कृष्ण कहते हैं—हे युधिष्ठिर, जो व्यक्ति इस प्रकार करता है, उसे फल की प्राप्ति होती है । जो (व्यक्ति) इसे सुने उसे सूर्य ग्रहण के समय कुरुक्षेत्र में जाकर पितृ-तर्पण करने का जो पुण्य लाभ होता है, उसी पुण्य की प्राप्ति हो । जो व्यक्ति गया जाकर पितृ-श्राद्ध करता है, गिलिका में जाकर स्नान करता है, उसी ही पुण्य के फल को भोगने वाला हो । मथुरा-मंडल में जाकर पंचभीषम जाकर जो व्यक्ति भगवान के आगे जागरण करता है, वैसे ही फल की प्राप्ति इसके करने से हो । मथुरा में प्रबोधिनी का जागरण करने से, नेमिषारण्य में, गंगा-सागर समुद्र में, गंगा में, हरिद्वार में, सिन्धु के पञ्चनद में, गोदावरी नदी में, वृहस्पति सिंह राशि में हो तब, बदरीका आश्रम में, केदारनाथ में इन स्थानों में जाकर कोई स्वर्ण-दान करता है अथवा पृथ्वी दान करता है,

करै तिकै रो फल हुवै, तिकौ फल भोगवै । मथुरा विषै प्रबोधनी  
 रै जागरण कीयां नैमिषारण्य विषै, गंगा सागर समुद्र विषै, गंगा  
 द्वार हरि विषै, सिंधु पंचतद विषै, गोदावरी विषै, बृहस्पति सिंघ  
 राशि विषै हुवै, बदरिका श्रम विषै, केदार नाथ विषै, इहां स्थानां  
 विषै जाई कोई सुवर्ण री, पृथ्वी दान करै तिकै नू' पुण्य हुवै, तिकै  
 फल रौ भोगणहार हुवै; जलशायी भगवान पूजियां तिकौ फल पावै ।  
 जिकौ विधान करि करै, ओ व्रतां मांहि उत्तम तिकौ यमलोक न देखै ।  
 भली गति नू' प्राप्त हुवै, निश्चय सू' । ब्राह्मण करै तो ज्ञान पावै ।  
 राजा करै तो जय पावै । स्त्रियां करै तो सात जनमांतर रै विषै  
 दुर्भाग न पावै । धन-धान्य, पुत्र-पौत्र घणौ पावै । भायां रौ,  
 भरतार रौ सुख पावै, ईयै व्रत कियै । और ही मनोवांछित फल  
 पावै । सूत जी, शौनकादिका नू' कही । मार्कंडेय रिखि नू' व्रत  
 भगवान कह्यौ । तापछै संसार मांहि विख्यात हुवौ । शौनकादिक

उसे जो पुण्य होता है, उसी प्रकार के फल का भोगने वाला (इस प्रकार  
 के व्रत को करने वाला) हो, 'जल-शयन' भगवान के पूजन करने पर  
 उसे फल मिले । जो व्यक्ति विधि-विधान से यह व्रतों में जो उत्तम  
 व्रत है उसे करता है—वह यमलोक को नहीं जाता । यदि ब्राह्मण इसे  
 करता है, वह ज्ञान-लाभ करता है । राजा करे तो उसे विजय-लाभ  
 होती है । स्त्रियां करती हैं तो वे सात जन्म-जन्मान्तर तक दुर्भागन  
 (विधवा) नहीं होती और धन-धान्य तथा बहुत से पुत्र-पौत्र वाली  
 होती हैं । उन्हें भाइयों, भर्तार का सुख मिलता है, इस व्रत को करने  
 पर और भी बहुत से मनोवांछित फल को पाती हैं—सूतजी ने  
 शौनकादिक को ऐसा कहा । मार्कंडेय ऋषि को भगवान ने यह व्रत  
 कहा । इसके उपरांत संसार में यह विख्यात हुआ । शौनकादिक भी यह  
 सुनकर अपने आश्रम को गये । राजा युधिष्ठिर ने भी भगवान श्रीकृष्ण  
 के मुँह से इसका महात्म्य सुनकर पाँचों भाइयों और द्रोपदी के साथ

पण सुनिकर आपणै आश्रम गया । राजा युधिष्ठिर श्री कृष्ण रै  
 मुखहंता महात्मय सुणि पांचां भायां द्रौपदी सहित व्रत अशून्य-  
 शयन कियौ, तिकै वनवास रै विषै तिकै व्रत रै प्रताप वन रौ  
 संताप दूरि करि । आपरा बैरी जाय करि निकंटक राज्य पायौ ।  
 श्री कृष्ण री कृपा सूं व्रत रै पुण्य सूं ।

इति श्री फल द्वितिया कथा सम्पूर्ण ।

---

इस 'अशून्य-शयन' व्रत को किया, जिससे वनवास काल में इसी व्रत  
 के प्रताप से ( प्रभाव से ) उनका संताप दूर रहता रहा, अपने शत्रुओं  
 को विजय कर, निकंटक राज्य को प्राप्त किया—श्री कृष्ण की कृपा से  
 एवं इसी व्रत के पुण्य के कारण ।

इति श्री फल द्वितिया कथा सम्पूर्ण ।



## १२—बुधाष्टमी कथा

श्री गणेशायनमः । अथ बुधाष्टमी कथा लिख्यते । युधिष्ठिर उवाच—हे कृष्ण, मैं थाकनै अनेक व्रत सुणीया छै । हिमै बुधाष्टमी रौ व्रत सुणीया चाहू छुं—थे प्रसन्न हुइ कहौ । श्री भगवानुवाच—बुधाष्टमी रै दिन नदी जाइ स्नान करि, आपणौ पटकर्म करै । तठा पछै आपरै घरै आइ चौको देकरि, चउरस मांडलो करि, इण विधान सुं व्रत करै, तिका विधि कहै छै । अष्टदल कमल अक्ष तां सुं चौकै ऊपर मांडीजै । बिचालै कुंभ थापीजै । पीछै वस्त्र सुं बींटीजै । मांहि नीळ पान घातीजै, ऊपर चंदन सु चरचीजै । मासै एक सुवर्ण री अथवा आध मासै सोनै री बुध री प्रतिमा करीनै इण विधि सुं पूजीजै । हे युधिष्ठिर इण मंत्र सुं बुधरौ आवाहन कीजै ।

## कथा बुधाष्टमी की

युधिष्ठिर ने कहा—हे कृष्ण मैंने आपसे कई व्रत ( व्रत कथाएँ ) सुने हैं । अब मैं बुधाष्टमी का व्रत सुनना चाहता हूँ—आप प्रसन्न होकर कहें । श्री भगवान् बोले—बुधाष्टमी के दिन नदी पर जाकर स्नान करके अपने पट-कर्म करना । उसके बाद अपने घर आकर, चौका देकर, चौकोर माण्डना मांडकर, इस विधि से व्रत करना—जो विधि कह रहा हूँ । अष्टदल, कमल, अक्षत आदि से चौके पर माण्डना मांडना । उसके बीच में घड़ा स्थापन करना । उसे (उस घड़े को) पीले वस्त्र से लपेटना । उसके भीतर नीले पत्ते डालना, ऊपर चन्दन के छीटे डालना । एक माशा अथवा आधे मासे की सोने की बुध की मूर्ति बनाकर इस विधि से पूजा करना । हे युधिष्ठिर इस मंत्र से अभिसित करना ।

बुधः सौम्यस्तार केशो राजपुत्र इलापतिः ।

कुमारो राजमानश्चयः पुरुरवसः चिता ।

उर्वस्याः श्वशुरोयश्च स बुधोनः प्रसीद तु ॥१॥

इण मंत्र सुं आवाहन कीजै, पछै इण मंत्र सुं अष्टांग पूजीजै—  
नमो बुधाय चरणौ १ सोम पुत्राय जानुनी २ तारेशाय कटि  
पूज्य ३ राज पुत्राय भूदरं ॥४॥ बाहू पुरुरवः पित्रे ५ उर्वस्याः  
श्वशुराय च मुखं सं पुजयेद्भक्त्या ॥६॥ ग्रहाय नयन द्वयं ७  
बोधनायेति मूर्धानं ८ मष्टांगे त्वर्चयेद्बुधं ॥१॥

इसी भांति बुध देवतारी पूजा करि पछै वेदरौ जाण इसे  
ब्राह्मण नै दक्षिणा देकरि अक्षत वस्त्र समेत ब्राह्मण नै समर्पण  
कीजै । इण मंत्र सुं विसर्जन कीजै ।

बुधः सौम्यस्तार केशो राजपुत्र इलापतिः ।

कुमारो राजमानश्चयः पुरुरवसः चिता ।

उर्वस्याश्च श्वशुरोयश्च स बुधोनः प्रसीदतु ॥१॥

इस मंत्र से आह्वान करना फिर इस मंत्र से आठों अंगों सहित  
पूजा करना—

नमो बुधाय चरणौ ॥१॥ सोम पुत्राय जानुनी ॥ २ ॥

तारेशाय कटि पूज्य ॥३॥ राज पुत्राय भूदरं ॥४॥

बाहू पुरुरवः पित्रे ५ उर्वस्याः श्वशुराय च मुखं सं पूजयेद्भक्त्या ॥६॥

ग्रहाय नयन द्वयं ७ बोधनायेति, मूर्धानं ८ मष्टांगे लचयेद्बुधं ॥१॥

इस प्रकार बुध भगवान की पूजा करने के उपरान्त वेदों के जानने वाले  
ब्राह्मण को दक्षिणा देकर उसे अक्षत और वस्त्र समर्पित करना चाहिए—

बुधीयं प्रति गृह्णाति, द्रव्यं स्थोपि बुधः स्वयं ।

दीयते च बुधे नैव, प्रीयतां मे बुधो ग्रहः ॥१॥

बुधोयं प्रति गृह्णाति, द्रव्यं स्थोपि बुधः स्वयं ।  
 दीयते च बुधेनैव, प्रीयतांमे बुधोऽग्रहः ॥ १ ॥  
 दुर्बुद्धिं दुरितं दुःखं नाशयित्वा बुधो मम ।  
 सौख्यं पुत्रान्सौ मनस्यं करो तु शशिनदवः ॥ २ ॥

जिण मास में चांदणै पक्ष बुधवार हुवै, तिण दिन ओ व्रत कीजै । युधिष्ठिर उवाच—हे कृष्ण, इण व्रत रौ महातम मोनै प्रसन्न हुई विस्तार सौ कहौ । श्री कृष्ण उवाच—सुणि युधिष्ठिर बुधाष्टमी व्रत रौ महातम हुं कहुं छुं । जिण व्रत सुं मनुष्य नरक कदेही देखै नहीं । इण व्रत रौ इतिहास कहुं छुं । पूर्वे कृत युग मांहे इलापति नामें राजा हुतौ । घण चाकर मित्र-मंत्री समेत हिमाचल पर्वत समोपै एकदा समें आय नीकल्यौ । उठै महादेव जी री आग्या छै, जिकौ पुरुष उण वन में आवै, तिकौ इस्त्री हुइ जावै ।

दुर्बुद्धिं दुरितं दुःखं, नाशयित्वा बुधो मम ।  
 सौख्यं पुत्रान्सौ मनस्यं, करोतु शशिनदनः ॥२॥

जिस महीने में शुक्लपक्ष हो और बुधवार हो, उस दिन इसप्रकार का व्रत करना चाहिए । युधिष्ठिर बोला—हे कृष्ण, इस व्रत का महात्म्य सुनकर मुझे प्रसन्नता हुई, इसे विस्तार से कहें । श्री कृष्ण ने कहा—हे युधिष्ठिर सुनो, मैं बुधाष्टमी का व्रत कहता हूँ, जिससे मनुष्य कभी भी नर्क की यातनाएँ नहीं भोग सकता । इस व्रत का इतिहास कहता हूँ ।

पहिले युग में इलापति नामक एक राजा हुआ । बहुत से नीकरो व मित्रों और मंत्रियों के साथ वह एक दफा हिमालय पर्वत के पास आकर ठहरा । वहाँ महादेव जी की आज्ञा थी कि जो पुरुष उस वन में आ जाय, वह स्त्री बन जाय । इस बीच में राजा हिरणी की शिकार के लिए घोड़े पर बैठा उस वन में आ घुसा । घुसने के साथ ही ( जैसे



तिण प्रस्ताव राजा मृगरी सिकार रै वास्तै उवा वन में एका की छोड़ै चढोयो वन में पैठौ । पैठन समान अस्त्री रूप हुइ गयौ । हिमें तिका स्त्री वन में भ्रमण करै, सु युं न जाणै हुं कुण छुं, कठै आई, दिसा भूली हुइ गई । उण समै बुध देवता उवा इस्त्री दीठी, महा रूपवंत अनेक गुण युक्त देखि नैं प्रसन्न हुवौ । अष्टमी बुधवार रै दिन तुष्टमान हुइ नैं उण स्त्री सुं गृहवास कीयौ । कितरेक दिन उण इस्त्री रै पुत्र हूवौ, जिण रौ नाम पुरुरवा दीयौ । चंद्रवंश रौ करणहार, सगळं ही राजा मांदै मुख्य हुवौ । तिण दिन सुं आ बुधाष्टमी पूज्य हुई-सर्व मनोवांछित री पूरणहार, सर्व पाप री हरणहार छै । हिमै श्री कृष्ण बुधाष्टमी रौ इतिहास कहै छै । मिथिला नाम नगरी में निमि नामैं राजा हुआ, तिकौ राजा संग्राम में बलवंत बैरीयै हण्यौ, राज्य छै सौ शत्रवै लीयौ ।

ही वह यहाँ बैठा ) वह स्त्री रूप बन गया । अब वह स्त्री वन में घूमने लगी, उसे यह ज्ञात नहीं, मैं कौन हूँ ? कहाँ आ गई ? दिशा भूली हुई वह आगे को बढ़ी । उस समय बुध देवता ने उस स्त्री को देखा । बढ़ी रूप वाली ( अति सुन्दर ) और अनेकों गुणों से युक्त, उसे देखकर उसपर प्रसन्न हुए । अष्टमी को बुधवार के दिन उस पर तुष्टमान ( प्रसन्न होकर ) उस स्त्री से संभोग किया ।

कुछ दिनों के उपरान्त उस स्त्री के लड़का हुआ, जिसका नाम पुरुरवा रखा गया । वह चन्द्रवंश का प्रकाशन स्थापन करने वाला ? वह सभी राजाओं में प्रधान रहा । उस दिन से यह बुधाष्टमी पूजनीय मानी गई । यह सब प्रकार की मन की इच्छाओं को पूर्ण करने वाली है, सब पापों को हरने वाली है ।

अब श्री कृष्ण बुधाष्टमी का इतिहास कहते हैं । मिथिला नाम नगरी में निमि नाम का राजा हुआ, उस राजा को युद्ध में बलवान

तिणरी अस्त्री दरिद्रणी उर्मिला नामें दोय बाळक समेत पृथ्वी रै विषै भ्रमण करै छै । उजेणी नगरी मांहे ब्राह्मण रै घरै आई । उर्मिला पेट भराई निमित्त ब्राह्मण रै घरै पीसणो खांडणो करै छै । एकै समीयै सात ७ गोहूँ चौरिनैं दोऊं बाळकां नै भूखा जाणि दीया । इयै भांति आपरी नै दोऊं बाळकां रो भरण-पोषण करती कितरैक दिने उर्मिला परोक्ष हुई । उणरा पुत्र मिथिला नगरी जाइनैं आपरै पिता रौ राज्य लीयौ । पुण्य योग सुं भली तरै राज पाळै छै । आपरी बहिन थी-सो धर्मराज नै परणाई । धर्मराज एकै समीयै आपरी अस्त्री नुं कहण लागौ-अस्त्री रूप मै श्याम थी । हे श्यामे ! तूं म्हारा घर मै चाकरां नै दान-मान कीया कर । भली भांति रखा कर । बळे तूं सुणि-साहरा घर मांहे सात विवर छै । सात ७ ताळा जड्या छै, तिकै तूं

---

बेरियों ने हराया, उसका जो राज्य था वह शत्रुओं ने ले लिया । उसकी स्त्री दरिद्रणी ( भिक्षारिण ) उर्मिला नाम की अपने दोनों लड़कों सहित पृथ्वी पर भ्रमण करती है । वह नगरी में एक ब्राह्मण के घर में आ गई । उर्मिला अपना पेट भरने के लिए ( गुजारे के लिए ) ब्राह्मण के यहाँ पीसना आदि ( कार्य ) करती है । एक समय अपने दोनों बालकों को भूखे समझ कर उसने सात गेहूँ ( गेहूँ संह्या में सात ) उन्हें खाने को दिए । इस प्रकार अपना और अपने बालकों का पालन-पोषण करती हुई कुछ दिनों के बाद उर्मिला इस संसार से चल बसी । उसके पुत्रों ने मिथिला नगरी में जाकर अपने पिता का राज्य संभाला ।

अच्छे पुण्य के कारण अच्छी प्रकार से राज्य करता है । अपनी बहन थी वह उसने धर्मराज को विवाह दी । धर्मराज, एक समय अपनी स्त्री से कहने लगे-स्त्री रंग रूप की श्याम वर्ण की थी । हे श्यामे ! तू मेरे घर में नौकरों को दान-पुण्य खूब दिया कर । बड़ी अच्छी प्रकार

उघाड़ै मत । तद अस्त्री बोली—भलां स्वामी, कोई उघाड़ुं नहीं । एकदा समै धर्मराज कीणही कार्य लागौ, तद एक विवर अस्त्री उघाड़्यौ । मांहे आपरी माता दीठी । यम किकर मारै छै । आक्रंद करै छै— तातै तेल में पचावै छै । श्यामला माता नै इसी अवस्था देखि नै चितातुर हुई । वळै एकै समीयें बीजो ताळो उघाड़्यौ । आगै देखै तौ उण मांहे पिण आपरी माता नै पथर सौं, शिला सौं यम किकर ताड़ै छै । वळै तीजो ही विवर उघाड़्यौ । आगै देखै तौ आपरी मांनै करवत सौं माथौ विदारै छै । कोरडां मारै छै । वळै चौथो विवर उघाड़्यौ, उठै यमदूत कुतै रौ रूप करि माता रा पग काटै छै, आक्रंद करै छै । युं पांचमो विवर उघाड़्यौ । आगै देखै तौ माता रै गळै ऊपरा पग देनै मुदगरां सुं कूटै छै । वळै छठो ही विवर उघाड़्यौ आगै

से रहा कर । और सुनो, मेरे घर में सात कोठे हैं । और सात ही ताले लगे हैं, उन्हें तुम खोलना मत । तब स्त्री ने कहा—अच्छी बात, मैं उन्हें नहीं खोलूंगी ।

एकदफा, धर्मराज किसी काम में लग गया, तब स्त्री ने—एक कोठार खोला । उसमें उसने अपनी माता को देखी । यमराज के नौकर उसे मारते हैं । वह बड़ी दुखी होकर चिल्लाती है । उसे गर्म तेल में पकाते हैं । श्यामला ने माता को ऐसी हालत में देखी, तो वह बड़ी ही दुःखी हुई । फिर एकवार दूसरा ताला खोला । उसमें भी उसकी माता को यमराज के नौकर ( दूत ) पत्थर और शिलाओं से उसे मारते हैं । फिर तीसरा कोठा खोला, उसने आगे देखा, उसकी माता का सिर आगे से ( करोती से ) काट रहे हैं । फिर चौथा कोठार खोला, उसमें यमदूत कुत्ती का रूप बनाए, उसकी माता का पाँव काटता है, ( वह ) चिल्ला रही है । इस प्रकार पाँचवां कोठार खोला । वहाँ उसने



देखै तौ माता नै तिल पीलीजै त्यों पील रखा छै । बळै सातमो  
 ही विवर उघाडियौ । आगै देखै तौ माता लोही राघ में भीनी  
 लटां किला विलाट करै छै । युं देखि नै, श्यामला घणुं दुःखित  
 हुई । एक दा समै यमराज नुं श्यामला पूछण लागी—स्वामी,  
 इण किसा पाप कीया, जिण सुं आ म्हारी माता सातां ही विवरां  
 में घणुं पीडोजै छै । तद यम बोल्यौ कोप करिनै—हे प्रिये ! तैं  
 साते विवर क्युं उघाड्या; मैं तोनै पहिली वरजी थी नहीं । थारी  
 माता पुत्र रा स्नेह सौं गोहूं चोर नै दीया था, सो तूं न जाणै ।  
 तैं ब्राह्मस्व खायौ थकौ सात कुळ बालै तिणहीज कर्म सौं या  
 नरक री स्थिति देखि । गोहूं था तिकै कृमि हुइ दुख देवै । थारी  
 माता कीया कर्म भोगवै छै । आ बात सुणि नै श्यामला बोली—  
 महाराज, थांहरै कहणसुं हुं सर्व जाणुं छुं जिकुं माहरी माता

देखा—उसकी मां के गले के ऊपर पैर रखकर उसे ( यमदूत ) मुगदर  
 से कूट रहे हैं । फिर छठा कोठार खोला, देखा तो माता को जिस  
 प्रकार तिलों को पेले जाते हैं ( तिलों का तेल निकाला जाता है )  
 उसी प्रकार पेल रहे हैं । फिर सातवां कोठार खोला—देखा तो मां के  
 सामने लहु में सिजोई हुई लटें ( कीड़े मकोड़े ) किलबिलाहट कर  
 रही हैं । ऐसा देखकर श्यामा बड़ी ही दुःखी हुई ।

एक समय श्यामा यमराज से पूछने लगी—इसने ऐसे कौन से पाप  
 किए, जिससे मेरी यह माता सातों ही कोठारों में बड़े कष्ट पा रही है ।  
 तब यम क्रोध करके बोला—हे प्रिये ! तुमने सातों कोठार खोल दिये !  
 मैंने तुम्हें पहिले ही इन्कार किया था । तेरी माता ने पुत्र-स्नेहवश  
 गेहूं चोर कर ( पुत्रों को ) दिए थे—वह तुम्हें मालूम नहीं है । ब्राह्मण  
 का अन्न खाने से सात-कुल में दाग लगाती हुई उसी कर्म से इसने यह  
 नरक की स्थिति देखी है । गेहूं थे, वे कीड़े होकर दुःख दे रहे हैं ।

कीयो सो । तौ पिण हे भर्तार, म्हारी माता इण कृमि राशि सुं  
छूटै सो विधि करौ । इसौ सुणि धर्मराज विचारि नैं बोल्यौ आपरी  
सासू मोचन रै अर्थ श्यामला प्रियारी प्रार्थना सौ कहण लागौ ।  
हे प्रिये, तूं सुणि-इण जन्म सुं तूं सातमें जन्म तैं मालिनी  
सखी रै संग स्युं बुधाष्टमी रौ व्रत कीयौ थौ । महा फळदायी  
तिण व्रत रौ फळ थारी माता नैं देवै तौ थारी माता नरक सौं  
छूटै । इसौ सुणि श्यामला अंतावळी स्नान करि बुधाष्टमी रौ पुण्य  
वाचा दे करि माता नैं दीयौ, तिण सुं ऊर्मिला नरक सुं मुक्त हुई ।  
तत्काल दिव्य रूप धारि विमान में बइठी दिव्य वसतर पहिर  
स्वर्गि गई । भर्तार निमि राजा रै पास गई । अद्यापि बुध रै  
तारै कन्हें आकास मांहै देदीप्यमान दीसै छै—बुधाष्टमी रै  
प्रभाव सौं । इसौ सुणि श्रीकृष्णजीरा मुख सौं युधिष्ठिर कहै छै—

तुम्हारी माता अपने किए हुए कर्मों को भोग रही है । यह बात सुनकर  
श्यामा बोली महाराज, आपके कहने से मैं सब जान गई जो कार्य मेरी  
माता ने किये । तब हे प्रिय, प्राणप्यारे ! मेरी माता इन कीड़ों से  
छूटे ( किस प्रकार मुक्ति पासके ) वह विधि बतावें ।

ऐसा सुनकर धर्मराज विचार कर अपनी पत्नी की प्रार्थना पर  
सास के पाप के छुटकारे का उपाय कहने लगा । हे प्रिये, सुनो ! इस  
जन्म से सातवें जन्म में तुमने एक मालिनी सखी की संगति से बुधाष्टमी  
का व्रत किया था । ( उस ) महाफल-देने वाले व्रत का फल तुम यदि  
अपनी माता को दे दो तो वह नर्क से छूट जाय । ऐसा सुनकर श्यामला  
ने जल्दी से स्नान किया । बुधाष्टमी के पुण्य के फल का माता को वचन  
दिया, इससे ऊर्मिला नर्क से छूट गई । तत्काल वह दिव्य रूप धारण  
करके, विमान में बैठकर सुन्दर कपड़े पहिन कर स्वर्ग को चली गई ।  
वह अपने पति-राजा निमि के पास में आई । आज भी बुध के तारे के

आ बुधाष्टमी अतीव श्रेष्ठ है । हे कृष्ण, इण व्रत रौ विधान मोनै कहौ । श्री कृष्ण उवाच । हे युधिष्ठिर, तूं सुणि बुधाष्टमी व्रत रौ विधि । जिण दिन चांदणै परव आठिम बुधवार हुबै, तिण दिन ओ व्रत सर्व व्रतां में प्रधान लोजै । प्रभातै नदीरै विषै स्नान करि दांतण करि पूर्वोक्त विधि सौं बुधरी पूजा करि, गोधूम रै आटे सुं जुदो-जुदो नेवज करि ब्राह्मण नै पकवान करि भोजन दीजै । पहिली बुधाष्टमी मोदकां सुं करणी, दूसरी बुधाष्टमी फीणां सुं करणी । तीजी घेवरों सुं करणी । चौथी बडां सुं करणी । पांचमी मांडा सुं करणी । छठी सुंहाळीयां सुं करनी । सातमी मिश्री-घृत-युक्त सेवां री करणी । आठमी फळां सुं करणी । ऊपर दक्षिणा यथाशक्ति दैणी । इण अनुक्रम सौं बुधाष्टमी आठ करणी । संगळा भाई-भाई बंधु भेळा करि जीमावणा-उपाख्यान

पास आकाश में (वह) चमकती हुई दिखाई देती है बुधाष्टमी के प्रभाव से । ऐसा श्री कृष्ण के मुंह से सुनकर युधिष्ठिर जी कहते हैं—यह बुधाष्टमी बड़ी ही श्रेष्ठ है । हे कृष्ण इस व्रत का विधान आप मुझसे कहें । श्री कृष्ण बोले—हे युधिष्ठिर बुधाष्टमी के व्रत की विधि सुनो—जिसदिन शुक्लपक्ष आठम बुधवार हो, उस दिन इस व्रत को जो सब व्रतों में प्रधान है, करना चाहिए । सुबह नदी पर जा स्नान, दांतुन करना चाहिए । ऊपर बताई विधि से बुध की पूजा करने के बाद गेहूं के आटे से अलग-अलग नैवेद्य कर, पकवान बनाकर ब्राह्मण को भोजन देना चाहिए ।

पहली बुधाष्टमी लड्डूओं से करनी, दूसरी बुधाष्टमी फीणियों से करनी चाहिए । तीसरी बुधाष्टमी घेवरों से करनी । चौथी बडों से करनी चाहिए । पांचवीं मांडा से करनी चाहिए, छठी सुहालियों से करनी चाहिए, सातवीं मिश्री और घी से युक्त ( मिली हुई ) सेवां से



ओ ब्राह्मण रा मुख थी सांभलीजै । जितरै आ कथा न सुणीजै,  
 इतरै जीमीजै नहीं । बुधरी पूजा करि एकासणो करि आचमन करि  
 वेदरा जाणणहार पंडित ब्राह्मण नै अक्षत समेत कलश, अनेक प्रकार  
 रा फूल-फल, धूप-दीप करि पीछा वसतरां सौं नेवजां सुं पूजा  
 करि समर्पण करणौ । मासै एक सोनैरी अथवा अधमासै री  
 बुध री प्रतिमा करि पछै ब्राह्मण नै दीजै । जद व्रत पूर्ण हुवै तद  
 आठ ब्राह्मणां नै भोजन कराइ, आठ गाय आठ बछै समेत वस्त्र  
 अलंकार सौं सिणगार करि बहुत दूधरीदेवाळ नवी इसी आठ  
 गायों दैणौ । ब्राह्मण-ब्राह्मणी स-जोड़ै नै जीमाय वसतर अलंकार  
 पहिरावणी करि पछै इण मन्त्र सौं बुधरी मूर्ति समर्पण कीजै—

बुधोय प्रति गृह्णाति द्रव्यस्थोपि बुधः स्मृतः ।

दीयते बुध राजेन, तुष्ट्यतां च बुधो मम ॥

करनी चाहिए । आठवीं फलों से करनी चाहिए । साथ ही दक्षिणा—  
 यथा शक्ति अपनी सामर्थ्य के अनुसार देनी चाहिए । इस क्रम से  
 बुधाष्टमी आठ करनी चाहिए । तमाम भाई-बन्धुओं को इकट्ठे करके  
 उन्हें भोजन करवाना—ब्राह्मण के मुँह से कथा आदि सुननी.....  
 .....।

जब तक यह कथा नहीं सुनी जाय—तब तक भोजन नहीं करना  
 चाहिए । बुध की पूजा करके, उपवास खोलकर, उज्जाना करके, वेदों  
 के जाननेवाले को अक्षत-सहित कलश ( घोर ) अनेक-प्रकार के  
 फल-फल, धूप-दीप सहित पीछे-वस्त्र से विधिपूर्वक पूजा करके देना  
 चाहिए । मासा अथवा आधा-मासे की बुध की प्रतिमा ( मूर्ति )  
 ब्राह्मण को देना । जब व्रत समाप्त हो तो आठ-ब्राह्मणों को भोजन  
 करवाकर, आठ गायें आठ बछड़ों सहित वस्त्रालंकारों से शृङ्गार करवाकर  
 बहुत दूध देनेवाली ऐसी आठ गायें देनी चाहिए । ब्राह्मणी और

बुधः सौम्यस्तार केशो राजपुत्र इलापतिः ।  
 कुमारो ग्रहराजश्चयः पुरुरवस पिता ॥  
 दुर्बुद्धिं दुरितं दुःखं नाशयित्वा बुधोमम ।  
 सौख्यं श्रियं सौमनस्य करोतु शशिनन्दनः ॥१॥

इण विधि सुं जिकै बुधाष्टमी रौ व्रत करै, पुरुष अथवा स्त्री तिको सात जन्म तांई राज्य पावै, उत्तम<sup>१</sup> विद्या पावै, बळे घर मांहे धन-धान्य लक्ष्मी बहुत हुवै । जिका लुगाई इण व्रत नुं करै तिका सुख-सोहाग पावै, रूप पावै, पुत्र-पोतरा बहुत संपदा पावै । दीरघ आउ संसार रा भोग लील-विलास भोगवै । इह लोक में सुख पावै—परलोक मांहे भली गति पावै; इन्द्र पद पावै । जितरै तांई आ सृष्टि छै, इतरै तांई प्राणी सुख भोगवै । श्री कृष्ण जी कहै छै, हे युधिष्ठिर ओ प्रबन्ध में तोनुं

ब्राह्मण को जोड़े सहित, वस्त्र और अलंकार आदि पहिनवाकर, फिर इस मंत्र से बुध की मूर्ति समर्पण करना ।

मंत्र—बुधोय प्रति गृह्णाति द्रव्यस्थोपि बुधः स्मृतः ।

वीयते बुध राजेन, तुष्यतांच बुधो मम ॥

बुधः सौम्य सार-केशो, राज तुत्र इलापति ।

कुमारो ग्रहराजश्चयः, पुरुरवस पिता ॥

दुर्बुद्धिं दुरितं दुःखं नाशयित्वा बुधोमम ।

सौख्यं श्रियं सौमनस्य करोतु शशिनंदन ॥

इस प्रकार से जो व्यक्ति भी बुधाष्टमी का व्रत करता है, चाहे वह स्त्री हो और चाहे पुरुष—उसे सात-जन्म तक राज्य की प्राप्ति होती है । उसे अच्छी विद्या प्राप्त होती है; फिर, उसके घर में धन-धान्य, लक्ष्मी की बहुत वृद्धि होती है । जो औरत इस व्रत को करे, उसे सुख-सुहाग मिले, बड़ी रूपवाली हो—बहुत से पुत्रों व पोतोंवाली व संपत्तिवाली

कह्यौ । इण व्रत सुं ब्रह्म हत्या रौ करणहारौ, गो-हत्या रौ करण  
वाळौ, मद्यापांनी, गुरु तल्य गामी, इतरा पाप सर्व दूर हुवै ।  
काया वाचा, मन सारो कीयौ पाप, इण व्रत सुं दूर हुवै ।  
अष्टमी बुध संयुक्त चांदणै परवरी इण तरह सुं प्राणी समेत  
कुंभ द्रव्य समेत जिको मानवी वेदरौ जाणणहार ब्राह्मण नै  
भली भक्ति सुं देवै, तिको पुरुष यमलोक कदै ही न देखै, स्वर्ग  
रा सुख भोगवै । इण कथा नै पढै, सुणै तिको प्राणी यमलोक  
न देखै । हे युधिष्ठिर, सद्गति पावै । [इति श्री भवित्योत्तर पुराणे  
श्री कृष्ण-युधिष्ठिर संवादे बुधाष्टमी व्रत कथा सम्पूर्ण ।

---

हो । लम्बी आयु पाकर संसार के ऐश-आराम (वह) भोगती है ।  
इस संसार में सुख की ( उसे ) प्राप्ति हो और परलोक में भी  
सुख की ( वह ) प्राप्ति करे; इन्द्र का वह पद प्राप्त करे । जब  
तक यह सृष्टि है ( संसार है ) तब तक प्राणी सुख लाभ करता है ।  
श्री कृष्ण जी कहते हैं—हे युधिष्ठिर, यह कथा मैंने तुम्हें कही है ।  
इस व्रत से ब्रह्महत्या जैसा भयंकर पाप करने वाला, गो-हत्यारा,  
मद्यपान करने वाला, गुरु की पत्नी के साथ गमन करनेवाला—इतने  
सभी पाप सब दूर होते हैं । मन, वचन, कर्म से किए गए सब पाप इस  
व्रत से दूर होते हैं । शुक्लपक्ष की बुधवार की आठम को इस प्रकार  
जल से भरा कुम्भ को पात्र उसमें द्रव्य डाला हुआ हो—कोई व्यक्ति  
भक्ति सहित ऐसे ब्राह्मण को जो वेदों का जाननेवाला हो, उसे दे,  
तो वह पुरुष यमलोक कभी भी नहीं जाये और वह स्वर्ग का सुख लाभ  
करता है । इस कथा को जो प्राणी पढ़ता हो अथवा सुनता हो वह  
यमलोक को कभी भी प्राप्त न हो । हे युधिष्ठिर—वह सद्गति को  
प्राप्त करे ।

---



## १३-श्री अगस्त जी की कथा

श्री गणेशायनमः ॥ श्री अगस्त जी कस्य कथा लिख्यते । श्री कृष्ण जी तैत्तीस कोटि देवता सहित कुरुक्षेत्र आया । तब राजा युधिष्ठिर जी श्री कृष्ण ने पूछ्यो कुण विधि सूं धर्म वधै जी, कुण विध सूं धर्म घटै, सु कथा कहौ । श्री कृष्णोवाच । राजा, अगस्ति की कथा सुण्यां धर्म की वृद्धि होइ-कथा सुणै नहीं तो दसवां अंश पुण्य व्रत कियो होइ सो दूर होइ । तब राजा कही-श्री कृष्ण अगस्ति की कथा किसी विधि छै-अगस्त जी कुण को पुत्र छै, कठै थानक छै । श्री कृष्ण जी कहै छै-एक ताला नामा दैत्य महादेव की तपस्या करी, वरस सहस्र तब रुद्र प्रसन्न हुवा । थारो नाम काई ? तब दैत्य कछौ-महादेवजी कहै सोई नाम । तब महादेव जी कही-थारो नाम तालानामा दैत् । ताल व भीच

## कथा श्री अगस्त जी की

श्रीगणेशायनमः । श्री अगस्त जी की कथा लिखते हैं-श्रीकृष्ण जी तैत्तीस करोड़ देवताओं सहित कुरुक्षेत्र आए । तब राजा युधिष्ठिर जी ने श्री कृष्णजी से पूछा-कौनसी विधि से धर्म बढ़ता है-कौनसी विधि से धर्म घटता है-वह कथा कहें । श्री कृष्ण जी ने कहा-राजन् ! अगस्त जी की कथा सुनने से धर्म की वृद्धि होती है-कथा जो न सुने, तो उसके पुण्य और व्रत के दशवें अंश का नाश हो । तब राजा ने कहा-हे श्री कृष्ण जी, अगस्त जी की कथा की विधि कैसी ? अगस्त जी किस के पुत्र हैं ? उनकी कथा कैसी है ? तब श्री कृष्ण जी कहते हैं-एक ताला नामक दैत्य ने महादेव जी की सहस्र वर्ष तक तपस्या की, तब महादेव जी प्रसन्न हुए । तुम्हारा क्या नाम ? तब दैत्य ने उत्तर दिया-जो नाम महादेव जी कहें, वही मेरा नाम । तब

की देही वर पाया। दैत्य घरि आयौ। बहुस्यै कही-महादेव जी मुनै वर दीयौ। तब दैत्यणी कही-क्या भली करसौ! बुरी तौ याँकै बाँटै आई ही छै। वर पायां भली करो तब वर कौ फल होई। तब दैत्य बहु नै कही-चांडाली, औसी बात सुं तै कही, क्याहुं रिखीसुरां नै मारीस! तब दैत्यणी कही-रिखीसुर गोदावरी नदीका तट तप करै छै। तटै दैत्य गयौ, रिखीसुरास्युं कही-मोसै युद्ध करौ। रिखां कही-थारा कुल सूं युद्ध कर, म्हा रखने हथियार डाल की कुश छै। तदे कही-मारसां थानै। तद रिखीसुर सब विश्वामित्र जी, जमदग्न जी, भारद्वाज जी, कस्यप जी, गौतम जी वसिष्ठ जी, इतना रिखीसुर उठी जाता रछा। एक वसिष्ठ जी रछा। ध्यान कर देखै तो महादेव जी वर दीयौ छै 'ताल वै मीच छै' डाभ की धणीतीर बणाय राखी। गोडा नीचै दे राखी। दैत्य आय लडे लागौ। तब वसिष्ठ जी कही-रूख चढ म्हांरौ

महादेव जी ने कहा—तुम्हारा नाम 'ताला नामा दैत्य' ! ताला ने मृत्यु इस देह से नहीं होने का वर पाया।

दैत्य घर आया। पत्नी से कहा—महादेव जी ने मुझे वर दिया है। तब दैत्यणी ( राक्षस की पत्नी ) ने कहा—क्या भलाई करोगे ? बुराई करना तो तुम्हारे हिस्से में आई हुई है। वर पाकर भलाई करो तब वर का फल हो। तब दैत्य ने पत्नी से कहा—चंडालनी ! तुमने ऐसी बात कैसे कही ? क्या मैं ऋषियों को मारूँगा ? तब दैत्यणी ने कहा—ऋषि लोग गोदावरी के किनारे पर तपस्या करते हैं। दैत्य वहाँ गया—ऋषि लोगों से कहा—मुझ से युद्ध करो। ऋषि लोगों ने कहा—अपने कुल से युद्ध करो। हमारे पास डाभ की कुश है ( १ ) डाभ की टहनी ( २ ) डाभ अथवा कुश है। तब कहा—आपको मारूँगा। तब सब ऋषि विश्वामित्र जी, जमदग्न जी, भारद्वाज जी, कस्यप जी, गौतम जी, वसिष्ठ जी इतने ऋषि लोग उठकर जाते रहे।

थारौ साखी बुलाई, जो जीतै सो कहै लौ । तब दैत्य रुख चढ़ि  
हेलौ दीयौ । रिखीसुर नीचै सूं ताल नै तीर की दीन्ही । दैत्य  
मूवौ । दैत्यणी नै कही—थारौ भरतार मारीयौ । दैत्यणी कही  
भली हुई । रिखीस्वरां नै सतावै छौ । आपणौ कीयो पायौ ।  
तब दैत्यणी नै गर्भ छयै । तिण कै पुत्र दोइ हुवा । शुक्र देवता  
दैत्या रो गुरु छै । सो नांव काढवा आयौ । दोनों पुत्रां का नाम  
काढ्या । एके को नाम इलवा दूसरा को नाम वातापी । वरष दस  
का पुत्र हुवा । शिकार जाइ सभा में कहै लागा—म्हां सारीखो  
जोधा कोई और भी छै । तब दैत्या कही—बाप कौ तो बैर लीयो  
जाइ ही नहीं, थे क्या योधा छौ । तब इलवण वातापी माता  
पूछी—म्हां को बाप कुणै मारियौ । तूं बताय, नीतर तूने  
मारस्या । माता कही—पुत्र जणिया रौ फल भलो दियो । थाकै

एक वशिष्ठ जी रह गये । ध्यान कर देखा तो महादेव जी ने वर दिया—  
( ताल अमर है ) । डाभ का तीर धनुष्य बनाकर रखा । गोडे के नीचे  
रखदी । दैत्य आकर लड़ने लगा । तब वशिष्ठ जी ने कहा—पेड़ पर  
चढ़ो, तुम्हारा और मेरा साक्षी बुला । जिसकी विजय होगी—वह  
कहेगा । तब दैत्य ने पेड़ पर चढ़कर आवाज लगाई । ऋषि ने नीचे से  
ताल को तीर मारा । दैत्य मरा । दैत्यणी से कहा—तुम्हारे भरतार  
(पति) को मारा । दैत्यणी ने कहा, अच्छा हुआ । ऋषि लोगों को  
सताया करता था । तब दैत्यणी को गर्भ रहा । उसके दो पुत्र हुए ।  
शुक्र देवता दैत्यों का गुरु है । वह नाम रखने के लिए आया । दोनों  
पुत्रों का नाम निकाला । एक का नाम 'इलवा' दूसरे का नाम 'वातापी' ।  
पुत्र दस वर्षों के हुए । शिकार को जाते एक सभा में कहने लगे—  
हमारे समान दूसरा कोई योद्धा है । तब दैत्यों ने कहा—पिता का तो  
बदला लिया भी नहीं जाता, तुम क्या योद्धा हो ? तब इलवण—वातापी  
ने माता से पूछा—हमारे पिता को किसने मारा ? तू बता, नहीं तो



पिता हजार वरष महादेव जी की पूजा करी। एक पग के पाणि उभो रह्यौ, तब वर दीयौ। तब रिखीस्वर संताया। कछ्यौ, रिखि सुरां मारियौ। तब पुत्रां दोनां जाय कैलास उपरि तपस्या करी। नीची नाडि करी, ऊंचा पग किया। वरष हजार हूवा। तब महादेव जी वरदान के वासते पार्वती जी देखवा खंदाई; कुण छै। तब पार्वती पूछ्यौ थै, कुण छौं। इसवण वातापी कछ्यौ माताजी म्हैं ताल नाम दैत्य रा पुत्र छ्वां। पिता रै बैर के वास्ते वर मांगा छ्वां। पार्वती जी जाइ महादेव जी सौं कछ्यौ-तालनामा दैत्य का पुत्र छै। पिता कै बैर वास्ते वर मांगै छै जी। महादेव जी वर दीयौ-जननी का गर्भ सैं नीसरै छै सौ थांस्यै कोई जीतौ मती। तब पार्वती कही-जननी सूं सारो सृष्टि उपजै छै। देवता

तुम्हें मारेंगे। माता ने कहा—पुत्र पैदा करने का अच्छा फल दिया। तुम्हाने पिता ने हजार वर्ष तक महादेव जी की पूजा की—एक पैर के सहारे खड़ा रहा—तब वर मिला। तब ऋषियों को सताया। कहा—“ऋषियों ने मारा”। तब दोनों ने उसकी लाश पर तपस्या की। सिर नीचा किया, पैर ऊपर को किए। हजार वर्ष हुए। तब महादेव जी ने वरदान के लिए पार्वती को देखने को भेजी। कौन है? तब पार्वती ने पूछा—आप कौन हैं? इसावा-वातापी ने कहा—माता जी, हम ताल-दैत्य के पुत्र हैं। पिता के बैर के लिए वर मांगते हैं। पार्वती ने जाकर महादेव जी से कहा—ताल नाम के दैत्य के पुत्र हैं। पिता के बैर (बैर का बदला निकालने) के लिए वर मांगते हैं। महादेव जी ने वर दिया—माता के गर्भ से जो पैदा हो (निकले) वह आपसे कभी जीत नहीं सके।

तब पार्वती ने कहा, माता से तो सारी सृष्टि पैदा होती है; देवता, असुर, मनुष्य। सब पृथ्वी को (यह) मारेगा। महादेव जी ने कहा—अब तो मैंने वर दे दिया है।

असुर, मनुष्य । सारी पृथ्वी नै मारसै । महादेव जी कही—अब तौ में वर दियो छै । तब दैत्या कही—म्हें सारी पृथ्वी जीतसां, थे आय ने म्हाने मारो तो मरां । महादेव जी कही, हुं ही वर देवां, हुं ही मारां नहीं । तब दोनां भाई गोदावरी नदी आया । गोदावरी सदा मेळो होय छै । अठयासी हजार रिखीसुरां कृष्णदेव जी सदा देवता सूधा आवता । तठै दोनों भाईयां कुटी बांध तुलसी बाही, रिखीसुर को रूप कीयो । संघ की संक्रान्त का बाईस दिन जाय छै—आठ रहै छै, तठै मेळो होइ छै । तठै रिखीसुर आवै छै, सो दोनां भायों में एक तो मीठो होइ । [वातापी] दूसरो इलवण मीठा नै रांधै । रिखीसुरा नै नैतो । काका पिता को आद्ध छै—तब रिखीसुर जीमावै । तब पंचामृत पुरुसै, मीठा कौ मांस पुरुसै । तब धाया—तब आसी वचन दीयो । तब सांरा का पेट फोड़ मीठो नीसरीयो । इणभांत

दैत्यों ने तब कहा—हम तमाम पृथ्वी को जीतेंगे—आप आकर मारेंगे, तभी मरेंगे । महादेव जी ने कहा—मैं ही बरदूँ, मैं मारता नहीं । तब दोनों भाई गोदावरी-नदी पर आये । गोदावरी में हमेशा मेला होता है । इक्कासी हजार ऋषि लोग, कृष्ण जी सहित सदा आते । वहाँ दोनों भाईयों ने कुटिया बनाकर तुलसी उगाई, ऋषियों का रूप बनाया । सिंह की संक्रान्ति के बाईस दिन बीतते हैं—अठारह रहते हैं, तब ( यह ) मेला होता है । तहाँ ऋषि लोग आते हैं—वहाँ दोनों भाईयों में से एक तो मिठाई बनाता है ( वातापी ) । दूसरा मिठाई को तैयार करता है । ऋषि लोगों को निमंत्रित करते हैं । हमारे पिता का आद्ध है—तब ऋषि लोगों को भोजन करवाते हैं । तब पंचामृत परोसते हैं—मीठा मांस परोसते हैं । तब ( ऋषियों ने ) छककर खाया, आसीस वचन कहे । तब सबका पेट फोड़कर मीठा ( बाहिर ) निकाला । इस र दस हजार ऋषियों को मारा । तब गोदावरी ( नदी के तट ) पर

रिखीसुर दस हजार मारिया । तब । तब गोदावरी जी श्रीकृष्णजी  
 आया । तब बृहस्पति देवता नैं श्री कृष्ण जी पूछ्यो जो रिखीसुर  
 घट आया, कुण वास्तै । बृहस्पति जी कही-ताल नाम दैत्य का  
 पुत्र पिता के बैर के वास्ते महादेव की तपस्या करी । वर दियो—  
 माता की योनि स्यौ निकसे, उपजै छै सो थांसो मत जीतो ।  
 सो हजार दस रिखीसुर मारिया । तब श्री कृष्ण जी कही-महादेव  
 जी भस्मा दैत्य नैं वर दियो छो । ताही कै माथै हाथ धरै सोई  
 भस्म होइसी । तब दैत्य महादेव कै माथे हाथ धरबा दौड्यो ।  
 महादेव जी भागा । तब नारद जी श्री कृष्ण नैं कही-महादेव नैं  
 संकट छै । तब कृष्ण जी मोहनी रूप पार्वती जी को कीयो ।  
 तब दैत्य मोह्यो । कही थार चालु । थारै ही वास्तै महादेव को  
 लार कीवी छै जी । तब श्री कृष्ण जी पार्वती का रूप कीया ।  
 कही तू थारै माथै हाथ देय कै नाचै तो थारै लारै चालु । तब

---

श्री कृष्ण आये, तब बृहस्पति देवता से श्रीकृष्णजी ने पूछा—ऋषि लोग  
 संख्या में कम आए-क्या कारण है ) बृहस्पति ने कहा ताल नाम के दैत्य  
 पुत्र ने पिता के बैर के लिए महादेव जी की तपस्या की । महादेवजी ने  
 वर दिया—माता की योनि जो निकलेगा; पैदा होता है, वह तुम से  
 नहीं जीत सकता । अतः ( उसने ) दस हजार ऋषि लोगों को मारा ।  
 श्री कृष्ण जी ने कहा—महादेव जी ने भस्मासुर दैत्य को वर दिया था ।  
 जिसके सिर पर वह हाथ रखे, वही भस्म हो जायगा । तब दैत्य  
 महादेव जी के ही सिर पर हाथ रखने को दौड़ा । महादेव जी भागे ।  
 तब नारद जी ने श्री कृष्ण जी से कहा—महादेव जी को संकट है ।  
 तब श्री कृष्ण जी ने मोहनी रूप में पार्वती का रूप धारण किया । तब  
 दैत्य को मोहित किया । कहा, तुम्हारे साथ चलती हूँ । तुम्हारे ही  
 लिये महादेव जी ने पीछे जाने को कहा है । तब श्री कृष्ण जी ने पार्वती  
 जी का रूप बनाया । कहा—तू अपने सिर पर हाथ धरकर नाचे तो



दैत्य साथै हाथ धर नै नाचण लागौ । भस्म हूवौ । सु महादेव जी  
 औसा वर देवै छै । तब सारा रिखीसुरा नु कृष्ण कही-थे मित्रा,  
 वरुण रिखीसुर को आराध करो । तत सारा रिखीसुर देवता,  
 मित्रा, वरुण कै जाय आरव कीयो । मित्रा, वरुण प्रसन्न हुवौ ।  
 तब देवता कही-ताल नाम दैत्य का पुत्र पित्रा के बैर कै वास्तै  
 रिखीसुर हजार दस मारया । सु थै सहाय करौ । मित्रा, वरुण  
 कुंभ थाय, उपरि नालेर राखि मांही कास का फूल मेल्या ।  
 तिही कलस मांही अगस्ति जी नीसरया आगासी माथो; पाताळ  
 पग । औसो अगस्ति ऊभौ होइ वन में चाल्यौ । तब रिखीसुर कही  
 मित्रा, वरुण जो जा, रिखा को काम करि । अगस्ति जी कही  
 मनै ठिकानौ बतावौ । कन्या रिखीसुर देसी तौ दैत्य मारीस ।  
 तब श्री कृष्ण जी, लोया मुद्रा रिखास्वर की बेरी दीन्ही । लंका  
 कै द्वारि थांकी घर । खावानै जोवो-कथा थांरी सुंणे नहीं, तिहीं

तुम्हारे साथ चलूँ । तब दैत्य सिर पर हाथ धर कर नाचने लगा ।  
 भस्म हो गया । अतः महादेव जी ऐसे वर देते हैं । तब तमाम ऋषि  
 लोगों से कृष्ण जी ने कहा—आप सूर्य, वरुण ऋषियों की आराधना  
 करें । तब ऋषि लोगों ने देवताओं सूर्य, वरुण के यहां जाकर आराधना  
 की । सूर्य और वरुण प्रसन्न हुए । तब देवताओं ने कहा—ताल नाम  
 दैत्य के पुत्र ने पिता के बैर के लिये दस हजार ऋषियों को मारा है ।  
 अब आप ( हमारी ) रक्षा करें सूर्य और वरुण । घड़ा लेकर ऊपर  
 नारियल रख उसमें कास के फूल रखे । इस कलस में से अगस्त जी  
 निकले—आकाश की ओर सिर, पाताल की ओर उनके पैर । ऐसा अगस्त  
 जी खड़ा होकर वन की ओर चला । तब ऋषियों ने कहा—हे सूर्य और  
 वरुण, जावो ऋषियों का काम करो । अगस्त जी ने कहा—मुझे ठिकाना  
 बताएँ । मुझे ऋषि लोग कन्या देंगे, तो दैत्य को मारूंगा । तब  
 श्री कृष्ण जी ने लोयामुद्रा ऋषि की पुत्री दी । लंका के द्वार पर तुम्हारा

कौ दशवांश धर्म तूँ लै । वो कथा सुणै तिही नै फळ दै । तब गोदावरी जी, श्री अगस्तिजी आया । तब इलवण वातापी देख्यौ म्हां का पिता को बैरो आयौ । इहनै मारां । तब जाय डंडोत कीया-थै म्हाकै भोजन करौ । तब अगस्ति जी कष्टौ, घणौ खाऊं छूँ । घापसौं नहीं । तब अगस्तिजी बैठौ-पातली दीन्हीं । तब अगस्तिजी कही-पातली मैं घापौं नहीं । तब एडी को खाडो कीयौ-मण हजार बीस भावै, तब जह को भोजन करावां छां । सो सारौ पुरुषै मण सै पांच रांधो छै, तिहको हलको सो प्रास कीयौ । तब इलवण कही तृप्तोऽस्तु, भाई जी पुरुःस्तुयो । ऊंरा का तो पेट फाडि निसरे छै । अगस्ति का पेट में हुंकारो कीयो । तब अगस्ति पेट ऊपरि हाथ फेरि भस्म कीयो । तब इलवण भागौ । अगस्ति गेल करी । सुमेर परबत में गयो । तब सुमेर ऊपर चाढ़ाय राख्यौ । तब अगस्तिजी यां कही-म्हारो चोर थारै खनै आयौ छै, तूँ

---

घर । खाने के लिये देखो—कथा तुम्हारी जो न सुने, उसके धर्म का दशवां हिस्सा तुम लेलो । जो कथा सुने, उसे फल देना । तब श्री अगस्त जी गोदावरी पर आये । तब इलवण-वातापी ने देखा, हमारे पिता का शत्रु आया, इसे मारें । तब जाकर दंडवत् ( नमस्कार-प्रणाम ) किया—आप हमारे यहां भोजन करें । तब अगस्त जी ने कहा—मैं अधिक खाता हूँ अथवा नहीं सकूंगा । तब अगस्त जी बैठे—पतल दी गई । तब अगस्त जी ने कहा—मैं पतल से नहीं घाप सकता । तब एडी से एक खड्ग किया—उसमें मण-हजार बीस ( चीज ) समावें । जब गहरा ( डटकर ) भोजन करते हैं । इसलिए सारा पुरसा-पांच सौ मण रांधा है, उसका छोटा-सा प्रास किया । तब इलवण ने कहा—तृप्त हो जाइये, भाई को भी परोस दिया । औरों के तो पेट फाड़कर निकलता है । अगस्त जी के पेट में 'हुंकारा' ( हाँ भरना ) किया । तब अगस्त जी ने पेट पर हाथ फेर कर भस्म किया । तब

काढ़ दे। सुमेर कही-तूँ म्हारो कहा करसै। तब अगस्ति कही-पछतावै लौ। मानी नहीं। चिटी आंगळी पर्वत ऊपर म्हेलही-बीस हजार भौमी में गडि गयो। पगों पडै मुनै सारौ, मती गडावौ। तब चोर भागौ-नरबदा जो खनै गयो, नरबदा जी पार उतार घसोइ राख्यौ। अगस्ति जी कही-नरबदा, चोर आयौ, तूँ काढ़ दे। नरबदा मानी नहीं। तब अगस्ति जी एडो म्हेलही पाणी सोख लियो। रेत उडै लागो। नरबदा पगां पडी। म्हेँ थांको भेद जाख्यौ नहीं। तब भरजाद में राखी। चोर भाग समुद्र में गयो। समुद्र घसोइ राख्यौ-गाजै लागो। अगस्तजी कही-समुद्र चोर काढ़ दे। समुद्र कही-कदै सरणै आया दीजै छै अगस्त जी कही-पछतावोला। समुद्र कही-म्हांको थे कासुं करोला। तब अगस्ति जी तीर बैठा आचमन कीयो। दोय आचमन किया-

इलवा भागा। अगस्त जी ने पीछा किया। सुमेर पर्वत पर गया। तब सुमेर पर्वत ने चढ़ाकर रखा। तब अगस्त जी ने ऐसा कहा—मेरा चोर तुम्हारे पास आया है, तू निकालकर दे। सुमेर ने उत्तर दिया—तुम मेरा क्या कर लोगे? तब अगस्त जी ने कहा—पछतावोगे! (उसने) माना नहीं। कनिष्ठका अंगुली पर्वत के ऊपर रखी, बीस-हजार भूमि में (नीचे की ओर) गड़ गया।

पांव पड़ता है—भूमे सारा ही मत गाड़ो। तब चोर भागा नरबदा जो के पास गया। नरबदाजी ने पार उतार कर छिपा रखा। अगस्त जी ने कहा—नरबदा, चोर आया है, तू निकाल दे। नरबदा मानी नहीं। तब अगस्त जी ने एडी रखी—पानी सोख लिया। धूल उड़ने लगी। नरबदा पांव पड़ी—मैंने आपका भेद जाना नहीं। इसलिये मैं अपनी सीमा में रही। चोर भागकर समुद्र में गया। समुद्र ने छिपा कर रखा—गर्जने लगा। अगस्त जी ने कहा—समुद्र! चोर को निकाल दे। समुद्र ने कहा—शरण में आया भी कहीं दिंश जाता है। अगस्त जी



तीसरो आचमन कियौ पांणी रह्यौ नहीं । तब समुद्र पमां पड़ियौ—  
 म्हैं थांहरौ भेद जाण्यौ नहीं, जीव की दया करौ । तब अगस्तजी  
 कही—समुद्र रीतौ किसी भांत भरै ! तब अंग अंग महा पसेव  
 की नदी नौ सैं निवासी खंदाय चलाय समुद्र भरयौ । तब से  
 खार समुद्र हुवौ । चोर आंणि समुद्र दियौ । दोय फांट करि  
 अगस्त जी खाय गयो—सीक करतां छोटी—सी डली मुख माहा  
 गिरिपड़ी, तिही की मारवी हुई । बड़ी पडै तो पेट फाड़ नीसरै,  
 छोटी पड़ी तोही अपुठो मुहड़े माहोइ नीसरै । औसी विधि  
 अगस्ति रिखी सुरां की सहाय कीवी । श्री कृष्ण जी कहै छै ।  
 राजा ऐसी विधि अगस्त जी की कथा छै, जोणै तिही कौ धर्म  
 वधै । न सुणै तिही कौ धर्म घटे—अश्वमेध जग्य को फल होइ ।  
 कथा कहि पाछै जल सौं अर्घ दीजै ।

ने कहा—पछतावोगे । समुद्र ने कहा—मेरा तुम क्या कर लोगे ? तब  
 अगस्त जी किनारे पर बैठे—आचमन किया । दो आचमन किये,  
 तीसरा आचमन किया, पानी रहा भी नहीं । तब समुद्र पैरों पड़ा, मैंने  
 आपका भेद समझा नहीं, मुझे प्राणदान दें । तब अगस्त जी ने कहा —  
 खाली समुद्र किस प्रकार भरा जा सकता है । तब अङ्ग-अङ्ग में से  
 पेशाब की नव सौ नदियाँ निकाल—घार चला, समुद्र भरा । तब से  
 समुद्र खारा हुआ । समुद्र ने चोर को लाकर दिया, दो टुकड़े कर अगस्त  
 जी खा गये । छीक करते छोटी सी डली मुँह से गिरी, उसकी मक्खी  
 हुई । बड़ी गिरे तो पेट फाड़कर निकले, छोटी गिरी तो भी फिर  
 मुँह में से होकर निकले । इस प्रकार से अगस्त जी ने रखी—देवताओं  
 की रक्षा की । श्री कृष्ण जी कहते हैं—राजा, इस प्रकार अगस्त जी  
 की कथा है । जो सुने उसके धर्म की वृद्धि हो । न सुने, उसका धर्म  
 घटे । अश्वमेध यज्ञ का फल हो । कथा कहकर फिर जल से अर्घ देना ।

तत्रमंत्रः—

वातापी भक्षितो येन, पीतो येन महोदधिः ।

समुद्र सोषितो येन, गृहाणा धर्ममोस्तुते ॥१॥

कलश माटी को थापीजै, नीचे आरवा मेलीजै । ऊजळो नाळेर ऊपरै मेलहीजै । मोती मुग्धो पंचरत्न नाळेर में राखीजै । काकासिका फूल मेलहीजै । दरवणा सोपारी मेलहीजै । पूरी हुई तब ब्राह्मणां नां सीधो, कलस; नाळेर दरवणा दीजै । जो वाचै तिही नै अगस्ति फल देवै । षड्डी च्यार अथवा दोइ पाछलीं रात्रि रहै तब कहीजै तो पुण्य घणौ छै, कहै तैनै पुण्य फल विधवा अठारा होइ । सुणै तिही तै फल घणौ होई । पणि हाथ मांडै तिहि सै सुणै तिही नै फल घणौ होई, जिम ब्राह्मण को आशीर्वाद होइ ।

तत्र मंत्र—

वातापी भक्षितो येन पीतो येन महोदधिः ।

समुद्र सोषितो येन, गृहाणा धर्ममोस्तुते ॥

मट्टी का कलश स्थापन करना, ( उसके ) नीचे अक्षत रखना । अच्छा नारेल उसके ऊपर रखना । मोती, मूंगिये, पंचरत्न नारेल में रखना । कोकासिका के फूल रखना । दक्षिणा और सुपारी रखना । ( कथा ) पूरी होने पर ब्राह्मणों को सीधा, कलश, नारियल, दक्षिणा देना । जो पड़े, उसे अगस्त जी फल दें । षड्डी चार अथवा दो—पीछे की रात्रि रहे, तब कहे—तो पुण्य बहुत हो—कहे उसे पुण्य अठारह विश्वा ( अर्थात् निदिचत ही ) हो । सुने, उसे फल बहुत हो । हाथ में पानी ले ( संकल्प ले ) उससे सुनने वाले को फल अधिक हो, ऐसा ब्राह्मणों का आशीर्वाद है ।

## १४-अथ चौथ मासती री कथा

उज्जैन नामा एक नगरी तहां अरिमर्दन राजा राज्य करै है । तिण कै नगर में देवश्रम ब्राह्मण रहै । ऊ ब्राह्मण बहुत धनवंत, लिछमी रौ पार कोई नहीं । उण ब्राह्मण कै अस्त्री हुती सो मृत पांमी । तिण कै कन्या एक हुँती सो जीवती रही । ब्राह्मण और विवाह कियौ, उणकै एक कन्या भई । ब्राह्मण दोनूँ कन्या नै पाळै—दोनूँई वर प्राप्त हुई । ब्राह्मण कन्या रौ पांण ग्रहण रौ आरंभ कियौ, दोनूँई जान साथै आई । पांण ग्रहण करायौ । माट भरता साथै एक माट में छांणा, पत्थर, छोडा भरिया । जिणरी माता मर गई थी, जिणरै मांट मांहे भरिया । माय नै राखता कन्या दीठी । तद् कन्या मन में विचारीज हूँ क्युं ही कहस्युं तो बाप इण नूँ दुख देसी । तिण सूँ विचार कर किण ही नूँ नहीं कह्यो । जान नै ब्राह्मण सीख दीधी । कन्या मन में विचार करै

## कथा चौथ माता की

उज्जैन नामक एक नगरी, वहां अरिमर्दन राजा राज्य करता है । उसके नगर में देवश्रम नामक एक ब्राह्मण रहता है । वह ब्राह्मण बड़ा ही धनवान लक्ष्मी का पार नहीं ( उसके ) । उस ब्राह्मण की स्त्री थी, वह मृत्यु को प्राप्त हुई । उसके एक कन्या थी, वह जिन्दी रही । ब्राह्मण ने विवाह दूसरा किया ( दुबारा किया )—उस स्त्री से एक कन्या हुई । ब्राह्मण दोनों ही कन्याओं को पालता है—दोनों ही 'वर-प्राप्त' के योग्य हो गयीं । ब्राह्मण ने कन्याओं का विवाह प्रारम्भ किया—दोनों की जान ( बरात ) एक साथ आई । उनका विवाह किया । 'मांट' ( मिट्टी का एक बड़ा बर्तन ) को भरते समय एक माट में कण्डे, पत्थर और लकड़ी के छिलके भर दिए । यह उस 'माट' में भरे गये, जिस कन्या की माता मर गई थी ।



छै-इण सासरै में ब्राह्मणमें माहरौ काम-सिध हासौ होसी ।  
 कन्या मन में दुचिति करण लागी । तितरै एक नदी सिप्राजी  
 माथै, वृक्ष भाँत-भाँत, कंवळ फूल रह्या । तठै निरमळ जळ भर  
 रह्यौ है । अपछरा रौ रथ पडियौ दीठौ । ब्राह्मणी मन में  
 विचारियो, अै देव मूरत रंभा दीसे छै । ब्राह्मणी, अपछरा बैठी  
 जठै आय ऊभी रहौ । पूछियो, तुमैं कौण देसरी राज कन्या छौ ।  
 गंधर्व कन्या, नाग-कन्या, यक्ष, किन्नर, देव अपछरा छौ—म्होम  
 कहौ—उतर द्यौ । तब देव कन्या बोली हे ब्राह्मणी, म्हे इन्द्रलोक  
 सूं आई इन्द्र री अपछरा हां । माहरै आज चौथ माता री व्रत  
 है, सो म्हे आज चौथ-माता री पूजा करण वासतै, इण सरोवर  
 आई हां । सो अठै चौथ री वरत करस्यां—मद-मासं समेत पूजा  
 करस्यां । तिण सूं देवी बहुत वरदाता होसी, मनकामना सिध  
 होवै । तद ब्राह्मणी मन में सोच करण लागी—माहरौ मन कहै

माट के अन्दर रखते समय कन्या ने यह सब देखा । तब कन्या ने  
 मन में विचारा, यदि कुछ कहूंगी तो पिता इसे ( दूसरी माता को ) कष्ट  
 देगा । ऐसा विचार कर किसी से भी नहीं कहा ।

ब्राह्मण ने बरात को विदाई दी । कन्या मन में विचार करती है—  
 मेरी समुराल में, ब्राह्मण-समाज में निश्चय ही मेरी हँसी होगी ।  
 कन्या मन में चिन्ता करने लगी । इतने ही में नदी सिप्राजी आ गई ।  
 उसके किनारे पर तरह-तरह के पेड़ और कमल फूल रहे हैं । वहां  
 निर्मल जल भरा हुआ है । वहां अप्सरा का रथ खड़ा देखा । ब्राह्मणी  
 ने सोचा—यह देवमूर्त रंभा दिखलाई देती है । जहाँ अप्सरा बैठी हुई  
 थी, ब्राह्मणी भी वहीं आकर खड़ी हो गई । पूछा—तुम कौन देस की  
 कन्या हो ? गन्धर्व कन्या, नाग कन्या, यक्ष, किन्नर, देव अथवा  
 अप्सरा हैं—मुझे बतावें, मुझे उतर दें ।

ज्यूं चौथ माता करै तौ वरत हूं भालूं । अब अपहरा बोली-  
हे बांभणी तूं वरत भाल-चौथ माता थारी मन-कामना सिद्ध  
करसी । मद-मांस समेत पूजा करसी तोनूं बहुत राजी होसी ।  
वरत बांभणी संभायौ । आपणें डेरें आई । आगै माट मांहें एयु  
मेवा मिष्ठान भाँत-भाँत रा होय गया । ब्राह्मणी नै तुरंत चौथरी  
परचौ पायौ । बांभणी हरसवंत हुई । उठासूं धरै आई । अबे  
हमेस, चौथ आवै तद वरत करै । मद आव सेर, मांस अधसेर  
आण, व्यंजन समीचीन कर श्री भैरवी चौथ नै पूजै । धूप करै ।  
दीप जोति कर पाठ आगै करै, नीळी द्रोब चाढ़ै, अखत्र चढ़ावै,  
मंगळ गीत गावै, कथा वार्ता सुणै- बचावै ।

ऐसी तरै ब्राह्मणी वरत करै, माता चौथ री सेवा करै,  
पछै हरियै गोबर री गुहळी दिराय स्नान कर, कुंकुं चाढ़णां ।

तब देव कन्या बोली—हे ब्राह्मणी मैं इन्द्रलोक से आई हूँ—इन्द्र  
की अप्सरा हूँ । मेरे आज चौथ-माता का व्रत है—अतः मैं चौथ-माता  
की पूजा करने के लिए इस तालाब पर आई हूँ । यहाँ चौथ का व्रत  
करूँगी—मद-मांस सहित पूजा करूँगी । इससे देवी बहुत से वर को  
देने वाली होगी, और मनोकामनाएँ सिद्ध होंगी । तब ब्राह्मणी मन में  
विचार करने लगी—मैं भी ऐसा ही सोचती, यदि चौथ-माता की कृपा  
रहे तो मैं भी इस व्रत का नियम पकड़ लूँ । इस पर अप्सरा बोली—  
हे ब्राह्मणी, तू भी व्रत करने का शंकल्प करले, चौथ-माता तुम्हारी  
मनोकामना सिद्ध करेंगी । मद-मांस सहित यदि पूजा करोगी, तो तुमसे  
( वे ) प्रसन्न होंगी ।

ब्राह्मणी ने व्रत का निश्चय किया । अपने स्थान पर आई ।  
( आकर देखा ) 'माट' के भीतर तरह-तरह के फल एवं मिठाईयाँ बन

धूप-दीप अक्षत्र कर सुगंध-पुष्प चढ़ावणा । गुळ आण पांचढळी कर चढ़ावणा । आप ब्राह्मणी चूरमौ कर पळै दोय घड़ी दिन रहै तरै भोजन, प्रसाद, आचमन करै । माता रै आखाडै गीत, चरचा, आवाहन गायबौ करै; युं करतां बरस द्वादस भया । मद-मांस ल्यांवतां बहु रां देवरां जेठ दीठी । पांच-सात वेळा चरत जोया ।

एक दिन ब्राह्मणी मद-मांस लैनै आवै है । कुटंब रै आदमी कोटवाळ ज्यादा बांभण साथै मेलिया । ब्राह्मणी नै आय मिलिया । ब्राह्मणी मन में डरण लागी । जितरै चौथ रौ ध्यान कीयौ, तितरै चौथ माता कहौ 'डर मता' प्रोहित अर प्यादा वृक्षियौ-बांभणो थारै पास कहू है । बांभणी उन कहै- गुळ, घिरत, माता चौथ नै चढ़ावण वासतै है और तो क्युंही नहीं । तद बांभण कहै-कूड़ भाखै हैं, असत वचन कहै है । दरबार रा प्यादां पल्लौ परहौ

गईं । ब्राह्मणी ने तत्क्षण ही चौथ का चमत्कार पा लिया । ब्राह्मणी बड़ी प्रसन्न हुई । वहाँ से वह घर आई ।

अब हमेशा, जब भी चौथ आती, वह व्रत किया करती । आधा-सेर मद, आधा-सेर मांस और व्यञ्जन इकट्ठे करके श्री भैरवी-चौथ की पूजा करती । धूप करती, दीप जलाकर उसके सामने बैठकर पूजा किया करती, हरी-दूब चढ़ाती, अक्षत्र चढ़ाती, मंगत गीत गाती, कथा-वार्ता सुनती और पाठ भी करवाती ।

इसी प्रकार ब्राह्मणी व्रत करती, माता-चौथ की सेवा करती । इसके बाद हरीये गोबर की गार लगानी, स्नान करनी और कुंकुम चढ़ाना । धूप-दीप, अक्षत्र और सुगन्धित पुष्प चढ़ाना । गुल लाकर उसके पाँच चढ़ाने (चाहिए) ।

ब्राह्मणी स्वयं चूरमा बनाकर, दो घड़ी दिन रहता, तब भोजन, प्रसाद और आचमन करती । माता के स्थान पर उनके गीत, उनकी



करनै जोयौ—गुल, घिरत निजर आयौ । तददूत बांभणी रै पगै  
लागा, आपणै कोटवाल कन्हें पाछा आया, कह्यौ—बांभण भूठ  
कहै है । बात खिलाफ सब कूड है । कोटवाल बांभण नै दूर कियौ,  
ब्राह्मणी नै नमस्कार कियौ, सनमान कर घर नै, सीख दीधी ।  
बांभणी घर आई, पूजा कीधी, आप पिण प्रसाद लियौ । हमें  
बांभणी बरत करै पण मद-मांस न चढ़ावै । यं करतां बरस पांच  
सात यूंही गुल सूं करिया । चौथ माता बैराजी हुई ।

हमें एक दिन राजा रौ कुंवर उण बांभणी रै सुसरै रै घरै  
आयौ । उण ब्राह्मण, कुंवर नै ऊंचौ लियौ । तत्काल प्राण छूटा,  
कुंवर हाथां मांदै मृत पायौ । उवा बात राजा नै ठीक पुहती ।  
राजा कह्यौ—ब्राह्मण डाकी है । ब्राह्मण नै जलायद्यौ, नहींतर  
कुंवर जीवतौ हुवै । तद बांभणों, बांभणी दोनूँई माता चौथ रै

चर्चा, ग्रामंत्रित करने के गीत आदि गाया करती । इस प्रकार व्रत करते  
बारह वर्ष होगये । मद-मांस लाते बहु के देवर और जेठ ने (उसे)  
देखी । पांच-सात बार इस विषय की चर्चा हुई ।

एक दिन ब्राह्मणी मद-मांस लेकर आती है । कुटुम्ब के आदमी ने  
कोटवाल को और सिपाही को ब्राह्मण के साथ भेजे । वे लोग ब्राह्मणी  
से आकर मिले । ब्राह्मणी मन में भय खाने लगी । इतने में चौथ-माता  
का ध्यान किया । चौथ-माता ने उस समय कहा—‘डरो मत’ ।

प्रोहित और प्यादा-सिपाही ने पूछा—‘ब्राह्मणी तुम्हारे पास क्या  
है ?’ ब्राह्मणी ने उनसे कहा—गुड़, घी माता-चौथ के भोग लगाने के  
लिए है । और तो कुछ भी नहीं है । तब ब्राह्मण ने कहा—भूठ बोलती  
है—प्रसत्य वचन कहती है । सरकारी प्यादे-सिपाही ने पछा दूर करके  
देखा । तो (उसे) गुड़-घी नजर आया । तब दूत ब्राह्मणी के पाँवों पड़ा ।  
उसने अपने कोटवाल के पास वापिस जाकर कहा—ब्राह्मण भूठ कहता

रैथान में बैठा, कुंवर उठे पौढ़ियौ । ध्यान माता चौथ रौ कर  
 रखा छै । ध्यान करतां पुहर छः व्यतीत भया । आधी रात हुई,  
 तितरै माता चौथ च्यार हस्त सूं आण दरसण दियौ । बांभण-  
 बांभणी पगै लागा । माता कह्यौ—थै क्यूं आवाहन कियौ ? बांभणी  
 बोली, म्हांमें बहुत संकट पड़ियौ, सो संकट भांजौ । जद माता  
 बोली—तैं बांभणी मद-मांस क्यूं टाळियौ, हूं आफैही साम्भती  
 हुती । पण तौमें बडौ खून पड़ियौ—पण—मद-मांस क्यूं चढ़ायौ  
 कर । बांभणी कह्यौ—हे माता, तोनूं चौडै—भालै आण चढास्यूं  
 तूं मांहरौ संकट भांजा । तो बाहिरौ माहरौ संकट कुंण काटै ।  
 तूं भवांनी संकट री भांजणहार छै । इतरौ सुण भवांनी बोली  
 तूं इण कुंवर री मारवी राखै, हूं अमृत ले आऊँ । भवांनी  
 शिवजी कनहै कैलास परबत गई । शिव भवांनी नै उठ आदर

है । इसके विरुद्ध सारी बातें झूठी हैं । कोटवालने ब्राह्मण को एक  
 ओर किया—ब्राह्मणी को नमस्कार कर उसे सम्मान सहित घर को  
 प्रस्थान की ।

ब्राह्मणी घर आई, उसने पूजा की—और फिर स्वयं प्रसाद लिया ।  
 अब ब्राह्मणी—व्रत तो करती है लेकिन (आसमाता को) मद-मांस नहीं  
 चढ़ाती है । इस प्रकार करते-करते पांच सात वर्ष गुड़ (प्रसाद लगाकर)  
 पूजा करती रही । चौथ-माता इस प्रकार नाराज होगई ।

अब एक दिन राजा का कुंवर उस ब्राह्मणी के ससुर के घर आया ।  
 उस ब्राह्मण ने ( प्रेम करने के लिए ) कुंवर को ऊपर उठाया । उसी  
 समय उसके प्राण छूट गए—कुंवर हाथों में ही मर गया । यह बात  
 ठीक इसी प्रकार राजा के पास पहुँची । राजा ने कहा—ब्राह्मण डाकी  
 है । या तो कुंवर को ब्राह्मण जिलादे, अन्यथा उसे जलादिया जाय ।  
 तब ब्राह्मण और ब्राह्मणी दोनों ही माता-चौध के मन्दिर में जा बैठे ।  
 कुंवर को वहीं सुलाया गया । माता का ध्यान करते छः पहर व्यतीत

दियौ, कछौ-भवांनी, क्यूं आई ? तद चौथ माता बोल नै कछौ, म्हारै सेवक मैं संकट पडियौ सौ अमृत रौ कुपौ द्यौ, ज्यूं हूं संकट भाजूं । तरै शिव जी कहै-चन्द्रमा कनहै जाय, तोनूं अमृत देसी । माता चन्द्रमा कनै आई । चन्द्रमा उठनै नमस्कार कियौ, पूछियौ हे भवांनी, आज घन-भाग तूं आई, काम आई सो कहौ । तरै माता कछौ-चन्द्रमा मौनूं अमृत रौ कुपौ दे, ज्यूं हूं म्हारै सेवक रौ संकट भाजू । तरै चन्द्रमा कछौ-चौथ म्हारौ वरत मैं सीर करै तौ अमृत द्यूं । माता कछौ-चन्द्रमा च्यार घड़ी चौथ रै दिन रात जाता, तद चन्द्रमा ऊनै तरै वरत हूसी । च्यार घड़ी रौ थारौ वरत है । तरै चन्द्रमा कछौ भला माता गणेश कनै हाल, ज्यूं अमृत ल्यावां । चन्द्रमा चौथ माता दोनूं ई गणेश कनै आया । गणेश उठनै ऊभौ हूअौ । आज थै भलाई आया, माता

होगये । आधी रात हुई तब माता चौथ ने चार-भुजा धारण कर दर्शन दिए । ब्राह्मण और ब्राह्मणी पैर पड़े । माता ने कहा—आप लोगों ने मुझे क्यों निमन्त्रित किया ? ब्राह्मणी ने कहा—हम में बड़ा संकट आ पड़ा है हमारे संकट को आप काटें । तब माता ने उत्तर दिया—हे ब्राह्मणी, तुमने मद-मांस सेवा में चढ़ाना क्यों बन्द कर दिया ? मैं इसे अपने आप समझ लेती । आप लोगों पर संकट आया है—मद-मांस तो थोड़ा-बहुत प्रसाद-रूप में चढ़ाया ही कर । ब्राह्मणी ने कहा—हे माता, मैं आपको खुलमखुले आकर चढ़ाऊंगी—आप हमारा संकट काटें । आपके बिना हमारा संकट कौन काटे ? हे भवानी, आप संकट को दूर करने वाली हैं ।

इतना सुन भवानी बोली—तू इस कुँवर की निगरानी रखते रहना—मैं अमृत लेकर आती हूँ ।

भवानी शिवजी के पास कैलाश-पर्वत पर गई । शिव ने उठकर भवानी को आदर-सत्कार दिया । कहा—‘हे भवानी ! कैसे आना हुआ ?’ तब चौथ-माता ने बोल कर कहा—मेरे भक्त पर संकट पड़ा



कह्यौ गणेश थां कनै अमृत है, सो म्हानै यौ । तद कह्यौ, माता क्यूं ही एक यौ थारै वतर मैं म्होनूई भेलौ ! तरै माता कह्यौ—म्हारै साथै तोनूई पूजसी । तरै गणेश अमृत दियौ । माता चौथ अमृत लै बांभणी कनै आय बांभणी नै अमृत दियौ । विनै कह्यौ—हिवै तूं बांभणी छांटौ नांख ज्यूं कुंवर उठ ऊभौ हुवै । बाभण उठ प्रदक्षिणा दीन्ही, अमृत रौ कळसियौ उरहौ लियौ । धूप खैव, छांटौ नांखियौ । राजा रौ कुंवर उठ ऊभौ हुवौ । देवी चौथ रै पगै लागौ । बांभणी माता रै पगै लागी । माता बांभणी नै कह्यौ, हे

है—अतः अमृत का कुप्पा आप दें । जिससे उसका संकट दूर कर सकूँ । तब शिवजी ने कहा—आप चन्द्रमा के पास जायें । (वह) आपको अमृत देगा । माता चन्द्रमा के पास आई । चन्द्रमा ने उठकर नमस्कार किया । कहा—हे भवानी ! आज हमारे अहोभाग्य हैं, जो आप पधारी हैं । जिस काम के लिए आप आई हैं, कहें । तब माता ने कहा—हे चन्द्रमा, मुझे अमृत का कुप्पा दें जिससे मैं अपने सेवक का दुःख दूर करूँ । तब चन्द्रमा ने कहा—हे चौथ-माता, आप यदि अपने व्रत में मेरा भी हिस्सा रखें तो मैं आपको अमृत दे सकता हूँ । माता ने कहा—चार पहर रात्रि बीतने पर अब तुम उदय होगे, तभी यह व्रत पूर्ण होगा समझा जायगा । इस पर चन्द्रमा ने कहा अच्छा ( बहुत ठीक ); माता, अब आप गणेश के पास चलें, वहीं से अमृत ले आवें । चन्द्रमा और चौथ-माता दोनों ही गणेश के पास आए । गणेश उन्हें देखकर खड़ा होगया । आज आपने पधार कर बड़ी कृपा की । माता (आने का कारण) कहिए ? गणेश, तुम्हारे पास अमृत है सो हमें देवो । तब कहा, माता तुम्हारे किसी एक व्रत में तो मुझे भी साथ रखें । माता ने कहा—मेरे साथ तुम्हें भी ( लोग ) पूजेंगे । तब गणेश ने अमृत दिया ।

बांभणी ! म्हारी पूजा करती पाछ मत राखै, थारौ संकट हूं भांज  
 स्यूं माता पछै आपणै थान नूं मुकांम गई, राजा रौ कुंवर उठ  
 आपणै घरै आयौ । राजा प्रभात रौ बांभणी रै पगै लागौ ।  
 बांभणी चौथ रै वरत री बात कही । राजा बांभणी रै मनरी लही ।  
 राजा पिण चौथ रौ व्रत भालियौ । चौथ रौ वरत बांभणी संसार  
 में चलायौ । आगै वरत गुपत करता । देवता इन्द्र लोक में वरत  
 करै है । चौथ रौ वरत करै है तिणनै चारुईं खूंट आढी छड़ी

---

माता-चौथ अमृत लेकर ब्राह्मणी के पास आई—आकर अमृत  
 ब्राह्मणी को दिया । उसे (ब्राह्मणी को) कहा—हे ब्राह्मणी तुम अब इस  
 पर ( मरे हुए राजकुमार पर ) पानी के छीटें डालो—कुंवर अवश्य  
 उठकर खड़ा हो जायगा । ब्राह्मण ने उठकर (चौथ माता की) परिक्रमा  
 दी और अमृत का पात्र अपने पास लेलिया । धूप आदि करके, पानी  
 का छीटा फेंका—राजा का कुंवर उठकर खड़ा होगया ।

ब्राह्मणी माता के पैरों पड़ी । माता ने ब्राह्मणी से कहा—हे  
 ब्राह्मणी ! मेरा पूजा करते समय किसी प्रकार की ( पूजा में ) कमी  
 मत आने देना । तुम्हारा संकट में दूर कलूंगी । माता इसके उपरान्त  
 अपने स्थान को चली गई; राजा का कुंवर भी उठकर अपने घर आया ।  
 दूसरे दिन राजा ब्राह्मणी के पाँवों लगा । ब्राह्मणी ने चौथ के व्रत की  
 ही महिमा है—ऐसा कहा । राजा ब्राह्मणी के मन की बात समझ  
 गया । राजा ने भी चौथ का व्रत करने का शंकल्प कर लिया । (यह)  
 चौथ का व्रत संसार में ब्राह्मणी ने प्रारम्भ किया । पहले व्रत गुप्त  
 किया करते । भगवान 'इन्द्र-लोक' ( स्वर्गलोक ) में व्रत करते हैं—  
 वे चौथ का व्रत करते हैं ।

दैणवाळी कोई नहीं । धूप खेवणा, दीवा करणा, सुगंध पुहप चढावणा, आरवा चादणा, चूरमौ कर श्री गणेश जी नै, श्री चौथ माता नै भैळ पूजणा । किरडवाळी तौ केरडा आया करणी । चांद ऊगाळी ऊगै करणी । चौथ'मातारौ वरत करै तिकण नै मन-कांमना पूरवै, लिछमी रौ सुख मिलै, रिण-संप्राम मै जय प्राप्ति होय ।

मन कांमना उठै होय सो पावै, देवळोक वासौ हुवै, सातमै जन्म मुगति होय ।

---

धूप करना, दीपक करना, सुगन्धित फूल चढ़ाने, अक्षत चढ़ाना—चूरमा बनाकर श्री गणेश जी को और श्री चौथ-माता को साथ ही साथ पूजना ।

चौथ-माता का जो कोई व्रत करता है—उसकी मनोकामना सिद्ध हो । उसे लक्ष्मी का सुख लाभ हो, युद्ध क्षेत्र में उसे विजय प्राप्त हो । जो कुछ भी मनोकामना हो, वही प्राप्त करे । देव-लोक में निवास हो और सात जन्मों में, जन्म से उसकी मुक्ति प्राप्त हो ।

---



## १५—अथ कथा सोमवती की

अमूक नगर मांहेँ ब्राह्मण एक बसै । तेरै तीन पुत्र नै एक कन्या । कितरा एक दिन व्यतीत हुवा छै, एक दिन एक अतिथ भिक्षा नै आयौ । आई अर आशीरवाद कियो । ताहरां ब्राह्मणी बहूवां नूँ कह्यौ; वेटा भिक्षा देवो । बहूवां भिक्षा दीवी । ताहरां ब्राह्मण आशीरवाद कियो—जु पुत्रवती सौभाग्यवती भव ।

फेर ब्राह्मणी आपरी बेटी नूँ कह्यौ, जु वेटा भिक्षा थौ । ताहरां बेटी ही उठी, भिक्षा दी । ताहरां ब्राह्मण आशीरवाद कियो, जु धर्मवती भव । ताहरां ब्राह्मणी रै मन मांहेँ आसंका हुई, जु बहूवां नै और आशीरवाद दियौ, अर बेटी नै और भाँति आशीरवाद कियौ । ताहरा ब्राह्मणी बेटी नै लेई नै ब्राह्मण रे

---

### सोमवती की कथा

किसी नगर में एक ब्राह्मण रहता था । उसके तीन पुत्र और एक कन्या थी । बहुत दिन ( जब ) बीत गये, एक दिन एक जतिथि भिक्षा के लिये आया । आकर उसने आशीर्वाद दिया । तब ब्राह्मणी ने बहुओं से कहा—बेटी, ( इसे ) भिक्षा दे दो ! बहुओं ने भिक्षा दी । तब ब्राह्मण ने आशीर्वाद किया—(आव लोग) पुत्रवती और सौभाग्यती हों ।

फिर ब्राह्मणी ने अपनी बेटी से कहा—बेटी तू भी भिक्षा डाल दे । तब बेटी भी उठी, भिक्षा डाल दी । तब ब्राह्मण ने आशीर्वाद किया—धर्मवती बनो । तब ब्राह्मणी के मन में संशय उत्पन्न हुआ—बहुवों को और आशीर्वाद दिया और बेटी को दूसरी भाँति का आशीर्वाद दिया । तब बेटी को लेकर ब्राह्मणी, ब्राह्मण के पीछे हो ली—उसके घर गई

रै बांसै लागि, धरै गई—ब्राह्मण रै पगै लागी । ताहरां ब्राह्मणी पूछियौ जु बाई कृण निमित्त आई । ताहरां ब्राह्मणी हाथ जोड़ि नै कह्यौ, जु स्वामी थां म्हारो बहूबां नै आशरीवाद और भांति कियौ, बेटी नै और भांति कियौ—सु कौण कारण ? ताहरां ब्राह्मणी कह्यौ जु बाई ईयै बात रौ पूछै मत—म्हें इवहीं कह्यौ, स्वभाव सू । ताहरां ब्राह्मणी बहुत दठ कियो जुई यै बात रौ निरणौ कहां हो जु वणै । ताहरां ब्राह्मण कह्यौ जु बाई कहां थकां तूं बहुत दुख पाईस । ताहरां ब्राह्मणी कह्यौ—अवस्य कर कहौ । ताहरां ब्राह्मण कह्यौ जु बाई ईयै कन्या रै विवाह विषै चौथे फेरै इण भांति रौ उपद्रव हुसी जु बाई रौ घर शान्त हुस्यै ताहरां ब्राह्मणी कह्यौ, जु भाई, ईयै बात रौ कहीं भांत जतन हुवै सू कहौ ।

---

और ब्राह्मण के पैरों पड़ी । तब ब्राह्मण ने पूछा—बहन, तू कौन निमित्त ( किस कारणवश ) आई हो ? तब ब्राह्मणी ने हाथ जोड़कर कहा—स्वामिन् आपने बहुवों को तो आशरीवाद और प्रकार से दिया और बेटी को दूसरी भांति से दिया, इसका क्या कारण है ? तब ब्राह्मण ने कहा—बहिन इस बात को मत पूछो । मैंने वैसे ही स्वभाव-वश कह दिया । तब ब्राह्मणी ने बड़ा ही जिद्द कर लिया—आपको इस बात का कारण तो बताना ही होगा । ब्राह्मण ने तब कहा—बहन कहने पर तुम्हें बहुत दुःख होगा । तब ब्राह्मणी ने कहा—( आप ) अवश्य ही कहें । इस पर ब्राह्मण ने कहा—बहन इस कन्या के विवाह के समय चौथे फेरे में इस प्रकार का उपद्रव होगा कि ( उसमें ) इस कन्या का पति शान्त हो जायगा ( पति मर जायगा ) । तब ब्राह्मणी ने कहा—हे भाई, इस बात का किसी प्रकार कोई उपाय हो वह बतलावें ।

ताहरां ब्राह्मण कह्यौ—जु बाई एक जतन छै जु संघल द्वीप में सोमां छीपी रहै छै सु जे उवा बीबाह मांहैं आवै तो जतन हुवै । इतरी पूछि ब्राह्मणी घरै आई । ताहरां आपरा बेटा नै कह्यौ जु थे कोई बाई रै साथै जावौ । बड़ा बेटा दोइ हुंता तिकां नाकारौ कियौ । छोटै भाई कह्यौ—मां हूं बाई रै साथै जाईस अवस्य । ताहरां बहिन-भाई दोनूं जणा प्रभात समा चालिया । चालता-चालता समुद्र रै तीर आइ रह्या । ताहरां समुद्र रै तीरै बडो एक वृक्ष हुंतौ, तै नीचै बहिन-भाई आइ वैसि रह्या । भूखाहीज बैठा रह्या—क्युं जुड्यौ नहीं । ताहरां उवै वृक्ष ऊपर गरुड़ रा बेटा हुता, ऊवां दीठो जु ब्राह्मण भूषा रह्या । ताहरां सन्ध्या रै समईयै गरुड़ रां बच्चां री माता चूण लेकर आई—भली चूण ल्याई । खुसी थकी बेटां आगै—मेल्ही पण बेटा चूण

तब ब्राह्मण ने कहा—एक उपाय है, सिंघल द्वीप में सोमां छीपी रहती है । यदि वह विवाह में आ जाय तो कुछ यत्न हो सकता है । इतना पूछकर ब्राह्मणी घर पर आई । तब अपने पुत्र से कहा आप में से कोई बहन के साथ जायेगा ? बड़े दोनों पुत्रों ने इन्कार कर दिया । छोटे भाई ने कहा—मां, मैं बाई के साथ अवश्य जाऊंगा । तब दोनों बहन-भाई प्रभात के समय चले । चलते-चलते वे लोग समुद्र के किनारे आ-पहुंचे ।

उस समुद्र के किनारे एक बड़ा वृक्ष था—उसके नीचे बहिन-भाई दोनों आकर बैठ रहे । भूखे ही बैठे रहे—कोई साधन जमा नहीं । तब उस वृक्ष के ऊपर गरुड़ के बेटे थे, उन्होंने देखा—ब्राह्मण भूखे रह गए । जब संध्या समय गरुड़ के बच्चों की माता उनके लिये चुगा लेकर आई—वह बड़ा अच्छा चुगा लाई । उसने प्रसन्न होकर बच्चों के आगे रखा । लेकिन बच्चे चुगा खा नहीं रहे हैं, माता से वे ( लोग ) बोल भी नहीं रहे हैं । इस पर माता ने कहा—बच्चों, आप



खावे नहीं, न माता सूं बोलै। ताहरां माता कह्यौ, रे बेटा थे बोलो नहीं, अर चूण खावौ नहीं—किसे वासतै। ताहरां लहूडौ बेटा बोलियौ, जु माता म्हें चूण क्युं करि खावां। म्हारै नीचे दोई ब्राह्मण भूषा बैठा छै। जे ऊवारों समाधान हुवै तो म्हें चूण खावां। ताहरां गरुडहरी स्त्री नीचे आई। आईनै पूछियौ; जु थे कोण छी, केथ जासौ। ताहरां उवां कह्यौ—थे जीमौ, अंन सामग्री हूं देईस। अर सवारै थानूं समुद्र उतारीस। ताहरां ऊवानूं अंन दियौ, ऊवै जीमिया। तापछै सवारै ऊवानूं गरुडणी पार उतारिया। पछै उवे दोनूं जणा सोमारौ घर पूछिनै गया। उवे बहिन-भाई एकान्तडेरै रह्या। सोमारै घरे मास छः ताई सेवा करी, सोमां न जाणै। एक दिन सोमां बहुवां नै पूछियौ, जु बेटा थे इतरो घर सास तौ क्युं लीपो, किसै कारण। ताहरां बहुवां

---

लोग बोलते भी नहीं रहे हैं और चुग्गा भी नहीं खा रहे हैं, इसका क्या कारण ? तब छोटेवाला बच्चा बोला—मां, हम लोग चुग्गा किस प्रकार कर सकते हैं। हमारे नीचे ( के स्वान में ) ब्राह्मण भूखे बैठे हैं। यदि उनका काम बने तो हम चुग्गा कर सकते हैं। तब गरुड की स्त्री नीचे आई। आकर पूछा—आप कौन हैं ? कहाँ जायेंगे ? तब उसने कहा—आप भोजन करें, अन्न सामग्री आदि मैं आपको दूंगी और कल आपको समुद्र पार कर दूंगी। तब उनको अन्न दिया—उन्होंने भोजन किया। उसके बाद दूसरे दिन गरुडनी ने उन्हें समुद्र पार किया। फिर वे दोनों सोमां का घर पूछकर ( उसके ) यहाँ गए। वे दोनों बहन-भाई अलग स्थान में रहने लगे। छः महीनों तक सोमां के घर की सेवा की, सोमां को मालूम भी नहीं हो सका।

एक दिन सोमां ने अपनी बहुओं से पूछा—बेटी, आपने इतना सुन्दर घर को क्यों साफ किया है—इसका क्या कारण है ? तब

कह्यौ जु माजी म्हैं लीपा नहीं छां । तौ कुंण लीपे छे । ताहरां दिन एक सोमां जासूस कीबी । पाछली राति देखे तौ ब्राह्मणी लीपे छे अर भाई पाणी ल्यावे छे । ताहरां सोमां कह्यौ, थे कुंण छौ । उवै कह्यौ—म्हैं ब्राह्मण छं । किसे कारण इतरो दठ कियौ—सू कहौ । ताहरां भाई कह्यौ—म्हारै काम छे, इयै वास्तै म्हैं आया छं ताहरां सोमां उवारै साथै चली । वांसै बहुवां नूं कह्यौ—जुथे कोई बिगाड़ हुवै तो उपाडौ मतां, ज्युं होवै सूं ढांकि राखि ज्यो । सोमां उवां रै साथै गई । ब्राह्मणी रौ विवाह कियौ । सप्तपदी में कन्यारौ वर शान्त हुवौ । ताहरां सोमां एकै परिक्रमा तौ सोमवती रै दिन अश्वथरी, तेरौ पुन्त दियौ । तै कर बालक जीवियौ । उठि ऊभौ हुवौ, सगळे आनन्द बधाई हुई । सोमां आपरै घरै गई । आगै देखै तौ घर में दोइ उपद्रव हुवा छै, ढांक

---

बहुओं ने कहा—हम लोग लीपा-पोता नहीं करती है । तो फिर कौन लीपता है ? तब फिर एक दिन सोमां ने जासूसी की । पिछली रात्रि में देखा—ब्राह्मणी लीप रही है और भाई पानी ला रहा है । तब सोमां ने कहा—आप कौन हैं ? उन्होंने कहा—हम ब्राह्मण हैं । कौन कारण इतना जिद्द कर रहे हैं—बतावें । तब भाई ने कहा—हमारा आपसे काम है—इसलिये हम लोग आये हैं ।

तब सोमां उनके साथ चली । जाते समय बहुओं से कहती गई—यदि कोई कार्य में ( पीछे से ) कोई खराबी हो तो उसे आप उठाना मत, जैसा हो उसे उसी प्रकार ढाँक कर रख देना । सोमां उनके साथ चली । ब्राह्मणी का विवाह किया । सप्तपदी ( विवाह के समय सात वचन ) में कला का वर मृत्यु को प्राप्त हुआ । तब सोमां ने एक परिक्रमा का पुण्य ( जो सोमवती के दिन पीपल की परिक्रमा किया करती थी ) दिया । इस कारण बालक जीवित हो उठा । वह खड़ा हो गया, सब

राधिया छै । पछै सोमवती अभावस्या आई, ताहरां सोमां फूल ले अर जाइ अश्वथरी परिक्रमा कीवी । पहिली एक अष्टोत्तर शत परिक्रमा कीवी, तांहरां पहिली पडियो हुंतो सूं जीवायो । ता पछै वळै परिक्रमा कीवी । बीजी परिक्रमा पूरी हुई ताहरां बिन्हें पडिया हुता सू जीविया । ता पछै तीसरी परिक्रमा देखर घरै आई । सगळे आनंद विनोद हुआ । सोमवती अभावस्या रै दिन जिका स्त्री अश्वथरी परिक्रमा धर्मशील सुं कर सै तिकै नै ईयै प्रकार रै पुण्य रौ फल हुस्यै । इति सोमवती अभावसि अश्वथरी परिक्रमा ।

लोगों में आनन्द और बधाइयां हुई । सोमा अपने घर आई ।

यहाँ आकर वह देखती है कि घर में दो उपद्रव हुए हैं, उन्हें डाँक कर रहे हैं । इसके बाद सोमवती अभावस्या आई—तब सोमा ने पीपल की परिक्रमा की । पहले एकसौ आठ परिक्रमाएं कीं, इसपर जो पहले पड़ गया था, वह जीवित हुआ । इसके उपरान्त फिर परिक्रमा की । दूसरी परिक्रमा पूरी हुई—इसके उपरान्त तीसरी परिक्रमा देकर घर आई । सभी आनन्दित और खुशी हुए । सोमवती अभावस्या के दिन जो स्त्री पीपल की परिक्रमा धर्म-ध्यान के साथ करेगी, उसे इस प्रकार के पुण्य का फल होगा ।



## १६-अथ श्री सनीसर जी री वात लिख्यते

श्री उज्जैणी नगरी, श्री विक्रमादित्य राजा राज करै छै ।  
तिण प्रस्तावै विक्रमादित्य नूँ शनीसर-बारमो आवै छै । एकै  
प्रस्तावै राजा सिकार चढ़ियो छै । एक सूअर वांसै उतरियो ।  
फिरतां फिरतां सुअर लगोबग जायै छै । कितरी एक धरती  
युंहीज गयो । साथ सगळो वांसलो तूट थाको, घोड़ो पिण तूट  
थाको, राजा पिण तिसिड हुअो । तिसियै थकै अठै दुख पायो ।  
राजा बाग खांच ऊभो रह्यो । सूअर अलोप हुअो । घोड़ा रा  
पडत ही प्राण छूटा । तिण प्रस्तावै एक गोवाळियो आयो-राजा नै  
बोलायो । तिसयो थको बोल सकै नहीं-हाथ सूँ बोक मांडी ।  
गोवाळियै राजानूँ थोड़ो पाणी पायो । राजा सावचेत भयो ।  
घोड़ा रो पिलाण सोनै री साकत थो सो गोवाळिया नै दोनौ ।

## कथा श्री शनिश्चर जी की

उज्जैनी नगरी—श्री विक्रमादित्य राजा राज्य करता है । उस  
समय विक्रमादित्य को बारवां शनीश्चर आया है । एक समय राजा  
शिकार को चढ़ा है । एक सूअर के पीछे उतरा । इधर-उधर भागते  
बहुत दूर तक वह सूअर के पीछे लगा रहा । कितनी दूरी तक तो बैसे  
ही गया । सभी साथवाले थककर पीछे रह, घोड़ा भी थककर रह गया,  
राजा भी प्यासा हुआ । प्यास के मारे यहां दुःख पाया । राजा घोड़े  
को बाग पकड़ कर ठहर गया । सूअर अदृश्य होगया (अलोप होगया) ।  
घोड़े के गिरते प्राण निकल चले । उस समय एक म्वाला आया । राजा  
को (उसने) बुलाया । प्यास के मारे बोला नहीं जा सका—हाथ से  
पानी पीने के लिए घञ्जली मांडी । म्वाले ने राजा को थोड़ा पानी  
पिलाया । राजा सचेत हुआ । घोड़े का पलाण (जींण आदि) सोने

हिवै राजा नैडी बसती विचार नै एकै सहर आयो । आवीनै एक महाजन रै हाटै आय बैठो । बडो हाट बिडांड, मोटो विवहारियो हुतो ! सु दांमांसुं तूटो । लेहणा था तिकै पिण अटक गया, तिण रै हाट आय नै बैठो । साहरै, विणत्र घणो चालियो । घुरां घापटां आवण लागी, खत चुकावण लागो । घरै पिण हळ बढ़ हई । साह वोचारियो जे उत्तम पुरुष घरै आयो नै बैठो तिण रै प्रसादै लाभ घणो हुवो । ईतरै जोमण बेळा हई-बोलाई नै साह विक्रमादित्य नूं घरै लेगयो । जीमायौ, जीमाइ नै माळिया मांहि विछामणो कर दीघो । आपरी स्त्री नै कह्यौ—ओ उत्तम पुरुष छै, इण रै पग छेह है, आंपांरो भलो हुआ । आंपांरै पुत्री मोटी छै, वर जोवता सो बैठां आय मिळियो । थे कहो तो इण नै परणावां तरै स्त्री कहण लागी—जिण रै पग छैरे आंपणौ भलो हुवो, बनवंत हुवा तिण नूं परणावो । तरै स्त्री कहण लागी—घणो भलो होसी,

---

का था वह खाले को दिया । अब राजा नजदीक की बस्ती का सोचकर एक शहर में आया । आकर एक महाजन की दुकान पर जा बैठा । बड़ी दुकान, बड़ा उसका ठाठ-बाट, बड़ा व्यापार करने वाला था—सो पैसे हीन होगया था । उसका ( लोगों में दाम ) लेने थे—वह भी अटक गया, उसी की दुकान पर आकर बैठा । साह—( साहूकार ) के व्यापार अच्छा चला । देनेवाले बड़े जोरों से दाम देने आने लगे—खत-हुण्डी आदि चुकाने लगे । घर पर बड़ी अमन-जैन हुई । साहूकार ने विचारा—शुभ मनुष्य घर आकर बैठा, उसी की कृपा से अधिक नफा हुआ । इतने में भोजन का समय हुआ—साहूकार विक्रमादित्य को बुलाकर घर ले गया । भोजन करवाया, भोजनोपरान्त महल में विस्तर लगा दिया । अपनी पत्नी से कहा—यह शुभ लक्षणों का व्यक्ति है, इसके पदापण से अपना कल्याण हुआ । अपने पुत्री बड़ी है, वर की तोज में है, तो यह घर बैठे ही भगवान मे मिला दिया । तुम कहो तो इसे ही

पिण भलै लगन जोय परणावो । साहरै जिम पैहली हुतो  
 तमहीज हुआओ । हिवै एक दिन साहरै राजारो बुलावौ आयो ।  
 हिवै रांगिया नै गैणा गाठां साहरी... ..हजूर घडावै ।  
 हजूर... ..घडाइजै छै । तिण प्रस्तावै एक सवालाख रो हार  
 रांगीरै हुतो सो राजा साहेनै कहण लागो, इण हार रो कीमत  
 करावो । साह नै तेडनै हार सूंपियो । आणि नै माळियारी खूँटी  
 मेलियो । साह मालिया में आडो हुवो, सूता विक्रमादित्य बैठो  
 छै । तिण मालिया में चित्रांम रो मोर सवालाख रो हार गिळियो ।  
 राजा विक्रमादित्य दीठो, पिण बोलियो नहीं । जितरै साह  
 जागियो—हार सांभो जोयो, हार दीठो नहीं । जरै साह राजा  
 विक्रम नै पूछियो—हार बतावो । जणा बिहुं मांणस था—तीजो  
 मांणस कोई आयो नहीं । कैतो हार मो मांहै—कै तो मांहै ।

व्याह दें । तब ( साह की ) स्त्री कहने लगी—जिसके पदार्पण से अपना  
 कल्याण हुआ, धनवान हुए, उसी को विवाह दो । फिर स्त्री कहने लगी—  
 बड़ा अच्छा होगा, यदि शुभ लगन देखकर शादी कर दें । साह की जैसी  
 पहले स्थिति थी वैसी हो गई ।

अब एक दिन साह को राजा का बुलावा आया । ये अब गहने-  
 गाँठे साह की मारफत बनवाये । इसकी मारफत बनने लगे । इसी बीच  
 में एक लाख का हार रानी का था, सो राजा साह को कहने लगा,  
 इस हार की कीमत करवावो । साह को बुलाकर हार सौंप दिया ।  
 आकर महल में खूँटी पर रखा ( खूँटी पर टांगा ) । साह महल में  
 थोड़ी देर के लिये सो गया, विक्रमादित्य बैठा है । उस महल में मोर  
 का चित्र मांडा हुआ है । उस चित्र के मोर ने सवालाख के हार को  
 निगल लिया । राजा विक्रमादित्य ने देखा, लेकिन ( वह ) बोला नहीं ।  
 इतने में साह जागा—हार को सामने देखा—हार दिखाई नहीं दिया ।



विक्रमादित्य नुं सोच हुई रह्यो—कहूं जे चित्रांम रै मोर हार गिळियो तो कोई मानै नहीं। तरै तिण कह्यो—हूं न मानूं। हिवै सुसरो जमाई भगइता राजा पासै गया। राजा ! ओ कोई परदेसी छै—हूं ओ छबू नहीं। माहरै हाट आइ बैठो हुतो। भल्लो बीद देखिनै पुत्री परणाई। पिण-पलीतरा लखण जांख्या नहीं। आबी माळिया में बैठो—तितरै माळिया मांई जाइनै हार खूंटी टेरयो हुंतो। बिहुं टाळ तीजो मांणस और को आयो नहीं—इणै चोरचौ। हिवै मुकर गयो। राजा न्याव करौ। राजा कह्यो परदेसी हार परो दै। विक्रमादित्य कहण लागो, हूं न जाणूं—मैं न मेलियो। राजा हुकम कियो—फिळसै जाय चौरंगो करो। चौरंगो कीधो। कितराक दीनां तांई विक्रमादित्य आ अवस्था भोगवी। तठै अवस्था भोगवतां साढो सात बरस पूरा हुवा।

तब साह ने राजा विक्रम से पूछा—हार बताओ। दो ही व्यक्ति थे, तीसरा कोई व्यक्ति आया नहीं। या तो हार मेरे पास है या फिर तुम्हारे पास। विक्रमादित्य को सोच हो गया—यदि कहूं कि चित्र वाले मोर ने हार निगल लिया, तो कोई मानेगा नहीं। तब उसने कहा—मैं नहीं मानता ( मैं नहीं जानता )। अब ससुर और दामाद लड़ते-भगड़ते राजा के पास गए। राजन् ! यह कोई विदेशी है—मैं जानता नहीं। मेरी दुकान पर आकर बैठा था। अच्छा वर समझ कर कन्या की शादी इससे की। लेकिन दुष्ट के लक्षण नहीं जान सका ( लक्षण जानने में नहीं आ सकें )। महल में बैठा था—इतने में महल में जाकर हार खूंटी पर टांग दिया। हम दोनों के अतिरिक्त तीसरा कोई अन्य आया नहीं—इसी ने ही चोरा है। अब इन्कार कर गया। राजन्, न्याय करें। राजा ने कहा—परदेशी, हार दे दो। विक्रमादित्य कहने लगा, मैं नहीं जानता, मैंने नहीं रखा। राजा ने हुकम दिया, फिल<sup>१</sup> से जाकर [१] एक स्थान विशेष

दया बाहुड़ी—तरे साहरी बेटी कहण लागी—म्हारै तो भरतार विक्रमादित्य छै—इण भव ए भरतार छै, इणरी खिजमत करीस। हिवै खिजमत करतां राजा मरणरो भाव छौड़यो। हिवै खिजमत करतां थावर उतरियो। तिण समै थावर आपरै डील आयो, परतिख हुवो विक्रमादित्य कहण लागो—राज थी चूको, कुटंब थी टाल्यो, चोरंगो करायो। जिणनू बारमो थावर आवै तिणनू सुख कठायो। थावर हस्यो—हसनै प्रसन हुवो। राजा कहै दिन-दिन सराप हुवो, हिवै हाथ पग सूजण लाग। थावर कहण लागो, तूठो ! मांग-मांग !! राजा कहण लागो—तू सजपूज आवै, तरे राज थी चुकायो, कुटंब थी टाल्यो, हाथ-पग बढ़ाया, चोरंगो कीधो, घणो दुख दीधो। हिवै उतरियो, तरे हाथ-पग नवा आया। माहरै हिवै सहू थोक छै—हुं मांगू किणही

इसके हाथ पैर काट दो। उसे चौरङ्गा किया। कितने ही दिनों तक विक्रमादित्य ने ( अपनी ) यह हालत भोगी। इस प्रकार इस अवस्था को भोगते साढ़े सात वर्ष बीत गये। दशा पलटी—तब साहू की पुत्री कहने लगी, मेरा पति तो विक्रमादित्य है—इस जन्म का यही पति है। मैं इसकी सेवा करूंगी। अब सेवा करते राजा ने मरने का भाव छोड़ा। इस प्रकार सेवा करते शनीश्चर की दशा उतरी। तब शनीश्चर अपने शरीर में उतरा—प्रत्यक्ष दर्शन हुए।

विक्रमादित्य कहने लगा—राज से हटाया, कुटुम्बी लोगों से दूर करवाया, चौरङ्गा करवाया ( हाथ-पैर कटवाये )। जिसे बारम्बां शनीश्चर लगे, उसे सुख कहाँ ? शनीश्चर भगवान् हैंसा—हँसकर प्रसन्न हुआ। राजा ने कहा—दिन-दिन शाप लगता रहा—अपने आप हाथ-पैर सूजने लगे। शनीश्चर भगवान् कहने लगा—तुम पर प्रसन्न हूँ माँस ! माँस !! राजा कहने लगा—तू सज-धज के साथ आया, तब

कनै नहीं । हूं विक्रमादित्य पर दुख हरता सो विदरूप हुआ । तिणरो दुख दूर कर । सनीसर कहण लागो । देवता रा दरसण यूं ही आपै निरफळ न जायै, तिण सुं हूं तूठो, तूं मांग ! राजा कहै—वर द्यो । थावर वर दोधो । तूं, जिण नै बारभौ, जनमरो चौथो, बीजो, आठमो आवतो जे केई नूं कहै, अथवा बात सांभळै तिण नूं ईं ग्यारमो रासरो फळ देसी—पीडा न करती । आ बात लिखनै देस परदेस चलाई, घरै संका रही । इनै सराप राजानुं उतरियो देखनै विवहारियो तरै कहै—घरै पधारो । विक्रमादित्य नै घरै ले गयो—पांच मांगस आय बैठा । पांचे ही बैठा, चित्राम रै मोर द्वार-गिळियो तिको काढियो खूँटी मूंकियो । खूँटीरी खूँटी मेलियो—पांचे ही बैठा । राजा ताई बात हुई । राजा विवहारिया नै तेढायो ।

राज्य से छुड़ाया—परिवार से दूर किया, हाथ-पैर कटवाये, चौरङ्गा बनाया—बहुत दुःख दिए । अब उतरे, तब हाथ-पैर नये आए । मेरे अब सब आनन्द है—मैं किसी से भी कुछ नहीं मांगता । मैं विक्रमादित्य जो दूसरों का दुःख दूर करने वाला—कुरूप हुआ । उसका दुःख दूर करके शनीश्चर कहने लगा । देवता का दर्शन ऐसे ही निष्फल नहीं चला जाता—इसीलिए मैं प्रसन्न हुआ हूँ—तू मांग !!

राजा कहता है—वरदान दो । शनीश्चर ने वरदान दिया । तू जिसे बारबां, जन्म का चौथा, दूसरा, आठवां आता जो कहे, या बात सुने, उसे ग्यारवीं राशि का फल दोने—उसे पीड़ा नहीं करोगे । यह बात लिखकर देश-परदेश भेजी—घर पर भी भेजी । यह शाप राजा का देखकर व्यापारी कहता है—घर पर चलें । विक्रमादित्य को घर पर ले गया—पांच व्यक्ति आकर बैठे । पाँचों के बैठे चित्र के मोर ने जो द्वार निगला था—उसे निकाला, खूँटी पर रखा । उसी खूँटी ही पर



विवहारियो हार लेनै पेस करण नै राजा रै पासै गयो—राजा, चित्रांम रै मोर हार गिळियो थो तिको मोर पाछो खूँटी मुं कितो सगळा सनमुख—इणरो दोस कोई नहीं। राजा कहण लागो—पाहुणा नै तेडो, विक्रमादित्य नै तेडो। रूप-मरूप सरीर देखनै राजा हेरांण हुआ—मैं चोरंगो कियो थो, नै साजो हुबो सो कासू प्रस्तावै, राजा कहण लागो। राजा आप परकासियो। तरै विक्रम बात कही—सनीसर पूजतो थो तिण पीड़ा कीधी, थारो दोस किसो ! हिवै सनीसर प्रसन हुआ, मोनै वाचा दीघा छै। देस-परदेस ए बात लिख मेळो जु माहरो साको रहै। ए बात दफतरे बिखांणी देस परदेस सांमल-सी तिणरै सु प्रसन्न होसी सांभळिनै मेली। राजा पिछतावो करण लागो—अन्याय मैं कोधो। विक्रमादित्य कछो, थारो दोस कोई नहीं, ग्रह पीडा

उसे रखा—पाँचों ही ( व्यक्ति ) बैठे थे। राजा के पास बात पहुँची। राजा ने व्यापारी को बुलवाया। व्यापारी हार लेकर—उसे उपस्थित किया। राजा के पास गया—राजन्, मोर के चित्र ने हार को निगला था, उसे मोर ने वापिस खूँटी पर लाकर रखा सबके सामने—इसमें उसका कोई दोष नहीं। राजा कहने लगा—अतिथि को बुलावो ( विक्रमादित्य को बुलावो )। सुन्दर रूप शरीर का देखकर, राजा हैरान हुआ। मैंने इसे चोरङ्गा किया था, यह प्रङ्गोवाला हुआ। यह कैसे ? इस विषय में राजा कहने लगा। राजा ने स्वयं कहा। तब विक्रमादित्य ने बात कही—शनीश्वर की पूजा किया करता था, उसने कष्ट दिया, तुम्हारा क्या दोष ? अब शनीश्वर प्रसन्न हुआ। हमें वचन दिए हैं। देश-विदेश ( आप ) यह बात लिखकर भेजें जिससे मेरी यह बात ( प्रसिद्ध ) रहे। यह बात आपके दफतर में लिखवानी, देश-विदेश सुनेंगे—सुनकर प्रसन्न होंगे। सुनकर ( समझकर ) भेजी।

कीधी । राजा कहण लागो तिण प्रस्तावै—आंपणै बड  
कुमार डीकरी छै, राजा विक्रमादित्य नै परणाइजै ।  
उठनै ओछव-मोछव करनै कुमरी विक्रमादित्य नै परणाइ ।  
घणा हसम घणा बाजा गाजा करनै उजेणी नगरी पोहचाया ।  
सनीसर देवता पहीली विक्रमादित्य नूं पीड़ा कीधी तिसड़ी  
किणही नूं मत करजो । अनै पछै वर देनै सु परसन हुबो  
तिसड़ो सगळं ही नै होज्यो । ए बात कहै अथवा सांभळै अथवा  
लिखै तिण नै ग्याहमी रास को फळ देसी, शनीसर माठो ही  
भलो करसी । इति श्री शनिजी री बात सम्पूर्ण ।

राजा पश्चाताप करने लगा—मैंने अन्याय किया ।

विक्रमादित्य ने कहा, तुम्हारा कोई दोष नहीं—ग्रहों ने पीड़ा की ।  
उसी बीच में राजा कहने लगा—अपने एक बड़ी कुँभारी लड़की है,  
राजा विक्रम को विवाह दें । उठकर उत्सव आदि करके ( उसे )  
विक्रमादित्य को विवाह दी । बहुत-सा सामान ( देकर ) बाजे-गाजे के  
साथ उज्जैनी नगरी में पहुँचाया । शनीश्वर देवता ने जैसा विक्रमादित्य  
को कष्ट दिया, वैसा किसी को कष्ट न दें । उसके उपरान्त वर दे करके  
जैसा ( शनि ) प्रसन्न हुआ, वैसा सब पर होता । यह बात जो कहे या  
सुने या लिखे, उसे ग्यारवीं राशि का फल देगा—शनीश्वर यदि बुरा  
हो तोभी अच्छा ही करेगा ।

# परिशिष्ट





॥ देव्यैनमः ॥

## एकादसी प्रबंध लिख्यते ॥

सेत चीर सोभती, बंस बाहणे हसंती ।

वयणनेत्र विकसंती, कानि कुंडल झळकंती ।

वीण राग वाजती, चूडि कंकण खळकंती ।

जपै जगत्र जयवंती, सीसवेणी सळकंती ।

सारदा मात ब्रह्मा सुती, नयणै भक्तां निरखती ।

संपत्ति सुख द्यौं सुरसती, कहै एम अमरो जती ।१

दहा—

जती सती पिण सारदा, समरै एकै चित्त ।

लाख लील विद्या लहै, ध्यान धरै जो नित्त ।१

कुमारी कवि मात नै, अरज करुं कर जोडि ।

गुण पभणुं एकादसी, पूरै मनरा कोडि ॥२

परबै परबै व्रत कहा, व्रत पिण परब न होय ।

साठि अविक्का तीन सै, तुलि एकादसी न होइ ॥३

जुगि अनंता बहि गया, जासी जुगा अनंत ।

कदै न किन ही पंडितै, आदि न लखौ अंत ॥४

कृतयुग केई परठिया, केई द्वापर वत्त ।

केई त्रेतारी कथा, केई कलियुग वत्त ॥५

भेद अठारह भाखीया, आगम वेद पुराण ।

कीधा न्यान रिखीसरै, जुदा-जुदा गुण जाण ॥६

तिथि तूटै जदि बारसैं, व्रत कीजै एकंत ।  
 वधती होई एकादसी, दूजी करिजै तंत ॥७॥  
 पैताळीसां ऊपरै, घड़ी जिकै जदि होइ ।  
 सो बारिस हरि वासरइ, व्रत लंघै सब कोइ ॥

### ॥ अथ परिहां ॥

अभयाइं एकोत, प्रथम दिन कीजीए ।  
 भी बारिस एकोत, करी फळ लीजीए ॥  
 कांसो मास मसूर, चिणा मधु सालणौ ।  
 परिहां मैथुन भोजन अन्न, परायो पालणौ ॥१॥  
 लोभ हिंसा बलि तेल नृ मास्य न लोपीए ।  
 दसमी बारसि दीह एता सवि गोपीए ॥  
 दांतन मैथुन दीह, सूए नवि पान रे ।  
 परिहां अनछाण्यौ जो नीर करै व्रत हांनि रे ॥२॥

### ॥ दूहा ॥

तेरसि मांहै पारणौ, कोडि ज घण फळ होइ ।  
 दसम वेधै जो करै, तो गंधारी ज्युं होइ ॥१॥  
 बारह मास चोवीस पख, नाम कथा कहूं साखि ।  
 सानिधि करि ज्यो सरसती, बीनबीयौ तुम्ह दाखि ॥२॥

### ॥ तो छंद सारसी ॥

दाखीयौ जंबू दीप दीपह दान जळधर दीपतो ।  
 जिमि चंद्र उढीयण मंझि मोटो कांम रूपै जीपयो ॥  
 गिरमेर डूंगर धातु सोबन छंद मांहै सारसी ।  
 वैकुंठ दाता धम्म माता बडौ व्रत एकादसी ॥१॥



महि सेस मणिधर-चीर अंबर इन्द्र देवां ओपतो ।

हरिचंद सचै तेज सूरिज दैत रांवरण कोपतौ ॥

अ्युं सुगुरु बांणी सची रांणी, हेत हेतै मा जिंसी ।

वैकुंठ दाता धम्म माता बडौ व्रत एकादसी ॥२

अ्युं शास्त्र गीता सती सीता देवि रंभा सोहती ।

बड वीर हनुमंत बांण अर्जुन लूण सोहै रसवती ॥

गुर नाथ गोरख भाघ कविता बुद्धि बोलंण पारसी ।

वैकुंठ दाता धम्म माता बडौ व्रत एकादसी ॥३

अनहद वाजा राम राजा नदी गंगा निरमळी ।

जळ प्रीत मळी अश्व कळी गर्जे रावण मदगळी ॥

वर वृक्ष जंबू हंस पंखी रूप देखण आरसी ।

वैकुंठ दाता धम्म माता बडौ व्रत एकादसी ॥४

॥ दूहा ॥

एकादसी हूं ऊधस्या, कुण कुण मानव देव ।

नाम कहूं त्यांरा हिवै, तरि माता हरि सेव ॥१

॥ छंद भुजंगी ॥

तस्य ताहरी सेवथी तीन लोकै ।

धरया व्रत जीए सदा पाव धोकै ॥

तवी बात त्रेता युगै देव तोरी,

नागपुर राज मुचकंद धोरी ॥१

महा इन्द्र यम सोम कुबेर मैत्री ।

पुगट्टी भगा चंद्र पुत्री सुपुत्री ॥

कला पुण्य करतूत खित्री कमाई ।

जोर वर जोय सोभन्न नामै जमाई ॥२

आबीयौ जरै सास रै सूर आंणौ ।  
 टळै कर्म एकादसी देख टांणौ ॥  
 रही नगरी साव ब्रतै निरारी ।  
 करै लाल बद्धौ जमाई करारी ॥३॥  
 भरै मृगली भडमल्ल सीगाळ माभी ।  
 भिल्लै भूलरै मृगलीमाल माभी ॥  
 निरखै तठै ब्रह्म सोमेस नामै ।  
 पुगट्टी पुरी रांति देवांस पामै ॥४॥  
 भला माळिया तखत दीवांण भारी ।  
 सदा रयण सोवन्न भळकंत सारी ॥  
 इखै राज सोभन पामै अचंभौ ।  
 रद्धौ राति छांणो जिसौ रांनि थंभौ ॥५॥  
 प्रभातै चलयौ ब्रह्म सोमेस पुहतो ।  
 वीर मचकुंद सु राति बलि वात कहतो ।  
 दाखी तिका वात जे नयण दीठी,  
 मिल्या जमाई सुं करै बात मीठी ॥६॥  
 क्युं ही नगरी हिवै थिर वास थापौ ।  
 आखै जमाई एकादसी पुण्य आपौ ।  
 जिका कातिकी देव तेतीस जागै ॥  
 तिका नांम प्रबोधनी मुगति मागै ॥७॥  
 देतां चद्रभगा ए पुण्य दीधौ ।  
 पुरी स्वर्ग लोकै सदा काज सोधौ ॥  
 हरि राधा सदा पुजि वाहुं सकीजै ।  
 सरगा पुरी जाय अमृत पीजे ॥८॥  
 मगसिर अंधारी मानवी शत्रुनासी ।  
 कियै कर्म तोडै महापाप पासी ॥

चळै द्वापरै वात दूजी वंचाणी ।  
 कासिच तणी दिव राणी क्हांणी ॥६  
 पुत्री तियैरी ताल जंघा प्रगट्टी ।  
 मुरु दैत वेदौ देवां रैत कुट्टी ॥  
 तलक्के भये मृगां ज्युं जाइ त्राठा ।  
 नयर चंद्रावती देव तेतीस नाठा ॥१०  
 पुकारच्या जई महारुद्र पासै ।  
 वदै छूटिस्यौ नेट भगवान वांसै ॥  
 करी भीर देवांतणी युद्ध कीधौ ।  
 दडक्के चमक्के दडादोट दीधौ ॥११  
 धमक्के चमक्के धरा धोम लागौ ।  
 ब्रह्मंड जाए वडो खग्ग वागौ ॥  
 पडै टुंक पहाड फाडै फटक्के ।  
 तरां भंगरा झाड तूटै मटक्के ॥१२  
 भिडे दैत सूं माधवौ तेथि भागौ ।  
 लटक्के वळै जेम लंकाळा लागौ ॥  
 वडै माधवौ बांह युद्धां विलुद्धौ ।  
 अठै केसवौ आप आपै अलुद्धौ ॥१३  
 मरहां मरहै मित्यां युद्ध मंड्यौ ।  
 छिल्लै छयल सामुद्र मरयाद छंड्यौ ।  
 डस्या इन्द्र नागेद्र देखै डहक्के ।  
 तरै बोलीयौ ताल जंघा तणौ देत बहक्के ॥१४  
 पहिल्ली देवां तणौ थाट मैही पजायौ ।  
 जो ए ताल जंघा तणौ पुत्र जायौ ॥  
 वदे दादि ऊथेडि नांखुं वहिला ।  
 पुगट्टा देवे हाथ दीठा पहिला ॥१५



अठै केसवो जाई नाठौ अपूठौ,  
 भूपटीयौ दैत लारा वहै जौर भूठौ ।  
 जायै बदरी संखावती बार जोणी,  
 सुतौ गोपीयां नाथ सिर सडहि ताणी ॥१६॥  
 तठै आवियौ दैत पगा पगगी जोई,  
 हुसी बात हिव हुण हार होई ।  
 उपनी मात एकादशी अंगमांहै,  
 बिहूँ सोत्रनी चूड़ खळकंत बांहै ॥१७॥  
 विकसते नैत्र उरि चंद बदनी,  
 पक्की जिसी दाइमी रदन्नी ।  
 काळा डंवरा बीजळी क्रांति मांहै,  
 खिळकी भिलकी सळकी सला है ॥१८॥  
 कटकी भटकी तटकी तड़कै,  
 कियौ तालजंघा तणौ दैत कुटकै ।  
 भय भांज बैठी भगवानं वांसै,  
 श्रीरंग थयौ सामळौ तेथी सांसै ॥१९॥  
 कहै सांवळो कियैरी कौण बाळा,  
 सर्वाङ्गी ताहरी हूं कंतकाळा ।  
 शत्रु विनासी माहुरौ नाम सांमी,  
 करूं सेवकां कोडि वंछित कामी ॥२०॥  
 सांभळै तरै तूठ सारंग प्रांणी,  
 जठै आपरी सकती आपौ आप जांणी ।  
 कहि मुर दानवी कथा बात बीजी,  
 वळै वखाण सुं कथा ब्रत तीजी ॥२१॥

वदीतो जगत्रे वेखानरस राजा,  
 वज्रै कोडि निसाण वाजित्र वाजा ।  
 पिता जास जाए जठे नरग पडीयो,  
 गुडे गोडवै घणै दुःकरम गुडीओ ॥२२॥  
 आवै सुपन्नै कछौ पुत्र आखुं,  
 दुखां तणी वात किण ठाम दाखुं ।  
 ऊधरै नगरथी जो आज मौने,  
 सराहै स को पुत्र तिण वार तोनै ॥२३॥  
 चितै चीतवै तदा रीसीराज वूमै,  
 सदा अग पाताळ तृण लोक सूमै ।  
 इसौ आज परक्त रिसी राज जाणै,  
 रळी रंग पूछै वेखानरस राणै ॥२४॥  
 वदै साच रिखि राज वाणी वदीती,  
 भजौ शुक्ल एकादशी पापभीती ।  
 मगसिर तणी मानवी मोख दाता,  
 करै वेखानरस पुन्य करतूति राता ॥२५॥  
 पिता पुत्र माता गुरु बंधु प्रीता,  
 लहै नीच भी ऊँच गति लाप नीता ।  
 अवगति थी तात कीधौ उद्धारं,  
 वधी जगत में राज वाणी वधारं ॥२६॥  
 वळी पोस एकादसी नाम सफळ,  
 महिमावती महिमवंत भूप रिखळ ।  
 महा पातकी पुत्र लुभक नामंई,  
 परौ काढीयो रन्तमई ठाम ठामै ॥२७॥

भमइं जीवि हिंसा करतो भिखारी,  
 कन्दुइ चीर काप्पौ नहीं सीतकारी ।  
 फिरत्तौ गिरत्तौ पढ़्यौ भूख मरत्तौ,  
 भभ्यौ जीव लाधौ न को पेट भरत्तौ ॥२८॥  
 लीया वनफळ खाय वासीतलागै,  
 पढ़्यौ पीपळां हेठि एकादसी पुन्य जागइ ।  
 प्रभाते नारायण जी आप तूठा,  
 गया भव तणां पाप अलगा अपूठा ॥२९॥  
 पंच हजार वरसइ लगई राज पाम्यौ,  
 नरै नारि नगरी तणै सीस नाम्यौ ।  
 लुंभक तणी बात सगळै लखाणी,  
 सफळा एकादसी सहू जगत जांणी ॥३०॥  
 ऊजाळी एकादसी पुत्र प्राजा,  
 नमर भद्रावती करै केतु राजा ।  
 अश्व उपाड़ीयौ गयौ भूप अटवी,  
 वसै वइश्वदेवा सरोवरइ स्नांतटवी ॥३१॥  
 पगै लागि राजा तियै पासि बैठौ,  
 सही पुत्र नी बात पूछै स हेठौ ।  
 रिखी आखियौ एकादसी पुन्यरासी,  
 थिरी व्रत थाप्यौ सही पुत्र थासी ॥३२॥  
 कियौ व्रत एकादसी पुत्र जांमै,  
 जगत्रइ वदीतां पुत्र पांच पामै ।

दूहो

पाया राजा पांच सुत, हरल्यो राज सुकेत ।  
 माह अंधारी मानवी, हरइ पाप सुख हेत ॥



## छंद मोती दाम

हसि हेत घरै हरि पूछै हीर,  
 ध्रमाराइ युधिष्ठिर साहसधीर ।  
 खपी अखोहिणी पाय अठार,  
 आखौ कोइ उपाय जिणहोइ उधार ॥१॥  
 अन्तर जांमी आखइ भेद,  
 वदै गोपाल सुदालभ आगै वेद ।  
 किसनाछ तिल एकादशीय करंति,  
 तिण पुन्यै जायै पाप तुरन्त ॥२॥  
 करइ एकादशी युधिष्ठिर कृत,  
 बळै विध सेती षट तिलावृत ।  
 नासै तसु पातिक जाणै ताम,  
 करै व्रत मांहि ठामौ ठाम ॥३॥  
 दिवइ उजवाळी करो घरि हेत,  
 जया इणनामइ पामैं एहि ।  
 जइत हरइं जगि पाप संताप सराप,  
 दियै दरसण केसव आपौ आप ॥४॥  
 अपछर इन्द्र तणी इक बाळ,  
 रमइभिळ इन्द्र छभा सु रसाळ ।  
 परिवारइ नाइका कोटि पंचास,  
 रहइ रखवाळी सेवा पास ॥५॥  
 इकइ दिन रामति आवै इन्द्र,  
 वन निंदत अपछर लेइ वृंद ।  
 करइं तिहां नाटक बद्ध बतीस,  
 बहु लाधी इन्द्र तणी बकसीस ॥६॥

इक अपछर माळी सेती संग,  
 रमी पुष्पवंत धरइ बहु रंग ।  
 जाणी इंद्रै अपछर बात,  
 सरापै इंद्र करै अतिपात ॥७॥

प्रलापइ अपछर होई पिसाच,  
 पड़ी तिण पाप संताप पराच ।  
 सहै त्रिस भूप अनंत सरीर,  
 न भख्य न चख्य लह्यौ तिण नीर ॥८॥

पड़ी तिहां पीपळ हेठि पचारि,  
 व्रत एम एकादसी होई विचारि ।  
 दरसण केसव प्रहसम दीठ,  
 पुहती स्वर्ग लोक अपछर पीठ ॥९॥

मानि माह ऊजाळी एही मन्न,  
 बहु पाप संताप हरइ सुप्रसन्न ।  
 हिवइ मुक्त सारदां अविरल देई मत्ति,  
 गुण गाऊं रघुनाथ का विजै एकादशो व्रत ॥१०॥

### छन्द भुजङ्गी

विजै एकादसी कागुणइ मासि विरत्ति,  
 धुरा धन्नि पांमइ घणुं जाइत धरत्ती ।  
 करै त्रेता युगइ राज दसरथ राजा,  
 बाजै कोडि छप्पन नीसांण बाजा ॥१॥  
 सदा राम सिरदार मुन राम भाई,  
 भलौ भीच बळवंत लखमण भाई ।

दसरथ राज वनवास दीघौ,  
कर जोड़िवै राम प्रणाम कीघौ ॥२॥

रह्या वनवास जई राम सीता,  
पवाडै भळै भाई लखमण प्रीता ।

कपटी रावणइं सीत अपहार कीघी,  
पुसी भरै दइत बिखवेल पीघी ॥३॥

हुइ चित चिंता सती केण हारी,  
कहां केण आगै कथी के करारी ।

दया देव दालभ्य रिख थान दीठौ,  
करै सेव पूछै मुखै वयण मीठौ ॥४॥

गई रावणै जानुकी गेह गौरी,  
मिटइ केम चिंता बुझुं वात मोरी ।

विजै एकादसी कही वात राखी,  
सरइ काज इण व्रत थी जगत साखी ॥५॥

करइं व्रत एकादसी राम राजा,  
जुडइ वानरां सैन सवे संप काजा ।

दळां उळटै आवि दरीयाव कांठइं,  
हुइव एकठा सांमिसुं गुम्ह गांठइ ॥६॥

हळाबोळ दरीयाव हाळक हलोलै ।  
करइ गाज आवाज भाभा कलोलै ।

गडकै गड्डुडै ब्रह्मंड गाजइ,  
महा मळ देखै भय भीम भाजै ॥७॥

करइ आभ सूं वात दरिदाव काळौ,  
चलावइं महिराण सूं कौण चाळौ ।



प्रभू दाखीयो पाथरै पाज बांधौ,  
सुर करै सिला सूं लिसूं सूल सांधौ ॥८॥

तठइं राम रै नांम पाथर तिराणां,  
जड़ी च्यार सइ कोस पाथर जड़ागा ।  
लपकै लंगूरा जई लंघ फेरी,

प्रभू राम रै नांम री आंण फेरी ॥९॥

बहै तीड ज्यूं बानरां सेन बाधी,  
लपेटै बलइं आपरै लंक बाधी ।

उठ्यौ रावणौ दैत कोप अवारी,  
पठंट्यौ रखै पग बड़गा पधारौ ॥१०॥

किलकी करै उठीया कुंभ गाजै,  
महिरांवणौ पहिली चोट मांगइं ।

भला निनानूं कोडि राखस भारी,  
देखंतां द्रेवि दीसइं करारी ॥११॥

जुड़ै जुद्ध मातौ रुड़ै ठौल जंगी,  
खीजै खइडा हथापाथ बंधति खांगी ।

सभै वानरां कडि दैतां संहारइं,  
हणइं राखमां सैन हणूं उइ कारइं ॥१२॥

मंडै राह वेध लखमण मारइं,  
अली रूप आदीत किरणै अंधारै ।

लपेटे राम लखमणै लंक लीधी,  
बळी सीत नै जीत सहु बात सीधी ॥१३॥

आनंदइ अयोध्या सीतले राम आया,  
मिलै मानिनी रंग मोती बधाया ।

विजै एकादसी जगत भइं बात बाधी,  
सही इणै पुन्य थी रामजी लंक साधी ॥१४॥

दूहो—साधी लंका राम जी, इण व्रत थी अतिरंग ।  
 कीजै मन धीरप करै, बलि आमली अभंग ॥१॥

## ॥ नाराच छंद ॥

अभंग रंठ सेत पाख फागुणै जोपती,  
 प्रसिद्ध पुरख सिद्धि रिद्धि सेवकां सु पोखती !  
 कटंत पाप प्रताप कोडि कलेस वाट भांमली,  
 फरस्सरांम जम्म ठांम आदि व्रत आमली ॥१॥

सुशृष्ट एकदा मुदा करी त्रिलोक संपदा,  
 सुरिदं इंद फूल थी फले बळै रिखी सदा ।  
 रचंति रर कज रक्क छोड थी रंटंती रांमली,  
 फरस्सरांम जम्म ठांम आदि व्रत आमली ॥२॥

भंमति भूख दोख रन्न वन्न राति दिन्न लोधीयौ,  
 सभाइ खाइ वाट घाट पांन पांन सोधीयौ ।  
 लिपै छिपै न लद्ध खद्ध भोलि मारी भाकली,  
 फरस्सरांम जम्म ठांम आदि व्रत आमली ॥३॥

सु सीत भीत चीत भूख दूख पीडियौ,  
 दइक्कि हेठि आमली पडंत भुज भीडीयौ ।  
 एकादसी दिनै मरै सुमति गच्छि साकळी,  
 फरस्सरांम जम्म ठांम आदि व्रत आमली ॥४॥

वसूरथं चंपावती नरैस ईस नायकं,  
 प्रसिद्धि सिद्धि सवज रत्थ अश्व हथ पायकं ।  
 सलंक वंक सुंदरी सोव्रन व्रन सांमली,  
 फरस्सरांम जम्म ठांम आदि व्रत आमली ॥५॥

## ॥ दूहा ॥

इणि आंवलीयै ऊधरथौ, आहै होव सुरत्थ ।  
चैत अंधारी चित्तकारी, हरइ पाप पाप समरत्थ ॥१॥

## ॥ छंद सारसी ॥

समरत्थ चैत्री पुण्य वेत्री पाप मोचन सुंदरं,  
लोमस्स रिख्यं आइ सिख्यं पाइ पूजि पुरंदरं ।  
मानद्धातं प्रजा तातं प्रश्न पूछइ पारसी,  
भगवान भासी पुन्य राखी हरइ पाप इग्यारसी ॥१॥  
दम घोख अपछर पाइ भंभर देखि मेधा चुकोयं,  
च्यवन तातं पुत्र रातं सीप व्वारस कुकोयं ।  
अति कोप वक्रं कीध सक्रं करइ पलचर राखसी,  
भगवान भासी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥२॥  
जीव जतं भख नितं रोक्क मृग रटंतीयं,  
चैती अंधारी पुण्य सारी लहइन चुख अटंतीयं ।  
अखत्थ वृखं पडइ भूखं लहइ लीला राजसी,  
भगवान भासी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥३॥  
चैती उजाळं क्रमजाळं पाप बंधन भय हरं,  
कामावती नामं सुजस ठामं व्रतै चैती वासरं ।  
पूछ्यौ वसिष्ठं राज सिष्टं महामत्तै मानसी,  
भगवान भासी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥४॥  
राजा दिलीपं दान दीपं रिखी आगै अरूयाए,  
पुंढरीक इंदं नागलोके ललित अपछर रख्यए ।  
पुंढरीक आपं ललित राखस बाह लांबी तालसी,  
भगवान भासी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥५॥



दिन एक सींगी रिख देखी प्रसन्न पळचर पूछीयं,  
 करहि कामावती व्रतह दलिद्रं भांजइ दुत्थियं ।  
 ललितंग कीधौ लही लीला मानसी,  
 भगवान भासी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥६॥

नामा विरुद्धी पुण्य रुद्धी किसन पखै माधवं,  
 ध्रमराज आगइ कृष्ण आखै पाप हंता साधवं ।  
 हरचंद प्राग दलीप प्रीखत किता तारया तारसी,  
 भगवान भासी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥७॥

परुर चक्की धंधमार रोहितास उजेसरं,  
 उद्धारइण व्रत पाप निव्रत देव मानवर खेचरं ।  
 महारुद्र मोटै पाप छूटइं ब्रह्म हित्या सारसी,  
 भगवान भासी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥८॥

वैसाख बाळी पाप उजाली पापहरता मोहिनी,  
 भव पंच लखुं नरक दुखुं दुतीय नामइं लोभनी ।  
 पूछति रिखि बसिष्टं कहइ पाप निवारसी,  
 भगवान भासी पुन्य रासी हरइ पाप पग्यारसी ॥९॥

जरै पात्र बांधी लंक लोधी दैत दसमिर तोड़ीया,  
 भिणि कोडि राखिस दैत मारै रोळि मस्तक रोळीया ।  
 हुई एति मोहि हित्या कैण पुण्यै तारसी,  
 भगवान भासी पुण्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥१०॥

वासिष्ट बांणी राम जांणी मोहनी व्रत कीजीयै,  
 इण पुन्य अमरा नगर जाई अधिक अमृत पीजीयै ।  
 जगि जेठ पहिली पखि अपरा नांम सुंदर सारसी,  
 भगवान भासी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥११॥

दूहो

सुंदर पाप हरइ सदा, आहारइ इक चित्त ।  
कदइ न व्यापइ काय नई, व्याधि रोग वेपत्त ॥१॥

॥ छंद पाधड़ी ॥

वेपत्ति अंग नावइ विकार, चंपावती चंद्रसेन सार ।  
ध्रम काज राज घरणी उधार, इक दिन्न रोग व्यापै अपार ॥  
लहै न सुखक काया लिंगार, ..... ।  
वाघइ जु चित चिंता विहाण, तेढ़ीया राजवैदंग जाण ॥  
कारी न काइ लगै पराण, वलि चितै मन राजन विनाण ।  
पृथ्वीयौ व्यास सुकदेव राज, ऊपनौ रोग व्यापै अकाज ॥  
जिण व्रत रोग जाये किलेस, अप्परी नाम जेठी उवेस ।  
व्रत कीयौ राज मनि घणौ कोडि, खयगया रोगिगइ देह खोडि ॥

अपरा एकादसी सुभ सुदि जेठ, भावठि भूख नां होइ भेट ।  
हिवइ निहजळा नांम हरि भगत हेत, पूछंति भीम व्यासी समेत ॥  
कहइ भीमसेन मुक्त भूख क्रम, धरुं केम वृषत करुं कवण सुध्रम ।  
घापूं न पेट मंण लाख घान, पासुं न वृषति खाणै न पान ॥  
भइ भइई उदर वृकाग भूख, कृता सुमाता ज्यै ऊपनौ कूख ।  
मोदक देहजो माहरी माय, धौ करै तेथ घापूं अघाय ॥  
कहै व्यास दाखूं जिको व्रत, तीन सइ साठ दिन संततप्र ।  
निर्जळा एकादशी करो नांम, तरौ जेम संसार अपार ताम ॥  
करइ सदा राज उत्तर कुवेर, जसु पुत्र हेम माली सुजेर ।  
जळ धेन दान जग मांहि सार, करइ भीम व्रत तेम धार ॥

निरवाण भीम पामे नरेस, करइ माननी कर्म काढइ कलेस ।  
 आसाढ अंधारी योगिनी नांम, तजै कलंक नै कौढ ताम ॥  
 करइ सदा राज उत्तर कुवेर, जस पुत्र हेम माली सुजेर ।  
 कृत कर्म फेर कोढी कलंक, नख चख गलित सह सज्जन संक ॥  
 पूछीयौ व्यास दाखौ परब, जोगनि आराहि उयुं जाई जब ।  
 कीयौ हेम माळी गयौ कोढ कष्ट, बळै लील थायै आणंद वसिष्ट ॥  
 आसाढ उजाळी कामिका नांम, हरइ पाप संताप थी सुग्ग ठांम ।  
 बलिराई द्वारि पौढें मुरारि, सूयै देव तैतीस संसार सारि ॥  
 जागइ न देवता करै पुन्न, मह तप्प जप्प इक चित्त मन्न ।  
 लख लाभ लील आपइ अछेह, गुरु ग्यांन मांन मंगळ सुगेह ॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

वर गेह सु कमळा नाम वरं,  
 भडि श्रावण वदि गिरिजि भरं ।

गुरु गोविंद सेव करै गुहिरं,  
 अव कारिज सिद्ध करं सुचिरं ॥

पुन्य धेन दियं भव पाप हरं,  
 करतव्य कीय जगि सुचि करं ।

नभ मास उजारीय एकादशी,  
 सुर मांनव ध्यान सु चित वसी ॥

जिको मान देव अपुत्र जनं,  
 महि रात नै दीह आरत्ति मनं ।

रिद्ध राखण काज विराजि रजं,  
 धुरि वाह कुटुंबीय धर्म धुजं ॥

सब सूंन संसार असार सलै,  
 गुण मांनि गुमांनिगुव गलै ॥



इक पुत्र बिना सब अंध इला,  
 खितजा अपूठा बइर खला ।  
 सोइ पुत्र सुपुत्र सरूप सदा,  
 महिला भइ वंभीय पुत्र मुदा ॥  
 कहै पुत्रदा इक आवण मास कवी,  
 भर भाद्रव नाम अजैत नवी ।  
 इण पुन्य महीजित राज इलं,  
 करइ युगदापर राज किलं ॥  
 लहौ जगि पुत्र सुलछिवरं,  
 धण भार नृवाहीय खंम धरं ।  
 हरिचंद नरिंदीय पाप हरं,  
 दत पुन्य कीयै दिल रंभ वरं ॥  
 बलि भाद्रव मास उजाळ पखं,  
 रिद्धि पदमां नांम सुठाम रुखं ।  
 यहू पूछइ देव रिखीपवरं,  
 अधिकार अयोध्या आप सुरं ॥  
 भइ लाइ न वरसइ मेह भइइ,  
 खित कोइ न खेत किसान खइइ ।  
 प्रियमादि डगेधर काल पइइ,  
 नरपति नथि तन कोइ नइइ ॥  
 जगइ माता तात न कोइ पुत्र जनं,  
 भर है प्रिय नेह सनेह छिनं ।  
 चढी दुतीयां न हलक्कि चिहं,  
 त्रहि ताहि हुई बलि लोक तिहुं ॥

प्रज जाई पुकारिय राज प्रतइ,  
दुनीयां न दुखी हवै तुम छतइ ।

करि बाहर खित्रीय काइ खिमा,  
तिल मात नहीं सु काइ तमा ॥

मांधाता तेहि प्रसन्न कीयं,  
जिकै जांणि रिखीसर ज्योतिखीयं ।

एकादश व्रत अखंड इला,  
भूलण हरि नीर अथग जला ॥

नगरी प्रज राज घुराघुरीयं,  
इक चित्त एकादशी व्रत कीयं ।

करि कांठळी बीज भवकि वळी,  
इल आरत्ति चित्त अलग टळी ॥

गडकै गाज भडै भरीयं,  
भभकै नीर नडै भरीयं ।

मुंह मांग्यौ मेह भए मुगता,  
जग नेह सनेह हुआ जुगता ॥

अन मास कुमार अंधार पखं,  
एकादशी इंद्रा नाम अखं ।

ब्रह्म हत्या जायइ पाप परा,  
करइ इक चित्तहि सत्त व्रत नरा ॥

कृतयुगहि राज करै महिखा,  
इंद्रसेन महाधिप सेन सखा ।

तिण व्रत कीयइ आप दूरि गयौ,  
तिण दीह थी लोक प्रसिद्ध थयौ ॥

## ॥ सारसी छंद ॥

वरसेत पख महि मास आसू पुह विमइ पापं छुसी ।  
 गुर पूछ विध सुं करइ व्रत जे गृहि रचित मुकै गुसा ॥  
 वय कोडि साढापुन्य तीरथ कीयइ फळ जे कृत समइ ।  
 एकादसी ते पुन्य आपइ राजा रांणा सवि न मंड ॥  
 कातिम अंधारइ पखि रामा करइ विध सेती बळी ।  
 सोमन्न पामइ राज लीला प्रबोधिनी पुन्यै रळी ॥  
 ए व्रत बीसे च्यारि अधिका कह्या गंथ कवीसरे ।  
 रह रीत भाखी जगत साखी जांण नांण रिखीसरे ॥  
 इक जीह चेता कहुं केता अधिक गुण करि आगली ।  
 मै कह्या माहरी मत्ति सारू रंग मनि पूजइ रळो ॥

## ॥ कलस ॥

रळी रंग मन खंती, लहइ कोडि लख लीला ।  
 मइ दाखी मतिलार, कहइण कुणरी लीला ॥  
 भगति हेत भगवानं, कह्या गुण गोबिंद रांणी ।  
 परिमळ पुहप सुवास, तेम गुणीयां जग जांणी ॥  
 संवत् सत्तर दस एक अग गळ खरत्तर गाजतौ ।  
 सवि जांण सांम सुंदर सगुण रमण जेम गुरु राजतौ । १।

॥ इति चौबीस एकदसी प्रबंध संपूर्ण ॥



॥ श्री रामजी ॥

## अथ चौथ माता री कथा लिख्यते

केसरीदास सांवलोट री कही कवित बंध

कवितरी तैं कर बांभणी, वसै एक नगर विचालै ।  
 तिणरै एक दीकरौ, गाया वाझा गौवालै ॥  
 एक समै उद्यान, गई वन इंधण आंणा ।  
 रही अचंभै होय, देख तितरै विमांणा ।  
 बांभणी कन्है जाय वृक्षियो, कुण थे वन में एकली ।  
 संग साथ विना बहु सुंदरी, भलै साज सूरत भली ॥१॥

बूझै तो बांभणी, अम्हे इंद तणी अपछर ।  
 कहां वीर कायरां, वरां रिण में सुरां वर ॥  
 चौथ मात पूजवा, अठै इन्द्रपुर सूं आई ।  
 धूप दीप नै पोहप, सहुले भुजे सभाई ॥  
 सनान करे आराध सभि, करण पूज चौका किया ।  
 सिंदूर, चंदण केसर, चरचि, पाट मांहि पधराविया ॥२॥

मुगतो, चंपो, मोगरो, बहोत पाडल चबेली ।  
 केतकी केवडो, वले सेवंत्री वेली ।  
 जाय गुलाब ज बाध, वले साटो नरवाली ॥  
 जूही अनेक फूला ज, हार सिणगार प्रवाली ।  
 कर माल अपछर पूजि कजि, चौथ माता उर चाडिया ।  
 तंत ताल वीण डोरुं निरत, बलि नाटि क वज डाविया ॥३॥

मेल्हि डली गुल पांच, धूप दीपग आषा धर ।  
 आद्वाहन चरचन करे पूजा अरचा कर ॥

हाथ लियो परसाद, कांन ग्रहि संगट खोले ।  
 भव भव संगट कटे, देव कहै चित्तम डोले ॥  
 बहु हरख कहै इम बांभणी, देव वरत मोनै दयो ।  
 अपहरा कहै थासी अणंद, लाभ काज सोइज लयो ॥४॥

व्रत लोघो बांभणी, उरह आणंद घरि आई ।  
 पारस रंक प्राप्तिओ, किना चित्रामणि पाई ॥  
 अंधियारी तिथ चौथि, करै नित व्रत अखंडित ।  
 कै आयां केरडां, काय रजनी ससि उगंत ॥  
 तिण समै ज्याग राजा रचै, किन्या विवाहण कारणै ।  
 तोडै निवाह दुरत दइत, पाकै वेह न पारणै ॥५॥

राय तेहे जोतषी, कही विप्रां एही कथ ।  
 बत्तीसा कारणै, तोड़ जाइ वेह दइत ॥  
 राय हुकम कोटवाल, दूत मेले दरवाजै ।  
 बाछा ले त्रिप बाल, सांभि आयो गेह काजै ॥  
 दूत पकड़ लीयो वृष बाल कूं, आंण निवाह उतारियो ।  
 देवीच सीस चुंण डोबरा, जवही पावक जारियो ॥६॥

बैठी घर बांभणी ध्यान धरणीआंणी ध्यावै ।  
 पावक बोह पर जलै, आंच उरं मूल न आवै ॥  
 बैठो सुख में बाल, होय पांणी हुतासण ।  
 हरी द्रोब मंजरी, हुआ सोना रा वासण ॥  
 कुंभार निवाह ज बाळियो, दिलह बीच लगो डरण ।  
 निवाह मांहि वनियो नहीं, देव क दइत कडारीयण ॥७॥

सुंणी वात सहर में, रैत सांभलियो राजा ।  
 राजा आय पूछियो, देव कोई दइत द गाजा ॥

चोले तद ब्रित बाल, नहीं कोय देव न दाणव ।  
 वासो इण सहैर में बाल, विप्र कणक उमाहण ॥  
 तूं चालि हिमै घरि ताहरै, तुज माय बैठो तठै !  
 थिर थान विराजै चौथ रौ, जाय ऊभौ राजा जठै ॥८॥

### ॥ राजा वायक दूहा ॥

कहि किणरी सेवा करै, कहि किण रौ विसवास ।  
 पावक रौ तिण पूजियां, ताप न लगै तास ॥९॥  
 मुंठक दीठक जंत्र मंत्र, असुर सुर अराध ।  
 साच बतावो सुंदरी सो हूं पूज साध ॥१०॥

### ॥ बांभणी वाइकं दूहा ॥

चोल कहै इम बांभणी, राजा संभळि राह ।  
 ओ मारग है ईसरी, अगम अपार अथाह ॥११॥  
 सुर पूजै सेवे सगत, इन्द्राणी सुर इंद ।  
 चोर साध पूजै तिको, देवी उंगा चंद ॥

### ॥ वचनिका चौथ री वार्ता ॥

बांभणी भणै छै, राजा सुणै छै बांभणी बात कहै छै राजा  
 मनरो साच लहै छै । 'एक दिन रै विसै सुरत भइ 'बधणी ले  
 उद्यान में गई ' मूछी काटी, उतरै अपछरा बिमान सू' उतरी ।

### ॥ दूहा ॥

अपछर बिमानों ऊतरी, पूजा 'कारण प्रीत ।  
 वनह 'इकेली ब्राह्मणी 'भइ देखि भयभीत ॥१२॥

(१) मन फकर भइ । (२) बांभणी । (३) लकड़ी काट मूछी करी ।

(४) करण पवित्र । (५) डरै । (६) थइ ।



मृगनैणी चंद्रामुखी, अपछर रै उणीहार ।  
 भिळियो भूल उद्यान में, लावन लसकर लार ॥१३॥

## ॥ वचनिका ॥

वन <sup>१</sup>वासन विराजै छै । रीछ वनर वडाक बाध गाजै छै ।  
 कोकिला, मोर, चिकोर, बतक, बाबहिया बोलि रह्या छै । केतकी  
 केवडो, गुलाब, जूही जाय जबाध साटो, नर वाली, मोगरा,  
 फुलवाद फूल रह्या छै नदनाळ खळक खाळ <sup>२</sup>सरगां रा सिखरां  
 सूं उलाळा उफाळा खाय रह्या छै । तट दरियाब भरिया छै ।  
 पवन रा होळ-भोळो हिलोळां खाय रह्या छै । इन्द्रपुरी थी वाह-  
 वाह शिवपुरी सूं इधकी सराह ।

## ॥ दूहा ॥

तट सरवर <sup>३</sup>वन सघणता, वस्त्र आभूषण खोय ।  
 पैठी भीलण अपछरा, हंसां पंकति होय ॥१४॥

## ॥ वचनिका ॥

पीतांबर री पोतियां पहैर सनांन कीयां ! हरियै गोबर  
 गुंहली चौका दिया पोहप <sup>१</sup>सेभां पाट पधराया । <sup>२</sup>ईसरी रा गीत  
 चिरचा अखाड़ा गाया पुसप परिमल <sup>३</sup>आखत्र धरीजै छै । पूजा  
 कीजै छै । गुळ री भेलो जिएमें पांच डली ईसरी आगै भेलही ।  
 च्यार ईसरी री, पांचमी गणेशजी री । पाखती सूं परसाद ले  
 कांन पकड़ हाथ दे बोले-“क्युं बाई संगट खुलिया ? हाँ बाई भव-  
 भव रा खुलिया । पिंडरा पाप पुलिया ।” आ बात सुणै बांभणी  
 बूझवा करणै लागी-क्युं बाई किण देव सेवियां संगट कटै ?”

(४) सिधणा (५) सिरंग थी पाणी उलल (६) सिधण तटै ।

(१) पंचजीरा (२) देवीजी रा गुणगीत (३) धूप ।

किण देव सेवियां पिंड रा पाप उतरै ? या बात सुणे अपछरा  
 डखडखाय हंसी-“तू तो भोळी हे बांमणी एकरा घरडै हीज  
 वसी संकट री काटण हार मात चौथ देवी । जिण नू संकट में  
 पांडवे सेवी । पांच तारिया, अठोत्तर सौ मारिया ।

॥ दूहा ॥

पांडव पांच उवारिया, खोहण अढारै खाय ।  
 केहरिया अपछर कहै, आ मोटी महमाय ॥१५॥

॥ वारता ॥

क्युं बाई ओ व्रत कीजै हां दीयो लीजै, आफे ही न कीजै ।  
 अपछरा व्रत दीयो बांमणी लीयो ।  
 पाट घडाय पूजै डोले मती देव दूजै ।  
 व्रित ले बांमणी घरै आई, मानो आंधले द्रव्य दिष्टे पाइ ।  
 चंद उगाली चन्द्र उगै करै, कैरइ आया घरे ।  
 करतां करतां घणा बरस भया, ज्याराँ ज्यारै राजा जिगरा आरंभ थया ।  
 निवाह न पाकै, हुई बात ह्वाकै ।  
 दइंत विधुंसे जाई, जोर करै तो कुभार नै खाई ।  
 त्यारै राजा जोसी तेढाया, पुस्तक पूछिया ।  
 विप्रां भणियो, राजा सुणियो ।  
 बत्तीसो लेसी, त्यारै पाकण देसी ।  
 त्यारै राजा कोटवाल नै कह्यो, कोटवाल प्यादा ले दरवाजै गयो ।  
 विप्र वाल बछाले आयो, होता सण होबियो पकड़ि माहै निवाह लगायो ।  
 पूतरी खबर न पाई, बांमणी बिलपतां हीज राति विहाई ।

बांभणी धणीयांणी नै ध्याई, ईसरी साद सांभलता समी आई ।  
बांभणी रो बाल नीवाह में न बलियो, राजा प्रजा सब रो प्रब गळोयो  
व्रत रो राह बांभणी बतायो, प्रजा राजा चौथरी परचौ पायौ ।

॥ दूहा ॥

परचै परचौ <sup>१</sup>पूजवै, प्रथी लगाई पाय ।

केहरीया अपछर कहै, आ मोटी महमाय ॥

सजने मेला दुज्जंगे टाळ, <sup>२</sup>देवदला गुंदरा गला ।

सांकड़ै मोकलौ मुसकल आसान, परजा पूजै राजमान ।

<sup>३</sup>व्रत री महैमा पराकृत भई ।

<sup>४</sup>सगत री वार्ता केसरी सिध सांवलदासौत कही ।

सं० १८०८ इति श्री <sup>५</sup>चौथ माता री कथा सम्पूर्ण ।

श्री वालीमध्ये लिखत

---

(१) पूगियो । (२) देवे डळा, नेवरा गाळा । (३) व्रत करतां महमाय  
प्रवृत्त भई (४) सुणी ने वार्ता (५) वचनिका ।



## रोहिणी व्रत कथा

अथ रोहिणीनी कथा गौतम पृच्छामतार्थ ।

उच्छिष्टमसंदरयं भवन्तहपाणीयं च जो देई ।

साहूण जणमाणे भत्तं पिन जिजुए तस्म ॥१॥

अर्थ — जे पुरुष उच्छिष्ट जाडिउ विटालिउ हेठ उजे आपणइ काजि नावइ तिसिउ भातपाणी महात्मा नइ दई । ते न सुंग हुइ जिमु जरइ नहीं जिम श्री वासुपूज्य पुत्र मधवा तेहनी पुत्रिका रोहिणी नव जीव पूर्व भवि दुर्गाधा इसिइ नामइ कुष्टादि रोगइ पीडी तिणइ घणा पूर्वभव पूठ जाणि महात्मानइ कइउ तुम्बइउ दीधउ । इहां रोहिणीनी कथा—

श्री वासुपूज्यनामस्य तए तुण्य प्रकासकम् ।

रोहिण्याश्च कथायुक्तं रोहिणी व्रतमुच्यते ॥१॥

चंपा नगरीई श्री वासुपूज्यनु पुत्र मधवा राजा राज्य करइ । तेह नइ घरि लक्ष्मी नामि राणी सुशीला दातार छई । तेहनइ पुत्र ८ छई । ते ऊपरि पुत्री १ रोहिणी नामाई हुई । बेटीनइ जनमी, राजाई वधामणा, दान-मान दीधा । मोटी हुई, भणी ६४ कलानी जाणि हुई । रूप, लावण्य, सौभाग्य, गुणवंती हुई । यौवन-वय पुहुता देखी राजाई चितव्यउ । बेटीनइ सरिखउ वर योग्य हुइ तु वारु । पछइ सयंवरा मंडप मंडाबियउ । चिहुं दिसे रायना कुमर तेढाव्या, तिहां आव्या । कुर, कोसलाट, करणाट, गौड़, मेदपाट, नागुर, नेपाल, डाहळ, कुशळ, कुंकुण, इत्यादि देसनां राजा आवी बैठा छइ ।

तिसइ रोहिणी स्नान विलेपण करइ, क्षीरोदक स्वेत वस्त्र पहिरि मोती ने आभरणे अलंकरी जाणे देवलोक थी उतरी । रूपि अपछरा पालाखीइ बइठी । सखी परवरी तिहां आवी । प्रतिहारी आंगलि कुमरना नाम गोत्र, गुण-वच्छल, गाम, सीम, जूजूआ कहिया । ते मूठी । नागुरनउ राजा बीतसोक तेहनू पुत्र असोक कुमर वरिउं । वरमाला घाती । योग्य वर वरिई । सहु हरखिओ । विवाह कीधओ । हाथी, घोड़ा, वस्त्र, भोजन, तंबोल देइ रोहिणी सहित नागुरि पहुंचाड़िओ । बीजा राजा सगला सनमान्या । आप आपणइ थानकि गया ।

केतलइ कालि राजाई असोक कुमरनइ राज्य देई दीक्षा लीधी । असोक राजा राज्यपालतां सुख भोगवतां ८ पुत्र गजेन्द्र सरिखा हुया । च्यारि पुत्री हुई ।

एक वार राणी सातमइ मालीई गोखि बइठां हतां । लोक-पाल बेटउ मुख आगलि बइठउ छइ । तिसइ को एकनु पुत्र मरण पामिउ छइ । तेहनो माता विलाप करती, रोती, पुत्रना गुण बोलती, दैवनइ ओळंभा देती देखी । रोहिणीई राजा पूछिउं स्वामी एकेहूं नाटक नाचइ छै । राजा कहइ अहंकार म करि । धन-यौवन राज्य मदि भरित प्रसादइ पुत्री पूरी हुंती स्वामी रोस म करु अहंकार नथी करती मई कहीए । ए नाटिक नथी दीठड तेह भणी पूछउं । राजा कहि नाटिक लेई बिहुं हाथि पुत्रकरी गौख बाहरि हीं डोलतां हाथि थी उपड़िउ । सहुको हाहा कारव करइ । रोहिणीनइ मनि दुख नहीं । नगर देवताई पुत्र पड़ितुं भाली । सिंहासनि बइसारिउ । लोक हरखिउ । ए रोहिणी धन्य, सुपुण्य जे दुखनी बात ना जाणइ । वनि पुहता राजाराणी बेटा सहित क्रोड़ा करिवा लाग़ा । इसीई श्री वासुपूज्य

वरमा तीर्थकरना सिस्य रूप कुम्भ, स्वर्ण कुंभ च्यारि ज्ञानना धणी, छठ, अष्टम, तप करता वन मांहि पुहता । राजा राणी वेटा सहित जइ वांदिया । गुरे धरम लाभ दीधउ । धर्म देसना कही । राइ पूछिउं भगवन् राणी इसीउ तप कीधउ जिणइ दुखनी बात न जाणइ । मुझ नइ राणी उपरि प्रेम घणुं छइ । ते स्याभणी ? वेटा सुन्दर, गुणवंत हुआ । रूप कुंभ गुरु कही राजा सांभळु ।

इणइं नगरि धर्म मित्र सेठि, धन, मित्रा, कलत्र हइ । तेहनइ दुर्गंधा बेटी हइ । कुरुपिणी, दुरभागिणी हुई । पिताइं विवाह भणी । द्रव्यकोटि मानी । पणिको रांकईं न परगइ । ए कमारी न तु श्री सेण नामिइं वर राखी तेह नइ दीधी । तेहनी दुर्गंधईं रात्रि नाठिउं, सेठि विखवाद करइ । कर्म दो सईं काईं न चालइ । घरि रही, दान देईं, धरम करइ । तेहना हाथनुं को न लइ । पछइ ज्ञानी गुरु पूछ्या । कहइ गिरनारि नगरि पृथ्वीपाल राजा राज्य करेइ । तेहनइ सिद्धमती राणी छइ । राणी सहित राजा वन क्रोडा करिबा गयो । तिसइ मास खमणनइ पारणइं गुणमार ऋषि नगर मांहे जाता दीठा । राणी पराणि पात्री वालो । कहिउं ए ऋषिनइं फासु अहार देयो । राणी रोसावीइं । कहुंउं तूं बड़उ दीधउं । पारणुं करतां प्राण गया । सुभ ध्यानइ देव हुया राजाईं बात जाणी । राणी काढी । सात में दिन कोठ निकळिउ । तिणइ दुखइ छट्टी नरकि गइ । पछइ तिर्यञ्च थईं साते नरके दुख भोगवि । सापिणि, ऊंटणी, कूकड़ी सियाळी, सूयरि, घिरोली, ऊंदरी, जलो, कागड़ी, रासिभी, चंडाली गाईं हइ तिहां नवकार सांभळो । सेठनइ दुर्गंधा बेटी हुई । निकचित करम थोड़इ थाकतइ जातिस्मरण ऊपनउ । पाछिला भव दीठा । दुर्गंधा हाथ जोड़ि पछइ, ए दुख टळइं ते उपाय कहउ ।



शुरे कहिउ आरती भंजन रोहिण ब्रत करउ । विधि सांभळई । सात वरस सात मास कीजइ । श्री वासु पूजी नई रोहिणी नई दिनि उपवास कीजइ । ते तप करतां सुभ ध्यान आणिइ । ए तप नई प्रभावई रुद्धौ दुस्यई आवतई अशोक राजा नई राणी हुई । भोग भोगनी । श्री वासु पूज्य नई तीर्थ मोक्ष पामिसिई । तप पूरइ थातइ । ऊजमणउ करजे प्रसाद करावी । तिहां अशोक वृक्ष तलि श्री वासु पूज्यनी रत्नमई प्रतिभा करावी पूजीइ ।

अशोक रोहिण सहित सोना, मणि, मोतीना, आभरण, करावी । श्री वासुपूज्य नई स्नात्र विलेपन कुंकुम कपूर सुगंध द्रव्य पूजा श्री संघ भक्ति कीजइ । अमारि प्रवर्त्तावीइ । साहमी वत्सल संघ पज करावीइ । सिंघात लिखावीइ । इम दुक्ख जाई-सिई । राजानी परि दुर्गंधा बली पळइ । कुण ते सुगन्ध राजा । ऋषि कहइ ।

सीह पुरि नगरि सिंहशेन राजा, कनक प्रभा रांगी । तेहनई चेटउ दुर्गंध हूओ । कहिनई कर्म नही । पळइ तीणइ श्री पद्म-प्रभु तीर्थ कर वांछा । आपणा कर्म विपाक पछिया । परमेश्वरि कहिओ । नागोर थिकउ बारजो अण, नील पर्वत, ते ऊपरि शिलाछइ । तिहां रिषि १ मास क्षमण तप करई । ऋषि नई प्रताप विई आहेडो निकल जाई । ऋषि ऊपरि रीस आणई । ऋषि पारणइ गामि मांहि पुहता । तेतलइ आहेडिई शिला उपरि अगनी बाळी । ऋषि शिला उपरि रीसइ बैठे । ताप हुतइ । तिम-तिम शुभ ध्यान आणई । कर्म क्षय करी । केवल ज्ञान पामी, मोक्ष पुहतौ । तिणै आहेडिई ऋषि शिला हत्याई कोढ रोग हुई । सात भी नरग पृथ्वीइ पड्यउ पळइ पहिली नरक गयउ । पळइ साप, पळइ पांचमई नरग, सिंद, पळइ चौथी नरक

चीतरुं त्रीजइं नरगि विलाइ इम आहेडी नउ जीव भमि  
 गोवालियो दरिद्री हूवी । नागुरि आवकनइ नवकार सीखिउ ।  
 दवानले बलियो । नवकार प्रभावइं राजानइं पुत्र हूवौ । कर्म-  
 थाकतु हतुं । तिणइं दुर्गंध हूवौ । पछइं तेहनइं जातिस्मरण  
 उपनउ । दुःख संभारी बीहतइं श्री पद्मप्रभु पछ्या स्वामी कांइ  
 उपाय कहौ । तीर्थ करे कछु रोहिणी तप कीधौ । विधिपूर्वक  
 तिणइं सुगन्ध पणौ पामी, मरी देवता हूवौ । चवी चंपानगरीइं  
 मनमथ राजानी बेटी रोहिणी रूप पात्र हूवौ । ताहरी राणी हुई ।  
 जन्म लगइ आर्ति चिता न जाणी । अशोक राजेन्द्र तइं पछ्यौ  
 स्नेह स्यामिणी ते सांभळि सिंहसेन राजाइं सुगन्ध पुत्र नइं राख्य  
 देइ दीक्षा लीधी । सुगंध राजाइं जिन धर्म पाली, देवगति पामी ।  
 पुष्कलावती विजय पुंडरीकणी नगरीइं विमलकीर्ति राजानइं  
 पुत्र अर्ककीर्ति हूवौ । तेहनइ चक्रवर्ती पणउ हूउं । राजपाली  
 अघि कनइं दीक्षा लीधी । दुष्कर तपक्रिया कीधी । आयु पूरी  
 बारमइं देवलोकि अच्युत इन्द्र हूवौ । तिहां विजय पुण्डरीकणी  
 चवीनै तूं अशोक राजा हूवौ । रोहिणी राणीनइं बल्लभ तुम हैं  
 चिहुं जणै ए कर्म रोहिणी तप विधिइं कीधउ । तीणइं अति  
 स्नेह छइं । बेटा गुणवंत छइं । ते सांभळि ।

मथुरा नगरीइं अग्नि शर्मा ब्राह्मण, तेहना सात बेटा हुया,  
 पणि दलद्रि । एक वार पांडलिपुरि नगरि भिक्षा मांगिवा गया ।  
 तिसइं वाडी मांहि रायकुंवर देव सरीखा बांहि बिरखा माथइ  
 सुगट, कानै कुण्डल, हीयर हार, कमरबंध, हाथ हीरे जड़ी  
 मूंधड़ी । एहवा राजकुमर खेलता दीठा । सिव शर्मा ब्राह्मण  
 आपणा पुत्रनइ कहइ विद्या त्राइं केवडउ अन्तर कीधौ । ए मन-  
 बांछित सुख भोगवइं । आपण भिक्षा मांगता घरि-घरि हीडिइं ।

तू आपणा कर्म नईं उलंभा दीजइ । जउ पाछीइ भवि आपणे पुन्य न कीधउं तउ दलिद्री हुवा । पछइ तीणे ब्राह्मणे जीव दया धर्म पालवउ मांडीउं । गुरु पास दीक्षा लीधी । अति उग्र तप काउ सगग करि सातमईं देवलोकि देव हूया । तिहांथी चवी ताहरइ गुणगदिक बेटा ७ धर्मवंत सहित हूया । अनै आठमूं पुत्र लोकपाल छइ ते आ गइ वैताड्य पर्वति भिल्लक नामईं विद्याधर रहती हुतउ । नंदीस्वरि सास्वती प्रतिमा पूजितु यात्रा करतु धर्म सेवतु आय पूरी सउ धर्मईं देव हूओ । तिहांथी चवी ताहरै लोकपाल हूवौ । तेहनै मित्र देवताईं सानिध कीधड । हिब बेटी ना भव सांभळि ।

वैताड्य पर्वति, विद्याधरनई च्यारि बेटी । रूपवंत, गुणवंत, यौवन पुहती, वन मांहे खेलती । ज्ञानी ऋषिस्वरे बोलावी । कोई पुण्य करौ छउ । अन्है कांई पुण्य नथी करतां । गुरै कहियौ आयुषा बीजनी परी उतावळा छइ । तेहे कहु तू अन्है पुण्य सूं थाइ । गुरै कहु आज अजुआळो हांचमि छई । ज्ञानपंचमी तम आराधउ, उपवास करउ । एतलइ तपइ सुखिया हुसिओ । पछइ पचस्वाण करि घरिगई, देवपूजी, पुण्यनी अनुमोदना करइ छइ । आजनउ दिन गुरु पसाइ सफल हुयौ । ए पांचमी तप सदीव लगइ करिसूं । इसूं कहितां था इसूं बीज पढ़ी । च्यारि परोच्छ हुईं । देवता थइ चवी ताहरइ बेटी हुईं ।

एक दिन पंचमि कीधी । तेहना फल रुढा कुल लाधा, सुख पाम्या । ए चरित्र अशोक राजारो राणी, आठ बेटा, च्यारि बेटी । ए रूप कुंभ गुरु पासि सांभळि जातिस्मरण ऊपनउ । राजा परिवार धर्म, पढ़वजी, घरि आन्या । केतलइ कालि राजा राणी सहित वैराध्य ऊपनूं । श्रीवासु पूज्य कन्हईं दीक्षा लीधी ।



कर्म क्षय करि । केवल ज्ञान पामि । मोक्ष सुख सास्वता पास्या ।  
रौहिणी पांचमि तप तणा, गिरुया फल ए जाणि । दुख न हुवइ,  
सुख संपजइ इम बोलइ गुरु वाणि ।

॥ इति श्री रोहिणी अशोक राजा कथा समाप्ता ॥

श्री बृहत् खरतरगच्छे मदाचार्य श्री सागर चन्द्रसूरि साखायां  
वाचनाचार्य श्री आणंद धीरजी गणेशिष्य पं० प्र० श्री सुखहेम  
गणेशिष्य पं० भुवन विशाल मुनि लिखितं ।

अभय जैन ग्रन्थालय-बंडल नं० ७५, प्रति नं० ३२२०,  
पत्रांक १४-१५ ।

## अथ होलिका पर्व री कथा

श्रो गुरुभ्योनमः । हिवैं होलिका पर्व री कथा छै । फागुण सुदि पूनिम दिनैं हुई तिणनैं लोक होळी कहै छै । तिका होळी दो प्रकार री छै—एक द्रव्य होळी, दूजो भाव होळी । तिहां जिन धर्म विमुख अज्ञानी मनुष्य तिकै काठ-लकड़ी बाळकर होळी करै । पछै दूजै दिन धूलि-क्रोड़ा मळ-मूत्र उछाळन, रासभ चढण, स्त्री-मनुष्य पीड़न कदर्थना प्रमुख मांहोमांहि करै । तिकौ सर्व अनर्थ दंडरो कारण जानौ ।

तिका द्रव्य होळी भला मनुष्यां नैं छोडण योग्य छै । फेर धर्मी मनुष्य छै, तिकै इसा कर्त्तव्यां करी भाव होळी करै, तिकै कर्त्तव्य कहै छै । जाग तो तपरूप अग्नि लईनै कर्मा रा दळ जिकै छांणा, तिणां री भस्मी करणी; तिका भावहोळी कहै छै ।

फेर धर्म-ध्यान रूपी पांणी सूं खेल करै । नव-तत्व रूपणी गुलाल उडावै, पांच सुमति रो पिचरकौ हाथ में लेवै, दमरूपो छिरकाव करै—इत्यादि भाव होळी खेलै ।

हिवैं लौकिक धूलियैं पर्व री कथा कहै छै । जयपुर नगर विसै जयवर्म राजा—तिण नगर विसै मनोरथ नामा सेठ रहै छै । तिण सेठ रैं च्यार बेटा ऊपर अत्यंत रूपवान होळी नामैं बेटी हुई । तिण बेटी नैं अवांन अवस्थायैं पितायैं मोटै महोछव हुंती परणाई ।

पिण कर्म रैं वस हुंती—तिका बेटी विधवा हुई । पछै सदा पितारै घरै रहै । हिवैं एकदा प्रस्तावैं तिका कन्या गोखडै विसै बैठी छी । तिण अवसरैं वंग देसरो घणी—धुवनपाळ राजा, तिणरो बेटी कामपाळ उण गळी आय नीकल्यो । कुमरै कन्या नैं

देखी, कन्यायें कुमर नैं देखी । दोनूं ही मांहोमांहि कांम व्याप्त हुवा ।

तिवार पछै गुप्त पीड़ा सहित पुत्री प्रतै जाणकर सेठ चिरातुर रहै । हिवैं तिण हीज नगरी विसै एक दुंठा नांमै सांमण रहै छै । जातरी ब्राह्मणी छै, चंडरुद्र नांमै भांडरी बेटी छै अनैं अचल भूति नामैं भरड़ नै परणाई छी तिका सांमण मंत्र-यंत्र, कूड़-कपट करती लोकां नै ठगै छै । भूत प्रमुख काढ़ै । भूखरी वेदना भोगवती सरीर में दूबळी रहै—घर-घर भीख मांगती फिरै । पिण लाभांतरायरै उदय हुंती पूरी भीख नहीं भिळै । तिण कारगै लोकां ऊपर क्रोधाकुळ रहै । तिका सांमण भीख मांगती मनोरथ सेठरै घरै आई । तद सेठैं कह्यो—हे माता, म्हारी बेटी नैं ताजी कर !

पछै सांमण होळी-कन्या खनै आई, मांहोमांहि बातां करी । फेर सांमण कह्यो—हे बेटी ! थारै मनरी बात कह । तद कन्यायें पिण कामपाळरै मिलणरी बात कही । जद सांमण कह्यो—हे बेटी, आदीतवारै दिन पूजारो मिसकर सूर्य देवरै मंदिर आवजै, उठै थाहरा मनोरथ पूरस्युं ।

पछै आदीतवारै दिन होळिका-कन्या तठै आई । कुमर पिण सांमणरै संकेत सूं तठै आयो । पछै कन्या सूर्य देवरी पूजा कर बाहर आई, तद कुमर कन्या सूं भित्यो । मांहोमांहि बात बिगत करी—आळिगन कियो । पछै कन्या कुमररै पूठैं थापोटो देई नैं कूकी—मनैं पर पुरसरो संयोग हुवो, तिको मोटो पाप लागो । सो पाप दूर करण वास्तै हूं अग्नि-प्रवेश करस्युं ।



तद पिता आय कर हठहुंती बेटी नै घरै लायो । फेर फागुण सुदि पूनिम री रात्रै तिण सांमणै फेर तिणारै संयोग करायो । तद सांमण पिण तिणारै नजीक भूंपड़ी छै, तठै सूती छै । पछै कन्यायै जाण्यो—छ कानांरी बात छै, तिका चौडै हूसी । इसो विचार नै सांमणरी भूंपड़ी लगाय कर कुमर-कन्या और ठिकाणै जावता हुवा ।

हिवै परभात हुवो—सेठै पुत्री नै बळी जाणकर घणा विलाप किया । पछै लोकां पिण सती नै बळी जाणकर तिणारी भस्मी प्रतै नमस्कार कर सरीर विसै लगावता हुवा ।

तिण दिन हुंती वरस-बरस दीठ होळी पर्व प्रवत्यौ । अचार पिण परमार्थ सून्य लोक होळी पर्व करै छै ।

हिवां कितरा एक दिन गयांयकां कुमरै होळिछा स्त्री प्रतै कह्यौ—हे स्त्री, म्हारै खनै धन छौ तिकौ सर्व खाधो । तिणै कर धन कमावण नै परदेसै जास्युं । तिवारै होळिकायै कह्यौ—हे स्वामी, हूं कहूं तिकौ उपाय करो—तिणहुंती आपारै धन प्राप्ति हूसी । अहो भर्त्तार, म्हारै पितारी हाट जायकर एक साड़ी लावो ।

पछै कुमर जायकर साड़ी लयायो । तद स्त्रियै कह्यौ—आ साड़ी म्हारै लायक नहीं । तद कुमर फेर जायकर दूजी साड़ी लयायो । फेर स्त्रियै कह्यौ—आ पिण म्हारै लायक नहीं । इण तरै तीन-चार-बार फेर्यौ । तद सेठै कह्यो—थारी स्त्री नै लेआव, जिका आफै ही देखलेसी ।

पछै कामपाळ पिण आपरी स्त्री नै सागै लेकर सेठरी हाटै आयौ । तद सेठ देखकर बोल्हो—आ तो म्हारी बेटी छै !!

पछै कामपाळ पिण आपरी स्त्री नैं सागै लेकर सेठरी हाटै आयो । तद सेठ देखकर बोल्यो—आ तो म्हारी बेटी छै !! तद कामपाळ सेठ प्रतैं कइ तो हुवो—अहो सेठ ! थे तो बडा भोळा छै । थारी बेटी तो अग्नि प्रवेश करयो ! तिका बात सर्व लोकजाणै छै । अर थे किसी न जाणो छौ !! आगै पिण सूर्य देवरै मन्दिर मांहि हूं म्हारी स्त्री सहित आयो छो, जद थानैं थारी बेटी रो भरम पओयो छो । अबार पिण म्हारी स्त्री देख नैं थानैं थारी बेटी रो भरम पड्यो ! तिणवास्तै अहो सेठ, सरीखा रूप किसी न हुवै छै !! थानैं तो निकमों भरम पडै छै, अर अठै कारण नहीं छै ।

इसो सुणकर सेठ हर्षवन्त हुतो थको बोल्यो—मैं तो इणनैं बेटी कही, सो म्हारै तो आजसूँ आ पिण बेटी छै । इसो कहकर सेठैं बेटी रै स्नेह हुंती कपड़ा गहणा, भोजनादिक सामग्री सर्व पूरै छै ।

हिंजें हुंटा सांमण मरकर पिसाचणी हुई छी । तिणैं आपरो पूठलो भव देख्यो । अहो, इण नगरा रा लोक महा दुष्ट छै, मनैं भिरूया पिण पूरी नहीं घालता ! सो इणा नैं संतावण ! पछै पिसाचणी कोपाक्रांत हुई थकी लोकां नैं मारण भणी । नगर रै ऊपर मोटी सिल्ला विकुर्बी ।

होळिका रो भाग्य जबर, सो होळिकासुं पुहचै नहीं । पछै लोकां भय पांभ्या, बळ-बाकुळ करया । तद पिसाचणी कह्यो—अहो लोकां, हूं पदिलां भांड-भरड़ा दोय कुलां नैं छोडकर और सर्वलोकां प्रतैं मारस्यूं ।

तद लोक मरणै भय हुंती डरताथका सर्व लोकां भांड पणो  
आदरथो । भली मर्याद छोड़ नै निर्लज्जा बचन बोलता दुष्ट  
बाजा बजावता भांडहीज हुआ । फेर धड़ उड़ावै, सरीर विसै  
कादो लगावता भरडां प्राय हुआ ।

तिण दिन हुंती होळी रै दूजै दिन छालेरी पर्व प्रवत्यौं । पछै  
पिसाचणी प्रसन हुयकर आपरै ठिकाणै गई । इण रीतै मिथ्यात्व  
रूप होळी पर्व प्रवत्यौं तिकी तो कर्म बंधरो कारण छै ।  
अर आपरै आत्मरै सुख भणी अहो भव्य-जीवो,  
श्री बीत रागै उपदिस्थो, इसो जिन धर्म हीज सेवणो, तिण हुंती  
सर्व उपद्रव टळै, फेर मुक्ति रूप सुख मिळै । इति होळिका  
कथा संपूर्णम् ॥



## तुलसी व्रत कथा

एक हो ब्राह्मण—ब्राह्मण रैघर में एक छोटी-सी छोरी ही।  
वे कह्यो—मां हूं तुलसी पूजीस ! कै बाई पूजलै ।

कातीरी पूनू आई— वे तुलसी जी पूजणो सुरू कियो।  
वा तुलसी रोज पूजती। वेरै मांयसू एक छोटी-सी छोरी,  
गैणा, कपड़ा पैर' र निकळती। हांये बाई, तु म्हारी भायली  
होयजा। वा बोलती कोयनी।

एक दिन मांनै जाय' र कह्यो—मां तुलसी मांय सू एक  
छोरी रोज निकले है। मनै केवै है—तू म्हारी भायली होयजा।  
मां कह्यो— भायली होयजा तू वेरी। जणै वा दूजै दिन पूजण  
गई। छोरी वेरै मांय सू फेर निकळी। हांये बाई, तैं मांनै  
पूछियो ! हां बाई पूछलियो— म्हारी मां कह्यो, तू भायली  
होयजा।

म्हारी भायली हुई, तनै हूं जीमण रो नैतो देवू हूं। काल  
म्हारै घरै जीमण नै हालै। जणै मां नै कह्यो कै मां वे मनै  
जीमण नैतो रो दियो है। तोकै बाई जायै परी। दूजै दिन आपरै  
घर में चौखा-चौखा कपड़ा था, पैर' र तुलसी पूजण गई।

तुलसी जी मांयसू वा भायली निकली—कै बाई हाल !  
आ वेनै लेगई—लेगई वैकूठ में। कोई केवै भूवा आई, कोई  
केवै बैन आई, कोई केवै बाई आई। सैनजणा वेरी स्वागत करी।  
सोनै रै थाळ में बतीस भोजन तैतीत। तरकारियां पुरसियो।  
सोनै री भारी भरदी। वेनै चोखी तरै जीमाय, तुलसी रै  
पेड़ कनै छोड़दी।

और कवण लागी—भायली, मनै नैतो कददीस ! कै म्हारी मां नै पूछल, पछै दीस । वा घरै आई । घरै आय मां नै कछौ—हांये मां, वेरै घरै तो बतीस भोजन—तैतीस तरकारियां ही । वा कवै मनै ही नैतो दे । अपां अपारै घर में क्या जीमासौं वेनै । मां कछौ—नैतो देदे । अपां रै घर में साग—रोटी है, साग रोटी ही जोमाय देसौं ।

आ दूजै दिन तुळसी जी पूजण गई । तुळसी मांय सूं बाईं भायली निकळो । कै हांयै बाईं, तैं मांनै पूछयौ । हां बाईं पछलियौ—नैतो देवण आई हूं । काल तूं म्हारै घरै जीमण आयै । कै काल हूं थारै घरै जीमण आईस । तूं एक आटै रो दीबो चौमुखौ करपरो आंगण में जगाय दियै ।

जणै वा घरै आई । घरै आय मां नै कछौ—मां हूं नैतो देय आई । दूजै दिन वा जीमण आई वेरै घरै । आय'र आंगण में बैठ गई । वे कयौ—हांये बाईं, रसोई होय गई ? कै म्हारी मां माथौ धोवै है । माथौ धोय'र रसोई करसी । फेर वा बैठी रई कइंताळ । हांये'हाल रसोई होई कोयनी ? वेरै मांय तो दूजी बात ही—बाप आटो लेय'र आयो कोयनी—रसोई कांयरी करै ?

जणै कयौ—मनै तो भूख लागी है । इतीताळ हूं भूखी रहूं कोयनी ? तोकै थारो जाय घर और तो संभाल ! क्या संभालूं बाईं ? म्हारै तो घर में कइं कोयनी ? तूं देख तो सरी जाय ।

जस्यै वे दौड़ती जाय ओरै नैं देख्यौ, तो दूधरा चरुं  
भरचा पड्या हा । अन-धन लिखमी घणी मोकळी पड़ी ही ।  
अर घर गस्थरो सामान सैन पड्यौ हो । छोरी जाय मां नैं कह्यौ—  
मां ओरी तो सैंठो भरचौ पड्यौ है ।

मां जाय देख्यौ दौड़ती—दौड़ती । दूध हो जिकैरी खीर  
करी । पडियां करी—साग कियौ अर भायली नैं जीमाई ।  
जीमाय कह्यौ—बाई तूं अठैई रय !

बाई, अठै तो हूं रहूं कोयनी; थारै सातपीड़ी खुट्टं  
कोयनी । अर आ परनोज सासरै जासी तो इयैरै लारै जाईस ।  
इयैरै सासरै सातपीड़ी तक खुट्टं कोयनी । सिगळी सृष्टी रै  
आघो काती रै अमावस रैं दिन सिगळं रै जाईस !

हे तुळसी माता, वेनै तुष्टमान हुई—वेरा भंडार भरिया वेदा  
सकळ रा भरै ।



## सट विनायक

एक समय की बात है—एक तालाब में एक मेंढ़क और एक मेंढकी रहा करते थे। मेंढकी को भगवान् श्री गणेश जी से बड़ी भक्ति थी—वह तमाम दिन भर 'सट-विनायक', 'सट-विनायक' की रट लगाया करती थी। मेंढ़क को यह सब बुरा लगता—राँड ! तमाम दिन भर पराये पुरुष का नाम लेकर रटा करती है—तुझे लाज-शर्म भी नहीं आती। मेरा तो कभी नाम तक भी नहीं रटती। इस प्रकार मेंढ़क रोज बका करता और मेंढकी अपना जिद्द पकड़े अपने विश्वास पर दृढ़, 'सट-विनायक', 'सट-विनायक', आठों पहर रटती ही रहती।

और एक रोज मेंढ़क के इस प्रकार अधिक झगड़ा करने पर, 'गृह-कलेश' से उकताकर मेंढकी ने 'सट-विनायक', 'सट-विनायक' की रट लगाना हमेशा के लिए बन्द ही कर दिया।

समय पाकर एक रोज एक पनहारिन पानी भरने जो तालाब पर जो आई, तो जाते समय मेंढ़क और मेंढकी को भी घड़े में डाले लेचली। उसने घर लेजाकर अजान में उस पानी को 'मीढके-मीढकी' सहित चूल्हे पर गरम करने को रख दिया। अब तो मेंढक भी घबरा उठा। वह गुस्से में आकर मेंढकी से कहने लगा, 'रोज तो तालाब में बैठी 'सट-विनायक', 'सट-विनायक' रटा करती थी ! और आज जो गरम पानी में सिजोये जा रहे हैं, तब बुलाती क्यों नहीं—तू तेरे 'सट-विनायक' को ? जरा अब देख तो लूँ तेरे उस 'सट-विनायक' की बहादुरी—बड़ी भक्ता बनी फिर रही थी तब तो।

मेंढ़क के इस कथन को जो मेंढ़की ने सुना तो वह कुछ हँस पड़ी और फिर श्री भगवान् गणेश का ध्यान लगाए वह 'सट-विनायक', 'सट-विनायक' टेरेने लगी।

भगवान् भक्तों की आर्त-नाद भला कब नहीं सुनते ? गणेश भगवान् तत्काल एक बैल का रूप धारण किए दौड़े-दौड़े आ-पहुँचे, जहाँ घर के आँगन में चूल्हे पर रखा पानी का बर्तन गरम हो रहा था। आते ही उस गणेश रूपी बैल ने कूदते-फाँदते जो एक लात दी उस मिट्टी के बर्तन को तो वह टुकड़े-टुकड़े हो चला; सारा पानी वह चला और मेंढ़क और मेंढ़की अपार हर्ष में फुदकते-फुदकते जा-पहुँचे पुनः तालाब में—अपने निवास स्थान।

हे गणेश भगवान् उन मेंढ़क-मेंढ़की का संकट काटा वैसा, आप हम सब का काटें। उन्हें जिस प्रकार कष्ट मिला—गरम पानी में सिजोये गए, वैसा दुःख किसे भी न मिले।

## तुलसी व्रत कथा

कथा बहुत पुरानी है, एक बुढ़िया रहा करती थी। बुढ़िया का नियम था—वह हर रोज ठीक समय पर 'तुलसी' की पूजा करती, एक लोटा उसमें डालती और तब कहीं जाकर अन्न-पान ग्रहण करती। बुढ़िया पूजा करते समय तुलसी माता से प्रार्थना करती, 'माता, अन्न दै, धन दै, लछ दै, लिखमो दै, पूतां रो परिवार दै, भाई दै, भतीजा दै, इग्यारस रो दिन दै, सूरज री साख दै, श्री कृष्ण भगवान् री खांध दै।'

इस प्रकार वह बुढ़िया रोज पूजा करती और रोज ही यह इस प्रकार की तुलसी माता से प्रार्थना करती। बुढ़िया की जब यह प्रार्थना तुलसी माता ने सुनी, तो उन्हें बड़ी चिन्ता होने लगी। उनका शरीर क्षीण हो चला, वे दिन-प्रति-दिन कुम्हलाने लगी।

भगवान् ने जब देखा तुलसी जी कुम्हला रही हैं, तो उन्होंने इसका कारण पूछा। तुलसी जी ने डोकरी की सारी कथा कहते हुए बताया मुझे और किसी प्रकार का भय नहीं है। मैं उसे उसकी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण कर सकती हूँ। पर, 'श्री कृष्णजी री खांध दें'—मैं जब मरूँ तो मुझे श्री कृष्ण भगवान् उठाने के लिए आवें, यह कार्य मुझसे कैसे सम्भव हो सकता है ?

भगवान् ने यह सब सुना तो हँस पड़े। उन्होंने तुलसी जी से कहा—तो इसकी कौन चिन्ता है। मैं सब ठीक कर दूँगा समय आने पर। आप से जब बुढ़िया ऐसा ही वरदान माँगती है, तो उसे सहर्ष दे दें।'



और समय पाकर कुछ ही वर्षों बाद बुढ़िया देवलोक को चल पड़ी। बुढ़िया को नहलाया गया, उसे नवीन वस्त्र पहिनाये गये। मरणोपरान्त जैसे सभी संस्कार होने चाहिये, बुढ़िया के भी किये गये। अभी उसके बेटे-पोते उसे उठाने को ही थे—शमसान भूमि में ले जाने के लिए कि उनके ताड़जुब का पारावार नहीं रहा। बुढ़िया इतनी भारी हो चली कि सभी लोगों के मिलकर उठाने पर भी वह जमीन से जरासी भी उठाई नहीं जा सकी। सभी हैरान होगये। शहर के सभी लोग आये, साधु आये, सन्यासी आये, कई ऋषि-मुनि और तपस्वी भी जंगलों में से आये यह सब सुनकर और लगे आजमाने अपना अपना, योगबल, तपबल, मंत्रबल, लेकिन सभी असफल रहे, सभी हार, थक गये।

शाम हो चली सभी लोग चिन्ता सागर में गोते लगाने लगे। हैरान होकर वे सभी मन मारकर बैठ गये। अब वे लोग कर भी तो क्या सकते थे ! जहाँ शक्ति मानव की नहीं देती काम वहीं वह उस शक्तिमान को टेरा करता है। बुढ़िया के दाह-संस्कार में योग देने वाले सभी लोग भगवान् का स्मरण करने लगे।

उन्होंने देखा एक बालक उन्हीं की ओर भागा आरहा है। उस बालक ने आते ही पूछा, 'भाई! यह जमघट किस बात का है ? तुम लोग यहाँ सारे के सारे किस कार्य वश इकट्ठे हो चले हो ? सारी कथा उस बालक के प्रति कहते हुए एक वृद्ध ने बड़े ही कातर शब्दों में कहा—बुढ़िया तो बड़ी ही पुण्यशीला, धर्मात्मा, ईश्वर-भक्ता थी। फिर यह कौन पूर्व जन्म के कुकर्म हैं यह, हम सभी के उठाने पर भी उठाई नहीं जा रही है। उत्तर में उस बालक ने हँसते-हँसते कहा, 'तो मैं भी अपनी शक्तिभर आजमाऊँ—यदि आप लोगों की राय हो तो।

उपस्थित लोगों में से कुछ लोग बालक के इस भोलेपन पर हँसे, कुछ लोगों ने उसकी मूर्खता पर मुँह बिगाड़ा, कुछ लोगों ने उसके इस प्रश्न पर विस्मय व्यक्त किया। फिर भी उस वृद्ध ने उससे प्रभावित होकर उसका ऐसा करना सहर्ष अंगीकार कर लिया।

लोगों ने देखा उस बालक ने अभी अपना कन्धा बुढ़िया को उठाने को लगाया ही था कि वह जमीन से काफी ऊँचाई पर आ-ठहरी। अब तो बुढ़िया इतनी हलकी प्रतीत होने लगी जैसे कोई फूलों का छबड़ा लिए जा रहा हो।

इस प्रकार बुढ़िया का दाह-संस्कार विधिवत् हो चला। वह बालक भी बुढ़िया के साथ-साथ शमसान-भूमि पर आ-ठहरा। बालक को पढ़ने पर, 'हे सुबाल ! तुम कौन वंश को उज्ज्वल, पवित्र करते हो ?' भगवान् ने अपना चतुर्भुज रूप सभी लोगों को वहीं दिखलाया और फिर अर्न्तध्यान हो चले।

'हे तुळसी माता' ज्यों ऊँचै ढोकरी नै तुष्टमान हई, उसी सकल नै हुवै।

## सोमवार की कथा

एक समय की बात है—कहीं एक राजा और एक जाट रहा करते थे। जाट और राजा दोनों ही शिवजी के बड़े भक्त थे। बिना किसी प्रकार का नागा किए जाट भी शिवजी की पूजा करने जाया करता; लेकिन राजा बड़े ही ठाठ-बाट के साथ, हाथी-घोड़े, रथ-पालकी, गाजे-बाजे, व फौज-पलटन के साथ जाया करता—और जाए भी क्यों नहीं आखिर राजा जो ठहरा—उसके यहाँ कौन बात की कमी थी।

शिवजी का मन्दिर शहर के बाहर काफ़ी दूर नदी के किनारे पर था। जाट का यह नित्य प्रति-दिन का नियम था—वह नदी में तैरता-तैरता जाता और उसकी बीच धारा में से शिवजी के लिए जल पूजा के लिए लाता। वह वहाँ जाकर यह जल अपने मुँह में भरता और फिर भगवान् पर कुल्ला करके बड़े ध्यान मग्न हो उनके सम्मुख बैठकर माला फेरा करता। मालोपरांत वह पूछा करता—‘पूजा भई।’ तब शिवजी प्रसन्न होकर बदले में उत्तर देते—‘भई’ !! और तब जाट वहाँ से उठकर अपने घर को आता और अपना काम-धंधा करता। जब तक भगवान् शिव के मुँह से यह उत्तर नहीं सुनपाता—‘भई’ ! जाट, वहाँ से उठना तो दरकिनार रहा—हिलता तक नहीं था।

इधर राजा साहब का ठाठ ही निराला था। उनके यहाँ भला किस बात की कमी थी। वे पूजा का थाल सजाए—धूप, दीप, पुष्प, केशर, कपूर, फल-फूल और प्रसाद से पूजा किया करते। उन्हें इस बात का बड़ा ही अभिमान था। मैं इतने उपकरणों के साथ शिवजी की पूजा किया करता हूँ; निश्चय ही मैं शिवजी का प्यारा भक्त हूँ ! मुझे स्वर्ग में स्थान मिलेगा।



एक दिन भगवान् को अपने भक्तों की परीक्षा लेने की सूची। फिर भला क्या था—भगवान् ने माया जो फैलाई तो आँवो-तूफान और साथ ही बड़े जोरों की मूसलधार-वर्षा हो चली। शहर में इस प्रकार का भयंकर तूफान और जोरों की वर्षा तो सैकड़ों वर्षों के इतिहास में भी नहीं हो पाई थी, जैसी आज हुई। सभी शहरवासी भयभीत हो उठे—आखिर यह प्रलय कैसा !!

ऐसे भीषण समय में भी जाट पूजा करने का समय टला जानकर, घर से मन्दिर को चल पड़ा। वह तूफान से संग्राम करता, मेह-पानी में भीगता हुआ नदी के किनारे शिव-मन्दिर में आन पहुँचा। नदी, वर्षा के उफनी चली आरही थी। जाट को यह कुछ भी भयभीत नहीं कर सके। भक्त तो भगवान् पर आश्रित रहता है; फिर भला उसे भय और कष्ट किम बात के। वह क्रुदकर फौरन नदी के मध्य धार में पहुँचा, वहाँ से भगवान् की पूजा के लिए फिर मुँह में जल भरा और हाथ मारता-मारता किनारे आ लगा। उसने भगवान् पर कुल्जा किया। 'पूजा भई' ! कहकर फिर ध्यान मग्न होकर भगवान् के उत्तर की परीक्षा में बैठ रहा। भगवान् तो आज भक्तों की परीक्षा लेने को ठाने बैठे थे—इन्होंने आज उत्तर नहीं दिया।

जाट का तो ऐसा नियम था—जब तक 'भई' ! का उत्तर भगवान् शिव नहीं दिया करते, वह अपने स्थान से उठने का नाम तक नहीं लेता, और आज जब उत्तर नहीं मिला, तो वह शान्त और धैर्य मुद्रा में ध्यान लगाए अपने पर आसन जमा रहा। इधर भीषण वर्षा के कारण मन्दिर का छत फट चली और एक दीवार में दरार भी पड़ गई। छत के फटने से मलवा नीचे मन्दिर में गिरने लगा। एक-दो ईंटे आकर जाट के पास भी गिरी। ऐसा प्रतीत होने लगा—जैसे यह मन्दिर अभी धराशाई हुआ। लेकिन जाट तो अपना आसन जमाए अटल बना बैठा रहा।

भगवान् शिव ने देखा—यह भक्त तो परीक्षा में उतीर्ण होगया, तो उन्होंने कहा—‘भई’ ! जाट खुशी-खुशी अपने घर को लौटा ।

इधर आँधी, तूफान और भीषण वर्षा को देखकर राजा साहब ने सोचा—ऐसी कौन देरी होरही है पूजा में । यह रहा मन्दिर ! अभी बैठा घोड़े पर और बात ही बात में पहुँचा मन्दिर को । व्यर्थ ही मैं इतने नौकरों-चाकरों को क्यों कष्ट दिया जाय और क्यों इस आफत में पड़ा जाय !! जब आंधी शान्त हुई और वर्षा ज़रा रुक पाई तो राजा-साहब चले शिव-मन्दिर को पूजा करने ।

समय पाकर राजा साहब का भी देहान्त होचला और उस जाट का भी । राजा साहब के ताजुब का पारावार नहीं रहा जब उन्होंने देखा—जाट तो स्वर्ग चला गया है और उन्हें स्वर्ग जाने की स्वीकृति नहीं मिल सकी । राजा साहब ने क्रोधित होकर भगवान् शिव से उपालंभ देते हुए कहा—भगवन् आपके यहां भी भारी अन्धेर है । मैंने तो आपकी सेवा इतने ठाठ-बाट से की उसे तो मिला ‘नरक’ और जाट ने केवल झूठा पानी ही आपके सिर पर चढ़ाया, उसे मिला स्वर्ग !! बड़ा अच्छा है आपका न्याय !!

भगवान् शिव ने जरा मुस्काते हुए उत्तर दिया—मैं ऊपर के ठाट-बाट से प्रसन्न नहीं हुआ करता हूँ । तुम तो केवल अभिमान को लिए, राजा की शान में आकर पूजा करते थे; तुम्हारे हृदय में भक्ति का लेशमात्र भी अंश नहीं था । और जाट सच्चे हृदय से सेवा करता था—समझे !!

हे भोलेनाथ, जिस प्रकार उस जाट को स्वर्ग का सुख दिया—उसे बैकुण्ठ-धाम मिला, वैसा सब को मिले और जिस प्रकार राजा को निराश किया, वैसा निराश आप किसे भी नहीं करें ।

## मंगलवार की कथा

एक गाँव में एक साहूकार रहा करता था। उसकी स्त्री हनुमान जी की बड़ी ही भक्ता थी। वह हर समय, आठों पहर श्री हनुमान जी की माला जपा करती। हमेशा हनुमान जी को 'सवा सेर का एक रोटा' भोग के रूप में चढ़ाया करती।

लम्बे समयोपरान्त श्री हनुमान जी इस साहूकार की स्त्री की भक्ति से प्रसन्न हुए। उसके एक पुत्र रत्न उत्पन्न हुआ।

भगवान् भक्तों की बड़ी ही कठिन परीक्षाएँ लिया करते हैं। भला वे इस साहूकार की स्त्री को इस परीक्षा से कब छूट देने वाले थे। जब इसका लड़का पाँच वर्ष का हुआ तो उस समय साहूकार इस असार संसार से चलता रहा।

साहूकार की स्त्री ने इस भीषण दुःख को भगवान् की इच्छा एवं अपने ही कर्मों का फल समझे और बड़े धैर्य एवं शान्ति से सहन किया। वह हनुमान जी की सेवा और भक्ति से तनिक भी विचलित नहीं हुई। उसी प्रकार श्री हनुमान जी की सेवा और सवा सेर का रोटा उसे हमेशा चढ़ाती रही जैसा वह अपने पति के जीवित-काल में करती रही थी।

साहूकार के इस पुत्र का नाम था अनूपचन्द। जब अनूपचन्द बड़ा हुआ और उसकी शादी हो गई, तो उसकी स्त्री अपने घर को आई। अनूपचन्द को पत्नी सावित्री को सास का यह नित्य-प्रति दिन घण्टों तक हनुमान जी की पूजा में समय लगाना एवं सवासेर आटे का रोट रोज भोग लगाना अच्छा नहीं लगता। काफी दिनों तक तो वह यह सब देखती रही और सहन करती रही।



अन्त में एक दिन उसने साहस करके पति को यह सारा विस्तारपूर्वक कहा और साथ ही यह भी कहा—मैं यह व्यर्थ का सवासेर आटा नष्ट होता नहीं देख सकती। आप अपनी माता को इसके लिए रोक दीजिये। इस प्रकार आप देखेंगे कि लगभग एक मन आटे की हर महीने अपने यहाँ बचन हो जायगी। इतनी भारी बचन से न मालूम घर के कौन-कौन से काम-धंधे निबेरे जा सकते हैं।

अनूपचन्द ने उत्तर में कहा—मैं यह सब जानता हूँ कि माता जी सेवा पूजा में घण्टों बैठी रहती है। मुझे यह भी ज्ञात है—वह सवासेर का रोट हर रोज प्रसाद रूप में श्री हनुमान जी के भेंट रखा करती है। लेकिन मैं किसी भी प्रकार से अपनी माता जी को यह बन्द करने के लिए बाध्य नहीं कर सकता। मेरी माताजी तो मेरा जन्म देने से पूर्व ही यह सब करती आ रही है। भला यह कोई उनसे कहने जैसी भी बात है।

अनूपचन्द का यह उत्तर सुनकर सावित्री बड़ी नाराज हुई। वह कहने लगी—यदि आप उन्हें बन्द करने को नहीं कह सकते हैं तो फिर उन्हें घर से बाहर निकाल दें। अनूपचन्द ने कहा—अरी तुम पगली तो नहीं होगई हो ! कहीं मां को भी घर से बाहर निकाला जा सकता है। यह तो कभी भी नहीं होने जैसी बात है।

तब तो सावित्री बहुत ही बिगड़ी। उसने अनूपचन्द से कहा—जब तक आप अपनी माता को घर से बाहर नहीं निकाल देंगे, मैं अन्न-जल कुछ भी नहीं ग्रहण करने की। वह रुसकर जा बैठी एक कमरे में और उसे भीतर से बन्द कर लिया।

लाचार होकर ऐसी विषम परिस्थिति में अनूपचन्द को अपनी स्त्री की यह अनुचित मांग स्वीकार करनी पड़ी। वह अपनी मां के पास आया और कहने लगा—माताजी, मैंने गंगा-स्नान करने का निश्चय किया है। क्या आप भी मेरे साथ चलेंगी।

अनूपचन्द की मां ने जब बेटे के मुँह से गंगाजी जाने की बात सुनी तो वह बहुत ही प्रसन्न हुई। उसने कहा—बेटा, यह भी क्या पूछने जैसी बात है? मैं यदि तुम्हारे साथ तीर्थ-स्थान पर नहीं चलूँगी तो फिर किसके साथ चलूँगी। मैं तो इसी दिन की प्रतीक्षा में ही थी, बेटा!

अब भला क्या था—अनूपचन्द अपनी मां को लिये गंगाजी को चल पड़ा। जब वह काशीजी पहुँचा, तो माता को गंगा के किनारे पर बिठाकर स्वयं अपने घर को चलता बना। जाते समय कहता गया—माँ, तुम यहाँ जरा ठहरी रहना। मैं अभी-अभी जंगल होकर आ रहा हूँ।

बुढ़िया को क्या मालूम था कि उसका पुत्र टट्टी हो आने का झूठा बहाना बनाकर उसे यहाँ गंगा के किनारे अकेली छोड़कर घर को चला गया है। वह बेचारी वहाँ घण्टों तक अनूपचन्द का इन्तजार करती रही। लेकिन जब दिन अस्त होगया तो उसे चिन्ता ने आघेरा। सबसे अधिक चिन्ता तो बुढ़िया को श्री हनुमान जी की सेवा की थी। उसे फिर लगी कि मैं कल सुबह होते ही भगवान को सवासेर का रोटे का प्रसाद कैसे चढ़ाऊँगी।

इस प्रकार चिन्ता करते-करते जब बुढ़िया को सुबह हुई तो उसने देखा— श्री हनुमानजी नाचते-कूदते, उछलते उसके पास आ रहे हैं। उन्होंने बुढ़िया के पास आते ही कहा—

लाल लंगोटो, हाथ में सोटो,  
ले डोकरी सवा सेर रो रोटो ।  
थें मनैं दियो बालापण में,  
हूं थनै दूं बूढ़ापण में ॥

बुढ़िया ने सवा सेर का रोटो उनसे लेलिया और श्री हनुमान जी का ध्यान लगाकर, उन्हें चढ़ावा चढ़ा दिया। इस प्रकार बुढ़िया अपने दुःख के दिन काटने लगी। अब तो हमेशा श्री हनुमान जी बुढ़िया के पास सुबह-सुबह आते और इस प्रकार से कहते—

लाल लंगोटो, हाथ में सोटो,  
ले डोकरी सवा सेर रो रोटो ।  
थें मनैं दियो बालापण में,  
हूं थनै दूं बूढ़ापण में ॥

और बुढ़िया को सवा सेर का रोट देकर कूदते-फांदते वापिस चले जाते ।

एक दिन बुढ़िया ने श्री हनुमानजी का ध्यान करते हुए उनसे प्रार्थना की, 'महाराज, और तो सब ठीक है। ज़रा रहने के लिये तो स्थान बनवा दें। हनुमानजी ने कहा तथास्तु—



दूसरे ही दिन हनुमानजी ने डोकरी को दो महल-एक-सोने का और दूसरा चाँदी का बना दिया । डोकरी अब बड़े आनंद से यहाँ अपने दिन व्यतीत करने लगी ।

इधर अनूपचन्द की दशा श्री हनुमान जी के कोप के कारण दिन प्रतिदिन बिगड़ने लगी । बिगड़ते-बिगड़ते, दशा ऐसी उसकी बिगड़ी कि सुबह खाने को है तो शाम को नहीं है और यदि शाम को खाने को है तो सुबह खाने को नहीं है । अन्त में किसी एक ज्योतिषी ने अनूपचन्द की पत्नी-सावित्री को सुझाया—यह सब हनुमान जी का प्रकोप है । तुम यदि अपनी सास को लौटाकर अपने घर में वापिस ला-सको तो यह सब पूर्व-वत हो सकता है ।

अब तो लाचार होकर सावित्री ने अपने पुत्रों से कहा—पुत्रों, जैसे भी हो, कहीं से अपनी दादी को ढूँढ़कर ले आओ । पहले तो बच्चों ने जाने से इन्कार कर दिया । कहने लगे—हम लोग कौन मुँह लेकर जावें ! आपने तो उन्हें घर से बाहर निकलवा दिया !! हमें जाते समय शर्म लगती है । लेकिन जब सावित्री ने बहुत कुछ कहा सुना तो वे अपनी दादी को ढूँढ़ने चल पड़े ।

चलते-चलते जब वे गंगा के किनारे पर आए तो उन्हें अपने पिता के बताये हुए स्थान पर कुछ और ही देखने को मिला । सोने और चाँदी के महलों को देखकर उन्होंने अनुमान लगाया—हो-न-हो ये महल किसी राजा-महाराजा के हैं । फिर भी उन्होंने हिम्मत से काम लिया और वे चले ही गये इन महलों के भीतर ।

जब वे भीतर गये तो उन्हें बड़ा ताजुब हुआ—यहाँ उनकी दादी बैठी हुई है। कई नोकर-चाकर उनकी सेवा आदि कर रहे हैं—यह महल उसी का ही है।

बच्चों ने कहा—दादी मां, बहुत हो गया, अब आप घर चले। हमें बड़ा दुःख है कि पिताजी माताजी की बातों में आकर आपको यहाँ गंगा के तट पर छोड़कर चले गए।

बुढ़िया ने कहा—बच्चों, मुझे इसका लेशमात्र भी-रंज नहीं है। कारण—होना वही होता है जो भगवान् को मंजूर होता है। इसमें आप लोगों को दुःख करने जैसी कोई बात नहीं है। आप लोगों का इसमें क्या दोष हो सकता है। लेकिन मैं घर तो श्री हनुमानजी की आज्ञा लेकर ही चल सकती हूँ—इससे पूर्व तो कदापि नहीं।

अभी यह चर्चा हो ही रही थी कि हनुमानजी यह कहते हुए आन उपस्थित हुए—

लाल लंगोटो, हाथ में सोटो,  
ले डोकरी, सवा सेर रो रोटो ॥  
थें मनेँ दियो बालापण में,  
हं थनै दू बूढ़ापण में ॥

यह देखकर डोकरी के पोत्र अपने घर को वापिस चले गए। उन्होंने सारा यहाँ का वृत्तान्त वर्णन करते हुए बताया—हनुमान जी स्वयं दादी के पास आते हैं और नित्य सवासेर का रोट देकर वापिस चले जाते हैं। बुढ़िया हमसे तो नहीं आने की भले हो आप जा सकते हैं !!

लाचार होकर अब तो अनूपचंद को ही आना पड़ा। उसने आते ही मां के चरणों में अपना सिर नवाया और उससे घर चलने की प्रार्थना की।

बुढ़िया ने कहा—बेटा चलने को तो मैं चल सकती हूँ। लेकिन मैं हनुमानजी को आज्ञा लिये बिना कुछ भी नहीं कर सकती। ठीक समय पर जब हनुमानजी डोकरी के पास आ उपस्थित हुए, यह कहते हुए—

लाल लंगोटो, हाथ में सोटो,  
ले डोकरी सवा सेर रो रोटो।  
थें मनेँ दियो वालापण में,  
हूँ थनेँ दूँ बूढ़ापण में ॥

अनूपचंद ने श्री हनुमानजी से प्रार्थना करते हुए निवेदन किया—महाराज, मेरी बूढ़ी मां को छुट्टी दे दें; मैं इसे घर लेजाना चाहता हूँ। हनुमानजी ने कहा—यदि तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है तो ले जा सकते हो। अनूपचंद ने कहा—महाराज, फिर ये सोने-चाँदी के महल आदि.....।

हनुमानजी ने कहा—ये सब तुम्हें मिल जाएँगे। श्री-हनुमानजी ने अनूपचंद और डोकरी सहित वे महल पलक मारते-मारते ही डोकरी के गांव में लाकर घर दिए। उन्होंने कहा—डोकरी, मैं तुम पर प्रसन्न हूँ, कोई वर मांग !! बुढ़िया ने कहा—भगवान् मुझे तो अब आपके दर्शनों के अतिरिक्त किसी भी वस्तु की चाहना नहीं है। लेकिन जब वर मांगने के लिये आज्ञा देते हैं, तो मैं इतना ही मांगती हूँ कि मुझे मुक्ति मिले और



अनूपचंद को इतनी धन-दौलत मिले कि इसकी सात पीढ़ियों से भी खाया नहीं जा सके। श्री हनुमानजी ने कहा—‘तथास्तु’—और अन्तर्धान हो गए। अब तो अनूपचंद और उसकी पत्नी सावित्री बड़े ही सुख से रहने लगे।

हे बजरंगबली—अनूपचंद को जिस प्रकार दुःख व कष्ट दिया, वैसा तो किसी को भी मत देना। और जैसी डोकरी को मुक्ति प्रदान की वैसी सभी को देना।

---

## बुधवार की व्रत कथा

एक समय की बात है—कहीं एक साहूकार रहा करता था। इस साहूकार के एक ही पुत्र था।

जब यह लड़का बड़ा हुआ तो इसका विवाह समीप के किसी गाँव में कर दिया गया।

कुछ वर्षों के बाद एक दिन लड़के ने ही अपनी मां से कहा—मां, मैं आज ससुराल जाऊँगा। मां ने कहा—बेटा भले हो चले जाना। पण्डित जी महाराज से तुम्हारे जाने का अच्छा मुहूर्त पूछ लेने दो; तब जाना ठीक रहेगा और आज तो बुधवार है। बेटा ! बुधवार को घर नहीं छोड़ा जाता है।

लेकिन इस साहूकार के पुत्र ने जिद्द पकड़ी तो पकड़ ही ली। उसने मां से कहा—मां, मैं तो आज ही जाऊँगा और आज यदि बुधवार है, जैसा कि तुम कहती हो तो आज ही प्रस्थान करता हूँ। इतना कहकर वह उसी दिन बुधवार को ही अपने घर से ससुराल को प्रस्थान हो गया।

साहूकार का यह इकलौता पुत्र जब अपनी ससुराल पहुँचा तो उसका वहाँ बड़ा ही मान-सत्कार हुआ। इस प्रकार जब उसे वहाँ रहते सात रोज होगए, तो उसने सास से अपने घर को जाने की इच्छा प्रकट की। सास ने कहा—कुंवर जी ! मैं चाहती हूँ—कुछ दिनों तक आप यहाँ और रहें। आखिर इतने वर्षों के उपरांत यहाँ पधारे हैं तो कुछ दिन तो हमें भी सेवा करने का अवसर दें। ऐसी जल्दी क्या जाने की पड़ी है ? जब साहूकार का लड़का जिद्द पकड़े ही रहा, तो सास ने कहा—

आप जाना चाहें तो भले ही जाएँ। लेकिन आज नहीं। आज तो बुधवार है। बुधवार को प्रस्थान नहीं किया जाता।

और यह ठीक भी कहा गया है—युवावस्था और बुद्धि इन दोनों का मेल तो बहुत ही कम देखा जाता है। फिर इस वर्णिक पुत्र में भी बुद्धि ठिकाने रहे युवावस्था में—यह कैसे सम्भव हो सकता था। उसने सास से कहा—मैं बुधवार-फुदवार कुछ भी नहीं समझता। आपको यदि मुझे सुश रखना है तो आज ही रवाना करवा दें। अन्यथा मैं वैसे ही अकेला चला जाऊँगा।

अब तो सास बड़ी ही दुविधा में पड़ गई। दामाद को यदि रवाना करती है तो आज बुधवार है और यदि वह अपनी पुत्री को नहीं भेजती है, तो दामाद अप्रसन्न हो जाता है। उसकी नाराजी का ख्याल रखते हुए सास ने कहा—‘जैसी आपकी इच्छा’।

साहूकार का यह पुत्र उसी समय बुधवार को ही अपनी पत्नी को साथ लिए अपने गाँव को प्रस्थान कर गया।

भगवान् बुध ने देखा—इसकी मति मारी गई है; यह मेरा अपमान कर रहा है, तो उन्होंने साहूकार के पुत्र को सीख देने की ठानी।

जैसे ही वह अपने गाँव की राह चल रहा था—भगवान् बुध ने उसी प्रकार साहूकार के पुत्र का रूप बना लिया और उसे राह में रोककर कहने लगे—‘भाई, यह पत्नी तो मेरी है। इसे तुम कहाँ ले जा रहे हो’।

साहूकार के पुत्र ने उत्तर में—यह पत्नी तो मेरी है। मैं इसे अभी-अभी ही अपनी ससुराल से लिवाए आ रहा हूँ।



अब क्या था—दोनों व्यक्ति एक दूसरे से उलझ पड़े। दोनों कहते रहे—यह पत्नी मेरी है। इस प्रकार दोनों ही लड़ते-भगड़ते राज-दरबार जा पहुँचे।

राजा ने देखा—दो व्यक्ति शक्ल-सूरत में ठीक एक ही समान हैं। उनके साथ एक औरत भी है। राजा ने कहा—बोलो, तुम लोग यहाँ किध कारण से आए हो ?

साहूकार के पुत्र ने कहा—सरकार यह पत्नी मेरी है। मैं इसे अभी-अभी अपनी समुराल से लिए अपने गांव को जा रहा था। नहीं जानता यह व्यक्ति कौन है ! मुझे यह राह में मिल गया और कहने लगा—यह स्त्री मेरी है। यह भगड़ा भी कर रहा है और जबरन मेरी पत्नी को अपनी बनाए ले जाने को उद्यत हो रहा है।

राजा ने साहूकार-वेषधारी भगवान् बुध से पूछा—कहिए आप इस विषय में क्या कहना चाहते हैं ? भगवान् बुध ने कहा—राजन्, यह मेरी स्त्री है। एक रोज यह पानी भरने तालाब पर गई थी और फिर घर को लौटकर नहीं आई। आज एका-एक जैसे ही मैं किसी गांव को जा रहा था—मैंने देखा, यह व्यक्ति इसे लिए जा रहा है। मैंने इससे अपनी स्त्री लौटाने की प्रार्थना की, लेकिन यह मुकर रहा है। अब आप ही न्याय करें—मुझे मेरी पत्नी दिलवा दें।

राजा ने देखा—औरत तो एक ही है और उसके हकदार दो व्यक्ति बने जा रहे हैं। दोनों ही व्यक्ति शक्ल-सूरत में भी एक जैसे दिखाई दे रहे हैं और दोनों ही अपनी-अपनी बात पर अड़े हुए हैं।

राजा ने फैसला देते हुए कहा—देखो, आप दोनों ही मेरे इस नगर का चक्कर काट लें। जो व्यक्ति पहले चक्कर काटकर लौट आएगा, बस समझो—पत्नी उसी की है। राजा ने इन दोनों व्यक्तियों के पीछे अपना एक जासूस लगा दिया।

बुध भगवान् तो अपनी माया के बल पर फौरन ही नगर का चक्कर काट आए। लेकिन साहूकार का लड़का—बेचारे ने बहुतेरी कोशिश की, बड़ी तेजी से भागा दौड़ा—फिर भी पहले नहीं आ सका।

राजा ने फैसला देते हुए बुध भगवान् रूपी साहूकार से कहा—यह औरत तुम्हारी है। अब तो साहूकार का पुत्र बड़ा दुखी होता हुआ अपने घर को बिना स्त्री प्राप्त किए रवाना हुआ।

राह में चलते-चलते उसे भगवान् बुध उसकी पत्नी को लिए हुए मिले। उन्होंने कहा—यह लो तुम्हारी पत्नी, मुझे तुम्हारी पत्नी से क्या लेना-देना ! लेकिन भविष्य में याद रखना, कभी भी बुधवार को अपने घर से प्रस्थान मत करना। साहूकार के पुत्र ने नमस्कार करते हुए निवेदन किया—प्रभु, मैं भविष्य में कभी भी ऐसी भूल नहीं करूँगा।

हे भगवान् बुध, जिस प्रकार उसकी स्त्री छीनी गई, उसे कष्ट हुआ, ऐसा कष्ट किसी को भी न हो। जिस प्रकार उसे अपनी पत्नी पुनः प्राप्त हो पाई, उसे खुशी हुई—वैसी सब को हो।

## गुरुवार की कथा

एक था साहूकार—उसका व्यापार बहुत ही बढ़ा-चढ़ा था। उसका परिवार 'फूलां छायाँ' था। वह भगवान बृहस्पति का बड़ा सच्चा भक्त था।

घर में इतना काम-धंधा था कि उसकी पत्नी को एक मिनट के लिये भी फुर्सत नहीं मिला करती। तमाम दिन वह घर के धंधों में उलझी ही रहती थी।

एक दिन साहूकार की पत्नी किसी कारण-वश घर के दरवाजे के बाहर खड़ी थी—उसे एक पास की पड़ोसिन ने पुकारा। अरो, तुम भी ठीक हो। दिन भर घर में पड़ी रहती हो। घड़ी भर तो घर से बाहर भी आया कर !

साहूकार की स्त्री ने तब उत्तर देते हुए कहा— क्या करूँ ! मुझे तो एक पल भर भी श्वाँस लेने को समय नहीं मिल पाता। घर में इतना काम रहता है कि सिर ऊपर उठाये भी नहीं उठता।

पड़ोसिन ने कहा—समय तो तुम्हें मैं निकालकर दे सकती हूँ। साहूकार की स्त्री ने कहा—वह कैसे ? उसने कहा—प्रत्येक गुरुवार को तुम अपना सिर साबुन से धो लिया करो, अपने पति की हजामत उसी दिन बनवा दिया करो। भाड़ भूड़कर घर की सफाई कर लिया करो और लिपाई-पुताई कर लिया करो। अपने आप समय तुम्हें मिल जायगा।



जब गुरुवार आया, तो उसने अपना सिर साबुन से धो लिया। पति से कहा—जाइये, आप हजामत करवा लीजिये। उसके पति ने कहा—मैं तो ऐसा नहीं करने का। और—यदि तुमने भी ऐसा ही किया तो तुम्हें पछताना पड़ेगा।

सेठानी ने जिद पकड़ लिया—आपको ऐसा करना ही होगा। मुझे तो एक मिनट भी घर के मंफटों से समय नहीं मिल पाता।

लाचार होकर साहूकार को अपनी पत्नी की आज्ञा का पालन करना ही पड़ा। सेठानी ने भी अपनी पड़ोसिन के द्वारा बताए सभी कार्य कर लिए। इस प्रकार जब चार गुरुवार तक वह ऐसा करती रही, तो भगवान बृहस्पति देव उस साहूकार से अप्रसन्न हो गए।

अब भला क्या था—उसे व्यापार में घाटा होने लगा। उसके बेटे-पोते मर गए। उसके जानवर गाय आदि सभी मर गए। उसके पास केवल उसकी एक लड़की बच रही।

साहूकार ने अपनी पत्नी से कहा—देखो, मैं तो परदेश में कमाने के लिए जा रहा हूँ, पीछे से तुम्हारे पास इस लड़की को छोड़े जा रहा हूँ। यह हमेशा बकरियों आदि चरा लाएंगी। तुम दोनों इसी प्रकार अपना गुजारा करते रहना।

इतना कहकर साहूकार तो किसी शहर में चला गया। वहाँ वह एक सेठ के यहाँ मुनीम के स्थान पर काम करने लगा। उधर गाँव में उसकी लड़की बकरियाँ आदि चरा लाती—जितना जो कुछ मिल पाता, उससे दोनों माँ-बेटी अपना पेट भरती।

जब यह क्रम कई वर्षों तक चलता रहा तो एक दिन लड़की पास वाली पड़ोसिन के यहाँ चली गई। वहाँ से जो विलंब से वापिस आई—तो मां ने उसे देर से आने का कारण पूछा। लड़की ने उत्तर में कहा—मां, यह अपनी पड़ोसिन तो बड़ी ही निकम्मी—और दूसरे के सुख को देखकर जलने वाली है। स्वयं तो अपनी बहू-बेटियों को लेकर भगवान बृहस्पति की पूजा कर रही है और अपने को यह सब उलटा काम करने को बता दिया।

मां ने तब कहा—यदि भगवान बृहस्पति अपने पर कृपा करेंगे तो आपन भी उसकी पूजा करनी प्रारम्भ कर लेंगे। बेटा ने कहा—मां, आपन तो आज से ही प्रारम्भ कर लें। उसी दिन से मां तो बृहस्पति भगवान की कथा कहने लगी और बेटा सुनने लगी।

इस प्रकार इन्हे जब कथा कहते-कहते काफी समय हो गया तो भगवान बृहस्पति ने सोचा—साहूकार की पत्नी ने दूसरों की बातों में आकर—उलटे काम किये, इसका तो कोई दोष नहीं है। इन लोगों की गरीबी दूर करनी चाहिये।

भगवान ने ब्राह्मण का वेश बनाया—उन्होंने पीले वस्त्र पहिन लिए, पीले घोड़े पर सवार होकर वे साहूकार के घर पर जा पहुँचे।

घर पर जाकर भगवान ने कहा—ब्रह्मी, मुझे 'उतारा देवो'। उसने कहा महाराज मैं आपको अपने यहां कैसे ठहरा सकती हूँ। मेरे पतिदेव यहां नहीं हैं। भगवान ने कहा—मैं तो तुम्हारे घर ही ठहरूँगा, और कहीं जाऊँगा नहीं।

साहूकार की पत्नी ने कहा—तो आप पीछे गायों के बाड़े में ठहर जाइए । भगवान गायों के बाड़े में ही ठहर गए । इसके बाद मां ने बेटी से कहा—बेटी, पड़ोसिन से जाकर, एक सेर आटा, एक पाव खांड और एक पाव घी तो मांग लावो ।

लड़की पड़ोसिन के घर गई, कहने लगी—बहन, एक सेर आटा, पाव भर खांड और एक पाव घी तो देना । हमारे यहां मेहमान आए हैं—उन्हें भोजन करवाना है ।

तब पड़ोसिन ने अपनी बहुओं से कहा इसे देदो । बहुओं ने कहा—सासूजी इसे देने से क्या लाभ—यह तो बहुत ही गरीब है । वापिस कब लाकर देगी ? सासने कहा, यदि लौटा देगी तो ठीक है और नहीं लौटाएगी, तो समझेंगे, ब्राह्मण अपनी ओर से ही भोजन कर गया ।

उसने घर आकर रसोई बनाई । बृहस्पति भगवान को भोग लगाकर ब्राह्मण को भोजन करवाया । ब्राह्मण भोजन करके वहीं सो रहा ।

जब संझा हुई तो साहूकार की स्त्री को बड़ी ही चिन्ता हुई । सुबह तो इस ब्राह्मण को कहीं से मांगकर भी भोजन करवा दिया । अब संझा में इसे क्या खिलाया जायगा ।

बृहस्पति भगवान ने सोचा—साहूकार की पत्नी बड़ी चिन्ता कर रही है । इस पर मुझे प्रसन्न होजाना चाहिये । उन्होंने कहा—तुम क्यों व्यर्थ में चिन्ता कर रही हो । अपना भंडार तो खोलकर जरा संभालो ।

साहूकार की स्त्री ने अपना भंडार खोलकर देखा तो अन्न-धन, लक्ष्मी से भरा-पूरा है । चारों ओर गुड़, घी और शक्कर भरी पड़ी है ।



वह भागती-भागती गई। खांड और घी लेकर वेसन का उमने चूरमा बनाया। भगवान् बृहस्पति का भोग लगाया और फिर उस ब्राह्मण को भोजन करवाया।

गायों के बाड़े में गायें रंभाने लगी। बेटे-पोते सभी जीवित होगए। अब तो उसे सालूम हुआ यह आने वाला ब्राह्मण भगवान् बृहस्पति ही हैं।

अब तो रोज ही वह चूरमा बनाती भगवान् के प्रसाद चढ़ाती, कथा सुनती और फिर भोजन करती। इस प्रकार कई वर्ष व्यतीत होगए तो एक दिन सेठानी ने भगवान् से अर्ज की—भगवन् और तो सभी प्रकार से आनन्द-मंगल है—मेरे पतिदेव को मुझ से मिलवा दें। भगवान् ने कहा—यह भी हो जायगा।

वे साहूकार के बेटे के स्वप्न में गए—कहने लगे—ए साहूकार! सोरहे हो या जाग रहे हो। साहूकार ने कहा, भगवन् नींद किसे आरही है। घर छोड़े तो कई वर्ष होगए हैं।

भगवान् ने कहा—घर जा क्यों नहीं रहे हो? उसने कहा—भगवन् घर कैसे जा सकता हूं। मेरे यहाँ तो नव मन सूत उलझा पड़ा है। भगवान् ने कहा सुबह स्नान आदि करके बैठ रहना। देने वाले दे जाएँगे और लेने वाले ले जाएँगे—तुम्हारा नव मन सूत सुलभ जायगा।

उसने ऐसा ही किया—उसका नव मन सूत सारा का सारा सुलभ गया। देने वाले दे गए—लेने वाले ले गए।

सेठ से उसने कहा—मैं अपने घर जारहा हूं। सेठ ने कहा—इस प्रकार क्या जारहे हो? तुम्हारे आने पर तो मुझे बड़ा ही मुनाफा हुआ। साहूकार ने कहा—यदि मुनाफा हुआ है तो मुझे कुछ देदो।

कुछ उसे मुनाफे का और कुछ सेठ ने अपनी ओर से धन देकर साहूकार के पुत्र को विदा किया ।

जब वह गाँव के किनारे पर आ लगा तो एक पंनिहारिन से उसने पूछा—कहो, हमारे घर के क्या हाल-हवाल हैं । उस औरत ने कहा—घर के क्या हाल-हवाल पूछ रहे हो । तुम्हारी औरत तो बड़ी मस्ती में है । एक व्यक्ति को घर में रख छोड़ा है और बड़े आराम से अपने दिन व्यतीत कर रही है ।

साहूकार ने सोचा—पतिव्रता स्त्री थी—भूख के मारे यह बिगड़ गई है । खैर—मैं तो घर जाते ही जो भी व्यक्ति होगा उसे तलवार से मार गिराऊँगा ।

इस प्रकार सोचता-विचारता वह घर को पहुँचा ।

इधर बृहस्पति भगवान् घोड़े पर सवार होकर रवाना होगये । साहूकार की स्त्री ने पैर पकड़ लिए—भगवन्, आप कहाँ पधार रहे हैं ? आपके जाने पर मेरा क्या हवाल होगा । भगवान् ने कहा—जाऊँ क्यों नहीं । तुम्हारे पति के दिल में मेरे प्रति बुरे-विचार पैदा होगए हैं । अब मैं एक क्षण भी नहीं ठहरने का ।

साहूकार की पत्नी ने कहा—भगवन्, मेरा पति कहाँ है ? भगवान् ने कहा वह देखो, ऊँट पर सवार होकर आ रहा है । वह मुझे तलवार से मारेगा ।

उसका पति ऊँट से उतरकर पैरों पड़ा—भगवान् मुझे तो कुछ भी ज्ञात नहीं है । मुझे तो पड़ौसिन ने कहा था । भगवान् ने कहा, फिर तुम पड़ौसिन की बातों में आगए ! पहिले भी तो पड़ौसिन की बातों में आए थे उसे भूल गए क्या ?

साहूकार ने क्षमा माँगते हुए कहा—भगवान् अब मैं ऐसी भूल कभी नहीं करूँगा । आप मेरे घर में निवास करें ।

भगवान् बृहस्पति बोले—मैं स्थिर किसी के यहाँ टिक कर नहीं रहा करता । जो मुझे रोज बुलाता है—मैं उसके यहाँ हमेशा चला जाता हूँ; जो आठ दिनों के बाद बुलाता है, मैं वहाँ आठ दिनों के बाद चला जाता हूँ । इस प्रकार कहकर भगवान् अंतर्धान होगए । साहूकार और साहूकार की पत्नी हमेशा कहानी कहते और सुनते—भगवान् बृहस्पति का ध्यान करते । भगवान् की असीम कृपा से उनके यहाँ धन-दौलत बहुत अधिक होगया—सब प्रकार का उनके यहाँ आनन्द-मंगल होगया ।

हे बृहस्पति भगवान्, उन पर आप जिस प्रकार महरबान हुए वैसे सभी पर हों; उन पर जैसी आपकी नाराजी रही ऐसी किसी पर न हो ।

---



## शुक्रवार की कथा

एक साहूकार के सात लड़के थे और सातों ही की शादी हो चुकी थी। इन में छः लड़के तो बहुत ही अच्छा कमाया करते थे, सातवाँ था निकम्मा। इस पर मां-बाप का स्नेह बहुत ही थोड़ा था। तमाम घर के लोगों की भूठन को चूर कर या यों समझें कि भूठन का चूरमा बनाकर इस लड़के को खिलाया जाता और यही खिलाया जाता उसकी पत्नी को। इस सातवें लड़के को यह कुछ भी ज्ञान नहीं था, चूरमा किसका बनाया जाता है। वह तो यह समझता था—सब लड़कों से अधिक स्नेह मां-बाप को मुझ पर ही है, तभी तो मुझे रोज-रोज खाने को चूरमा मिला करता है।

एक दिन इस साहूकार के लड़के के यार-दोस्त घर पर आये हुए थे। मित्र वर्ग बैठकर आपस में नाना प्रकार की बातें वैसे ही विनोदपूर्वक कर रहे थे। एक ने कहा मेरी मां मुझे मेरी इच्छा-नुसार कपड़े आदि सिलवाकर पहिने को देती है। दूसरे ने कहा मेरी मां मेरी इच्छित सब्जी ही मुझे थाली में परोसती है। सभी अपनी-अपनी प्रशंसा कर रहे थे; तभी इस साहूकार के लड़के ने कहा—तुम सब लोगों से मेरी मां अच्छी है। उसका स्नेह सब भाइयों से भी मुझ पर अधिक है। मुझे तो मां हर रोज खाने को चूरमा देती है।

उसकी पत्नी उसी समय किसी कार्यवश उन्हीं के समीप से होकर निकल रही थी। उसने जो यह सुना तो कहा—हो लिया आपकी मां का स्नेह सब से अधिक आप पर! आपको और मुझे तो वे रोज-रोज घर-भर की भूठन का चूरमा बनाकर खाने के लिए दिया करते हैं।

साहूकार का सबसे छोटा लड़का अपनी पत्नी की यह बात सुनकर जल-भुनकर रह गया फिर भी उसने सोचा—निश्चय तभी हो सकता है, जब मैं स्वयं इसे अपनी आँखों से देख लूँ।

वह उसी क्षण अपनी मां के पास गया और झूठ-मूठ ही सिर-दर्द का बहाना बनाकर मां से कहने लगा—मां, आज तो सिर-दर्द के मारे प्राण निकलते जाते हैं; जरा दवा तो लगा दो !

मां का हृदय कितना पवित्र और स्नेहशील होता है अपनी सन्तान के लिये ! वह तो बेचारी विवश थी अपने इन छः लड़कों के दुर्व्यवहार के कारण ! मां तो कभी भी नहीं चाहती थी कि उसके सबसे छोटे वाले लड़के को सारे घर-भर की झूठन मिले; और बाकी सभी मौज और आनन्द से रहें ! लेकिन वह क्या करती ?

उसने जो सुना कि बच्चे को सिर-दर्द बड़े जोरों का हो रहा है तो उसने दुलार करते हुए अपनी गोद में सुला दिया और लगी उसका सिर थपथपाने।

अब तक रसोई बन चुकी थी। सभी घर वाले जीमने बाकी थे। छोटे वाले लड़के ने मां से कहा—मां मुझे बड़े जोरों की भूख लग रही है। मां ने उत्तर देते हुए कहा—बेटा तुम्हारे भाई अभी आये नहीं हैं। उन्हें आ लेने दो, फिर तुम भी भोजन कर लेना। वे सब किसी जरूरी कार्य-वश बाहर गये हुए हैं; अभी आने को ही हैं।

लड़का समझ गया—निश्चय ही दाल में कुछ काला है। वह जान-बूझकर नींद का बहाना बनाये आधी आँखें बन्द एवं आधी खुली वैसे ही सोरहा।

उसने देखा—उसके पिता भोजन करने आये हैं। उसकी भावज ने उनके झूठन को इकट्ठा कर लिया। इस प्रकार उसका पहला, दूसरा, तीसरा और क्रमशः छठा भाई भी भोजन करने आया। सभी लोगों की झूठन एक बर्तन में उसकी भाभी ने इकट्ठी करली। उन लोगों के भोजनोपरान्त तब उसकी मां ने उस इकट्ठी की हुई झूठन का चूरमा बनाया, चूरमा बनाकर थाली में परोसकर उसने अपने इस छोटे वाले लड़के को उठाने के लिये आवाज लगाई।

सेठ का लड़का यह सब बातें आँखें बन्द किये देख रहा था। जैसे ही उसकी मां ने उसे भोजन करने के लिये दो-तीन बार आवाज लगाई वह उठ बैठा। उसने कहा—मां, मुझे भूख नहीं है। मैं आज भोजन नहीं करूँगा। मां ने कहा—बेटा, भूख तो लगी ही होगी। थोड़ा-बहुत जितनी इच्छा हो, खालो। लड़के ने कहा—मैं बहुत दिनों तक झूठन खा चुका, मां! अब तो मैं कमाकर लाऊँगा तभी इस घर में भोजन करूँगा।

उसकी मां ने कहा—बेटा, ठीक है तुम्हारी यदि ऐसी ही इच्छा है तो भले ही कमाने के लिये चले जाना। लेकिन इस समय कहाँ जा रहे हो रात्रि में! कल जाना चाहो तो भले ही चले जाना।

लड़के ने तो यह सब अपनी आँखों देखा था। वह अपमान की ज्वाला से जल रहा था। उसने कहा, मां, मैं तो इसी समय घर छोड़कर कमाने के लिये विदेश को जा रहा हूँ, तुम जरा पीछे से मेरी पत्नी का ध्यान रखना। इसे यहीं घर में ही बिठाये रखना, कहीं बाहर मत जाने देना। उसकी मां ने वैसे ही, हाँसी भरली।



सेठ का यह छोटे वाला लड़का चलते-चलते एक नगर में पहुँचा। स्वभाव और विचारों से शुद्ध होने के कारण उसे फौरन ही एक सेठ के यहाँ नौकरी मिल गई।

इस सेठ के यहाँ इस साहूकार के लड़के के आने पर व्यापार में बड़ा ही मुनाफा रहा उसने खुश होकर कुछ रुपया-पैसा इसे भी दे दिया इस प्रकार यह साहूकार का छोटे वाला लड़का अपने दुःख के दिन यहाँ व्यतीत करने लगा। इसके पास काफी धन-दौलत कुछ ही वर्षों में जमा हो गयी। यह एक अच्छा-खासा शहर का धनवान व्यक्ति बन गया।

छोटे वाले लड़के की स्त्री के साथ घर में सभी बुरा व्यवहार किया करते। उसे रोज जंगल से लकड़ी काटकर लाने को जाना पड़ता। और जैसे ही वह जंगल में लकड़ियों का गठुर लिए घर को लौटती, उसे खाने को दिया जाता सूखा ज्वार का रोटा।

उसी जंगल में एक मन्दिर था शान्तिमाता का। एक रोज जब वहाँ मारे-दुःखों के अत्यन्त विकल हो गईं तो गईं उस मन्दिर में शान्तिमाता की शरण में। वहाँ बैठकर वह फूट-फूटकर दुःख में रोने लगी।

माता शान्ति देवी ने जो यह विलाप सुना तो उन्होंने एक बुढ़िया का रूप धारण किया। बुढ़िया बनकर इस स्त्री के पास आई और कहने लगी—बच्ची, इस घनघोर जंगल में तुम इस प्रकार फूट-फूटकर क्यों रो रही हो। साहूकार की स्त्री ने अपनी सारी दुःख की कथा कहते हुए कहा—अब मेरी जेठानियां मुझे बड़ा ही कष्ट दे रही हैं। वे मुझे सिर्फ एक सूखा ज्वार का रोटा

छोटा-सा देती हैं खाने के लिये मैं तो भूखों मर रही हूँ। इतना ही नहीं वे मुझे नाना प्रकार के ताने भी देती हैं।

बुढ़िया ने कहा—बेटी ! आज से तुम मेरी धर्म की पुत्री हो—मैं तुम्हारी धर्म की मां हूँ। तुम ऐसा करना—यहां हमेशा चली आना। तुम्हारे लिए खाने को रोज सवासेर चूरमा और पीने को पानी मैं यहां रख दिया करूँगी। तुम अपना पेट इसी से भर लिया करो। शान्ति माता जंगल में से लकड़ियां भी उसे काटकर ला देती।

इस प्रकार इस छोटे वाली साहूकार की स्त्री अपने दुःख के दिन काटती रही। इधर जेठानियों ने देखा—उनकी यह देव-रानी तो दिन प्रति-दिन बड़ी सुन्दर निखरती जा रही है, तो उन्हें जलन होने लगी। 'राँड' पति की अनुपस्थिति में भी इस प्रकार मस्तानी बनी जा रही है—बड़ी प्रसन्न रहती है। यदि पति के आगमन के समाचार मिल गये तो फिर इसकी खुशी का ठिकाना ही क्या होगा।

आज जब वह जंगल में लकड़ियां काटने गई तो उसने शान्ति माता से निवेदन किया—मां मेरी जेठानियां कह रही हैं, पति यहां नहीं है फिर भी यह दशा है। यदि उसके आगमन के समाचार मिल गए तो फिर इसकी खुशी का क्या ठिकाना रहेगा। शान्ति माता ने कहा—बेटी, तुम लेशमात्र भी इस बात की चिन्ता मत करना। उनके आने के समाचार भी शीघ्र आ जावेंगे।

कुछ ही दिनोंपरांत उसके पति के आगमन का समाचार आया। अब तो उसे खुशी होनी स्वाभाविक ही थी। पति का

पत्र लिये वह प्रसन्नचित्त पड़ौसिन के पास गई और उसे वह पत्र दिखाया । जेठानियों को जब यह खबर लगी, तो जल-भुनकर खाक होगई । आगमन का पत्र आया है, इसमें इतराती फिर रही है ! यदि रुपये आगये फिर तो कहना ही क्या है इसका ?

आज भी, जब वह जंगल में लकड़ी काटने गई तो माता से सब निवेदन करते हुए कहा—अब मुझे ताना देती हुई जेठानियाँ कह रही हैं—‘खर्ची आजाय तो राँड का क्या कहना है !’ मां ने कहा—बेटी, कोई चिन्ता नहीं; खर्ची भी उनकी आ जायगी । और थोड़े ही दिनों में उसके नाम रुपये आगये उसके पति की ओर से ।

अब तो उसका प्रसन्न होना स्वाभाविक ही था । रुपये लेकर वह फिर पड़ौसिन के पास गई और उसे अपने सारे सुखद समाचार कहे ।

इन समाचारों की खबर जब जेठानियों को लगी, तो बहुत जली । राँड की खर्ची आई है तो यह दशा है और यदि इस का खसम आगया तो फिर यह तो पृथ्वी पर पैर भी न रखेगी । इस प्रकार उन्होंने कई ताने दिये ।

आज भी जब वह लड़की जंगल में लकड़ी काटने गई तो उसने सारी बातें माता से कही । मां ने कहा—बेटी, तुम कोई चिन्ता मत करना । इन जेठानियों से तुम्हें कुछ भी नहीं कहना है । अभी कुछ दिनों तक और शान्तिपूर्वक रहो—तुम्हारा पति भी शीघ्र आजायगा ।



और शान्ति माता की कृपा से सेठ का वह लड़का सात-आठ दिनों बाद उस नगर से रवाना होकर अपने घर को चल पड़ा।

इधर वह सेठ का लड़का जिस समय इस जंगल में से होकर चल रहा था, यह लड़की वहीं लकड़ियां काट रही थी। उसी समय एकाएक बड़े जोरों का तूफान और आंधी आगई और फिर वर्षा हो चली। ऐसे समय में कहीं अन्य ठहरने का स्थान न देखकर साहूकार का लड़का शान्ति माता के मन्दिर में आ घुसा।

अभी उसने मन्दिर में पैर रखा ही था कि मन्दिर की सभी बस्तियां स्वयं जल उठीं। शान्ति माता की कृपा से वहां मन्दिर में एक आसन भी बिछ गया। साहूकार के लड़के की जो उधर नजर गई तो उसने अपनी पत्नी को वहां घूँघट निकाले देखा।

उसने विस्मय में चिल्लाकर कहा—अरे, तुम यहां कैसे ! उसकी पत्नी ने इस पर अपनी सारी आपबीती कहानी कह सुनाई। मैं तो माता की कृपा से जीवित भी बच रही, अन्यथा कभी की मर गई होती। इस समय मैं तो जंगल में लकड़ियां काटने के लिये आई हुई हूँ।

सेठ का लड़का यह सब सुनकर बड़ा ही दुखी हुआ। उसने कहा—मैं तो घर की ओर प्रस्थान करता हूँ, तुम जरा ठहरकर पीछे से घर में पहुंचना। इतना कहकर वह लाखों की सम्पत्ति और अनेक प्रकार की अमूल्य वस्तुएँ लिए अपने घर को चल पड़ा।

घर में पहुँचते ही, धन-दौलत को देखकर उसका बड़ा सम्मान हुआ। उसने इधर-उधर देखकर मां से कहा—

मां, घर का एक व्यक्ति नजर नहीं आरहा है, कहीं गया हुआ है क्या ?

यह सुनकर मां ने कहा—गई होगी रांड कहीं इधर-उधर धक्के खाने को । तुम्हारे जाने पर वह तो बिल्कुल बेकार होगई है । चलो छोड़ो उसकी चिन्ता ! तुम्हारी शादी कहीं अन्य कर देंगे । लेकिन सेठ के लड़के ने उत्तर दिया—नहीं मां, तुम सच-सच बताओ, वह कहाँ गई है ? मैंने तुम्हें जाते समय कहा था न, उसे घर से बाहर निकलने ही मत देना । मां ने कहा—बेटा, वह बड़ी ही अपजोरी है—भला वह किसी की मानने वाली है ! वह तो किसी के भी काबू में आने वाली नहीं है ।

इतने ही में साहूकार के पुत्र की वधू सिर पर लकड़ियों का बड़ा-सा गठ्ठा लिये घर के आंगन में आ उपस्थित हुई । यह देखकर लड़का जल-भुनकर राख होगया । उसने माँ से कहा—तुम तो कुछ और ही कह रही थीं—और यह आरही है जंगल में से लकड़ियाँ लेकर ! वह उसी समय घर से निकल पड़ा और अपनी पत्नी के लिए परिवार के लोगों से अलग रहने लगा ।

इतना सब कुछ होने पर भी साहूकार की पुत्रवधू हमेशा शांति माता के दर्शन करने जंगल में उस मन्दिर में नियमित रूप से जाया करती ।

एक दिन उसकी जेठानियों ने उसे जो देखा ! तो फिर व्यंग कसा, इतराती फिरती है पति के आने पर । और यदि पुत्र होगया तो न मालूम आकाश के कौनसे तारे तोड़ लेगी ।

आज जैसे ही वह शान्तिमाता के दर्शन करने जंगल में गई तो उसने कहा—जेठानियां अभी तक भी ताने देती हैं, कहती हैं एक पुत्र यदि उत्पन्न होगया तो फिर इसका क्या कहना। माता ने कहा—बेटी, कोई चिन्ता मत करो, तुम्हें एक पुत्र भी होगा अब ठीक नवें महीने के बाद एक पुत्र इस छोटे बाजे लड़के के हुआ। अब तो वे बड़े ही आनन्द से रहने लगे।

जब इस प्रकार बहुत से दिन सुखमय व्यतीत हो चले तो, लड़की ने ही अपनी माता शान्तिदेवी से निवेदन किया—माता, मैं तुम्हें प्रसाद चढ़ाना चाहती हूँ। शान्ति माता ने उत्तर में कहा, नहीं बेटी ! मेरा प्रसाद करना आसान काम नहीं है। मेरे प्रसाद में तुमने यदि खटाई आदि खाली तो ठीक नहीं रहेगा। मैं फिर रुष्ट हो जाया करती हूँ ऐसे व्यवहार से। सेठ के इस छोटे वाले लड़के की वधू ने कहा—माँ, मैं आपकी बताई विधि से ही करूँगी। ऐसा शान्ति माता से कहकर वह अपने घर को आई।

उसने आकर अपने पति से कहा। दोनों ही ने मिलकर शान्तिदेवी का प्रसाद बड़े मन से तैयार किया। शान्तिमाता का यह प्रसाद साहूकार के लड़के ने अपने घर वालों को भी भेजा।

साहूकार के लड़के की भौजाइयों ने प्रसाद के साथ दही आदि खटाई खाली। इसे देखकर शान्ति माता साहूकार के इस छोटे वाले पुत्र पर रुष्ट हो गयी।

इधर जैसे ही शान्ति माता रुष्ट हुई, तो राजा ने दो दूत उसके पास भिजवाये। उन्होंने आते ही कहा—चलो राजा साहब के पास, तुम्हें वे बुला रहे हैं। उनका कहना है कि तुम इन दो



ही महीनों में इतना अपार धन कैसे और कहाँ से कमाकर लाये हो ! उन्हें तुम्हारे इस कार्य पर सन्देह है । राजा के दूत ने उसे बन्दी बनाये राजा के सामने लाकर हाजिर किया ।

सेठ के लड़के के लाख बात कहने पर भी कि मैं कमाकर लाया हूँ, मैंने किसी का भी डाका आदि नहीं मारा है; राजा ने एक भी नहीं सुनी । उसका तमाम धन राजा के खजाने में रखा गया और उसे जेल में भेज दिया गया ।

अब तो सेठ की बधू शान्तिमाता के पास भागी-भागी गई; जाकर निवेदन किया—माता, यह क्या बात है । शान्तिमाता ने कहा—बेटी, मैंने तुम्हें पहले ही कह दिया था, मेरा प्रसाद बनाना कोई सरल काम नहीं है । तुमने माना नहीं । तुम्हारी जेठानियों ने दही आदि खटाई खाली, और यह उसी का प्रकोप है । तब बेटी ने क्षमा मांगी—मां, मैं ऐसा अब कभी भी भविष्य में नहीं करूँगी ।

शान्तिमाता ने राजा को स्वप्न में जाकर कहा—साहूकार के पुत्र को क्यों व्यर्थ में पकड़ रखा है और उसका धन-धान लेरखा है । उसका सारा धन लौटा दो और साथ ही उतना अपनी ओर से धन और उसे दे दो । नहीं तो मैं तुम्हारा सारा राज्य चौपट कर दूँगी । राजा ने सुबह होते ही साहूकार को कारावास से मुक्त किया, उसका धन लौटाते हुए उसमें उतना ही धन अपनी ओर से मिला दिया । और उससे क्षमायाचना करते हुए घर को विदा किया ।

साहूकार के पुत्र ने उसी दिन घर पहुँचते ही शान्तिमाता का प्रसाद बड़े ही ध्यान से बनाया—खटाई आदि का पूर्ण ध्यान रखा । शान्तिमाता साहूकार के पुत्र से बड़ी ही प्रसन्न हुई ।

एक दिन शान्तिमाता बुढ़िया का रूप बनाकर हाथ में बच्चे के पहिनने के कपड़े लेकर शहर को चली। सोचा, चलो नवजात-शिशु को देख आऊँ। उस समय बच्चे को उसका दादा घर के बाहर बैठा खेल खिला रहा था। उसने जो देखा एक बुढ़िया को तो अन्दर चला गया—यह सोच कर कि कहीं बच्चे को नजर न लग जाय। अभी वह भीतर पहुँचा ही था कि बच्चे का पेट दर्द करने लगा। वह मारे दर्द के मरने जैसा हो गया।

सेठ की पुत्र-वधू को जब यह पता लगा—एक बुढ़िया को देखकर मेरे समुद्र भीतर आ गये थे, तो उसे ख्याल आया—हो न हो यह मेरी शान्तिमाता ही होगी। वह दौड़ी-दौड़ी बाहर आई; देखा तो मां हाथ में बच्चे के कपड़े लिए खड़ी है। उसने तुरन्त बच्चे को मां के श्री चरणों में रखा। बच्चा पूर्ववत् प्रसन्न हो गया।

मां ने बच्चे के कपड़े देते हुए कहा—आज से आगे के लिये तुम्हें जगल में प्रतिदिन आने की आवश्यकता नहीं। यहीं घर पर बैठे-बैठे मेरा ध्यान कर लेना; मुझे यह तुम्हारी सेवा स्वीकार है। यह कहकर शान्तिमाता अन्तर्धान हो गई। उसी दिन से साहूकार का लड़का और उसकी पत्नी बड़े ही आनन्द से रहने लगे।

हे शान्तिमाता ! उसे जैसा सुख दिया, सभी लोगों को वैसा सुख मिले। उसे जिस प्रकार झूठन खानी पड़ी, वैसी किसी को भी खाने को नहीं मिले।

## शनिश्चरवार की कथा

एक ब्राह्मण था—वह हमेशा राज-दरबार में पूजा-पाठ करने जाया करता था। एक दिन जैसे ही वह ब्राह्मण राजदरबार से अपने घर को लौट रहा था—उसे राह में शनिदेव मिल गए। शनि-भगवान् ने कहा—ब्राह्मण, तुम्हें अब मेरी दशा लगने वाली है। और सिर्फ सात वर्ष तक ही लगी रहेगी।

ब्राह्मण ने जब यह सुना तो वह बड़ा ही घबराया। उसने कहा—भगवन्! मैं तो एक माँगकर खाने वाला ब्राह्मण हूँ। आपकी दशा का कोप मैं तो सात वर्षों तक कदापि नहीं सहन कर सकूँगा।

शनिदेव ने कहा—अच्छा तो मैं तुम्हें पाँच ही वर्षों में लगकर छोड़ दूँगा। ब्राह्मण ने कहा—नहीं महाराज, मैं तो अति ही गरीब और दुर्बल हूँ। आपका यह तप-तेज मुझसे पाँच वर्षों तक भी नहीं सहन हो सकेगा।

शनिदेव ने कहा—अच्छा तो मैं तुम्हें ढाई वर्ष में ही लगकर छोड़ दूँगा। ब्राह्मण ने कहा—भगवन्! क्षमा करें, मैं तो इतना भी सहन करने में असमर्थ हूँ। मैं तो बहुत ही गरीब हूँ—आप इस गरीब पर तो दया ही रखें।

शनिदेव ने कहा—तो सुनो, मैं तुम्हें ढाई महीनों में ही लगकर छोड़ दूँगा। अब तो ठीक है। लेकिन ब्राह्मण तो क्षमा माँगता ही रहा। उसने कहा—कृपानिधान, मुझे तो क्षमा ही करें। मैं गरीब मारा जाऊँगा। ढाई महीनों में तो मेरा परिवार और घरबार सभी नष्ट हो जायगा।



अन्त में शनिदेव ने कहा—तो देखो, तुमने मुझे सात वर्षों के लिये, पांच वर्षों के लिये, ढाई वर्षों के लिए और ढाई दिन—इन सबके लिये इन्कार कर दिया। लेकिन मैं तुम्हें सवा-प्रहर तो लगूँगा ही। अब तो ब्राह्मण लाचार था। उसने कहा—भगवन्, मैं आपसे अधिक तो कुछ कह नहीं सकता। इतना ही निवेदन है कि मैं इतने समय भी मैं नष्टप्राय हो जाऊँगा। लेकिन, जब आपकी ऐसी इच्छा ही है—सवा पहर तक आपकी मुझे दशा भोगनी ही होगी, तो जैसी आपकी इच्छा।

ब्राह्मण बड़े दुखी मन के साथ अपने घर को आया। उसने आकर अपनी पत्नी से कहा—देखो, अभी सवा पहर के लिये अपने लोगों को भगवान् शनिदेव की दशा लगी हुई है। अतः मैं तो शहर के बाहर वाले पीपल के नीचे जाकर बैठ रहता हूँ। मैं वहाँ इतने समय तक भगवान् शनि के नाम की माला फेरता रहूँगा; पीछे से घर का तुम ध्यान रखना। घर में नाना-प्रकार के उपद्रव और उत्पात होंगे। लेकिन तुम बोलना-बोलाना कुछ भी मत। चुपचाप यह सब देखती रहना।

अभी ब्राह्मण अपने घर से निकलकर पीपल की ओर प्रस्थान कर ही पाया था कि पीछे से उसके घर में चोर और डाकू घुस पड़े। घर में घुसकर वे लोग मनमानी करने लगे।

इधर जैसे ही वह ब्राह्मण पीपल के नीचे बैठे माला जप रहा था—वहाँ से एक मालिन अपने सिर पर मतारों का बड़ा-सा ओढ़ा लिए शहर को निकली। उसने देखा—एक ब्राह्मण देवता पीपल के नीचे बैठे जप कर रहे हैं। उसने अपने ओढ़े में से दो अच्छे बड़े से मतीरे ब्राह्मण देवता को भेंट किए। सोचा, ब्राह्मण देवता भूखे हैं, पूजा के उपरान्त इन्हें आहार कर लेंगे।

ब्राह्मण देवता को तो शनिदेव को दशा लगी हुई थी, फिर भला ब्राह्मण उसे कैसे खा सकता था। उधर तो मालिन उन्हें रखकर शहर को चली और उधर वे मतीरे एक कटे हुए मनुष्य के सिर बन गये।

उसी दिन वहां के राजा के राजकुमार शिकार करने को गए हुए थे। राजकुमार जब काफी देर तक लौटकर नहीं आये तो राजा को चिन्ता होनी स्वाभाविक ही थी। उसने अपने दूत चारों ओर दौड़ाये राजकुमार की खोज-खबर में।

दूतों ने राजकुमारों की बहुत ही खोज-पड़ताल की। लेकिन उन्हें कोई पग-पता नहीं मिल सका। अतः लाचार होकर जैसे ही दूत वापिस शहर को लौट रहे थे, तो उन्होंने एक पीपल के नीचे एक ब्राह्मण को तपस्या करते देखा। पास ही उन्होंने देखा—दोनों राजकुमारों के सिर कटे पड़े हैं।

राज-दूतों ने भागकर राजा साहब को खबर दी—एक ब्राह्मण शहर के बाहर पीपल के नीचे आँखें बन्द किए माला फेर रहा है। और उसके गोड़ों के नीचे हमारे दोनों राजकुमारों के सिर कटे पड़े हैं। अब जैसा आप हुक्म दें।

‘राजा तो कानां रा काचा ही हुवै है’—उसने फौरन हुक्म दिया—इस ब्राह्मण को फांसी लगा दो।

आज्ञा पाकर राजा के ये दोनों दूत ब्राह्मण के पास गए और कहने लगे—तुम्हें राजा साहब ने फांसी का हुक्म दिया है।

इन दोनों दूतों में से एक दूत था बड़ा भला और सज्जन स्वभाव का आदमी । और दूसरा जरा बुरे स्वभाव का था । ब्राह्मण ने जब यह बात सुनी तो उसने कहा—जरा मेरी यह माला सम्राट् होने दें, फिर भले ही आप मुझे मार सकते हैं । उस बुरे दूत ने कहा—अच्छा ! एक तो राजकुमारों की हत्या करना और फिर ऊपर से इस प्रकार साधुता का स्वांग दिखाना । शर्म नहीं आती है इस प्रकार अब माला फेरते हुए ।

दूसरा दूत जो बड़ा ही सज्जन था—उसने कहा—मत छेड़ो बेचारे को ! जरा माला पूरी कर भी लेने दो । इसमें अब तुम्हारा क्या बनना-बिगड़ना है ।

जैसे ही ब्राह्मण देवता को शनिदेव की दशा उतरी—वे दोनों राजकुमार तत्क्षण अपने राजमहलों में आन पहुँचे । राजा साहब ने फौरन एक दूसरा घुड़सवार दूत भेजकर इन दोनों दूतों से कहलवाया—यदि इस ब्राह्मण को फांसी लगाकर मार नहीं दिया हो, तो फौरन ही उसे मुक्त कर देना, राजकुमार दोनों ही सकुशल घर लौट आये हैं । साथ ही राजा साहब ने कहलवाया—उस ब्राह्मण देवता को मेरे पास इसी समय उपस्थित करो ।

अभी जैसे ही राजा साहब के दूत ब्राह्मण को राजमहल चलने की प्रार्थना कर रहे थे—उन्होंने देखा कि वे ही मरे हुए लोगों के सिर उसी क्षण दो बड़े अच्छे मतीरे बन गये हैं ।

दूतों ने ब्राह्मण को लेजाकर राजा के दरबार में हाजिर किया और कहा—राजन ! वे दो सिर जो थे, दो बड़े-से सुन्दर मतीरों में परिवर्तित होगये ।



राजा साहब ने जब यह सुना, तो बड़े ही चकित हुए । उन्होंने कहा—ब्राह्मण देवता, क्या आप जन्त्र, मन्त्र, तन्त्र जानते हैं । यह क्या माजरा है ।

ब्राह्मण ने आदि से लेकर अन्त तक अपनी रामकहानी कहते हुए राजा साहब से कहा—राजन् मुझे सवा पहर के लिये शनिदेव की दशा लगी थी । यह सब भगवान् शनि की कृपा का चमत्कार था—जन्त्र, मन्त्र, तन्त्र जैसी कोई बात नहीं है । राजा ने क्षमा-याचना करते हुए ब्राह्मण को बहुत-सा धन-दौलत देकर, उससे क्षमा मांगते हुए घर को रवाना किया ।

हे शनि देवता—जिस प्रकार उस ब्राह्मण को दुःख दिए, वैसे दुःख किसी को भी मत देना ।

## रविवार की कथा

बड़े ही प्राचीन समय की बात है—लाखों वर्ष बीत गये होंगे, एक दिन भगवान् सूर्य और उनकी पत्नी रांणादे आपस में बातें कर रहे थे। रांणादे जी ने कहा—‘भगवन् ! आप कभी दान-पुण्य भी किया करते हैं ?’

इस पर भगवान् सूर्यदेव ने उत्तर देते हुए कहा—रांणादे जी, मैं आवश्यकतानुसार सभी को देता हूँ। हाथी को एक मन खाने को और चींटी को एक कन मैं देता ही रहता हूँ।

समय पाकर एक दिन रांणादे जी को भगवान् श्री सूर्यदेव की परीक्षा लेने की सूझी। उन्होंने एक चींटी को एक डिबिया में बन्द कर लिया। इस बात को उन्होंने भगवान् से छिपाकर रखा। उन्होंने सोचा—भगवान् कहा करते हैं, ‘हाथी को मन और चींटी को कन’, तो देखें आज इस चींटी को कन कैसे मिल सकता है ?

उन्हें भला क्या पता था—भगवान् किसी को भी भूखा नहीं रखते। भगवान् तो सभी प्राणियों को खाने के लिये दिया करते हैं। उसी प्रकार एक चावल का दाना उनकी बन्द डिबिया में अपने आप आकर गिरा।

जब संझा में भगवान् सूर्यदेव घर को लौटे तो श्रीरांणादेजी ने कहा—महाराज, आप कहा करते हैं कि मैं सब लोगों को उनके खाने के अनुसार दे दिया करता हूँ। लेकिन मैं यह नहीं मान सकती ! मैंने आज चींटी को डिबिया में बन्द कर रखा है। भला वह वहाँ भूखों नहीं मर गई होगी !

श्री सूर्य भगवान यह सुनकर बड़े ही हँसे। उन्होंने हँसते-हँसते कहा—राणादे जी थे भोळा हो' आपको अभी तक मेरे कहने पर विश्वास नहीं जम सका ! ठीक है—आप जरा अपने पास वाली उस डिबिया को खोलकर तो देखें।

राणादे जी ने जो डिबिया खोली तो उन्हें यह देखकर बड़ा ही ताज्जुब हुआ—वहाँ डिबिया में एक चावल रखा हुआ है और चींटी उसे बड़े ही चाव से मुँह में दबाये बैठी है। वे बड़ी ही लज्जित हो चलीं और भविष्य में उन्होंने कभी भी सूर्यदेव जी की परीक्षा लेने का साहस नहीं किया।

हे सूर्य देवता ! जैसा श्री राणादे जी को लज्जित किया, वैसा किसे भी मत करना ! जिस प्रकार चींटी को भूखों नहीं मरने दिया—वैसा किसी को भी भूखों मत मरने देना।



## सूरज के डोरा की कहानी

एक मां ही, एक बेटी ही। दोनूँ मा-बेटी दीतवार के दिन सूरज भगवान को व्रत करवा करती। व्रत के दिन आपके ताई दो रोटी करके घर देती। एक एक रोटी दोनूँ जणी खा लेती। एक दिन इसो संजोग हुयोक् मां तो कोई काम सँ बारणें चली गई अर बेटी घर में रही जिकी दो रोटी पोकर मेल दी। थोड़ी-सी बार पाछै एक भखो-तिसायो साधु आ गयो जिकै रोटी मांगी। जद बा बेटी आपकी पॉती की रोटी मां सँ टुकड़ो तोड़कर साधु नै दे दियो। अर पाणी को ऊँको तूम्बो भर दियो। साधु रोटी को टुकड़ो खाकर, पाणी पीकर, असीस देकर चलयो गयो। बेटी थी, जिकी आपकी मां की बाट देखबो करी, जद दोफार ढलगा, जद उण बेटी देखीक् मां को के बेरो कद आसी आवैगी सो सूरज नाराण नै अरघ देकर आपको पॉती की रोटी खाली। थोड़ी सी देर पाछै ऊँकी मां बी आगयी आवताँ पराँत सूरज भगवान नै अरघ देकर उण बेटी सँ आपकी पॉती की रोटी माँगी। बेटी बोली—मां, एक साधु भखो तिसायो आपणें घरां आकर रोटी मांगी जदू में तो तेरली रोटी में सँ टुकड़ो तोड़कर साधु नै दे दियो, बची हुई आधी रोटी है जिकी या तू खाले। या कहकर बेटी भीतर सँ आधी रोटी ल्याकर आपकी मां के मूँडा आगै घर दी। पण मां आपकी साबती रोटी नै आधी तोड़ी हुई देखकर बेटी पर लाल ताती हुई अर बा आधी रोटी ही, जिकी आप कोनी खाई, गाय नै खुवा दी।

पाछै बेटी नै बोली—“धी ! धी !! रोटो दे, रोटै मैली कोरदे, बोई दे पण सागी दे।” बेटी हाथ-जोड़कर भोत ही लाचारी दिखाई पण बा मानी कोयनी, अयाँई करती रही।

यूँ कहवा-सुणी में रात होगी । जणा माबी सोगी अर वेटी नै बी नींद आयगी । दिन उगताईं मा, वेटी जागी । मा, फेरुँ बाई रटत लगादी—“न्धी-न्धी, रोटी दे, रोटा मैली कोर दे, बोई दे पण सागे दे ।” आपकी माने बावली की तरह अयाईं करती देखकर वेटी मनमें भोत दुखी हुई । पाछै हारकर एक दिन बा वेटी घर सँ निकलकर बन में चली गई । बावनी उजाड़ में एक घेर-घुमेर बड़ को पेड़ थो, जँ कै ऊपर चढ़कर बैठगी । एक पाणी को कोरो माँगो आपकै कनै घर लियो । सूरज भगवान को ध्यान करवा लागगी । अयाँ बैठ्याँ आठ पहर बीतग । दूसरै दिन राजा को कँवर शिकार कै लैर घोड़ों दौड़ातो हुयो उठे आ पहुँच्यो । ऊँके साथ का आदमी गैलने रहगा । तावडै की लाय बरस रही थी । भूख-प्यास सँ पिराण छटपटा रह्या था । भूख नै तो आदमी सहलेबी, तिसकोनी सही जाय । पण बावनी उजाड़ में रोटी-पाणी को के जोगाड़ । उठे घेर-घुमेर बड़ की ठंडी-ठंडी छाया देखकर राजा कै कँवर आपका घोड़ा नै बाँद दियो अर आप घरती नै भार कर लोट लगवण लागगो । थोड़ी सी देर में ईं राजा कै कँवर नै नींद आयगी । इतना में ईं बड़ के ऊपर सँ ठंडा पानी का छांटा राजा कै कँवर की छाती पर आयकर पड्या । राजा कै कँवर की आँख खुलगी । राजा कै कँवर सोची अँ उजाड़ में इसो ठंडो पाणी कठै सँ आयो ? हो न हो ये पाणी का छांटा तो बड़ में सँ आया है । राजा को कँवर पायचा टांगकर बड़ पर चढगो । आगै देखे तो सोना की सी देवली अस्तरी भेली हुई बैठी है । राजा कै कँवर जातौ पराँत पाणी मांग्यो । उण तुरंत पाणी प्या दियो । ठंडो पाणी पीकर राजा को कँवर तिरपत होगो, जी में जी आगो । राजा को कँवर बोल्ह्यो—“आज तू मन्नैजीव दान दियो है सो तू कूण है ? कोई देवी है क दानवी ?”

जद बा बोली—“मैं तो एक महाजन की बेटी हूँ। कुँवारी हूँ। मेरी मा सैं रुसकर चली आई, इव पाछी घराँ जाण की मेरी मनस्या कोन्याँ।” जद राजा कै कँवर कही “मेरे साथ चल। मेरी राणी बणकर रह” जद बा साथ २ बड़ सैं नीचे उतर आई। इतणा में राजा कै कँवर कै साथ का आदमी बी पीछे सैं आ पहुँच्या। राजा के कँवर आपकी नगरी में आयकर ऊसै ब्याह कर लियो। महल में राणी बणकर बा सुख सैं रहै-दुख का दिन भूलगी। उठीनै ऊंकी मा दो एक तो आड़ोस-पाड़ोस में हूँढती डोली, पण जद बा कोन्या मिली जणा दुख को मारी बावली होकर घर-गांव छोड़ दियो। गांवां-गांवां डोलण लागगी। दैव संजोग सैं एक दिन ऊँई नगरी में बा आयगी अर राजा के महल के नीचै बैठगी। जद महल कै मांय सैं राणी की निजर आपकी मा कै ऊपर पड़ी तो ऊँनै तुरंत पिछाणली-देखी हो न हो या नो सागी मा है। सो आपकी बांदी नै भेजकर ऊपर आप कै कन्नै बुलाली। दोनूँ मा-बेटी बाथ धालकर मिलो। दोनुं बा की आंखयां सैं आंसू टपकण लागगा।

राणी आपकी मा नै आपबीती सारी बातां सुणाई। अर रोटी-पाणी की पूछी। जद ऊँकी मा नटगी कही—“मैं बेटी के घर को अन्न कोन्या खाऊँ। मा-बेटी की बातां-बातां में रात होकर राजा के आवण को बरुत होयगो। जद राणी देखी जै राजा नै यो बेरो पट ज्यायगो कै या गरीबणी राणी की मा है तो इतरा आदर कोन्या रहेगो। जद आपके महल कै बराबर दूसरो महल हो जै में आपकी मा ने बंद करदी अर कन्ने गीऊँ चणाँ की घूघरी मिल्हवादी। पण राणी की मा रात नै कुछ बी खायो पीयो कोन्या सरज भगवान को ध्यानई करबो करो। दिन उगतां कै साथ राणीऊँ दूसरे महल का किवाड़ खोलकर



देखै तो मां की तो सोने की देवली हुई खड़ी है अर गीऊँचणों की घूघरियां की जगा हीरा-मोती जगमगाट करै है। राणी देखई रही थी इतना में राजा जी बी उठेई आयकर खड्या हो गया अर राणी नै पूछी—“आज के देखो हो?” जद राणी बोली—“महाराज मेरे गरीब पीहर सँ बीदडी आई है सो आप बी देखो।” राजा देखकर बडो अचरज करयो अर राणी नै बोल्यो—“थारो पीहर इसो है तो म्हानै बी दिखाणू पढ़ैगो।” जद राणी कही—महाराज ऐ बात को जबाब पाछै दूंगी। राणी का मन में यो डर बड़गो कै इब पीहर कठै सँ दिखाऊंगी? पण ऊँका मनमें सरज भगवान को पूरो आकीदो थो। सूरज नाराण को व्रत करती अरघ देकर जीमती। राणी एक दिन या विचारी कै आज रात नै सूरज भगवान कै तो बोल कर कह देबैगा, नई तो तड़कै मेरो शरीर त्याग दूंगी। जद ऊँई रात नै सूरज भगवान सुपना में दरसाव देकर कही कै साहूकार की तू सोच मना करीजे। अठै सँ तीन कोस पर एक पीपल है सो उठै तड़कै राजा कै सारै साथने लेकर आज्याये, नगर बस्योड़ो पावैगो। पण दिन छिपण सँ पहलॉ-पहलॉ उठे सँ बिदा होकर पाछा चल्या आयो।

यो दरसाव होने पर राणी राजा नै बोली “तड़कै म्हानै मेरो पीहर दिखाकर ल्याऊंगी” जद राजा भोत राजी हुयो। आपकी परगै नै तयारी करणै को हुकम दे दियो। दिन उगताँ के साथ राजा राणी आप को लाव लशकर लेकर चाल पढ़्या।

तीन कोस पर पीपल को पेड़ थो उठे पूंचकर देखें तों एक भोत देखण जोग सरूप नगर बसरियो है। भोतसा लोग आगे अगुवाणो कै ताईं खड्या बाट देख रहा है। राणी राजा कै पहुँचताई घणा आदर मान कै साथ लै ज्याय कर डेरो दिवा दियो। लाड-चाव होण लागगा। साईं बधाई बँटवा लागगी कोई कहै म्हारो जँवाई आयो, कोई कहै म्हारो भणैई आयो। गीत गवै है बाजा बाजै है दिनभर उयाँईं रमभोल मच्यो रह्यो। पाछे भोत सो धन देकर बिदा कर दिया। बिदा होती बखत राजा जाण वृक्तकर आपके पग की एक मोचड़ी उठे छोड़ दी अर जद आपकी नगरी के नजीक पाछा पूंचगा जणा राजा राणी नै बोल्हो—“मैं तो मेरे एक पग की जूती भूल्यायो सो पाछो जाकर ल्याऊँगो।” जद राणी कही—“महाराज सासरा सैं घणाईं धन-दौलत ल्याहो एक जूती को के बिचार करो हो ? पण राजा राणी की बात मानी कोन्या अर पाछो जूती ल्यावण कै मिस एकलोई चाल पड़्यो। उठे अयायकर देखै तो गांव को नाँव निसाणईं कोनी। न मिनख न मिनाख को जायो। पीपल की एक डाली कै राजा की जूती टग्योड़ी दीखी। जणा राजा कै मनमें बड़ो अचंभो हुयो। पाछो बेगो २ आयकर सीदो राणी कै महल में गयो अर कटारो काढकर राणी की छाती पर बैठगो अर बोल्हो—“यो के भेद है सो साची बतादे नहीं तो तन्ने मारुँगो अर मैं भी मरुँगो।” जद राणी भोत कहा-सुणी करो पण राजा हठ पकड़ लियो-कही जो बात है सो बतायाँ सरैगो।

जद राणी हारकर सारी बात कहदी अर बोली महाराजा या मेरे ऊपर सूरज भगवान किरपा करी सूरज नाराण को ब्रत करके डोरो लेण सैं यो फल मिल्यो । जद राजा भोत राजी हुयो अर आपका नगर में ढिंढोरो पिटवा दियो कै सूरजनाराण को सगली जणी डोरो धारण करियो । हे सूरजनाराण माई बाप तावडै का घणी तूँ ऊँ राजा की राणी नै पीर बासो दिखायो जिसो सबने दिखाये । कहना नै, सुणता नै, हुंकारा का भरता नै । सूरजनाराण तेरो आसरो, भर्यो पीर भर्यो सासरो ।

( पं० भाबरमल्ल जी शर्मा संपादित 'मह-भारती' वर्ष ६ अङ्क ३ में प्रकाशित )



## कार्तिकी वृत्त कथाएँ

### (१) सूरज भगवान् की काणी

सूरज भगवान् हा जिको कीड़ी नै कण देवै अर हाथो ने मण देवै । ओक दिन व्यांकी धणियाणी राणादेजी कयो कै म्हराज ! आप जीमवानै मौड़ा आवो । जद सूरज भगवान् कयो कै म्हे सारी सृष्टी नै पूर करो जद आवां । जद राणादेजी पूछियो कै की केई नहीं भूलो ? तो बोल्यो कै नहीं, म्हे तो कीनैई नहीं भूलां ।

ओक दिन राणादेजी ओक कीड़ी नै ले अर एक डब्बी में बंद करदी । जद सूरज भगवान् आया तो राणादेजी कयो कै म्हराज ! सबनै पूर दियो ? सूरज भगवान् बोल्यो—हाँ राणादेजी ! सबनै पूर दियो । राणादेजी फेर पूछ्यो की नैई नहीं भूल्या ? बँ कयो—की नैई नहीं भूल्या । अब राणादेजी ! थे थाल पुरसो । जद राणादेजी बोल्यो । कै म्हराज ! हाल म्हारो जिनावर भखो बैठो है । भगवान् कयो कै आछो, राणादेजी ! थांका जिनावर नै पैली पूरां पछो हे जीमां । जद राणादेजी कयो कै म्हराज ! ऊँ डब्बी में कीड़ी है जीनै आप ल्यावो । जद भगवान् कयो कै राणादेजी । थेई ल्यावो ।

जद राणादेजी जा-अरं ऊँ डब्बी नै ल्याया । खोल अरं देखै तो डब्बी में बांकी टीकी को ओक चावल पड़्यो है अरं वा कीड़ी ऊँ चावल कै गोल-गोल चक्कर लगावै नै चुगै । जद सूरज भगवान् कयो कै देखो राणादेजी ! कीड़ी नै कण अरं हाथी नै मण देवां, सारी सृष्टी नै पूर नै पछै म्हे जीमां । जद राणादेजी कयो कै म्हराज आप साचा ।

हे सूरज भगवान् ! भूला उठाणजे पर भूखा सुवाणजे मत ।

## (२) रामबाई और राजबाई की काणी

अक हा रामबाई और अक हा राजबाई । बै दोनू जणयां काती न्हावत्यां ही । रामबाई तो रामजी का नांव की काती न्हावता और राजबाई राजाजी कै नांव की । जद काती पूरी हुयी तो राजबाई राजाजी नै कैवायो कै में थां का नांव की काती न्हायी है । राजाजी आ सुण'र बढ़ा राजी हुया और अक पेठा में रुपिया और मोथां भरकर राजबाई कै अठै पुगादी । राजबाई ऊँ पेठा देख्यो तो बढ़ी गुस्सै हुयी कै देखो मैं तो महिना भर तक राजाजी का नांव की काती न्हायी और राजाजी बदला में दो टकां को पेठो भेज्यो है । बा गुस्सा में छोर ऊंने एक मालण नै दो टकां में बेचपाई ।

उठीनै रामबाई कयो कै मैं रामजी का नांव की काती न्याही हूँ जो कम सै कम पांच वामण तो जिमा दयूँ । आ सोच'र बा मालण रै घरां गयी तो मालण कै कनै उही पेठो पढ़्यो हो । मालण बोली कै मैं ओ पेठो दो टकां में लियो है तूँ चावै तो चार टकां मे लेव्या ।

रामबाई ऊँ पेठा नै ले लियो । घरां जा'रर ऊँनै बनारयो तो ऊँमें सूँ रुपिया और मो'रा निकली । रामबाई बढ़ा राजी हुआ और बोल्या कै मनै तो रामजी तूठ्या है । फेर सारी नगरी में नूँतो फेरा दियो कै सगला वामण रामबाई कै जीभण आइजो । सगला वामण रामबाई कै जीमबा गया और जीम जीम'र पाछा जावता 'रामबाई की जै' — 'रामबाई की जै' बोलना गया ।

राजाजी तखत बिछायां बैठा हा। जद बै बामणों की 'रामबाई की जै' की धुन सुणी तो बोल्या कै भाई! राजबाई की जै बोलो, रामबाई की जै क्यूं ? तो सारा बामण बोल्या कै म्हे तो सारा जणा रामबाई के जीम'र आया हांजी मैं रामबाई की जै बोलां हां, राजबाई की जै क्यूं बोलां ?

राजाजी राजबाई नै बुला'र पूछियो कै म्हे थाने अक पेठो भेज्यो हो बीको काई करयो। तो वा साफ-साफ कै दियो कै मैं तो दो टकां में वेट दियो राजाजी बोल्या कै बी मैं म्हे रुपिया और मोरा भर अर पण थांके लिखी नहीं ही।

जद पछै राजाजी सारी नगरी मै डुंडी पिटादी कै कोई न्हावै तो रामजी का नांव की न्हायी जो और राजाजी का नांव की मती न्हायी जो।

---



### (३) तिलक महाराज की काणी

एक बूढ़ी बामणी ही । ऊँकै एक बेटो हो । वो आपकी मां कनै सैं रोज दिनुंगा रोटी मांगतो । जद डोकरी कैती कै बेटा ! तू की नेम लेलै नेम पूरो करयां बिना रोटी नहीं खावणी । जद वो कयो मां काई नेम लेऊं । जद डोकरी कयो कै बेटा ! रोज तिलक महाराज का दरसण कर और पछै रोटी खाया कर ।

अबै वो रोज दिनुंगा तिलक महाराज का दरसण कर अर रोटी खावतो । एक दिन ऊँनै तिलक महाराज का दरसण कोनी हुआ तो वो कयो मां आज तो तिलक महाराज का दरसण कोनी हुया और मनै तो जोर की भूख लाग री है । मां कयो बेटा ! दरसण करयां बिगर रोटी नहीं खाणी चाहीजै ।

जद वो दरसण करबां नै जांवतो-जांवतो जंगल में पूंच गयो । ऊँठै ऊँनै चार चोर दीख्या, जका चोरी का माल को बंटवारो कररिया हा । बां मांय से एक के तिलक लागरिया हो तिलक देखतां ही वो खुसी रो मारयो चिल्लायो—दीखग्यो ! दीखग्यो ! दीखग्यो !

चोर समझ्या कै ओ म्हांने देख लिया है जिण वास्ते बोले है । कठैई पकड़ा नहीं देवै । सो बोल्या अरे ! चिल्ला तो मत, अठीनै आव । जद वो बां कनै गयो । जद चोरों चार की बजाय पाँच पाँती करी और एक पाँती ऊँनै दे'र बोल्या कै लै, थारी मां नै दे दीजै ।

बो गाँठ लेजा'रे आपरी मां नै दे दी तो माँ कयो बेटा ओ  
काई लायो । बेटा बोल्थो मनै तो ठीक कोनी, तिलक म्हराज  
दी है, तू पछे देखबो करजै, मनै तो जोर की भूख लाग री है ।  
पैली रोटी दे दै । मां-बेटा नै रोटी दे'र गाँठ खोली तो ऊँ मै  
ऊँ नै अन्न, धन, लख लक्ष्मी, च्यांरु पदार्थ मिल्या । अबै अंके  
खूब धन-माल हूग्यो । जद मां केयो बेटा आदमी के कोई  
नेम जरूर लेणो ।

हे तिलक म्हराज ! ऊँ छोरा ने तूठ्या जिंसा सकल नै  
तूठ्यो, आधी ने पूरी कर्यो, पूरी ने परवाण चढ़ाइयो ।

## नाग पंचमी की कथा

एक साहूकार थो । ऊँकै<sup>१</sup> सात बेटा था अर<sup>२</sup> सात बेटों की भू<sup>३</sup> थी । एक दिन साँत जणी खनेड़ा<sup>४</sup> में माँटी<sup>५</sup> ल्यावण<sup>६</sup> ने गई । उठे<sup>७</sup> कोई तो बोली मन्ने<sup>८</sup> लीणने<sup>९</sup> मेरो भाई आसी<sup>१०</sup> । कोई बोली-मेरो भतीजो आसी । छोटणी थी जिको बोली मेरा तो पीर<sup>११</sup> में कोई बी ना, बमई<sup>१२</sup> में साँप बी कानी, जिको मन्ने खाज्यावै । यूँ बातें करती-करती आपकै घराँ आयगी ।

एक दिन सातूँ ई घोर जिठाणी<sup>१३</sup> छांणा<sup>१४</sup> ल्यावणनै गई जणा<sup>१५</sup> एक खरोलिया<sup>१६</sup> कै तळै<sup>१७</sup> चाणचक<sup>१८</sup> साँप निकल्यायो<sup>१९</sup> । जणा वै छुँ जणी साँप नै मारण लागो । जद सातवीं-छोटणी थी वा बोली, अँने<sup>२०</sup> मारो मतना । मेरो तो भाई भतीजो योई है । या सुणकर उणा साँप नै छोड़ दियो मायों कोन्नी ।

थोड़ा दिनां पाछै सगलियाँ<sup>२१</sup> का भाई भतीजा आप आपकी भुवा-भाणा नै लीण<sup>२२</sup> नै आया अर वो साँप बी आयो । आयकर वो बी बोल्यो कै म्हारी भाण<sup>२३</sup> नै भेजो ! जणा साहूकार का छोटणा<sup>२४</sup> बेटा की भू नै बी ऊँकै साथ भेजरी । साँप आपकी पूँछड़ी पर बैठाकर ले ग्यो ।

चालताँ-चालता आगै बमई<sup>२५</sup> आई जद साँप ऊँमें<sup>२६</sup> बड़वा<sup>२७</sup> लाग्यो । जणा वा साहूकार कै बेटे की भू डरी अर बोली-भाई, तूँ धरती में कठै<sup>२८</sup> बड़ै<sup>२९</sup> है । साँप बोल्यो-तूँ डरै मतना । म्हारी नगरी को योई<sup>३०</sup> वारण<sup>३१</sup> है । तूँ मेरी



सबना। म्हारी नगरी को योई<sup>३६</sup> बारण<sup>३०</sup> है तूँ मेरी गैल<sup>३१</sup> भीतर आब्या। पाछै लेय-देय कर तन्नै<sup>३२</sup> ओटी<sup>३३</sup> ई तेरै घरां पहुँचा जास्यु<sup>३४</sup>। जद वा बोली भोत<sup>३५</sup>-चोखो, अर गैल-गैल चाल्याँ गई।

भीतर जाय कर देखै तो भोत सरूप नगरी बसरी है, महल<sup>३६</sup>-सालिया वणया हुया हैं, जाळी-भरोखा भुक रखा है। साँपा का कुणवा में जायकर साहूकार का बेटा की भूराजी होयगी। कोई कहै म्हारी भाण आई, कोई कहै म्हारी भूवा आई, कोई कहै म्हारी नणद आई।

रहताँ-रहताँ घणा दिन होयगा। साँपां की मां-को यो नेम<sup>३७</sup> थो कै तेरीका<sup>३८</sup> आपका बेटाँ नै दूध प्यावण<sup>४०</sup> को बखत होतो जैसँ पहलाँ ताता दूध नै कूँडा<sup>४१</sup> में सिला<sup>४२</sup> दिया करती। दूध चोखी तराँ सीलो होज्यातो, जणा वा टाली हलावेती। टाली को खुइको सुनताँ<sup>४३</sup> पराँत साँप सै<sup>४४</sup> भेळा हो ज्याता अर कूँडा में ठोड़ी टेक कर चसइ-चसइ दूध पी लेता।

एक दिन वा साहूकार का बेटा की भू बोली—मां, आज तो मेरा भायाँ नै दूध में प्यास्युँ। साँपा की मां कहयो—बेटी, तूँ ताता दूध में ताली हलादेगी तो बात बिगड़ ज्यागी। वा बोली ना मां! नचीती<sup>४५</sup> रह, आज ती मन्नैई भायाँ नै दूध प्यावण दे। जणा साँपां की मां कह्यो—आळी बात है, भलाई तूँ प्यादिये।

साहूकार का बेटा की भू दूध तातो करके कूँडा में सिला जो दियो, पण चाव-चाव की मारी चोखा तराँ ठंडो होण सँ पहलाई टाळी खुइका दी। दूध तातो थो, सो दूध पीवण नै

साँप आया उण में कोई की जीभ बळगी, कोई को मूढो बळगो ।  
जद सगळीं रीस भरकर बोल्या—म्हें तो अँ बाई नै खास्याँ<sup>४६</sup> ।

साँपां की मां देखी, यो तो रंगई बिगड़यो । जद बोली—  
ना वेटा, बाई नै खायो मतना । या थारी धरम-भाण है ।  
थारी ल्याई हुई आई है; आपणी बदनामी से डरगू चाये । थे तो  
अँनै सासरै<sup>४७</sup> पहुँचायो । या बात साँपां के बी जचगी । जणा  
पछै वे धरगू<sup>४८</sup> दायजो<sup>४९</sup> देकर ऊँनै<sup>५०</sup> ऊँकै<sup>५१</sup> सासरै—  
साहूकार कै घरां घालगा<sup>५२</sup> ।

दान-दायजा नै देखकर घोराणी-जिठाणियाँ कै समाई<sup>५३</sup>  
कोनी रही । उणां आपसरी<sup>५४</sup> में मिलकर घोल<sup>५५</sup> घोल्यो कै  
अँने छाणा ल्यावण नै भेज देणी चाये । उठे एक साँप को वासो  
है सो वो डस्याँ बिना कोनी छोड़ै । यो तोत घड़कर ऊँनै छाणा  
चुगवानै उजाड़ में भेजदी । रोई<sup>५६</sup> में साँप देवता बैठ्यो हो सो  
साहूकार का वेटा की भू नै देखतां कै साथ फूँकार मारी, जणा  
वा बोली—

जीवो नाग-नागोलिया<sup>५७</sup>,

जीवो बूढ़लो<sup>५८</sup> बाप ।

जिण म्हारो लाड़ लड़ाइयो<sup>५९</sup>,

पायल घाली पाय ॥

या मुणतां पराँत साँप देवता पायल ल्याय कर मूँडा<sup>६०</sup>  
आगै मेलदी<sup>६१</sup> । साहूकार का वेटा की भू पग में पायल पैर<sup>६२</sup>  
कर मुळकती हुई आप कै घराँ भट छाणां को चोलियो बी भर  
ल्याई । जणा घोराणी-जिठाणी बतळाई कै बातो मौत का

मूँडा में साँपा के घर छाणा ल्यावण नै गई थी, उठे सें बी जीवतीई चली आई। इबकाळै<sup>६३</sup> अने माटी ल्यावण नै लेचालो उठे बी एक काळो बासिंग नाग रहवै है, वो खाज्यगो। या ध्यार-विचार कर आपकी छोटी द्योराणी नै माटी ल्यावण के मिस सागै लेली अर खनेड़ा पर जाकर सगळी जणी बोली-पहलां तू माटी खोदकर छावड़ी<sup>६४</sup> भरले।

वा बोल-बाली खनेड़ा में उतरकर माटी खोदण लागगी। माटी पर कसियो<sup>६५</sup> पड़ता कै साथ साँप फूँकार मारी। साँप की फूँकार सुणताईं ज्याणै चिड़ियाँ में भाठो गेर दियो-सगली जणी भागगी अर साहूकार का छोटा बेटा की भू आपकी जगाकी जगा खड़ी रही; अर हाथ जोड़कर बोली :—

जीवो नाग नागोलिया,

जीवो बूढ़लो बाप।

जिण म्हारो लाड लडाइयो,

घाल्यो नव किरोड़ कोहार ॥

या सुणताईं साँप देवता हार ल्यादियो। साहूकार की बेटा की भू गळा में हार पैर कर माटी की छावड़ी भरतां पाछी आपकै घरां आयगी। जणा दोराणी-जिठाणी फेरुँ<sup>६६</sup> तिरगट<sup>६७</sup> रच्यो कै राजा की राणी नै लगादेस्यो<sup>६८</sup>, सो राणी अँको यो हार खोस<sup>६९</sup> लेसी।

जणा पछै राणी नै जायकर लगादी। जद राणी साहूकार का छोटा बेटा की भू नै बुलावो<sup>७०</sup> भेज्यो अर या बात कहाई<sup>७१</sup> कै तू खनेड़ा माय सँ हार पैर कर आई है जिको ल्यादे। जद साहूकार का बेटा की भू आपकी द्योराणी-जिठाणियाँ नै साथ लेली अर राणी का महल में गई।



जाताई राणी हार मांग्यो । उण बोल-बाली<sup>१२</sup> हार आपका गळे में से काढ़कर<sup>१३</sup> राणी नै सूँप<sup>१४</sup> दियो अर बोली-मेरे गळे हार, राणी के गळे नाग ।

सो राणी कै पैरताँ के साथ हार थो जिको नाग (साँप) होकर फूँकार मारै लाग्यो । जणा राणी बोली-तूँ जाण<sup>१५</sup>-जुगारी, कामणगारी है । यो हार का साँप क्याँ<sup>१६</sup> बणगो-अँ बात को भेद बतायाँ सरैगो ।

जद साहूकार की बेटा की भू बोली-मैं न तो जाण-जुगारी हूँ अर न कामण-गारी । मेरे तो माँ-बाप, भाई-भतीजा सब साँपइं हैं, मैं तो साँपा का दियोडाई<sup>१७</sup> गहणां पंहर्या<sup>१८</sup> हूँ । या कह कर आपकी बीत्योड़ी<sup>१९</sup> पूरी बात सुणाई । जद राणी हेल्तो<sup>२०</sup> फिरा दियो कै सावण की नाग-पाँचै नै सब ठंडो (बासी) खायो अर भायाँ-पाँचै मानकर नागदेवता की पूजा करियो ।

हे नागदेवता ! साहूकार का छोटा बेटा की भू ने दूट्यो जिसा<sup>२१</sup> सबने दूठियो । कहतानै, सुणतानै, हुकारा भरतानै, अँधेरे उजाळै सबकी रीच्छा<sup>२२</sup> करियो महाराज ।

## नाग पंचमी की कथा

- |                       |                          |
|-----------------------|--------------------------|
| १—उसके                | २५—उसमें                 |
| २—और                  | २६—घुसने लगा             |
| ३—पत्नी               | २७—कहाँ                  |
| ४—खड़ा                | २८—घुसता है              |
| ५—मिट्टी              | २९—यही                   |
| ६—लाने के लिए         | ३०—द्वार                 |
| ७—वहाँ                | ३१—पीछे                  |
| ८—मुझे                | ३२—तुझे                  |
| ९—लेने के लिए         | ३३—वापिस                 |
| १०—आयेगा              | ३४—जाऊँगा                |
| ११—पीहर—नैहर          | ३५—बहुत सुन्दर           |
| १२—देवरानी—जिठानी     | ३६—राज प्रसाद            |
| १३—उपले               | ३७—परिवार; कुटुम्ब       |
| १४—जब                 | ३८—नियम                  |
| १५—टोकरा              | ३९—प्रतिदिन              |
| १६—नीचे               | ४०—पिलाने का             |
| १७—अचानक              | ४१—मिट्टी का पात्र विशेष |
| १८—निकल आया           | ४२—ठंडा कर दिया करती     |
| १९—इसको               | ४३—मुनते के साथ ही       |
| २०—सबके               | ४४—समस्त                 |
| २१—लिवालाने           | ४५—निश्चित               |
| २२—बहिन को            | ४६—खायेंगे               |
| २३—छोटे               | ४७—समुराल                |
| २४—बाँबी; साँप का बिल | ४८—बहुतसा                |

- |                 |                                      |
|-----------------|--------------------------------------|
| ४६-दहेज         | ६६-फिर                               |
| ४७-उसको         | ६७-पडयंत्र रचा                       |
| ४८-उसके         | ६८-कान भर देंगे                      |
| ४९-पहुँचा गये   | ६९-छीन लेगी                          |
| ५०-सहनता        | ७०-नियंत्रण                          |
| ५१-परस्पर में   | ७१-कहलवाई                            |
| ५२-पडयंत्र रचा  | ७२-चुपचाप                            |
| ५३-जंगल में     | ७३-निकाल कर; उतार कर                 |
| ५४-छोटा-सर्प    | ७४-सौंप दिया                         |
| ५५-बुढ़ा        | ७५-जादू टोना; यंत्र-मंत्र जानने वाली |
| ५६-लड़ाया       | ७६-कैसे                              |
| ६०-मुँह         | ७७-दिया हुआ                          |
| ६१-रखदी         | ७८-पहनते हुए                         |
| ६२-पहन कर       | ७९-बीती हुई                          |
| ६३-अबकी बार     | ८०-ढँढोरा पिटवा दिया                 |
| ६४-टोकरी, छबड़ा | ८१-जैसा                              |
| ६५-फावड़ा       | ८२-रक्षा करना                        |



## कहाणी संपदा कै डोरै की

एक राजा हो, एक राणी हो। बेटा-पोताँ की लहर ही।  
राणी की भायली एक सेठाणी ही। एक दिन सेठाणी राजा की  
राणी सँ मिलबा आई, जिकी थोड़ी-सी बार तो बैठी, पीछै  
बोली—भाण, मैं तो मेरै घराँ जाऊँगी; काम है। राणी कह्यो—  
इसो के काम है? जद सेठाणी बोली—मैं साँपदै को तागो  
ल्यूँगी। जणा राणी कह्यो—तेरै घराँइ के होगो? अठे लेले—  
पाछै चली जाये।

जणा उण सेठाणी उठेई तागो ले लियो। तागो लेयकर  
आपकै घराँ आयगी, सामग्री का थाळ भर ल्याई। जणा पाछै  
राजा नै सुपनू आयो। दाळद तो कही—मैं तेरे आऊँगो अर  
सम्पत् बोली—मैं तेरे घर जाऊँगी। जद राजा कही कै मैं तन्नै  
गई कय्याँ जाणूँगो? जद सम्पत् बोली—तूँ सूत्यो उठैगो जद  
लोढो लेणू चावैगो तो माटी की हाँडी हाथ आवैगी अर कळसो  
मांगैगो तो ऊँनावड़ो मिलैगो; जद तूँ जाण ज्याये कै मैं तेरे  
सँ चली गई।

दूसरे दिन याई बात हुई। राजा देखीक दो परच्या तो  
मिलगा। भू पीराँ चली गई। बेटा चाकरी चला गया। बेटा  
सासरै चली गई। कोट को काँगरो ढहगो। 'हावड़ा हूत बावड़ा-  
भूत' लागगी। अन्न अर दाँताँ बैर पड़गो।

जद एक दिन राजा बोल्हो—राणी देख्वां तूँ तेरी भायली  
सेठाणी कैई जा, किमैं मिलज्याय तो पेट की आग बुझावाँ।

जद राणी रथ जुड़ाय कर आपको भायली सेठाणी कै गई ।  
सेठाणी घरू आदर-भाव दरसायो । गादी-गीडवा बैठण ने  
दिया; हीरा-मोती परखण नै दिया, पण पेट की कोनी पूछी ।  
जद राणी उठेसँ पाछी चली आई ।

राजा-राणी नै पूछी—किसँ खाण नै बी ल्याई के ? राणी  
उदास होकर बोली—आव-भगत तो घसींई करी, पण खाण-  
पीण की पूछीई कोनी । जणा पछै राजा कही—तो इब अठे सँ  
आपानेँ चालण चाये । अठे निभाव कोन्या होवै ।

यो विचार करके राजा राणी अर एक पोतो-तीनू जणा उठे  
सँ चाल पड़्या । चालताँ-चालताँ आगै सी गया; जद एक गूजरी  
छाय-दही लियाँ मिली । राजा बोल्हो—गूजरी ! म्हे तिसाया  
मराँ हाँ, सो म्हनै तूँ थोड़ी-सी छाय घालदे । गूजरी आव  
देख्यो न ताव, भइक सँ बोली—तेरै स्यारखा तीनसँ साठ  
आवँ हैं, कै-कै छाय घालूँ ? राजा सांस मरकर बोल्हो—  
गूजरी या बात तूँ कोन्या कह रही, मेरो दिन कुड़ावै है । कहा  
करै है दिन करै सो बैरी कोन्या करै ।

जणा गूजरी मूँडो मोड़कर बोली—म्हे तो तम्नै सदा सँ  
इसोई देखाँ हाँ, कदै तेरै हाथी घूमता देख्या ना । तेरे साथ  
कदसीक नोलखो साथ चढ़तो ।

राजा-राणी आपको सो मूँडो लेकर आगै नै चाल पड़्या ।  
एक जोहड़ की पाळ पर आया । राजा तीतर मारकर ल्यायो—  
अर आपकी राणी ने बोल्हो, तूँ तीतर भूँनले, मैं न्हायकर  
आऊ हूँ । आपका पोता नै बी राजा साथ न्हावणनै ले गयो ।  
जोड़ा मैं बड़ताँई पोतो हो, जिको गार में रूपकर डूबगो । उठीनै  
राणी तीतर भूँनग लागी तो तीतर भरर देन्ती सी उड़्या ।

राजा जोहड़ में पोता के डूब ज्याण कै दुःख अर भूख को मारयो आयो । आताँ पराँत राणी ने बोल्यो—ल्याव तीतर, मैं भूखो मरूँ हूँ । राणी बोली के ल्याऊँ ! तीतर तो मैं खा लिया । थें लख्या अर मैं भर्या । राजा कही—चालो अठे सैं बी चालो । जणा पाछै उठे सैं बी चाल पड्या ।

चालताँ—चालताँ राजा की भाण की नगरी में पहुँच्या । जद लोगां जायकर कही—भाण, भाण ! तेरो भाई आवै है । भाण बोली—किसैक भेषां आवै है ? जणा लोगां कही—ले लाठी भाग्यो आवै है । जद भाण बोली—उतारद्यो मेरे खोखरे पीपळ कै नीचे । नई तो मेरी घोरानी—जिठाणी बोल बोलेंगी । राजा—राणी—उतरगा ।

पछै भाण हीरा—मोतियाँ को थाल भरकर ल्याई, सो भाणनै तो धन दीखै अर राजा—राणी नै कोयला दीखै । जणा राजा—राणी खाडो खोदकर कोयला था, जिकाँनै गाड़ दिया अर आगैनै चाल पड्या । आगै सी गया, जद राजा कै भायलै खाती को गाँव आगयौ । जणा खाती नै जायकर लोगां कही—खाती ! खाती !! तेरो भायलो आवै है । खाती पूछी किसैक भेषाँ ? जद कही—ले लाठी भाग्यो आवै है । खाती बोल्यो—मेरी पुरांणती खतोड़ में उतारद्यो ।

सो खाती कै आदमियाँ राजा—राणी नै खाती की पुरानी खतोड़ में उतार दिया । उठे खाती का ऐरण—बसोला पड्या हा जिकाँ नै घरती निगळगी । जद राणी—राजा नै कही—महाराज, अठे बी कळङ्क लागै है सो अठे सैं बी चालो । जद पाछै उठे सैं चालकर एक साहूकार कै आया, वो साहूकार बी राजा को भायलो हो । ऊँनै बी अगाऊ जायकर लोगां कही—साहूकार, तेरो भायलो आवै है ! साहूकार पूछी किसैक भेषाँ आवै है ।



जद कही—ले लाठी भाग्यो आवै है । साहूकार बोल्यो, पुराणियाँ महल में डेरो दिवावो ।

जणा राजा—राणी नै साहूकार का पुराणा महल में उतार दिया । उठे एक किरौड़ को हार खूँटी के टँग रह्यो हो, जिको काठ की मोरड़ी हार नै गिट गई । जद राणी बोली—आपणें तो अठै सैं बी चालो । जणा राजा—राणी उठे सैं बी चाल पढ़्या । चालताँ—चालताँ एक नगरी में पहुँच्या जठे बारा बरस सैं एक बाग सूको पढ़्यो हो, ऊँ बाग में जायकर राजा—राणी हारया थक्या सोगया ।

वो सूको बाग गरणदे हरयो हो गयो । चाणचक सूका बाग नै हरयो देखकर माळी—माळण नै बड़ो अचंबो हुयो ! दोन्युँ आदमी बाग में ढूँढ़ण लागगा—देखाँ कुण इसो भागवान सखी मरद आगयो, जैका पवास सैं यो बारा बरस को बाग हरयो होगयो ।

ढूँढ़ताँ—ढूँढ़ताँ देखै तो दो भिनख एक मोट्यार अर एक लुगाई सूत्या पढ़्या है । मालण—माळी के पगाँ का खुड़ काँ सैं दोन्युँ जागकर बैठ्या होगया । माळी बोल्यो—भाई थे, कुण हो ? कोई देव होक मानवी ? जद राजा बोल्यो—भाई म्हे तो भिखायती हाँ । माळी बोल्यो, कोई राखै तो रह ज्यावोगा के ? राजा कही—रहाँ क्युँ ना ? राजी—राजी रह ज्यावाँगा । म्हानें तो म्हारा बिखा का दिन बोळणा है । जणा माळी बोल्यो—या मेरी धरम की भाण, तूँ मेरो धरम को भाई ! दोजणा म्हे हाँ, दो जणा थे हो—अपां च्यार जणा होज्यावाँगा ।

एक जणू बारा ले लेगो, एक जणू कीली हाँक लेगो । लुगायाँ में सैं एक जणो घर को काम कर लेगी; दूसरी है—जिकी चो लियो बेच्यावेगी राजा—राणी रहवा लागगा ।

अयाँ रहतां—सहतां राजा—राणी नै बारा महना पूरा होगया, जद एक दिन राजा कै श्रीजूं दाळद अर सम्पत सुपनै आया। सम्पत बोली—मैं तेरे आऊंगी। दाळद कही—मैं तेरे सँ जाऊंगो। जद सम्पत् ने राजा बोल्थो—तूँ तेरी जठे है उठेई रहै। मैं तो निठियां सी रोटियां रख्यो हूँ। जद—जद सम्पत् बोली—मैं कै करूँ, तेरी लुगाईं सेठाणी नै देदी। जद राजा कही—चोखो, इब मैं तन्नै कुन्यां आई जाणूंगो ? सम्पत् बोली—दिन उगताईं तूँ बारो लेगो जद सूत को फड़कलो, हळदी की गांठ, जोवां की बाळ निकलेगी, सो तेरी लुगाईं तागो लेयकर चोलियो बेचण चळी जायगी।

अय्याँ राणी तागो (डोरो) लेयकर पीसण लागी ती चाकी की चूल आटा की भरगी—चोलियो बेचण गई तो चोलियो भो जिको सातूँ नाजां को भरगो। जद राणी सम्पत् ने बोली—इब तो माता तूँ मेरे ठोड ठिकाणे दूठिये। नईं तो मालण—माळी के यो बहम हो ज्यायगो क नाज या बीच में राख लिया करती।

जणा पछै एक राजा की बाई व्यावण सावै हो रही थी, जेकै ताईं घर—घर ढूँढ़ रह्या था। जद राजा माळी नै बोल्थो—एक टुकड़ो साबण को ल्यादे तो मैं बी मेरा कपड़ा धोल्थूँ अर राजा की बाई कै सुयंवर का तमाशा देख्याऊँ। साबण तो मैं ल्यायूँ हूँ, पण तन्नै—म्हानै कुण तमाशा में जाण दे है ? राजा कही—भई, मैं तो जाऊंगो, कोई रोकैगो तो देखी जायगी।

या विचार कर माळी को घरम भाई बी राजा की बाई के सुयंवर का दरबार में जायकर बैठगो—जठे देश—परदेश का राजा लोग भेळा होरियाथा। वो जाणै मैं माळी पहलूँ, वो जाणै मैं वरमाला पहलूँ। पण वा राजा की बाई सबकै बीच सँ चीरती—

चीरती आगा नै जायकर माळी कै रहतो जिका कै गळै में माळा घालदी ।

जणा सगळा बोल्यो—बाई को भाग फूट्योडो है । फेरूँ ऊँ माळी—वाळा आदमी नै धकेल कर परैसी कर दियो तो ओजूँ ऊँई केई माळा जा घाली । घणा पाछै ऊँ आदमी नै—जो हो तो एक राजा, पण आपकै बिखै का दिन बोळा रिह्यो थो—ऊपळोँ कै बटोड़ा में चिणवा दियो अर राजा की बाई कै हाथ में तीसरी बार फेरूँ बर—माळा दे दीनी ।

वा बाई फेरूँ सगळा राजा—महाराजावाँ ने छोड़कर बटोड़ा कै माळा घालदी । जद बाई कै बाप राजा आप कै मनमें घणू पछतावो करतो, अर कही—बाई की तो अक्कल मारी गई ! पाछै आपका स्याणा भोळा सँ बतला कर या बात ठहराई कै अँ आदमी नै इब आपणा बाग में केसरी—सिंघ नै पकड़णनै भेजवो; सो वो नार आपैई मार गेरैगो ।

या मन में ध्यार—विचार कै ऊँनै बोल्यो—इब जाओ देखां ! केसरी सिंघ नै पकड़ो, जद मेरी बाई थानै परणाई जायगी । या सुणकर वो राजा की बाई नै बोल्यो—तेरो बाप मन्नै तो केसरी सिंघ पकड़वा नै भेजै है । जद बाई भोत उदास हुई । बोली—ओ हो ! ऊँ केसरी सिंघ तो मेरा बाप की सारी परगै खपादी, इब थानै के जीवता छोड़ेगा ? जद बिखायती राजा बोल्यो—तूँ चिन्ता मतना करै, रामजी चाया तो तेरा भाग सँ जीवता ई आवांगा । या कहकर वो बाग में जायकर केसरीसिंघ का मूँडै आगै खड़्यो होगो अर नार नै बोल्यो—जै मेरै बाप—दादाँ सिंघ मारया होय तो तूँ बी मेरै आगै सिर निवादे । जद केसरीसिंघ सिर झुका दियो अर आपकी जीब सँचाटण लागगों । जद उण ऊँ नार कै कानां की अर पूँछ की लोर कतर कर आपका गोज्या



मैं घालली भर आप नार नैं आपका पग का गूँठा कै बाँद कर सोयगो ।

भोत देर होयगी, जद बाई कै बाप राजा आपकै आदमियाँ नैं हुकम दियो कै देखौ, बाग में जायकर देखो तो सरी, वो आदमी मरै हैक् जीवै है ? जद आदमियाँ जायकर दूर सैं देखैं तो सिकार तो खाँडी कर राखी है अर आप चादर ताख्यौ सुत्यो है । केसरीसिंघ गूँठै कै बँद रिह्यो है । आदमियाँ पाछा आयकर राजा नैं कही, जद राजा बोल्यो—इबकै ऊँनै खढ़्या आंगळी सैं कठखाणू घोड़ो दिखाकर कह्यो कै अँ घोड़े पर चढ़कर गाँव कै बाहर च्यारू—मेर फेर कर ल्यावैगो, जणा राजी की बाई परणाई जायगी ।

जद राजा का आदमियाँ हेलो मार कर राजा को हुकम सुणाया अर आंगळी सैं कठखाणू घोड़ो बता दियो । जद विखायती राजा घोड़ा की पीठ पर हाथ फेरकर बोल्यो—जै मेरा बाप—दादा घोड़ाँ पर चढ़्या होय तो तूँ बी मेरे आगे नाइ सीदी करदे । घोड़ै भटदे नाइ पसार दी ।

विखायती राजा सवार होकर घोड़ा नैं गाँव कै च्यारू—मेर फेर कर पाछो लियायो अर राजानै जुहार करी । जणा राजा देखी, योबी कोई तपधारी राजाई है । अर घणा आनंद उछाव सैं आपकी बड़ कँवार बेटी परणा दई । नीचैं रिहास सुसरा की अर ऊपर जँवाई की । यूँ रहताँ—सहताँ घणेर दिन होयगा, जद बाई की भाबियाँ बोल-बोलण लागगी क् व्यादी-ध्यादी, पराये घर की करदी—तोबी अठे म्हारीई छाती पर रही । भाण बेटी को तो योइ होय है के देदें सो लेयकर आपके घराँ जाय । पण म्हारली बाई कै घर को ठिकाणू होय जद जाय ! राजा की बाई भाबियाँ का बोल सुणकर कानाढोळी मारती रही ।

संजोग की बात, राजा की बाई कै आसा रहकर नवै महीने एक कुँवर हो गयो। एक दिन राजा को जँवाई आपका कुँवर नै खिलावै हो—आकाश में बिजली चिमकी। जद बोल्यो—म्हारै देश कानी बीजली चिमकै है। जणा राणी बोली—थारै बी देश है के ? जद राजा को जँवाई बोल्यो—देश क्यूँ ना ? तेरा बाप कै तो पाँच सै खेड़ा हैं अर मैं साढ़े सात सै खेड़ा को धणी हूँ। जद राणी बोली—जणा इब आपानै बी आपणै देश चालण चाये। राजा कही, ठीक है; तेरा बाप सँ सीख मांगले।

जद राजा की बाई आपका बाप नै बोली—बाप जी, म्हानै इब सीख दिरावो। म्हेँ म्हारै देश जावांगा। जद राजा घरण राजी हुयो अर बोल्यो—बाई, धन-भाग, धन-बढ़ी, सोना को सूरज ऊग्यो—थे थारै घरां जावो, आनन्द सँ खावो-पीवो, सुख पावो।

जणा पाछै शुभ दिन देखकर घरण धन, लाव-लशकर देकर बाई नै विदा करदी। राजा आपकी पहलड़ी राणी अर नई राणी—दोन्युवां नै लेयकर देश नै चाल पड़्यो। जँ मालण—माळी कै इतना दिन सुख-संतोष सँ बिखै का दिन काड्या था, उणनै भोतसो धन देकर उणीता हुया।

चालतां-चालतां पाछो राजा आपकै भायलै साहूकार के शहर में पूँच्यो। लोगां जाकर कही—साहूकार, तेरो भायलो आवै है। साहूकार पूछी, किसैक भेषा ? कही—गिगना लाग्यो आवै है। साहूकार बोल्यो—मेरा नया महल में उतार द्यो। जद राजा कही—ना भाई, म्हे तो पुराणा महल में ई उतरांगा।

जणा पुराणा महल में उतार दिया। पहला जाती बखत काठ की मोरड़ी साहूकार को नो किरौड़ को हार निगलगी थी।

सो इब उण मोरबीई पाछो हार उगल दियो । जद राजा साहूकार नै बोल्यो—देख भायला, तूँ तेरा मन में समझ राखी थी कै मेरो नो-किरोड़ को हार राजा ले गयो । इब तूँ तेरी आंख्या देखले । पण कोई बात ना । यो एक हार तो तेरो राख अर दूसरो हार मेरा कानी को ले ।

पछै साहूकार सँ सीख मांगकर खाती कै आया । लोगां कही, खाती ! खाती !! तेरो भायलो आवै है । जद खाती पूछी किसैक भेषां आवै है ? कही घणू लाव-लश्कर साथ लियां गिगना लाग्यो आवै है । जद खाती बोल्यो—जातो हुयो तो मेरा घणाई ऐरण-बसोला ले गयो थो; पण इब तो मेरली नयोड़ी खातोड़ में उतार द्यो । जद राजा कही—भई, म्हें तो पुराणती खतोड़ में उतरांगा ।

जणा कही आछी बात है, जद पुराणती खतोड़ में राजा नै उतार दियो । उठे बी सवामण की कड़ाई करके राजा बळदई । जद धरती माता सगळ्य ऐरण-बसोला उगळ दिया । जणा राजा बोल्यो—देख ले भायला ! तूँ म्हारै सिर लगावै हो !! इब तेरा राछ-पोछ, ऐरण-बसोला सब संभाळ ले अर म्हारै कानी का और ले ले ।

अब खातीका सँ बी उणीता होकर आगा नै चाल पड्या । पाछै भाण कै पहुँच्या । लोगां जायकर कही—भाण ! भाण !! तेरो भाई आवै है । भाण पूछी, किसैक भेषां ? जद कही-गिगना लाग्यो आवै है । जद भाण बोली—मेरा घणाई मोती-दीरा जातौं लेगो थो, जिको धन करकै ल्यायो है सो मेरै घराई उतार द्यो । जद राजा बोल्यो—ना बाई ! म्हें तो पहलां उतरया जेठई उतरांगा । सो पीपल का खोखरा कै नीचे उतरया ।



जद राजा बोल्यो—बाई, तू जिमावै है या बोल मुणावै है ? तेरा हीरा—मोती था, जठेई संभाळले । जणा पाछै घरती खोदकर दोयथाळ हीरा—मोतियाँ का निकाळ कर दे दिया अर दोय आपका कनासैं देकर भाण सैं बी उणीता होगया । पाछै उठे सैं चालकर ऊँ जोड़ा की पाळ पर आया । जद राजा को पोतो आयकर खड्यो हो गयो अर बोल्यो—बाबा ! मुन्नै बी नुहा, बोळी बार हो गई बाट देखताँ ।

उणीनै सैं तीतराँ बोलणू सरु करयो—‘सुभान तेरी कुदरत, सुभान तेरी कुदरत’ । जद राजा बोल्यो—एक तो वो दिन थो, जिको रान्योडा तीतर उड़गा था । अर एक दिन आज को है जिको तीतर अपणै आप आयकर सूण देवैं हैं । आगै सी गया जद गूजरी मिली । छाया—दही की हाँडी भर राखी थी । बोली—ल्योजी ! दही पी ज्वावो । जद राजा कही—आज तो तू दही प्यावै है, पण ऊँ दिन छाया नै बी नटगी थी । जणा गूजरी बोली—राज मैं के करूँ ! तेरो वो दिन इसोई हो ।

राजा आपकी नगरी में पहुँचकर आपको राज-पाट संभाळ लियो—राजा राज, पिरजा चैन होगयो । नगरी में उच्छव मनायो गयो । घणा राग—रंग हुआ । भूवाँ पीराँ सैं आयगी—बेटा चाकरी सैं आयगा ।

कोट को काँगरो सीदो होगयो । जणा राजा आपकी नगरी में हेलो फिरादियोक संपदा नै सब मानियो । छारंडी कै दिन डोरो लियो अर तीसरे पखवाड़े खोल दियो ।

हे संपदै की राणी भवानी ! पहला दूठी जिसी कहीनै बी मत दूठिये । पछै दूठी जिसी सबनै दूठिये । कहतानै, सुणतानै, हुँकारा का भरतानै ।

## आस माता

एक हो साहूकार जिकेरै सात बेटा हा । छ तो हा सपूत,  
कमावता-कजावता था अर एक कपूत हो । छओं भायों कयौ—  
भाजी, म्हानै न्यारा कर दो । ओ तो कई कमावै कोयनी, बैठो-  
बैठो खावे है । जणै बाप सगळों नै न्यारा कर दिया ।

हमें वो जिको कपूत हो, वे संगळो ही धन उढ़ाय, बरबाद  
कर नौखियौ । बेरी बऊ देराणियां जेठाणियां रा बासण मौजै,  
चौका करै ।

एक बखत आस माता आई देराणियां जेठाणियां तो लाइ  
बीजा कर आस माता पूजण बैठ्यौ । वादेराणी सगळियौई  
जेठाणियां री घटी भाटक अर आटो लाई । लायपरी देराणियां  
जेठाणियां खनै गुळ-धी मांग'र लाई । वेई आसमाता री चार  
पीडोळियां कर्यौ ।

हमें सातै सायौ आस माता पूजण नै बैठ्यौ ! छ जणियौ  
तो आपरै खोळै में बेटा लेलिया अर खोपरै में दीओ जगाय  
लियो, मोतियांरा आखा लेलिया । कचे डोरै में एक हार पोय'र  
गळे में घालळियौ । हमें आस माता री पूजा करण बैठ्यौ—  
हे आस माता, म्होरी मनोकामना पूरण करियै ।

जितैई वा देराणी कयौ-इयैरी पूरण करै जिसी म्हारी करै ।  
देराणियां जेठाणियां त चौका दिया-धणी तो कपूत है अर म्होरै  
जिसा मंगै है । वा बापड़ी चुपकर बैठ गई । जितै बोरै बेटों लात  
री मारी, हार टूट गयो, कचे सूत रो हो । खमा-खमा सगळियौ  
कैवण लाग गयौ । वा बेचारी मूंडो उतार बैठगई । मन में कवण  
लागी-हे आस माता, म्हारी मनोकामना तूं पूरण करै ।

वा पूजर घरै आई-धणी नै कयौ, भाग भरिया ! बाप री कमाई तो सैन उड़ाय दी । हमें तूं कमावण तो जा कठैई ! कठै जाऊँ, मनै तो कठै जावणरोई सूझै कोयनी ! तो जा तो सरी-आस माता आफैई देसी । तो कै ठीक है-जाईस भाई ।

जणै वे एक कोड़ी-एक लखो टीयौ, एक बींटी एक मोळी में बांधेर बेरी चोटी में बांध दी सैनांणी ।

हमें वो घर सूंगयौ । गयौ-थकगयौ, अर रसते में सूयगयौ । आस माता री किरपा सूं उजैण नगरी रै खनै नींद में आसमाता पैंचाय दियौ । बेरी उठै आख खुली-वेनै चार लुगायां दीसियौ । वे हाथ जोड़िया-हाथ जो डर वो बैवण लाग-ग्यौ ।

हमें चारे जणियां लड़ण लाग ग्यौ-नींद तो कवै, मनै हाथ जोड़िया । तिस कवै-मनै हाथ जोड़िया । भूख कवै-मनै जोड़िया । आस माता कवै-मनै हाथ जोड़िया ।

आस माता कयौ-बाई, लडौ क्यों ? अपां बैवतै बटाऊ नै पूछलौ-वे केनै हाथ जोड़िया । जणै वाँ कयौ, तो चालौ ।

अरे बैवता बटाऊ ! तैं केनै, हाथ जोड़िया ! भाई तूं कुण है ? हूं भूख हूं । मैं तो भूख नै हाथ जोड़िया कोयनी । भूखरो मारियौ तो हूं घर सूं निकळियौहूं ।

जितैई नींद पूछियौ-कै भाई थैं केनै जोड़िया ! तूं, कूण है ? हूं नींद हूं । नींद नै जोड़िया कोयनी । नींद आयजावै तो म्हारो कोई गळोई कतर जावै तो ठाई पड़ै कोयनी ।

जितै तीसरी पूछियो-भाई थैं केनै हाथ जोड़िया ? तूं कूण है ? हूं तिस हूं । तिस नै म्हैं जोड़िया कोयनी । इयै रिंद-रोई में तिसों मरतो मरजाऊं, तो कोई पांखो पावै कोयनी !



जितैई चौथी पूछियौ—भाई तैं केनै जोड़िया ? तूं कृंग है ? तोकै हूं आस । आस माता नै सौ-बार नमस्कार ! सात पीढ़ी नै नमस्कार ! आसा बंधौ हूं घर सूं निकळियौ—थूं म्हारी आसा मनसा पूरै ।

तोके तूं जा ! थारी आसा मनसा पूरी होसी । उजैण नगरी रो राजा मरियो है, थनै राज मिळसी ।

वे चार जिणियौ तो उठैई अलोप होयगयौ—वो उजैण नगरी में गयौ । उठै रो राजा मरियोडो थो; धूम-धाम ही उजैण में राजगद्दी री । वे जाणियौ—बात तो साची है, राजा मरियोडो है । वो एकै-पासी चुप-चाप जाय'र ऊभौ हुयग्यौ ।

रजवाड़ै में एक हथणी नै सिणगारी । हथणी नै एक माळा दीवी । हथणी धूमती-धूमती एक खूणै में जाय ऊबै नै माळा पैराई ।

हमें रजवाड़े रा लोग कैवण लागग्या—हथणी भूली ! हथणी भूली ।

दूसर हथणी नै सजाई । वेनै धका-मार निरो आघौ काढ़ दियौ । हथणी-धूमती-धूमती फेर बेरैईज गळै में जयमाळा पैराई । रजवाड़ै रा लोग फेर कैवण लागग्या—हथणी भूली ! हथणी भूली !!

हमें तिसरकी-बार वेनै सात ताळां में ढक दियौ; हथणी नै फेर सजाई । हथणी फेर धूमती-धूमती सातैई ताळा तोड'र जयमाला बेरैई गळै में जाय पैराई ।

कै हथणी फेर भूली ! राज तो इयैरेज लिखियोडौ दीसै है-  
तीजै लोक पतीजै, चौथै चावळ सीजै । हमें जिको चौथी फेर  
पैरासी वेनैईज राज मिळसी ।

वेनै एक रंद-रोई में खाडो खोद'र बूर दियौ; अर हथणी  
नै फेर सजाई । हथणी घूमती-घूमती ठेठ रंद-रोई में गई ।  
जाय'र पगसूं जमी खोद'र खाडै मांय सूं काढ ऊवै नै, वेरै  
गळै में जयमाळा पैरादी ।

रजवाडै रै लोकां कयौ-राज तो इयैरैईज लिखयोडौ है ।  
नैवाय-धुवाय ऊवनै राज तिलक देदियौ । वो राज करण  
लागग्यौ ।

वरै मां-बापां रै घर रै मांय नै अर भायों-भोजाईयों रै  
नादारी आय गई । ओ तो घणा पईसा देवै-थोडो काम करावै !  
मां-बापां नै ठा-पड़ी; भाई-भोजाईयों नै ठा-पड़ी । उजैण नगरी  
में एक नवो राजा हुवो है—थोडो तो काम करावै, घणा पईसा  
देवै, अपां उठैई हालो नौकरी करलेसौं ।

हमें छः भाई, छः भोजायां, मां-बाप अर वा आपरी बऊवारै  
साथै ! वे मोल में बैठोई आपरै कुटम्ब नै ओळख लियौ । मोल  
सू नीचो उतरियौ, नौकरानै कयौ-जाओ वे बँवता बटाऊ जावै  
ऊवानै बुलाय लावौ । नौकर गया अर बुलाय लाया ।

राजा कयौ-भाई, थे नौकरी करसौ । हां इंदाता ! म्हैं नौकरी  
करणनैईज आया हौं । वे आपरै सिगळानैई नौकरी राख लिया ।

छः भायां नै तो घोडों माथै राख लिया, बापनै चौकीदार  
राख दियौ, मानै बिलोणौ करणनै राख दी, छः भोजायांनै घर रा  
सगळा काम-काज करण नै राख दियौ । आपरी बऊ नै नेवावण  
री जागा राख दी-मनै तूं संपाडो कराया कर । बऊ रै जीमें

दुख आयौ—कै देखौ, धणी तो परदेस कमावण गयौ है अर मनै जिको पराए आदमी नै नेवावणौ पड़सी !

हमें वा एक दिन जिको वेनै नेवावण बैठी । वेरै माथै में जिका सैनांणी वे बऊ बांध'र भेजी, वा दीसगई । ओ देखर वा रोवण लाग गई । ऊनो-ऊनो आंसू रो छांटौ राजा री पीठ माथै पड़ियौ, राजा सामौ जोयौ ।

क्या बात है—तू रोई ? वा डरण लाग गई । नहीं अंदाता, मनै इयोई रोज आय गयौ । नहीं, तू डर मती—तनै सातैई गुना माफ है; हे जिसी बात बताय दै ।

जणै वे कयौ—म्है म्हारै धणी रै इसोई छलो बांध'र बइर करियौ, उसोई देखँर रोज आय गयौ । धणी उठ'र कयौ—तू म्हारी लुगाई है, हूँ थारो धणी हूँ । आसमाता तुष्टमान हुई मनै—ओ राज मिळियौ ।

वेनै नेवाय—धुवाय रांणी बणायली राजा । वे दिन सू वेनै अवधान होय गयौ । पाछी बारै मई नै आस माता आई, जिते वेरै बेटो होय गयौ ।

वे हमें मोतियां रो थाळ भर, कचे तोतण में हार पोयौ । हमें सिगळियोंई देराणियां, जेठाणियां नै लेयपरी, बटैनै लेय'र आस माता पूजण बैठी । पूजते—पूजते बेटे लात री मारी, हार टूट गयौ । देराणियां, जेठाणियां उठ'र खमा—खमा महारांणी जी नै कैवण नै लाग ग्यों । वे कयौ—मनै खमा—खमा मती केवौ ! खमा आस माता नै—मनै कैवतियों तो जदैई कैव देवतियों ।

हे आसमाता ! वेरी मनसा पूरण करी उसी सगळों री करै ।



## बछ बारस री कथा

एक ही डोकरी अर एक ही बऊ। डोकरी एक दिन बार गई। जाँवती बऊनै कैअर गई—म्हारै गवलियौ रौघ राखै।

हमें बऊ बापड़ी पूछियो तो कोइनी सासू नै! वेरै पीरै में गवलियौ कैवताहा बछड़ै नै। वे आपरी डरतै—डरतै बछड़ै नै बाढ'र हांडी में रौघलियौ।

हमें सिजारी सासू आई अर उठी नै सूं आई गाय जंगळ सूं चर'र। सासू बऊ नै कयौ—बीनणी, बाछड़ियो छोड़। गाय दूँ वूँ!

हमें बऊ हाथ—मोडै, पग मोडै बाछड़ियो तो रौघलियौ; हमें क्या छोड़ूँ?

भगवान सूँ अरदास कीवी—हे भगवान! म्हारी परतंगिया अबै तूँ ही राखै। जितैही हांडी फूट'र, हांडीरो घोंघो गळै में घालोडौ, बापयां निकळतौ बाछड़ियो आय'र गाय रै हांचळों में पड्यौ।

सासू पूछयो—बऊ, ओ क्या? बाछड़ियो रैगळै में घोंघो अर बापयां निकळे है। बऊ कयौ—सासूजी, म्हारै तो पीरै में गवलियौ—बाधड़ै नै कवै है। थे ठानी गवलियौ कैनै कवौ हो? म्हारी तो परतंग्या भगवान राखी।

सासू कयौ—आजरै दिन नातो कोई गोवूँ खावै, ना कोई गाय री खीर खावै, ना गायरो दूध—दही खावै—पीवै। भैंसरो घी खावै, भैंसरो दूध—दही खावै—पीवै। चाकूरो कतरीयोडौ नहीं खावै। बाजरी खावै बेटे री मां बछड़ै री गाय नै पूजै।

हे गऊ माता, वेरी पिरतंग्या राखी जिसी सकळ री राखै।

## गणगौर की कहानी

एक राजा थो, एक माली थो । राजा <sup>१</sup>बाया जो चणा अर  
अर माळी <sup>२</sup>बायी दूब । राजा का जो चणा <sup>३</sup>बघता जायँ, माळी  
की दूब घटती जाय । माळी राजा नै कही-महाराज या के  
वात ! मेरी दूब घटती जाय अर <sup>४</sup>थारा जो-चणा बघता जायँ ?  
राजा बोल्यो-तेरी दूब <sup>५</sup>छोरियां तोड़ कर ले ज्यायँ है ।

जद माली <sup>६</sup>मुँह-अँधेरे <sup>७</sup>भाख पाटती कै साथ गाड़ी का  
पैया के <sup>८</sup>तलै <sup>९</sup>लहुककर <sup>१०</sup>बैठगयो छोरियां <sup>११</sup>भेली होकर  
<sup>१२</sup>रोजीना की नाई दूब <sup>१३</sup>लीवनै आई । जद माळी गाड़ी का  
तळा सँ <sup>१४</sup>चाणचक निकलकर कोई को हार <sup>१५</sup>का खोस लियो,  
कोई को डोरो खोस लियो, कोई को <sup>१६</sup>गाबो खोसलियो अर  
बोल्यो थे <sup>१७</sup>सासती मेरी दूब <sup>१८</sup>कटयाँ तोड़कर ले ज्यावो हो ?  
जद छोरियां कही-महारा हार, डोरा, अर गाबा दे दे । भँ  
सोळा <sup>१९</sup>दिना ताई <sup>२०</sup>गणगौर पूजा <sup>२१</sup>हौं । सोळवै दिन गणगौर  
पूजकर तन्नै <sup>२२</sup>फळ <sup>२३</sup>-लापसी दे ज्यास्याँ <sup>२४</sup>। माळी छोरियां ने  
उण <sup>२५</sup>का हार, डोरा अर गाबा खोस्या था, जिका पाछा देदिया ।

सोळवै दिन गणगौर माता नै पूज्यां <sup>२६</sup>पाछै फळ-लापसी  
लेकर छोरियां माळी की मां कै कन्नै <sup>२७</sup>आई अर बोली-बूढीमाई

(१) बोये (२) बोये (३) बड़ते (४) आपका (५) लड़कियाँ  
(६) प्रत्युष (७) पौ फटते ही (८) नीचे (९) छिपकर (१०) बैठ गया  
(११) इकट्ठी (१२) प्रतिदिन की भाँति (१३) लेने (१४) अचानक  
(१५) क) छीन लिया (१६) कपड़ा (१७) बाधवत, सदा (१८) कैसे  
(१९) सोलह (२०) दिनों तक (२१) हैं (२२) तुम्हें (२३) पूजा के लिए  
प्रस्तुत नैवेद्य (२४) दे जायेंगी (२५) उनके (२६) पूजने के पश्चात्

यो चढावो<sup>२७</sup> ले । जद माळी की मां कछो-मेरी ओबरी<sup>२८</sup> में मेलघो<sup>२९</sup> छोरियां फळ-लापसी ल्यायी थी, जिकी मालण की ओबरी में घर कर आप आपके घरां चलीगी । जणा पाछै अँवारीसी<sup>३०</sup> माळी को आयो अर आपकी मानै बोल्यो-मां, मैं तो भूखो मरु हूँ कि मैं<sup>३१</sup> खावानै दे । जद ऊँकी<sup>३२</sup> मां कछो बेटा, आज बी भूखो क्यूँ मरै ? गाँव की छोरियाँ घणीईं फळ-लापसी देकर गई हैं, तूँ घापकर<sup>३३</sup> खाले, ओबरी में पड़ी है । जद माळी ओबरी खोलकर देखें तो हीरा मोती जग मगाहट कर रखा है । अणमेदा<sup>३४</sup> को धन ईं धन पड्यो है ।

हे गणगौर माता, माळी नै टूटी जिसी सबनै टूठिये । कहता नै सुणतानै हुंकारा का भरता नै, सुहाग-भाग घरू दिये माता ।

(२६) पास (२७) देवता के चढ़ी हुई भेंट (२८) कोटड़ी (२९) रखदो (३०) जरा देर से (३१) कुछ (३२) खाने के लिए (३३) उसकी (३४) तृप्त होकर (३५) अपरिमित ।



## गवर री कांणी

एक हो सेठ—वेरै सात बेटा अर एक बेटी ही । होळी आई जणै छोरियां गवर पूजण लाग्यौं । जणै वे कयो—हूँई गवर पूजसूं । भायां घणौई ना कयो, पिण वे तो ज़िद कर पूजणी सुरू करही बीबा । दिन ऊगतैई उठ'र गवर पूजण जावती—फूल लावती, कूडेला चितरती, ढकणी चितरती, ओटली चणै, कांणी कैवती, सवा-पौर रो दिन चढ़ जावतो ।

जणै भायां पूछियो मां नै—मां, म्हाँरी आ बेन थकी कयों जावै है ! मां कयो—गवर पूजै जिकै सूं थकै है । दिनूगै री उठै, सिनानं करै, फूल लावै, कूंडला चितरै, ढकणी चितरै, ओटली चणै, कांणी कवै; जितै सवापौर रो दिन चढ़ जावै । पछै आ रोटी जीमै, जिकैसूं कर थकै !

बैन गई ही फूल लेवण नै । लारै सूं भाई जायरे गवर नै गिड़ काय आया । वा पाछी फूल लेय'र आई, गवर पूजण लागी । देखै तो गवर नहीं ! मां नै पूछियो—मां म्हाँरी गवर कठै ? बेटी, थारै छोटेडै भाई नै पूछ । छोटेडै भाई नै पूछियो । वे कयो, हूं तो बेनै आकूड़ी ऊपर फैंकी आयो !

जणै वा रोवती-रोवती आकूड़ी ऊपर सूं गवर पाछी ले आई । पाछी लाय'र गवर री पूजा करी । गवर माता अबै वेरै भायै अरूठ हुय गई । अबै बेनै घर मिलै तो बर नहीं मिलै अर जै बर मिलै तो घर नहीं मिलै । जणै मां छोटेडै बेटे नै कयो—अबै तूई जा; जोयला ईयैरै खातर कोई चोखौसो वर !

जणै वो पांणी रो लोटो भर'र, चूरमेरो कटोरो भर'र जाय बैठो पिरोळ में । वे मन में सोचियो—जिको अठैसूं बैसी, बेनै म्हाँरी आ बेन परणाय देसूं ।

पेली-पांत आयो एक भाठै रो गडो । वे देख्यो—गडे नै कयां परणाऊँ ! जितै दूजी बार आयो—एक सांप । भाई नै फिक्कर होयो—भला सांप नै म्हारी बेन कीकर परणाऊँ ! वो उठैई बैठो रह्यो । जितै तो तीजी बार एक कोडीयो आयो । कोडीयै नै तो हूं म्हारी बेन कोइनी परणाऊँ ! तीजे चावळ सीजै, चौथे लोक पतीजै । अबकी बार जिको, आयी बेनै हूं म्हारी बेन परणाय देसूं । जितै तो एक लूलो उठे सूं निकलियो । जणै वे लूलै नैई आपरी बेन परणाय दी । परणाय'र वे आपरी बेन नै कयो—हमें घरै चालो । वा कैवण लगी, हूं तो अबै ईयैरै सागै जासूं—घरै को हालूनी ।

वा परणीज गई जणै बेरी सासू बेनै बधावण नै आई । सोने रो थाळ, अर मोतियां रा आखा, हाथी लेय'र बधावण नै आई । जणै वो हाथी हो वो तो पींडारो हुयग्यो गोबर रो । सोने रा थाळ अर मोतियां री आखा हा जिकै सगळा ही कठै ही जीवता रखा । सासू-सुसरां रै वा पगै लागी, जणै वे औंधा हुयग्या । भरियै में हाथ घालै तो खाली हुय जावै; जै खाली में हाथ घालै तो फूट जावै ।

जणै मां-बापां बेटे, ने कयो—बेटा, इयै बऊ नै घर सूं बारै काढ़ी आ ! लूलो गयो जिको एक बाग में बेनै छोड़'र आयो ।

बाग में रोजी नै तो सोने रा फूल उतरचा करता । वे दिन वो बाग समूखो सूक गयो । माळी बोलियो—

कयो अभागियो मांगस आयो, काढोरे, बाढोरे ।

वे कयो—नारे बीरा, आजोकी, कालो की,  
सुवारै म्हारै घरै जाईस ।

जणै गइ वा कुंभार रै उठै । कातो वेरै सोने-चांदी री न्याई  
उतरती ही ! वे दिन ठीकरी कोनी उतरी ।

जणै कुंभार कयो—कयो अभागियो मांणस आयो,  
काढ़ोरे, बाढ़ोरे ।

वे कयो—ना रे बीरी, आजोकी, कालो की,  
सुवारै म्हारै घरै जाईस ।

चालती-चालती उठै सूं वा एक वेस्या रै गई । वेस्या रै  
खूंटै हार टंग्योडो हो अर पीघै में एक बाळक हो । वे दोनोंई  
कठैई गुम हुय गया । जणै वेस्या कयो—

‘कयो अभागियो मांणस आयो, काढ़ोरे, बाढ़ोरे ।’

वे कयो—ना रे बीरा, आजोकी, कालो की,  
सुवारै म्हारै घरै जाईस ।

अबै वा अठै सूं हाली । अठै सूं बारै कासां ऊपर एक सिंघ  
गाजतो हो । वे सोच्यो—सिंघ रै खनै जाऊं ! खा-लेसी तो  
गेलई छूटती । सिंघ रै हाथ लगावतेई, वो भाठै रो एक गडो  
हुयग्यो ।

सिंघ कयो—कियो अभागियो मांणस आयो, काढ़ोरे,  
बाढ़ोरे ।

वे कयो—ना रे बीरा, आजो की, कालो की,  
सुवारै म्हारै घरै जाईस !



अबै वा आगे चली । एक समुंदर हो । वे सोच्यो—समुंदर में  
डूब मरणोई ठीक है । वे समुन्दर में डूबण खातिर पग घात्यो—  
समुंदर सगळोई सूकगयो ।

समुंदर बोल्हो—कियो अभागियो मांगस आयो, काढ़ोरे,  
बाढ़ोरे ।

वे कयो—ना रे बीरा, आजो की, कालो की,  
सुवारै म्हारै घरै जाईस ।

अबै वा आगे चाली । चालती—चालती वेनै एक बावेजी री  
मठ दीसी । वे सोच्यो—आ ठीक है—मठ रै ऊपर सूं कूद'र  
मर जासूँ ।

जितै में वा मठ रै मांय जाय पड़ गई । वे दिन बावेजी नै  
भिरुया मिळी कोयनी; कुत्ते नारो खायो । जणै वो पाछो दौड़तो-  
दौड़तो आयो । आगे देखै तो मठ में, मांय सूं कूंटो ढकियोड़ो !  
जणै वे कयो—म्हारी मठ में कूण है ! भूत है, पळोत है,  
मिनख है, कै मानवी है !

वे कयो, 'हूँ तो मिनख हूँ ।' तो कयो बारडों खोल—बारडों  
खोलूँ कोयनी ! बचन दे ।

वे कयो—बचन बाचा, जै बचन चूकूँ,  
तो घोबीरी कूंड में सूकूँ ।

जणै वे बारडों खोल्यो । 'तूँ म्हारी घरम री बेटी है'  
बावे जी कयो ।

आवै बावे जी कयो—बेटी, कूँडो तो ला । वा कूँडो लाई । देखै तो वेमें बिछू ! बावे जी कयो—बेटी, घोटो तो ले आव ! वा घोटो ले आई; घोटे में देखे तो सांप लपटीज गयो है । जगै बावे जी कयो—बेटी, पांणी तो ले आव ! वा पांणी ले आई । बाबो जी देखै तो पांणी में जीव ई जीव । जगै बाबाजी कयो—बेटी, तनै तो गवर मात अरुठ होवोड़ी है । होळी आवै जगै भर-भोळिया बणाय'र, म्हारै माथै अर म्हारी डांग माथै घोळै ! दिन ऊगै गवर री पूजा करै ।

वे सोळै दिन, दिन ऊगै उठ'र गवर री पूजा करी, जगै गवर माता वेनै तुष्टमान हुय गई ।

हमें वेरै धणीरै मन में विचार आयो कै देख तो आऊँ जाय बऊ नै । वे आठ लाडू बणाय—चार मीठा अर चार खारा । वो चालतो—चालतो तळव रै किनारै आयो । वठै पनिहारियां पांणी भरतियों ही । ओ उठै बैठ'र लाडू खावण लागो । खारा-खारा तो आप खावै अर मोठा—मीठा चिड़ियां नै नोखै । पनिहारियां देख्यो—टांग हिलावै लाडू खावै । है तो होसलदे रोईज भरतार ।

जगै वे बावेजी नै कयो—बाबाजी, बाबाजी, मनै अबै छुटी देवो । हूं म्हारै घरै जासूं । बावे जी धणो सारो दत्त-दायजो देय'र वेनै खानै करी । वे जावता-जावती बाबाजी नै पूछियो—बाबाजी थे जै मरजावो तो मनै कीकर ठापड़ै । बावेजी कयो—बेटी, ओ घड़ो लेती जा । घड़ो जद फूट जावै तो समझले कि बाबाजी आज मरग्या है ।

अबे वा बावेजी सूं सीख लेय'र आपरै घर खानी बईर हुई । आगे जावतै-जावतै दो रास्ता मिळिया । धणी कैवण लगे

अठी नै सूं हालसां । वा कवै नही । अठी नै सूं नही, इणगी सूं हालसां । मौड़ करता-करता वो घड़ो फूट गयो । जणै वा रोवण लाग गई—कैवण लागी, म्हारा बाबाजी मर गया ! हूं तो पाछी मठ ऊपर जासूं ।

अबै वा रोवती-रोवती घणी नै सागै लेय'र पाछी मठ ऊपर आई । आगै देखै तो बाबोजी तो जीवता-जागता बैठा है । वे कयो—बाबाजी, थां कयोहोक, कै ओ घड़ो फूट जावै तो समझ ले हूं मरगयो । बाबेजी हूंस अर कयो—बेटी, हूं थारी परीख्या लेंवतो हो । ले, आ म्हारी डोंग ले जाव । आ डोंग जद फूट जावै तो समझालिए हूं मर गयो ।

पाछी जावती-जावती वे समुंदर में पग घालियो । इतैई समुंदर पांणी सूं भरीज गयो । वे कयो—कयो सभागियो मांणस आयो, आवरे, बैठ रे !

वे कयो—ना रे बीरा, राखण रै दिन तो राखी कोयनी, अबै म्हारै धरै जासूं ।

जणै जावती-जावती आगे जाय'र गडे रै हाथ लगायो । हाथ लगावतेई गडे रो सिंघ बण गयो; सिंघ बारे कोसां में गूंजण लागग्यो । वे कयो—कयो सभागियो मांणस आयो, आव रे, बैठ रे ।

वे कयो—ना रे बीरा, राखण रै दिन तो राखी कोयनी, अबै म्हारै धरै जासूं ।

उठै सूं सीधी वागई वेस्या रे धरै । वेस्या रै पीछें में बाळ रोवण लागग्यो अर खूंटी ऊपर हार लाध गयो । वेस्या बोली—कयो सभागियो मांणस आयो, आवरे, बैठरे ।

वे कयो—ना रे बीरा, राखण रै दिन तो राखी कोयनी, अबै म्हारै धरै जासूं ।



अबै वा अठै सूं सीधी गई कुंभार रै उठै । कुंभार रै सोने री न्याई उतरन लाग गई । कुंभार बोल्हो—कयो सभागियो मांणस आयो, आव रे, बैठ रे ।

वे कयो—ना रे बीरा, राखण रै दिन तो राखी कोयनी, अबै म्हारै घरै जासूँ ।

अबै वा बाग में गई । बाग हरीयो टोंच हुय गयो । माळी ओ देख'र कैवण लागो—कयो सभागियो मांणस आयो, आवरै बैठ रे ।

वे कयो—ना रे बीरा, राखण रै दिन तो राखी कोयनी, अबै म्हारै घरै जासूँ ।

आगे घरै आई । सोने रा हार, सोने रा थाळ अर मोत्यां रा आखा पाछा हुयग्या । पीडा रे सूं हाथी हुय गयो । सासू—सुसरां रै पगै लागी—कै वोनै दीसण लाग गयो । खाली में हाथ घालै तो भरीज जावै—भरियै में हाथ घालै तो दुलण लाग जावै ।

सासू उठ'र वऊ रै पगै लागी—बऊ कळ जांणै, कांमण जांणै ! हूं तो कळ जांणू ना कांमण जांणू । मां—बापो रै जाई, सासू—सुसरां रै आई । म्हारै माथै तो गवर माता अरूठ हुय गई ही ।

हे गवर माता, वेरै माथै अरूठ हुई जिसी केनै मती अरूठीयै; वेनै सरूठी जिसी सकळ नै सरूठीयै ।

## महिलाव्रत—सोमवती अमावस्या की कहानी

एक साहूकार थो । ऊँकै सात वेटा था अर एक थी बेटी । साहूकार कै घरां एक जोगीर <sup>१</sup>सासतो <sup>२</sup>भिच्छा लेण नै आव तो । वो जोगी साहूकार कै बेटां की भू-भिच्छा दीणनै आती जद तो कहतो “ल्याव <sup>३</sup>सुहागण भिच्छा अर साहूकार की बेटी भिच्छा धालती जद कहतो “ल्याव <sup>४</sup>दुहागण भिच्छा” । एक दिन साहूकार की बेटी आपकी मा नै बोली, मा, आपणै जोगी आवै है जिको मन्नै तो “दुहागण” अर भाबियां नै ‘सुहागण’ क्यूं कहवै ?

बेटी की बात सुण कै माकै चिन्त्या लागगी । दूसरै दिन जोगी आयो जद साहूकारणी हाथ जोड़कर बोली, म्हाराज ! थै बाई नै ‘दुहागण’ कहकर भीख मांगो सो के बात है ? जद जोगी बोल्थो, <sup>५</sup>मन्नै तो दीखै जिसी कहद्यू हूँ । या बाई फेरा मेंई बिधवा हो जायगी । साहूकारणी बोली—म्हाराज, <sup>६</sup>कँह तरह बाई को सुहाग बण्यौ रहै, इसौ थे उपाय बतावो । जद जोगी बोल्थो—उपाय तो एक है । समदर पार एक सोमा धोवण रहवै है, जै उँनै ल्याय कर अँ बाई का ब्याह में फेरा होती बखत बढादी जाय तो वा <sup>७</sup>भागर हुयोड़ा <sup>८</sup>बीदनै <sup>९</sup>फेरु <sup>१०</sup>सरजीवण कर सकै है ।

साहूकारणी आपका <sup>११</sup>धणी नै कही । जद साहूकार छँऊँ वेटानै पूछी पण कोई सोबी समदर पार जायकर सोमा धोवण नै

- 
- (१) शाश्वत—हमेशा (२) भिक्षा (३) सौभाग्यवती (४) दुर्भाग्यवती (५) मुझे (६) किसी प्रकार (७) मृतक (८) बर को (९) पुनः (१०) संजीवित (११) स्वामी को ।

ल्याण की <sup>१२</sup>हांमल कोनी <sup>१३</sup>भरी । सातवां बेटा नै कही जद वो बोल्थो—बापूजी, ये सोच मतं करो । मैं बाई नै साथ लेकर सोम घोबरण नै ल्यावण नै चल्थो जास्युँ । जणा पाछै दोन्यू भाण भाई घर सँ चाल पड़्या । चालतां—चाळतां समदर कै किनारै पहुँच्या । उठे एक पुराण पीपळ को <sup>१४</sup>घेरघुमेर <sup>१५</sup>रूँख <sup>१६</sup>ऊबो थो जिका मैं एक गीध <sup>१७</sup>घूँसलो <sup>१८</sup>धालकर बचियाँ कै साथ रखा करतो । एक बड़ो कालो सांप घूँसला मैं हील <sup>१९</sup>थो जिको गैल सँ <sup>२०</sup>गीध के बचियां नै मार कर खाज्याया करतो । जिकै दिन बी गीध चुगो पाणी करण नै चल्थो गयो थो अर बै दोन्यू भाण भाई ऊँई पीपळ कै पेड कै नीचै ठहरगा । भाण की तो आँख भपगी <sup>२१</sup>पण भाई जागतो आडो <sup>२२</sup>हो रह्यो थो । देखै तो पीपळ पर सांप चढ़ण लाग रह्यो है, जिका की फूँकार नै सुणताई गीध कै बचियां चूँचा <sup>२३</sup>मचादी । साहूकार कोवे दो बचियां की चूँचां सुणकर पीपळ पर चढ़गो अर सांप नै सैल की अणी सँ मार गेरयो । सांप के मरताई गीध का बचियां कै जी में जी आयगो <sup>२४</sup> । साहूकार को बेटो पीपळ मांसूँ नीचै उतर कर सांप नै आपकी ढाल कै तळै <sup>२५</sup>दाबकर सोयगो <sup>२६</sup> । थोड़ी देर है गीध चुगो—पाणी करकै आपकै घूँसला मैं पाछो आयो । आगै देखै तो दो भाणस <sup>२७</sup>पीपल कै तळै सूल्या पड़्या है । गीध मन मैं विचारी हो न हो येई हूँ जो बचियां नै मार ज्याया करै है सो आज बदलौ लेलेणू <sup>२८</sup> । बाप नै आयो देख बचियां

(१२) स्वीकृति (१३) दी (१४) छतरीदार (१५) वृक्ष (१६) खड़ा (१७) घोंसला (१८) डालकर (१९) आकर्षण के आने की आदत थो (२०) पीछे से (२१) सोगई (२२) लेटा हुआ (२३) अनुकरण शब्द चिल्लाहट (२४) आगया (२५) नीचे (२६) सो गया (२७) आदमी (२८) ले लेना चाहिये ।



कही—म्हानै तो आज जीवदान दीणवाळो यो माणस है । अँका उपगार नै म्हें तो कदेई कोन्यां भूलॉ । पहलां अण नै खाणू-दाणू करावोगा जद म्हें चुगो-पाणी करस्यां । जणा गीध साहूकार के वेटा नै कह्यो—पहलां थे खाणू-दाणू करल्यो, पाछै बात करोंगा । जद दोई भाई भैण खाय-पीयकर नचीता<sup>२९</sup> होयगा अर<sup>३०</sup> गीध व बचियां बी चुगो पाणी कर लियो । जद गीध बोल्यो—साहूकार का वेटा, इव बताय तूंकें चावै है । तूं मेरा बचियां नै जीव दान दियो हैं । मैं तूकहै सो करण नै तैयार हूं । जद साहूकार कै वेटे कही—म्हानै समदर पार सोमा धोवण कै घर आगे पहुंचादे । जद गीध भाण अर भाई नै आपकी पांखां पर बैठाकर उड़ग्यो । सो समदर कै परलै पार सोमा धोवण कै घर कै आगे एक बड़ थो जेँके मांय लेज्याय कर उतार दिया । दोन्यू भाण भाई बड़ कै मांयई रहवा लागगा । सोमा धोवण कै सात वेटा, सात वेटां की भू अर सातई वेटियाँ । घणी वेटा, अन्न-घन्न सब बातां का ठाठ लाग रखा ।

साहूकार की बेटी के काम करैक<sup>३१</sup> दिन ऊंग्या पहल्वां मुँह अँधेरे उठकर सोमा धोवण को आंगण लीप्यावै । भारी-भाड़ी दियावै अर पाछी बड़ में आयकर आपकी जगा बैठ ज्याय । घण-घणोरा दिन होयगा, जद सोमा धोवण आपकी भू-वेटियां नै पूछियो के आपणै इतिनी सुदियां<sup>३२</sup> कुण भारी-भाड़ी<sup>३३</sup> अर लीपा-पोती<sup>३४</sup> को काम कर ज्याय है । जद सगळीजणी नगी बोली म्हानै तो बेरो कोनी । म्हें तो सूता उठां जणा यो सगळो काम हुयोडो<sup>३५</sup> त्यार पावै । सोमा धोवण बोली—देखां-बरोतो

(२६) निश्चित (३०) और (३१) क्या काम करती कि (३२) सवेरे (३३) बुहारना-भाड़ना (३४) लिपाई-पुताई (३५) पूरा हुआ

पाइनू चाये—यो काम धन्धो कुण आयकर कर ज्याय है। एक दिन सोमा आप तइकाऊ<sup>३६</sup> उठकर बैठगी—देखै तो साहूकार की बेटी बड़ मांय सै उतर कर बोल वाली<sup>३७</sup> आयकर भारो भारो करण लाग रही है। जद सोमा बोली—बिरा<sup>३८</sup>, तन्ने इसी मेरी के चाय<sup>३९</sup> है जिको तूं रोजीना<sup>४०</sup> दिन ऊग्यां पहलां मेरा घर को धंधो कर ज्याय है? जद साहूकार की बेटी बोली—तू मन्नै वाचा<sup>४१</sup> देदे जणा मैं मेरे मन की बात बताऊं। जद सोमा वाचा दे दिया। जणा साहूकार की बेटी बोली—मेरा भाग में दुहाग<sup>४२</sup> लिख्यो है जिको तू मेरा व्याह में चली चाले तो मेरा पति की रिच्छा<sup>४३</sup> हो जाय। मन्ने तो सुहाग तेरो दियोडो मिलैगो। मैं तो तेरी शरण आयगी। जद सोमा बोली—“तू सोच मतां करै, मैं थारै सागै चली चालस्यूं तू मन्नै पहलाई कहदी होती, जिको मैं थारै सागै चली चालती। मेरो धोबी के घरां जलम<sup>४४</sup> है। इतना दिना सेवा करकै मन्नै पाप की भागण क्यूं वणाई? साहूकार की बेटी कह्यो—अैं बात को तूं बिचार मतां करै। चाय को के मोल होय है। मन्नै तेरी चाय थी जद आई हूं अर या सेवा तेरी नहीं, तेरा गुण की है।” जणा पाछै सोमा, दोन्यू भाण-भायां के सागै चाल पड़ी। चालवां लागी जद आपका बेटा नै बोली—थारो बाप मागर<sup>४५</sup> हो ज्याय जद तेल का कूपा में घर दियो। वालियो मतना। बेटा बोल्या—आछी बात है।

सोमा धोबण—साहूकार का बेटा बेटी कै सागै साहूकार कै घरां आ पहुँची। साहूकार-साहूकारणी राजी होयगा। बेटी को

---

(३६) प्रातःकाल (३७) चुप चाप (३८) भाई (३९) चाह (४०) रोज (४१) वचन (४२) वैधव्य (४३) रक्षा (४४) जन्म (४५) मृतक।

चोखो सावो दिखाकर व्याह पक्को मांड<sup>४६</sup> दियो । धूम-धाम सँ  
 बरातआई सुहेलो<sup>४७</sup> अर दुकाव<sup>४८</sup> होकर फेरा के बीद-बीदणी<sup>४९</sup>  
 बैठगा । ऊँ बखत सोमा धोबण बोली—कुम्हार कै से एक करवो  
 ल्यावो, एक काचा सूत की आटी<sup>५०</sup> ल्यावो अर एक न्यातणू<sup>५१</sup>  
 ल्यावो । ये तीनू चीजां आपकै कनै लेकर सोमा बी माडै तळै<sup>५२</sup>  
 बैठगी । जोशी पण्डित आपकी पोथी वांचण लाग्या । तीन  
 फेरा हो चुका जद बीद नाइ गेरदी मागर होकर जा पड्यो ।  
 माडै तळै रोवणू-पीटणू माचगो । ऊँ बखत सोमा धोबण आपकी  
 मीडी मायसू<sup>५३</sup> तो मैण काठयो<sup>५४</sup> । कोयां मापसै काजळ  
 काठयो, टीका मायसै<sup>५५</sup> रोली काड़ी, नूवां मायसै मेंहदी काड़ी  
 अर आपकी चिटळी सँ<sup>५६</sup> साहूकार का जवाई (बीद) कै छंटो  
 देकर बोली—पाचली सोमोती मावसां का फळ तो अँ साहूकार  
 का जवाई नै लह्यो<sup>५७</sup> अर आगे को फळ मेरा धणी-बेटां नै  
 लह्यो । इतनी कहतां परांत<sup>५८</sup> मागर हुयोडो बीद बैठयो होयगो ।  
 साहूकार की बेटी को व्याह आनन्द उछावसँ होयगो जनेत-  
 बीदणी बिदा होयगी । जद सोमा धोबण बी साहूकार सँ सीख  
 मांगकर आपकै घरां जाण कै ताई चाल पड़ी । उठीनँ जँ बखत  
 साहूकार को जवाई सरजीवण हुयो ऊँ बखत सोमा को धणी  
 मागर होकर जा पड्यो थो सो ऊँका बेटां तेल का कूपा में मेल  
 दियो थो । सोमा आपकै घरां आवण लाग रही थी जद गैलां<sup>५९</sup>

(४६) निश्चित कर दिया (४७) बरात के स्वागतार्थ दुकाव के पहले का  
 रस्म (४८) लड़की की ओर से वर माला पहनाने और लड़के की ओर  
 से तोरण पर छड़ी मारने की रस्म (४९) वर-वधू (५०) अटेरन पर से  
 उतारा सूत (५१) कण्ठ का टुकड़ा (५२) मण्डप के नीचे (५३) लटाओं  
 में से (५४) निकाला (५५) तिलक (५६) कनिष्ठिका (५७) प्राप्त हो  
 (५८) कहने के साथ ही (५९) मार्ग में ।



सौमोती मावस आई सो सोमां पीपळ कै तळै बैठकर १०८  
माटी की ठेकरियां धरकर कहाणी कही अर पाछै ठेकरियां नै  
भेळी<sup>६०</sup> करकै पीपळ कै तळै गाडदी अर आपका घरां कानी  
चाल पड़ी। घर पर आय कर देखै तो धणी मागर हुयौड़ी  
तेल का कूंपा में पड़यो है। जद ऊँनै बी उँईतरा<sup>६१</sup> चिटली सें  
छांटो अर सौमोती मास को आपको फळ देकर सरजीवण कर  
लियो। सौमोती मावस की दिछणा जोशी आयकर मांगी जद  
सोमा बोली—गैलां में किसी थैली धरी थी। जो उठे कांकरी  
ठेकरी पाई जिकी भेली करकै मैं तो पीपळ कै तळै गाड्याई थी,  
जिको खोदकर लियायो। जणा जोशी जायकर ऊं जगा नै  
खोदकर देखै तो मोहर ही मोहर मिली सो सोमा धोबण नै  
आसीस<sup>६२</sup> देतो देतो जोशी आपकै घरां आयगो। जोशाणबी<sup>६३</sup>  
राजी होयगी। हे सौमोती माता ! ऊँनै दूठी<sup>६४</sup> जिसी सब नै  
दूठियै। कहतानै, सुणतानै, हुंकारा भरतानै।

---

(६०) इकट्ठी (६१) उसी प्रकार (६२) प्रार्थना (६३) जोशी की  
स्त्री भी (६४) प्रसन्न हुई।

## सूरज रोटी

एक बार दो मां-बेटियां ही । दोयोंई रै लारलो आदीतवार आयो, जणै मां तो गई बार अर बेटी नै कैय गई, थूं लारै दो रोटा कर रखिये । बेटी एक रोटी कर'र दूसरो रोटी करीयोई हो—जितै में एक साधु आयो अर कैवण लागो—माई भिरुया घाल ! मांरो रोटी तो करियोड़ो हो अर आपरो हो तवै माथै । जणै वे साधु नै कह्यो—रोटी तौ मां रो है; म्हारो तो म्हें हाल-ताई कडियो कोयनी । जणै साधु बोलियो—मांरो देदे ! वे आपरी मांरै रोटे रो दुकड़ो तोड़'र साधु ने देयियो ।

जिते में मां आई । कयो—बेटी खांडो रोटी कैरो अर साजो करो ! जणै वे कयो—खांडो मांरो अर साजो म्हारो । जणै बेटी सूं मां लइन लागी अर कयो—

‘धी कोर मोटी कोर सागी रोटे री कोर ला ।’

बेटी कयो—मां, सागी रोटे री कोर कठै सूं लावूँ । थूं म्हारो रोटी लेले । थारो मनै देदे । मां तो मांनी कोयनी । वे सागी बात कई—

धी कोर मोटी कोर सागी रोटे री कोर ।

बेटी उफतगी—वे आपरै रोटे रो चूरमौ कर लियो । पांणी रो लोटो भर, घर सूं निकळगो अर एक दरखत रै ऊपर जाय बैठगी । नीचे एक राजा री असवारी उतरी ।

राजा री असवारी तिसौं मरती, भूखौं मरती ही । वे ऊपर बैठी-बैठी पांणी पियो । जद पांणी रोटी बको पडियो, जिकै सूं

एक तळाव भरीजग्यो । चूरमो खायो—चूरमे रो भूको पडियो ।  
वठै चूरमैरा बड़ा-बड़ा ढिग हुयग्या । राजरी असवारी खूब  
चूरमो खाय लियो । पांणी पीर खूब पेट भर लियो ।

राजा कांमदारां नै कयो कै ऊपर जाय'र देखो ! इसो कुण  
बैठयो है जिकै रै एक भौरै सूं ढिग लाग ग्या अर एक टिबकै  
सूं पांणी रौ तळाव भरीजग्यो ।

अबै कोमदार ऊपर गया । कोमदार ने ऊपर कई कोनी  
दीसियोनी । वे कयो—महाराज, ऊपर तो कई कोयनी । राजा  
बोल्यो—हूं आप जाईस ।

राजा गयो देखणनै । जणै राजा नै दो पांनां में अर दो फूलां  
रै बीच में एक छोरी बैठी दीसी । राजा पूछयो—तूं भूत है कि  
प्रेत ! हे कुण ! वे कयो—हूं भूत हूं ना प्रेत । हूं तो साहूकार री  
बेटी हूं । राजा पूछयो—तूं कुंवारी या परनोड़ी । जणै वे  
कयो—हूं कुंवारी हूं ।

जणै राजा वेनै नीची उतार अर चार धूड़ री ढिगळियां  
कर'र वे सूं परनीज गयो । परनीज वेने वो घरै लेग्यो ।

अबै होळी रै लारलो फेर आदीतवार आयो । जणै वे  
सवामण रो रोटो करियो; सूरज जी री पूजा करी । दूसरियां  
रांणियां राजा नै कयो—राजा, रांणी लायो—कांमण गारी  
लायो । सवा—सवा मणरा रोटा करै आतो ।

राजा रांणी कनै आयो । रांणी राजा सूं डरती-डरती रोटो  
आपरै गोडे नीचे दबाय लियो । राजा रांणी नै कयो—रांणीजी,



गोडे नीचे क्या है ? रांगी डरती-डरती गोडो ऊँचो करियो ।  
वे रोटे रो सोने रो चक्कर होयग्यो ।

राजा कयो—ओ क्या है ? तो कयो—ओ म्हारै दूबळे पीरे  
सूं भेंट आई है ।

हमें एक दिन वा गोखे में बैठी ही, जितेई वेरी मां लकड़ियां  
री भारी लेय'र आईं । बेटी ने बैठोड़ी वेरी मां ओळखली ।  
लकड़ियां नै उठै ही पकट'र वा कैवण लागी—

धी कोर, मोटी कोर, म्हारै सागी रोटे री कोर ला ।

बेटी मन में जाण्यो—पीछो छोडाय'र आई ही; पण आतो  
लारैई आय गई । वे उठ'र मानै मार'र सात ओरां में ढकदी  
अर कूंचियां आप लेय'र बैठगी ।

रांगियां फेर दोडियौं राजा कनै अर कयो—महाराज, इता  
दिन तो वा रोटा करती ही ! आज तो मिनख नै मार'र ढक  
दियो है ।

अबै राजा आयो रांगी कनै-मनै सात ओरांरी कूंचियां दे !  
हमें वा मनई मन में डरन लागी कै म्हें तो इयै मांय म्हारी मां नै  
मार'र ढकी है । अर ओ सात ओरां री चाबियां मांगै है !

वे सूरज भगवान नै अरदास कप'र कूंचियां राजा नै  
दे दियौं । राजा ६ वौं ओरा खोल अर सातवौं ओरो खोल्यो ।  
वेरै मांय नै मरियोड़ी मां रो सरीर तो सोने रो होय गयो ।  
लोई-रसी रा हीरा-पन्ना, मांणक-मोती बणगया । राजा  
पूछ्यो—रांगी जी, ओ क्या है ? रांगी जी कयो—म्हारै दूबळे  
पीरै सूं भेंट आई है ।

कै हमें थारो इसो दूबलो पीरो है, जणै आपां हालसां थारै  
दूबले पीरै नै देखण नै !

हमें वा मांय-री-मांय सोच करै-हमें म्हारो पीरो किसो है जिको  
राजा देखण नै जासी ! न्हाय-धोय, माथो धोय'र सूरज भगवान  
सूं अरदास कीवी—हे सूरज भाईदा, म्हारी लाज तूं राखै ।

सूरज भगवान दरसन दिया । कयो—सवा पौर रो पीर-  
वासो हूं दीस । सवा-पौर होवतेई तूं उठै सूं आजाये ।

हमें राजा असवारी लेय'र, घोड़ा, रथ, पालकी लेय'र सासरै  
गयो । उठै हमें कोई कवै-बैन आईं । कोई कवै मासी आईं । कोई  
कवै मासइजी आया । कोई कवै बैनोई जी आया । उठै नवी  
नगरी बणियोडी; कठैई रसोई हुवै तो कठैई गीत गाई जै । हमें  
सवा-पौर रो दिन चडियो, रांणी कयो--राजा जी घरै हालो ।  
जणै राजा कयो--रांणी जी इसो फूठरो सासरो अर इतरी  
ताळ में ही हालण री बात ! अपां तो अठै छ-सात दिन रेसां ।

जितेई रांणी आपरै छोरे रै दूगों में एक भुरट घाल दियो ।  
अबै छोरो रोवण लाग्यो । रांणी कयो--राजाजी, लारलां देव-  
तावां दोसाऊ कर दियो—वेगा हालो ।

हमें राजाजी राजधाणी नै रवाने हुय गया । जावता-जावता  
एक ढाळ अर एक ताजणों उठैई भूल गया । आधी दूर गया,  
अर याद आई ! ताजणो अर ढाल तो उठै ही भूल आया !  
नौकरां नै कयो—जावो भई, म्हारी ढाल अर ताजणों तो  
लेता आवो ।

नौकर अबै लेवण नै गया । उठै तो भूत-भूतणियां नाचै, लोई-रसी री नदियां बवै । एक बोरटी माथै ताजणौ अर ढाल पड़िया । नौकर डरता-डरता ताजणो अर ढाल लेय'र दौड़ता-दौड़ता आय'र राजानै कयो—महाराज, उठै तो नवी नगरी बसियोड़ी ही ! अबार तो उठै भूत-भूतणी नाचै है । लोई-रसी री नदियां बवै है !

राजा उठ'रे रांणी कनै गयो । कछो—कळ जांगणौ, कांमण जांगणौ ! रांणी कयो—महाराज, कळ-जोणू ना कांमण जांगणू । मां-बापां रै जाई, सासू सुसरां रै आई म्हारै पी'र-वासो किसो हो ! म्हारै तो एक मां थी, जिकै नै म्हैं मार'र ओरै में ढकली । म्हारै तो सवा-पोर रो पीरवासो देखर सूरज भगवान परतंग्या राखी ।

हे सूरज भगवान, वेनै पीरवासो बतायो जिसो सकळ नै बताये ।



## अथ चतुर्थी री कथा लिख्यते

एक समै रै विषै राजा कृतवीर्य जी श्री पूछै है—ब्रह्मन् ! गणेश चतुर्थी रो व्रत कै कीयो ? इयै पृथ्वी रै विषै कै प्रकाश कीयो ? तिकै रो पुन्य कांसु ? फल कांसु ? थे दयाकर कहो । तद श्री ब्रह्माजी राजा सूं कृपाकर प्रसन हुय कहै छे । हे राजन् ! पुरा पूर्व स्वांमी कार्तिका जी गया थका महादेव जी रै वचन पार्वती मास च्यार व्रत कीयो । तद पुत्र प्रीत हुई । पंचमै मास स्वांम कार्तिक जी श्री सहित आया । फेर राजा अगस्तजी रै समुद्र पीवण री बांछां हुई । तद रिषां री आग्या सूं अगस्तजी व्रत कीयो । तिकै सूं समुद्र पीगया । फेर नल दमयंती नै विखो पड़ीयो । तद नल दमयंती रो वियोग हुबो । तद नल दमयंती व्रत कीयो । तद राजा नल आय मिल्यौ । मास च्यार पूर्व श्री कृष्ण रो पोतरो अनुरुध प्रद्यु तम्न रो पुत्र चित्र लेखा ले गई । तद श्री रुक्मणी जी और सर्व जादव चिंतातुर हुवा । अनेक प्रकारां रा जतन कीया । पिण खबर कांइ नहीं । तद रुक्मणीजी कयो—हमारो पिण पुत्र नुं दिन दसां मांहि सर्व ले गयो थो तद हूं पिण शोकाकृति हुई थी । लोकां रा बालक देख कहती—इसो पुत्र हमारो थो । इयै तरै चिंतातुर थकी लोक करावी । तिकै समै लोमशजी आया । घणी श्रुश्रुषा कीवी । आपरी करुणा कही । तद लोमशजी कहो—रुक्मणी जी तो तनै उपदेस कहूं, तिको तूं कर, थारा सर्व मनोरथ पूर्ण होसी । पुत्र री पिण प्राप्त होसी । तद कयो—संकट चोथ रो व्रत कर । चंद्रोदय व्यापनी व्रत करै । चंद्रोदय रै समै गणेशजी री पूजा कीजै, चंद्रमां नै अर्ग दीजै व्रत कीजै । पूनम सूं व्रत कीजै । कूड़ै, पापी, पाखंडी सूं मित्रां-पणा न कीजै । तद गणेशजी री आग्या सूं माहा वदि चोथ रो मास बारै व्रत कीयो । तद व्रत रै प्रताप गणेशजी रा प्रसाद सूं

देव्य संबर मार रति स्त्री परणी जी । प्रद्युम्न तले आयो । तद रुक्मणी जी रै कह्यो—प्रद्युम्न जी ! पण ज्युं लोमशजी, तिको विधानं पूजा व्रत कीयो थौं, विधानं सूं कीयो । तद वाणासुर रै बंध मांहि पुत्र री खबर पाई । तद बुधकर ले आया । औ व्रत गणेशजी रै संतोषि रो करणहार छै । सिध बुध दैण हार छै अनेक संकट रै नासरो करणहार छै । इयै व्रत रै प्रताप सूं प्रद्युम्न अनुरुधजी नूं उषा वाणासुर से बेटी सहित पायो । फेर ब्रह्माजी कहै—हे राजन् कृतबीज ! मैं पिण सृष्ट रचण समर्थ वास्तै व्रत कीयो तैसुं सृष्ट री सामर्थ्या पाई और पिण रिषीस्वर, देवता, मनुष्यां विघ्न शांतरे वास्तै व्रत कीयो । और पिण दानवा यक्षां, किन्नरी, सर्पां, रीक्षसां आपदा रै विषै शांत रै वास्तै कीयो ।

इयै व्रत समांन इह लोक रै विषै सर्व सिध रो करता और नहीं । बीजो तपस्या, दान, यज्ञ, तीर्थ, मंत्र-विद्या नहीं । सारां सूं श्रेष्ठ छै । हे राजा ! इयै कथा सुणी, उठै भोजन कर हृदै गणेशजी रै ध्यान करै । ब्रह्मा नूं भोजन कराया पछै आप कुटंब सहित भोजन इयै तरै थोड़ा महिनां मांह करै । मनोरथ सिध हुवै । हे राजन् ! घणो कासुंण कहुं । ततकाल सिध रो करण-हार छै । औ व्रत अभक्त नूं, नास्तक नूं, ठगो नूं उपदेश न कीजै । परमेश्वर रो भक्त हुवै । आपरै सेवक नूं, पुत्र नूं, साध नूं, उपदेश दीजै । ब्रह्माजी कहै—राजा तूं हमारो भक्त छै, धर्म श्रेष्ठ छै । खेत्रीयां रै विषै श्रेष्ठ छै । लोकां रो कार्य रो कर्त्ता छै । एसु मैं व्रत उपदेश कीयो छै । सितकै वास्तै यहि संसार विषै करण योग छै । तिकै सूं सारा कार्य सिध हुवै । हारै पुत्र नूं अहीन मन बंछत । अवर नर नारी रो कार्य रो उद्यम हुवै तद और व्रत करै । ततकाल सिध हुवै । सर्व विघ्न मिट जावै ।

आहीज कथा ब्रह्म पौराणै शौनकादिक नूँ कही छै । ऐसो वचन  
 सुण राजा कृतवीर्ज व्रत कीया । तिकै प्रताप सून अखल पुत्र  
 संपन्न संपन्न राजा भोग भोगवीयो । अन्त समै परम पद पायो  
 और पिण नर-नारी और व्रत करै, गणेशजी री पूजो करै तो  
 सारा मनोरथ रा फल पावै । बीजौ इयै माहात्म नै आपरी  
 प्राप्त कर सुणै, तिको सारा व्रतां रो फल पावै । इति गणेशजी री  
 चतुर्थी व्रत कथा सम्पूर्ण । लिखतं केवलकंद, सवाई मध्ये० लि० ॥

पत्र २ बृहद्-ज्ञान-भण्डार, अवीर संग्रह, पोथी नं० १६,  
 प्रति नं० २२६, बीकानेर ।





# सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट के प्रकाशन

राजस्थान भारती ( उच्चकोटि की शोध पत्रिका )

भाग १ और ३

मूल्य ८) प्रति भाग

" ४ से ७

" ६) प्रति भाग

भाग २ [ केवल एक अंक ] २),

टेसीटोरी विशेषांक ५) रु०

पृथ्वीराज राठोड़ जयन्ती विशेषांक

मूल्य ५) रु०

## प्रकाशित ग्रन्थ

१-क्लायण[ऋतुकाव्य]मू. ३।), २-बरसगांठ[राजस्थानी कहानियाँ]मू.१।।)

३-आमै पटकी [ राजस्थानी उपन्यास ] मूल्य २)५०

## नये प्रकाशन

- |                            |                                |
|----------------------------|--------------------------------|
| १. राजस्थानी व्याकरण       | १४. जिनराजसूरिकृति कुसुमांजली  |
| २. राजस्थानी गद्य का विकास | १५. विनयचन्द्र कृति कुसुमांजली |
| ३. अचलदास खीची की वचनिका   | १६. जिनहर्ष ग्रन्थावली         |
| ४. हमीरायण                 | १७. धर्मवर्द्धन ग्रन्थावली     |
| ५. पद्मिनीचरित चौपाई       | १८. राजस्थानी दूहा             |
| ६. दलपत विलास              | १९. राजस्थानी वीर दूहा         |
| ७. डिगल गीत                | २०. राजस्थानी नीति दूहा        |
| ८. परमार वंश दर्पण         | २१. राजस्थानी व्रत कथायें      |
| ९. हरिरस                   | २२. राजस्थानी प्रेम कथायें     |
| १०. पीरदान लालस ग्रन्थावली | २३. चन्द्रायण                  |
| ११. महादेव-पार्वती वेल     | २४. दम्पति विनोद               |
| १२. सीताराम चौपाई          | २५. समयसुन्दर रास पंचक         |
| १३. सद्यवत्स वीर प्रबन्ध   |                                |

पता —

सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट, बीकानेर (राजस्थान)



Col. / 11 Aug. 24.



Central Archaeological Library,  
NEW DELHI.

Call No. 394.2695435/Pur-41853

Author—Purohit, Mohanlal

Title—Rajasthan Kratkatha

*"A book that is shut is but a block"*

CENTRAL ARCHAEOLOGICAL LIBRARY  
GOVT. OF INDIA  
Department of Archaeology  
NEW DELHI.

Please help us to keep the book  
clean and moving.